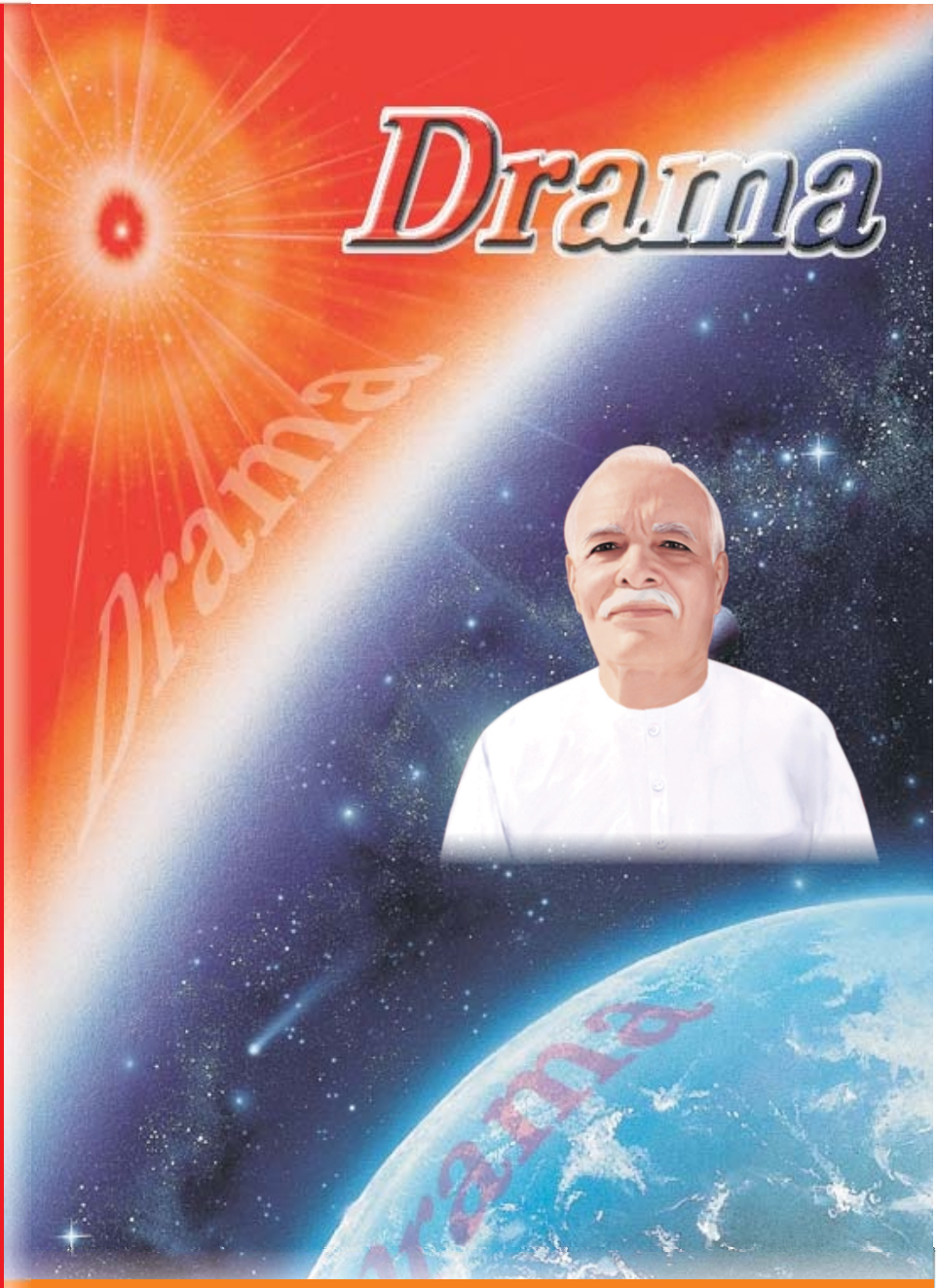

Drama

वाह ड्रामा वाह...! वाह बाबा वाह...!

वाह रे मेरा भाग्य वाह...!

अव्यक्त ड्रामा

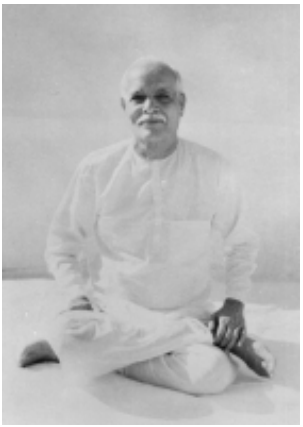

अव्यक्त ड्रामा

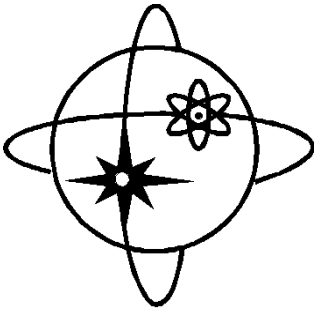

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकेन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'अव्यक्त ड्रामा'** एक है।

वाह ड्रामा वाह!

लेख - 1

कोई-न-कोई बात जीवन में आकर समस्या बनेगी, यह कलियुग का ऐसा समय है, खास तौर से यह जो अन्तिम समय है इसमें किसी का बच्चा, किसी का शरीर, कोई की अपनी परिस्थिति, सरकार का कोई कानून, बिजनेस में कोई उंच-नीच, कोई-न-कोई बात असन्तुष्ट करती है। बाबा कहते हैं कि ड्रामा की ढ़ाल को याद रखो, बस। पहले जमाने में युद्ध करने जाते थे तब सैनिक कवच, तलवार और ढाल ले जाते थे। सामने वाले शत्रु की तलवार के प्रहार से अपने को बचाने के लिए ढाल का इस्तेमाल करते थे। अगर कवच और ढाल नहीं होगा तो शत्रु की तलवार लगेगी और जख्मी हो जायेगा। खास कर, इस पुरुषार्थी जीवन में हम घायल न हों, दुःखी न हों, उसके लिए कवच और ढाल हैं, वार से बचने का तरीका है - ड्रामा। वाह ड्रामा वाह! साकार में बाबा का जिस समय कहना होता थ 'वाह ड्रामा वाह', चेहरा देखने जैसा होता था। जब व्यक्ति असन्तुष्ट होता है, उसको कोई ढाल, कोई कवच, कोई अपनी रक्षा का साधन चाहिए और वो है - ड्रामा।

ड्रामा में निश्चय रखने से बहुत फायदे होते हैं

यह जो ड्रामा है, यह तो बहुत बड़ी विद्या है। ड्रामा के पट्टे पर अगर कोई नहीं खड़े हों तो उनको बहुत दुःख का अनुभव करना पड़ेगा। अगर रेलगाड़ी अपने पट्टे पर न चले, तो कितने डब्बे गिर पड़ेंगे। कितने लोग मर जायेंगे। कारण क्या था? गाड़ी पट्टे पर नहीं है। ड्रामा के पट्टे पर हम चलें, इधर-उधर न हों, लाइन पर हों। लाइन क्लीयर हो। यह बहुत बड़ी बात है। इसलिए पहले जब बाबा से मिलने जाते थे, हम अपना अनुभव सुनाते हैं, हम से कहा गया कि 108 बार निश्चय पत्र लिख दो। उसमें यह भी लिखवाते थे कि 'ड्रामा में मेरा पूरा निश्चय है'। ड्रामा में

निश्चय होने से बहुत बातें जीवन में आ जाती है। ईर्ष्या खत्म हो गयी, जब निश्चय हो गया कि उस आत्मा का यह पार्ट है, मेरा यह पार्ट है, वो अपना कर रहा है, मैं अपना कर रहा हूँ तो फिर ईर्ष्या किस बात की? द्वैष किस बात का? नफरत किस बात की? झगड़ा किसलिए?

यह बना-बनाया ड्रामा है

बहुत सारी बातें भी इसी वजह से होती हैं कि हम यह नहीं समझते कि यह बना-बनाया ड्रामा है। सिर्फ ड्रामा नहीं, बाबा कहते हैं कि यह बना-बनाया ड्रामा है। ऐसा शब्द आपने कहीं सुना नहीं होगा। भाई, या तो बना हुआ होता है या तो बनाया हुआ होता है। दोनों नहीं होता है ना! लेकिन बाबा की भाषा ही अलग है कि 'यह बना-बनाया ड्रामा है'। बना-बनाया का क्या मतलब होता है जी? कोई चीज़ बनी-बनायी होती है क्या? रोटी है, बनी बनायी होती है क्या? उसको कोई पकाता है, बनाता है। लेकिन बाबा कहते हैं, ड्रामा अनादि है, इसको मैंने भी नहीं बनाया, मैं भी ड्रामा के अनुसार ही चलता हूँ। यह अनादि काल से चला आया है, यह चला ही नहीं आया है लेकिन ऐसे ही चलेगा। यह कल्प-कल्प ऐसे ही चलेगा। बच्चे, एक मच्छर यहाँ से उठा और उड़कर तुम्हारे नाक पर बैठा, 5000 वर्ष के बाद यह बिल्कुल यहाँ ही बैठेगा। यह बदलने वाला नहीं है। यह ड्रामा बिल्कुल बदलता नहीं है। फिर बाबा कहता है, यह एक्युरेट है। कमाल है! एक्सीडेंट हो जाये, टांग टूट जाये और ड्रामा एक्यूरेट है। टांग हमारी टूटी पड़ी है और ड्रामा एक्यूरेट है। उस समय आदमी ऐसा सोचेगा तो कैसा लगता है?

बाबा के जीवन में हल्कापन हमने देखा, कभी भी भारीपन नहीं, चिन्ता नहीं। कारण क्या? यह ड्रामा बड़ा एक्यूरेट है, यह बहुत वण्डरफुल है, बना-बनाया है। यह बना-बनाया है, भगवान ने नहीं बनाया है, नहीं तो दोष उस पर आता है। यह बना-बनाया ड्रामा है।

ड्रामा होता ही है खुशी के लिए

यह ड्रामा बना-बनाया है। इसलिए भगवान पर दोष नहीं आता है। हमारे उपर भी दोष नहीं आता है क्योंकि ड्रामा में हरेक का पार्ट है। हरेक के पार्ट को देखकर खुश हो जाओ। ड्रामा किया जाता है और देखा जाता है खुशी के लिए, मन बहलाव के लिए। कोई कहता है कि यह 'प्रभु की लीला' है, कोई कहता है कि यह 'चार दिन का नाटक' है। ड्रामा के बारे में बाबा के जो शब्द है - एक्युरेट हैं, अनादि है और वाह ड्रामा वाह, ऐसा कहकर चलते रहो तो खुश होंगे। जब खुशी होगी तब सन्तुष्टत रह सकते हो। खुशी तब रह सकती है जब समझेंगे कि यह ड्रामा होता ही है खुशी के लिए। इसके बिना हर परिस्थिति में संतुष्ट रहना संभव नहीं है।

यह सब आश्चर्य की न्यायी है

बाबा कहते हैं, जैसे आत्मा को समझना जरूरी है, परमात्मा को समझना जरूरी है, कर्मो की गति को समझना जरूरी है, भगवान का अवरतण और उसके कर्तव्य - स्थापना, पालना और विनाश के राज़ को समझना जरूरी है, उतना ही ड्रामा को समझना जरूरी है। यह कोई कम महत्व की बात नहीं है। कितने लोग ज्ञान से चले गये। क्योंकि उनको यह ड्रामा समझ में नहीं आया। वे ड्रामा के पट्टे पर टिक नहीं सके। नतीजा यह हुआ कि इतना वण्डरफुल ज्ञान छोड़कर, इतने बड़े भाग्य को लात मारकर, अपनी तकदीर की लकीर को खत्म करके चले गये। तब भी बाबा कहते हैं, वाह ड्रामा वाह! आप सोचो, बाबा के दिनों में कितने आये! खून से लिखकर दिया कि हमें निश्चय है कि भगवान ब्रह्मा के तन से पढ़ा रहे हैं। फिर भी चले गये। कितने-कितने साल मेहनत ली, बाबा की पालना ली और चले गये! तो भी बाबा को दुःख नहीं हुआ कि इतनी मेहनत की, यह क्या हुआ! किसी का जवान बेटा मर जाता है तो कितना दुःख होता है! लेकिन बाबा ने जिन पर इतनी

मेहनत की, बेटों से कम मेहनत नहीं की, दिन-रात उनकी सेवा की, फिर भी यज्ञ को, बाबा को छोड़कर चले गये। बेवफा निकले तो भी बाबा ने ऐसा नहीं कहा, उनको दोषी नहीं ठहराया, कहा अच्छा बच्चे, ड्रामा। उनकी तकदीर। कोई रंज का, दुःख का लेश नहीं आया। संतुष्ट रहे हर बात में। जिनका ड्रामा में पार्ट है वे आयेंगे। उन्होंने वर्सा लेना ही लेना है। जिनका पार्ट नहीं, कितनी भी कोशिश करो वो आयेंगे ही नहीं। आयेंगे तो आकर चले जायेंगे। सबने वर्सा लेना नहीं है, क्या करें! और जो आते हैं, उनमें कोई ऐसे चलेंगे जो दास-दासियाँ बनेंगे। खाना, पीना, ऐश मनाना, पहनना, घूमना-फिरना और सेवा करनी नहीं, मेहनत करनी नहीं, पुरुषार्थ करना नहीं, तो क्या बनेंगे? दास-दासियाँ तो बनेंगे! बाबा कहते हैं, नयी सृष्टि बन रही है तो हर तरह की प्रजा बन रही है इसलिए चिंता की बात नहीं है बच्चे। उसमें कौन क्या बनेगा, वो अभी से देखने में आता है उनके लक्षण से, उनके व्यवहार से। लेकिन ड्रामा के राज़ को सामने रखते हुए संतुष्ट रहो कि यह इसका पार्ट है।

बिना संतुष्टता योग टिकेगा नहीं

जब तक संतुष्ट हो तब तक योग की स्थिति ठीक नहीं हो सकती, डाँवाडोल होगी। आप कभी भी देख लीजिये टूट जायेगा योग। जब ड्रामा की हलचल होगी, टिके नहीं होंगे तो योग भी स्थिर नहीं होगा और स्थिति अचल-अडोल नहीं होगी। उस समय हिल जायेंगे। तो यह जरूरी है कि हम संतुष्ट हों, तब योग लगेगा। संतुष्ट (1) परिस्थितियों से भी हों (2) व्यक्तियों से भी हों (3) अपने से भी हों (4) बाबा से भी हों। ऐसा नहीं समझे कि बाबा ने हमें बढ़िया पार्ट नहीं दिया। यह बहुत गहरी बात है। बाबा कहते हैं कि बच्चे, यह गहरा राज़ है। गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। कोई विरला ही इसको समझता है। जितना भी समझते हो, बाबा का कहना मानो और हमेशा यह याद रखो, वाह ड्रामा वाह! वाह बाबा वाह! वाह

रे मेरा भाग्य वाह! खुश रहो। यह समझो कि 'फिर भी मैं आ गया, भगवान का बना, उससे वर्सा मिलेगा, उसके साथ पार्ट बजा रहा हूँ, नयी सृष्टि की स्थापना में मैं भी निमित्त बना हूँ, कणा-दाना सेवा कर मैं भी अपना भविष्य ऊँच बना रहा हूँ।' इस प्रकार, खुश रहो और संतुष्ट रहो। इसको कहते हैं पॉजेटिव थिंकिंग। ऐसे तरीके से सोचो कि आपकी खुशी बढ़े और संतुष्टता बढ़े। क्यों? क्योंकि बिना संतुष्टता योग टिकेगा नहीं।

वाह ड्रामा वाह!

लेख : 2

ड्रामा की पृष्ठभूमि में एक बहुआयामी चिंतन

बेहद विश्व के इस रंग-मंच पर जिस महालीला का हमें दर्शन होता है उसके सभी पात्र यवनिका के पृष्ठ भाग में पहले से ही उपस्थित रहते हैं। रंग-मंच पर नियमानुसार अभिनय क्रम से जिस समय जिसकी उपस्थिति अपेक्षित होती है, उनका आगमन होता है और नियत भूमिका अदा करने के पश्चात् वे पुनः यवनिका के पृष्ठ भाग में चले जाते हैं। अनन्त काल से अभिनय की अविराम यात्रा हमारे जीवन में अनेकानेक कटु मृदु अनुभवों से हमारे प्राणों को स्पन्दित करती रहती है। घात-प्रतिघात, उत्थान-पतन, संघार-सृजन और न जाने कितनी कथा यात्रा अतीत के स्मृति प्रदेश को आन्दोलित करती रहती है। सृष्टिचक्र में होने वाली इस महालीला का निर्णायक बिन्दु कहाँ हैं? साधारण जन-मन को तो इसका पता भी कहाँ हो पाता हैं। अपनी सजी संवरी अरमानों की आस्था को लेकर मानव विकास यात्रा में गतिशील होने का पुरुषार्थ तो करता रहता है। परंतु उसके हर पदक्षेप में अदृश्य नियती की प्रबल शक्ति खड़ी रहती है, जो मानव की संकल्पित इच्छा को उसकी योजना के विपरीत जिधर चाहे उधर मोड़ देती हैं। और उसे न चाहते भी मुड़ना पड़ता है। कभी कभी ऐसा लगता है कि सफलता के सारे बिखरे सुत्र हाथ आ गये लेकिन शीघ्र ही समय की वेगवती धारा में वे सुत्र बिखर कर ऐसे बह जाते हैं कि उसके अस्तित्व का कहीं पता भी नहीं चलता है और व्यक्ति हतभ्रत सा लुटा असहाय किनारे खड़ा-खड़ा उसे देखता रहता है। मानव जीवन के प्रांगण में क्षण-प्रतिक्षण, अनेक घटनाओं का संयोग-वियोग, अनुकुल-प्रतिकुल, कटु और मृदु... अनेक अध्यायों का निर्माण होता रहता है। प्रत्येक व्यक्ति का अंतरमन अकस्मात अघटनीय घटना को आत्मसात नहीं करना चाहता है लेकिन न चाहने से कुछ भी नहीं होता हैं। पलकें पुरी तरह खुल भी नहीं पाती है कि सपना टूट जाता हैं। अशुभ

की बात तो छोड़ दें फिर भी व्यक्ति शुभ चाहते हुए भी कितना करता है और अन्ततः वो किनारा पाता है यह सबका अपना-अपना व्यक्तिगत अनुभव अवश्य होगा। जिसे नकारा नहीं जा सकता।

नियति का अर्थ

उक्त स्थिति से यह स्पष्ट होता है कि लीला-चक्र में जो कुछ हुआ था, हो रहा है और होगा... वह पूर्व नियोजित है। यह लीला या ड्रामा बना-बनाया है। यह हू-ब-हू हर पाँच हजार वर्ष में रिपीट होता रहता है। इसके परिवर्तन में व्यक्ति स्वतंत्र नहीं है। विश्व की विशाल पृष्ठभूमि पर जड़ और चेतन के अनेक संयाग और निमित्त के साथ जुड़कर जो घटना अतीत में घटी है, वर्तमान में घट रही है और भविष्य में घटेंगी... वह सब पूर्वनियोजित है अर्थात् बना-बनाया है। इसमें रत्ति भर भी रद्दोबदल की कोई गुंजाइश नहीं है। ड्रामा का यह राज़ त्रैकालिक सत्य हैं। जो होना था वही हुआ, वही हो रहा है और वही होगा। इस सत्य को प्रदर्शित करने के लिए कई शब्द है जैसे - संयोग, होनी, होनहार, प्ररब्ध, भाग्य, ड्रामा या लीला इत्यादि। इसे ही हम नियति कहते हैं। अविराम लीला निरंतर चल रही है। ज्ञान की परिपक्वता के अभाव में व्यक्ति यही कहता है कि यह हमने किया, यह मेरा परिवार है, यह मेरी संपदा है, इसे मैंने मारा, इसे मैंने बचाया और न जाने कितने व्यर्थ के दायित्व का क्षुद्र अहम अपने पर लादे रहता है। समय की गति बड़ी मृदु और बड़ी निर्मल है, उसकी राहे कहीं सम है तो कहीं विषम हैं। लेकिन पूर्व नियति की प्रक्रिया में ही सबको चलना है। भूत वर्तमान और भविष्य की सारी क्रियायें अदृश्य शक्तियों के आगे संचालित होती रहती है। जिसे दार्शनिक चिंतन की भाषा में ड्रामा या नियति कहते हैं।

अतीत की जितनी क्रियायें सम्पादित हो गई या वर्तमान की महालीला में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रही हैं या भविष्य में होनेवाली क्रिया के प्रति आस्था और

अनास्था का सेतु निर्मित करती है वे सभी पूर्व नियत था, है और रहेगा। नियति से अलग कुछ भी नहीं है। अध्यात्म के धनी साधक सहज भाव से कर्ता नहीं लेकिन साक्षी भाव से घटना प्रवाह को एकरस द्रष्टि से निहारता रहता हैं। अणुं-अणुं में हो रहे प्रकम्पन पूर्व नियोजित हैं। जीवन-मृत्यु की क्रिडाएँ नियत हैं। भाव और संकल्प के रूप में जो प्रकम्पन उठते हैं वह भी पूर्व नियत हैं। तीनों कालों में, जड़ या चेतन में जो स्थिति बनती हैं, जो भी परिवर्तन होता हैं चाहे वह अनुकुल या प्रतिकुल, निमित्त एवं साधन से हो रहा है, वह होकर ही रहता है। क्योंकि यह सबकुछ नियति की क्रमबद्ध व्यवस्था हैं। चर्मचक्षुओं से देखने पर ऐसा लगता है कि हर्ष-विशाद, हानि-लाभ, संयोग-वियोग आदि घटनाओं का घटना क्रियामान परिस्थिति के प्रभाव से हो रहा है। लेकिन ज्ञान-ज्योति से दीप्त साधक यह अनुभव करता है कि सभी पूर्व नियोजित है। हाँ, नियति के अनुरूप व्यक्ति इधर या उधर निमित्त हो सकता है। फिर प्रश्न उठता है यदि सर्व पूर्व नियोजित है, जो होना है वही होगा तो व्यक्ति करने में स्वतंत्र नहीं है? क्या यह सिद्धांत जीवन में कर्म-योग की तेजस्विता को नष्ट नहीं कर देगा? क्या व्यक्ति इस चिंतन से आलसी नहीं हो जायेगा? आदि आदि बातों पर आइये तटस्थ दृष्टि से इसका चिंतन करें।

सब पूर्व नियोजित है

होनी प्रबल है। अनेको प्रमाण बेहद के ड्रामा में आपको देखने को मिलेंगे। अगर सर्वज्ञ परमात्मा की बात छोड़ भी दी जायें तो भी ज्योतिष शास्त्र ऐसे अनेक अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि भावी प्रबल हैं। प्रायः लोगों का अनुभव रहा है कि उन्हें आगे होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास स्वप्नावस्था में हो जाया करता है। घटना घटित हो जाने के बाद लोग कहते हैं इसकी सूचना मुझे पहले से ही थी। प्रश्न है - यह कैसे संभव है? स्वप्न में चलचित्र की तरह अन-अस्तित्व का अस्तित्व में उभर आना, कार्य और कारण की क्रमबद्ध श्रृंखला-सूत्र नियति ही है। योगियों के

जीवन में ध्यान के क्षणों में शुद्ध अनुभूति में जो भी, जब भी भावी कार्य प्रतिबिम्बित हुआ है वह आगे चलकर निश्चित समय पर किंचित हेरफेर के बिना ही सम्पादित हुआ हैं। वर्तमान में नेस्तरदुम्स की भविष्यवाणी का अध्ययन यह प्रमाण देता है कि 400 साल पहले ही उसने आज होने वाली घटना को देख लिया था। यह पूर्व नियोजित नियति नहीं है तो क्या है? खैर छोड़िये इसके दूसरे पहलु को देखें।

इच्छा, पुरुषार्थ और प्रमाण - यह नियति का अंग है। यदि कोई साधक पक्ष-मुक्त होकर जागते हुए अपने जीवन और आसपास के जीवन में घटनाओं का अध्ययन और अवलोकर करे तो उसे पता चल जायेगा कि कैसे अद्रश्य रहस्यामयी नियति अपने आपमें शास्वत सत्य सिद्धांत है फिर प्रश्न उठता है कि व्यक्ति क्या कर्म और पुरुषार्थ में स्वतंत्र नहीं है? एक क्रुर व्यक्ति अचानक छोटी-सी घटना से करुणा की मूर्ति बन जाता है। भयंकर क्रोधी करुणा नहीं क्षमा का अवतार बन जाता है। कुख्यात हत्यारा सज्जनता की साकार प्रतिमूर्ति बन जाता है। तब नियति के सच्चाई और उसकी महिमामय गौरव का पता उस व्यक्ति को चलता है। जीवन बदलना हो तो क्षण में बदल जाता है, वरना वर्षों लग जाते हैं। बिना पुरुषार्थ के इतना बड़ा परिवर्तन यह नियति नहीं तो और क्या? श्रेष्ठ और शुभ का इतना बड़ा परिवर्तन अपने आप हो जाना यह नियती नहीं तो क्या पुरुषार्थ हैं? इसलिए नियति ही सर्वोपरि है।

नियन्ता - नियति के शीर्ष पर

सृष्टि के महान परिवर्तन में सब कुछ नियति ही नहीं है लेकिन नियति के भी शीर्ष पर नियन्ता बैठा है। वह परम-आत्मा जिसे हम परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं। वही नियन्ता है। सृष्टि की नियति में वह कोई अलग से बदलाहट नहीं करता है लेकिन वह नियति की पकड़ से सदा-सर्वदा मुक्त है। इस महालीला में जो संयोग से दुःख सुख की घटनाएँ होती है वह मनुष्यात्मा और प्रकृति की बनी-

बनायी क्रमबद्ध श्रृंखला है। लेकिन नियन्ता नियति की सभी गतिविधि को देखता और जानता है परंतु उसके फल और परिणाम से सदा मुक्त अपना परम विशिष्ट स्थान रखता है। वह इस सृष्टि में हो रही महालीला में बहुत काल तक मनुष्य के सुख शान्तिपूर्ण जीवन की नियति बनाने के निमित्त अपना पार्ट बजाने आता है। उनका यह कहना कि मैं भी ड्रामा के मीठे बंधन में बँधा हुआ हूँ यह उनकी परम निर्माणता है और उनका यह कहना मनुष्यात्माओं के साथ सर्व संबंध जोड़ कर सर्व प्राप्ति करने में सहायक हैं। अन्यथा वह तो हमारी तरह कर्म का फल नहीं लेता, पार्ट या नियति के अधीन शरीर से कभी बंधता नहीं है। जब चाहे आता है, जब चाहे जाता है, परम स्वतंत्र है। जबकि कोई भी व्यक्ति नियति से स्वतंत्र नहीं है। इस स्थान और समय की सीमा से पार जहाँ नियति की कोई पग-ध्वनि भी सुनाई नहीं देती - उस शान्तिधाम में वह सदा मुक्त रहता है। नियति के कल्याण और अकल्याण से दूर वह सदा कल्याणकारी नियति का पार्ट बजाता है और आधाकल्प तक सृष्टि को कल्यण की नियति, सुख की नियति बनाने का पार्ट सदा बंधनमुक्त होकर बनाने के निमित्त बनता है। इसलिए भी हम उसे नियन्ता कहते हैं। जगत-नियन्ता परमपिता शिव ने हमें बताया है कि हे आत्माएँ! प्रत्येक मनुष्यात्मा को उसके पूरे जन्मों का तीन चौथाई भाग उसके सुख की ही नियति है। यह ड्रामा अल्पज्ञता के कारण सुख और दुःख का अनुभव कराता है लेकिन सत्य तो यही है कि यह अन्ततः कल्याणकारी नियति से जुड़ा है।

नियति के चिंतन से लाभ

एकांकी रूप से वर्तमान से हम नियति तथा नियन्ता दोनों के चिंतन से जुड़े हैं। नियति की समझ व्यक्ति को आलसी नहीं कर्मशील बनाती है। क्यों? क्योंकि नियति का चिंतन ही व्यक्ति को सभी प्रकार के दुश्चिंताओं से मुक्त कर देता है। कभी भी किसी के प्रति ईर्ष्या या नफरत का भाव नहीं पनपता। नियति के चिंतन से

व्यक्ति आलसी नहीं बनता लेकिन आलस्य, व्यक्ति की नियति है, कर्मशील होना व्यक्ति की नियति है। नियति और नियन्ता का यह संतुलन चिंतन मानव-मन को निर्भय और निर्द्वन्द्व बनाता है। नियति का भाव या यह सत्य चिंतन साधक को समभाव के उच्चतम शिखर पर चढ़ा देता है। चिंतन की इस पृष्ठभूमि में साधक को दिव्यतम् जीवन की उपलब्धियों से वह प्रज्ञा-रश्मियाँ प्रस्फुटित होती है, जो उन्हें शुभाशुभ की परिघियों से बाहर ले जाता है। नियति का यह चिंतन साधक को राग-द्वेष की व्याकुलता से विचलित नहीं करता अपितु विघ्न बाधाओं की जितनी भी पर्वत श्रेणियाँ उपस्थित होती है वह विराट समत्व भाव में समाहित हो जाती है। नियति और नियन्ता का यह चिंतन मानव-मन को अनेक कुण्ठाओं, द्वन्द्व और तनाव से मुक्त कर 'मैं' के अहम् भाव या कर्ता भाव त्यागने का पावन सन्देश देती है। होनी ही होगी, अनहोनी न कभी हुई है, न कभी होगी। शांतचित्त से कर्म करना है। यदि उसे समय पर होना है तो होकर रहेगा अन्यथा नहीं। अनुकुल और प्रतिकुल दोनों ही फल को नियन्ता को समर्पित कर देना चाहिए। इसलिए नियतिवाद का सिद्धांत मानव-मन को निष्कलुष ज्ञान की तेजोमय आभा से हर क्षण दीप्त रहने का मंगल सन्देश देता है। यह चिंतन वह प्रशांत सागर है जहाँ विकारों का हाहाकार करता तूफान शांत हो जाता है और एक परम शांत स्निग्ध वातावरण की मंद सुगंध में आत्मा लीन हो जाती है। नियति और नियंता के इस रहस्य को सकारात्मक पहलुओं से जानकर एकरस स्थिति को उपलब्ध कर लेना यह भी नियति है। आप समझ सकते हैं तो समझिये अन्यथा यह भी आपकी नियति है।

वाह ड्रामा वाह!

लेख : 3

साक्षी भाव

जीवन का लक्ष्य आनन्द की प्राप्ति है और सभी उसके लिए प्रयत्नशील है। लेकिन आनन्द के लिए निरंतर चेष्टारत रहने पर भी आज मानवमात्र दुःखी एवम् अशांत है। तो अवश्य मानना पड़ेगा कि मनुष्य का जीवन के प्रति दृष्टिकोण भ्रामक और गलत हो गया है। आनन्द की प्राप्ति के लिए हमने जो रास्ता पकड़ा है, उस पर आगे बढ़ने जाने से यदि निरंतर दुःख ही मिले तो रुक कर सोचने की आवश्यकता होगी कि कहीं हमने गलत रास्ता तो नहीं पकड़ लिया है। वास्तव में आज हमारा जीवन के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण नहीं है।

सृष्टि एक विराट रंगमंच है जहाँ विविधतापूर्ण मनोरंजक नाटक चल रहा है। नाटक का आनन्द लेने के लिए साक्षी का भाव अत्यावश्यक है। जिससे हम तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं वह 'संसार' बन जाता है और जिससे हम साक्षी का भाव रखते हैं वह 'नाटक' हो जाता है। इतना ही तो अंतर है संसार और नाटक में। यह अंतर मूलतः दृष्टिकोण का है। पीलिया के रोगी को सब कुछ पीला ही दिखाई पड़ता है और सावन के अन्धे को हरा ही हरा। नेत्रों पर काला चश्मा होने पर वही वस्तु काली दिखलायी पड़ती है और लाल चश्मा होने पर लाल। तादात्म्य तथा आसक्ति की मनोवृत्ति होने पर संसार दुःखदायक, जटिल और जंजाल मालूम पड़ता है और साक्षी तथा अनासक्ति की मनोवृत्ति होने पर आनंददायक नाटक। अतः परिस्थिति नहीं स्व-स्थिति को बदलने का पुरुषार्थ करना है। साक्षी की स्थिति में स्थित व्यक्ति के लिए यह संसार नाटक बन जाता है। वह अनेकानेक आत्माओं के विविध पार्ट को देखकर सदा हर्षित होता रहता है। मनोरंजन के लिए उसे किसी नाट्यशाला या सिनेमा हॉल में जाने की आवश्यकता नहीं रहता। उसके सम्मुख सदा-सर्वदा मनोरम-मनोरंजक नाटक चलता रहता है। शत्रु-मित्र, स्वजन-

परिजन के विभिन्न खेल को देखकर वह हमेशा हल्का और प्रफुल्लित रहता है। इसके विपरीत यदि तादात्म्य की मनोवृत्ति हो तो नाटक भी संसार - जैसे फँसाने वाला बन सकता है। नाटक के कल्पित पात्रों से तादात्म्य स्थापित कर लेने के कारण कितने लोग सिनेमा हॉल में बैठकर आँसु बहाते है तथा भारी हृदय से बाहर निकलते हैं।

नाटक के पात्र को सदा आंतरिक अनुभूति रहती है कि वह जो अभिनय कर रहा है उससे अलग है। परिणाम स्वरूप वह सुख-दुःख के खेल से अनासक्त रहता है तथा अभिनय का आनंद लेता है। वस्तुतः हम आत्मायें भी इस सृष्टिनाटक से परे ब्रह्मलोक की रहनेवाली है तथा ज्योतिबिन्दु स्वरूप है। इस सृष्टिनाटक में हम शरीर धारण कर खेल, खेल रही है लेकिन यथार्थतः हम शरीर नहीं वरन् उससे न्यारी आत्मा है। हम आत्मायें इस विराट सृष्टिनाटक में भाँति-भाँति का चोला धारण कर विविधितापूर्ण हार-जीत का मनोरंजक खेल, खेल रही है। परमधाम से इस सृष्टि-नाटक में हम खेल का आनंद लेने के लिए आये हैं न कि इसमें फँसकर दुःखी व अशान्त होने के लिए। खेल में हम शत्रु-मित्र, पिता-पुत्र, पति-पत्नी का या अन्य कोई भी अभिनय कर सकते हैं लेकिन आत्मा रूप में हम सभी निराकार परमपिता परमात्मा शिव की संतान होने के कारण भाई-भाई ही है। अतः नाटक के अभिनय का कोई प्रभाव हम आत्माओं के मूल संबंध पर नहीं पड़ना चाहिए। यही जीवन का यथार्थ दृष्टिकोण है जिसे भूलकर मनुष्य का जीवन इतना कटुतापूर्ण, विपत्ति तथा दुःख-अशांतिमय बन गया है।

साक्षी अवस्था ही शांति की जननी है

किसी भी सिद्धांत की सत्यता की कसौटी व्यवहारिक जीवन में उसक परिणाम है। आसक्तिपूर्ण मनुष्य का जीवन सदा चिंतित, तनावग्रस्त तथा उलझनपूर्ण होता है। इसके विपरीत, साक्षीभाव वाला मनुष्य सदा निश्चिंत, हल्का और हर्षितमुख

रहता है। कठिन से कठिन परिस्थिति तथा विपत्ति में भी वह चलायमान नहीं होता। उन्हें भी विविधतापूर्ण नाटक का एक अंग मानकर वह अचल-अड़ोल बना रहता है। यदि कोई आपका अपमान करें और आप साक्षी होकर देखें कि यह आत्मा अज्ञानवश उल्टा कार्य कर रही है जिसका दुःखद परिणाम इसे भोगना पड़ेगा तो जो अपमान पहले आपके हृदय में तीर की तरह चुभ जाता, वह अब आपको तनिक भी स्पर्श नहीं करेगा। उस अज्ञानी आत्मा के प्रति आपके हृदय में क्रोध की जगह करुणा का भाव होगा। अतः जो कटु वाक्य आपकी कई दिनों की नींद और आराम को हराम कर देते, वे अब कुछ भी प्रभाव नहीं डाल पायेंगे। आपकी आत्मा कमल पुष्प सदृश्य मान-अपमान, निंदा-स्तुति, सुख-दुःख से सदा ऊपर रहकर आनंदित रहेगी।

'यह अनादि-निश्चित सृष्टि-नाटक इतना कल्याणकारी, युक्तियुक्त और न्यायपूर्ण बना हुआ है कि कोई किसी को अकारण दुःख नहीं देता। जो भी सुख-दुःख हमें मिलता है वह अपने पिछले कर्मों के हिसाब-किताब के कारण।' अतः साक्षी वृत्तिवाला मनुष्य कष्ट और दुःख को अपने पूर्व कर्मों का फल मानकर प्रसन्न होता है कि इनके द्वारा हमारे विकर्मों का खाता समाप्त हो रहा है तथा हम कर्मातीत बनते जा रहे हैं। साथ ही सुखद भविष्य के लिए वह श्रेष्ठ कर्म करने का पुरुषार्थ भी करता रहता है। बिमारियों को वह अपना कर्मभोग मानकर साहसपूर्वक तथा प्रसन्नतापूर्वक सहन करता है और दूसरों के लिए एक उच्च आदर्श प्रस्तुत करता है। कठिन रोगों में भी वह आनंदपूर्वक, पतितपावन परमपिता परमात्मा शिव की पावन स्मृति में रहता है। उससे रोग भी उसे कष्ट नहीं दे पाते तथा उसके विकर्मों का खाता भी शीघ्र समाप्त हो जाता है।

कठिनाईयाँ हमारी मनोवृत्ति की सूचक है। समुचित मनोवृत्ति वाला मनुष्य पर्वत सद्रश्य बाधाओं को भी राई बना देता है और गलत मनोवृत्ति होने पर राई भी रास्ते में पर्वत बनकर खड़ी हो जाती है। वास्तव में कठिनाईयाँ हमें सहनशीलता,

निर्भयता तथा हर्षितमुखता का पाठ पढ़ाने के लिए आती है। कठिनाईयों को सहर्ष सहकर ही हमारी आत्मा अष्ट शक्ति सम्पन्न तथा सर्वगुण सम्पन्न बनती है। लेकिन जो कठिनाईयों से गभरा जाता है वह सदा के लिए निर्बल बन जाता है। साक्षी द्रष्टिवाला मनुष्य कठिनाईयों का सदा स्वागत करता है तथा रास्ते की चट्टानों को भी स्वर्ग जाने की सीढ़ी बना लेता है। तूफान उसके लिए दिव्य गुणों के तोहफे लाते हैं तथा लहरों की चपेटों को आनंदपूर्वक सहन कर वह ठिक्कर से ठाकुर बन जाता है।

'साक्षी' - इन दो अक्षरों में धर्म तथा आनंद का रहस्य छिपा हुआ है। जिसने साक्षीभाव को जीवन में ग्रहण कर लिया, वही सच्चा धार्मिक है तथा उसीका जीवन पूर्ण आनंदमय है। परमात्मा आनंद के सागर है क्योंकि वे सदा साक्षी है। सृष्टि के उत्थान-पतन के खेल को वे साक्षी बन देखते रहते हैं क्योंकि ज्ञान-सागर में सृष्टि-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का यथार्थ ज्ञान है। मनुष्यात्मायें भी सतयुग-त्रेता में आत्म-अभिमानी होने के कारण सुखी है और द्वापर-कलियुग में साक्षीभाव को खो दिया और छोटी-मोटी बातों में 'क्या', 'क्यों', 'कैसे' आदि प्रश्नों की झड़ी लगा दी। फलस्वरूप वे घोर दुःखी-अशान्त हो गई। ऐसे समय में ज्ञानसागर परमात्मा हमें फिर से अनादि-निश्चित ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर पूर्ण साक्षी बना रहे हैं। सृष्टिनाटक को तथा अपने संकल्पों-विकल्पों को साक्षी होकर देखने वाला मनुष्य ही सच्चा योगी है।

वाह ड्रामा वाह!

आज जब वतन में गई तो जैसे ही हम पहुंची तो बापदादा सामने थे ही, लेकिन क्या देखा कि ब्रह्मा बाबा के गले में ढेर की ढेर मालायें पड़ी हुई थी। फिर बाबा ने कहा-यह माला उतार कर देखो। माला उतारी तो कोई बड़ी माला थी, कोई छोटी। हमने कहा-बाबा, इसका रहस्य क्या है? बाबा बोले- 'बच्ची, यह सभी के उलहनों की माला है। क्योंकि बच्चे जब एकान्त में बैठते हैं तो बाबा को स्नेह में उलाहना ही देते हैं। हरेक बच्चे ने बाप को उलाहनों की माला जरूर पहनाई है।' बाबा ने कहा - 'बच्चों को ड्रामा भल याद है, लेकिन प्यारे ते प्यारी चीज तो जरूर है। तो अचानक ड्रामा को वन्डरफुल देख हरेक बच्चा दिल ही दिल में उलाहना देते रहते हैं। यूं तो ज्ञान बच्चों को है, लेकिन ज्ञान के साथ प्रेम का स्नेह भी है। इसलिए इन उलहनों को गलत नहीं कहेंगे।'

आज जब वतन में गई तो जाते ही क्या देखा कि शिवबाबा और अपना ब्रह्मा बाबा - दोनों आपस में बैठे थे और सामने जैसे एक छोटी पहाड़ी बनी हुई थी। वह क्या थी? क्या देखा कि ढेर के ढेर पत्र थे। इतने पत्र थे, इतने पत्र थे-जैसे कि पहाडी बन गई थी। जैसे ही हम पहुंची तो ब्रह्मा बाबा ने हमको देखा और कहा कि- ईशू कहाँ है। इतने पत्र हो गये हैं। मैंने कहा - बाबा, मैं आई हूँ। बाबा ने कहा - ईशू बच्ची को भी साथ लाई हो ना! देखना ईशू बच्ची, मैं दो मिनट में इतने सारे पत्र पूरा कर देता हूँ। शिव बाबा तो साक्षी होकर मुस्करा रहे थे। इतने में देखा कि ईशू बहन भी वहाँ इमर्ज हो गई। ईशू का चेहरा बिल्कुल ही शान्त था। बाबा ने कहा- 'बच्ची, क्या सोच रही हो? आज तो पत्र का जवाब देना है।' उसी समय जैसे साकार वतन का संस्कार पूर्ण रीति इमर्ज था। मम्मा खड़ी होकर देख रही थी। इतने में ही शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा को कहा-आप कहाँ हो? वतन में बैठे हो? फिर एक सेकेण्ड में ही रूप बदल गया। बाबा ने कुछ कहा नहीं, एकदम डेड साइलेन्स हो गये। इतने में बाबा ने मुझे कहा कि-बच्ची, यह पत्र खोलकर देखो।

मैंने कहा -बाबा, पत्र तो ढेर हैं। बाबा ने कहा- बच्ची, इसमें तो एक सेकेण्ड लगेगा, क्योंकि सभी में एक ही बात है। इसके बाद बाबा ने सुनाया कि - 'सभी पत्रों में बच्चों के उलाहने ही हैं। अब देखना, बाबा बच्चों को रेस्पाण्ड करते हैं। देखना, एक सेकेण्ड में मैं सभी को जवाब दे देता हूँ।' फिर बाबा ने लाल अक्षरों में यहाँ माफिक ही पत्र लिखा। पत्र में लिखा था -

'ब्राह्मण कुल भूषण, स्वदर्शनचक्रधारी, नूरे रत्नों बच्चों प्रति समाचार यह है कि सभी बच्चों के उलाहनों के पत्र सूक्ष्मवतन में पाये। रेस्पान्ड में बापदादा बच्चों को कह रहे हैं कि ड्रामा की भावी के बन्धन में सर्व आत्मायें बंधी हुई हैं, सभी पार्ट बजा रही हैं। उसी ड्रामा के मीठे-मीठे बन्धन अनुसार आज अव्यक्त वतन में पार्ट बजा रहा हूँ। सभी बच्चों को दिल व जान, सिक व प्रेम से अव्यक्त रूप से याद-प्यार बहुत-बहुत-बहुत स्वीकार हो। जैसे बाप की स्थिति है वैसे बच्चों को स्थिति रखनी है।'

फिर हमने बाबा को कहा कि-बाबा, सभी बच्चे कहते कि हैं अगर हम सभी सामने होते तो बाबा को रोक लेते। तो बाबा ने कहा- बच्ची, रोक लेते तो यह ड्रामा कैसे होता। फिर हमने कहा-बाबा, यह सीन जैसे अब तो आर्टीफिशियल लग रही है, रीयल ड्रामा नहीं लगता। बाबा ने कहा कि- 'बच्ची, यह स्नेह की मीठी तार जुटी होने के कारण तुमको अन्त तक यह वण्डर ही देखने में आयेगा और अब तक भी तो सम्बन्ध है। भल साकार रथ गया है लेकिन ब्रह्मा के रूप में अव्यक्त पार्ट बजा रहे हैं।' बाबा ने कहा- 'मैं भी कभी साकार वतन में चला जाता हूँ। फिर शिव बाबा पूछते हैं कहाँ बैठे हो। यहाँ बैठे जैसे साकार वतन में, यह मकान बन रहा है, वहाँ तक जाता हूँ।' मैंने कहा-बाबा, कभी-कभी लगता है कि जैसे बाबा चक्र लगा रहे हैं। बाबा ने कहा- 'मैं चक्कर लगाता हूँ' तो वह भासना तो बच्चों को आयेगी ही। मतलब तो रूह रूहान हो रही थी।

फिर बाबा ने एक दृश्य दिखाया। जैसे एक चक्र के अन्दर बहुत चक्र दिखाई पड़े। चक्र का ढंग ऐसे बनाया था कि उस चक्र से निकलने के 4-5 रास्ते

दिखाई पड़े, परन्तु निकल न पाये। सिर्फ ब्रह्मा बाबा का यह दिखाया कि चक्र में चलते-चलते प्वाइन्ट (जीरो) पर खड़े हो गये, निकले नहीं। बाबा ने समझाया कि - 'यह है ड्रामा का बन्धन। ब्रह्मा भी ड्रामा के सर्कल (चक्र) से निकल नहीं सकते। ड्रामा के बन्धन से कोई भी निकल नहीं सकता। उस जीरो प्वाइन्ट तक पहुंच गये, लेकिन फिर भी ड्रामा का मीठा बन्धन है।' इस मीठे बन्धन को खेल के रूप में दिखाया। फिर मिश्री बादामी खिलाई। छुट्टी दी, बोला- जाओ बच्ची, टाइम हो गया है।

आज जब वतन में गई तो कोई भी नज़र नहीं आ रहा था। दूर से कोई जैसे आवाज आ रही थी - ऐसे लग रहा था जैसे कोई खास कार्य हो रहा हो। मैं पहले तो कुछ रूकी, लेकिन फिर आगे चलकर क्या देखा कि शिवबाबा, ब्रह्मा बाबा, मम्मा और विश्वकिशोर-चारों ही आपस में बातचीत कर रहे थे और बहुत प्लैन उनके आगे रखे थे, जिसमें कुछ निशान आदि दिखाई दे रहे थे। मम्मा सभी बच्चों का हालचाल पूछ रही थी। मैंने कहा- मम्मा, आपने बाबा को भी बुला लिया। मम्मा बोली - मम्मा भी नहीं चाहती कि बच्चों से मात-पिता का साकारी साथ छूटे, लेकिन ड्रामा। फिर मैंने बाबा से पूछा - बाबा, यह प्लैन्स आदि क्या हैं? बाबा बोले - बच्ची, जैसे मार्शल के पास सारे नक्शे रहते हैं कि कहाँ-कहाँ क्या-क्या हो रहा है, आगे क्या होना है; वैसे यह भी स्थापना के कार्य की ही बातचीत चल रही थी, जो फिर सुनायेंगे।

(18.01.1969)

अगर ब्रह्मा बाबा के साथ स्नेह है तो स्नेह की निशानी क्या है? स्नेह यह नहीं कि दो आंसू बहा दिये। परन्तु स्नेह उसको कहा जाता है - जिस चीज़ से उसका (ब्रह्मा बाबा का) स्नेह था उससे आपका हो। उसका स्नेह था सर्विस से। पिछाड़ी में भी सर्विस का सबूत दिया ना। तो स्नेह कहा जाता है - सर्विस से प्यार, उसकी आज्ञाओं से प्यार। बाकी कोई भी ऐसा न समझे कि ना मालूम बिना हम

बच्चों की छुट्टी के साकार बाबा को वतन में क्यों बुलाया। लेकिन छुट्टी दिलाते तो आप देते? इसीलिए ड्रामा में पहले भी देखा कि जो भी गये छुट्टी लेकर नहीं गये। इसलिए यह समझो कि ब्राह्मण कुल की ड्रामा में यह रसम है। जो ड्रामा में नूंधी हुई है वह रसम चली। यूँ तो समझते हैं कि आप सभी का बहुत प्यार साकार के साथ था। था नहीं है, है भी। प्यार नहीं होता तो इस सभा में कैसे होते। साकार में फॉलो करने के लिए इनका ही तन था, तो प्यार क्यों नहीं होगा। स्नेह था और है भी। यह बाप-बच्चों की निशानी है। इससे साकार भी वतन में मुस्करा रहे हैं। बच्चों का स्नेह है तो क्यों मेरा नहीं। लेकिन वह जानते हैं कि ड्रामा में जो भी पार्ट होता है वह कल्याणकारी है। वह विचलित नहीं होते। वह तो सम्पूर्ण अचल, अडोल, स्थिर था और है भी। लेकिन आप बच्चों से हजार गुणा स्नेह उनमें जास्ती है। अब स्नेह का सबूत देना है। यह भी एक छिपने का खेल है। तो विचार सागर मंथन करो, हलचल का मंथन न करो। जो शक्ति ली है उनको प्रत्यक्ष में लाओ। 'भारत माता शक्ति अवतार' - अन्त का यही नारा है। 'सन शोज़ फादर'। ड्रामा की नूंध करायेगी। साकार बाबा ने कहा मैं बच्चों से मिलन मनाने आऊंगा। अगर आज आ जाता तो बच्चे आंसू बहा देते।

(21.01.1969)

बापदादा ने कहा कि यह खेल बाप ने प्रैक्टिकल में रचा है। जिन बच्चों की जीवन रूपी नईया बाप के साथ में होगी वह हिलेगी नहीं। अभी तुम परीक्षाओं रूपी सागर के बीच में चल रहे हो। तो जिनका कनेक्शन अर्थात् जिनका हाथ बापदादा के हाथ में होगा उनकी यह जीवन रूपी नैया न हिलेगी न डूबेगी। तुम बच्चे इसको ड्रामा का खेल समझकर चलेंगे तो डगमग नहीं होंगे। और जिसका बुद्धि रूपी हाथ -साथ ढीला होगा वह डोलते रहेंगे। इसलिए बच्चों को बुद्धि रूपी हाथ मजबूत रखने का खास ध्यान रखना है।

(22.01.1969)

आज मैं आप सभी बच्चों से अव्यक्त रूप में मिलने आया हूँ। जो मेरे बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित होंगे वही इसको समझ सकेंगे। आप सभी बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित हो किसको देख रहे हो? व्यक्त रूप में या अव्यक्त रूप में? आप व्यक्त हो या अव्यक्त? अगर व्यक्त में देखेंगे तो बाप को नहीं देख सकेंगे। आज अव्यक्त वतन से मुलाकात करने आया हूँ। अव्यक्त वतन में आवाज नहीं परन्तु यहाँ आवाज में आया हूँ। आप सभी बच्चों के अन्दर में कौन-सा संकल्प चल रहा है? अभी यह अव्यक्त मुलाकात है। जैसे कल्प पहले मिसल बच्चों से रूहरूहान चल रही है। रूह-रूहान करने मीठे-मीठे बाबा ने आप सभी बच्चों से मिलने भेजा है। जो थे वह अब भी हैं। दो तीन दिन पहले मीठे-मीठे बाबा से रूह-रूहान चल रही थी। रूह-रूहान क्या है, मालूम है? बाबा ने बोला- वतन का अनुभव करने के लिए तैयार हो? क्या जवाब दिया होगा? यही कहा कि जो बाप की आज्ञा- जैसे चलायेंगे, जहाँ बिठायेंगे जिस रूप में बिठायेंगे। बच्चों के अन्दर यही संकल्प होगा कि बापदादा ने छुट्टी क्यों नहीं ली? बाबा को भी यह कहा। बाबा ने कहा-अगर सभी बच्चों को बिठाकर छुट्टी दिलाऊं तो छुट्टी देंगे? आप भी बच्चों को देख, सर्विस को देख बच्चों के स्नेह में आ जायेंगे। इसलिए जो बाप ने कराया वही ड्रामा की भावी कहेंगे। व्यक्त रूप में नहीं, तो अव्यक्त रूप से मुलाकात कर ही रहे हैं। सर्विस की वृद्धि वैसे ही है, बच्चों की याद वैसे ही है। लेकिन अन्तर यह है कि वह व्यक्त में अव्यक्त था और यह अव्यक्त ही है।

(विदाई के समय)

यह तो आप बच्चे जानते हो कि जो भी ड्रामा का पार्ट है इसमें कोई गुप्त रहस्य भरा हुआ है। क्या रहस्य भरा हुआ है वह समय प्रति समय सुनाते जायेंगे। अब तो आपका वही यादगार जो आकाश में है, दुनिया वाले इन आंखों से देखेंगे कि यह धरती के सितारे किसकी श्रीमत से चल रहे हैं। बाबा ने कहा है - ज्यादा समय वहाँ नहीं बैठना।

(23.01.1969)

वैसे तो समर्पण हो ही लेकिन अब समर्पण की स्टेज ऊंची हो गई है। समर्पण उसको कहा जाता है जो श्वांसो-श्वाँस स्मृति में रहे। एक भी श्वाँस विस्मृति का न हो। हर श्वाँस में स्मृति रहे और ऐसे जो होंगे उनकी निशानी क्या है? उनके चेहरे पर क्या नजर आयेगा? क्या उनके मुख पर होगा, मालूम है? (हर्षितमुख) हर्षितमुखता के सिवाए और भी कुछ होगा? जो जितना सहनशील होगा उनमें उतनी शक्ति बढ़ेगी। जो श्वांसों श्वाँस स्मृति में रहता होगा उसमें सहनशीलता का गुण जरूर होगा और सहनशील होने के कारण एक तो हर्षित होगा और दुसरा शक्ति दिखाई देगी। उनके चेहरे पर निर्बलता नहीं। यह जो कभी-कभी मुख से निकलता है, कैसे करें, क्या होगा.....। यह जो शब्द निर्बलता के हैं, जो नहीं निकलनें चाहिए। जब मन में आता है तो मुख पर आता है। परन्तु मन में नहीं आना चाहिए। मनमनाभव, मध्याजी भव। मनमनाभव का अर्थ बहुत गुह्य है। जैसे ड्रामा का सेकेण्ड बाई सेकेण्ड जिस रीति से, जैसा चलता है, उसी के साथ-साथ मन की स्थिति ऐसे ही ड्रामा की पटरी पर सीधी चलती रहे, जरा भी हिले नहीं। चाहे संकल्प से, चाहे वाणी से। ऐसी अवस्था हो। ड्रामा की पटरी पर चल रहे हो। परन्तु कभी-कभी रुक जाते हो। मुख कभी हिल जाता है, मन की स्थिति हिलती है - फिर आप पकड़ते हो। यह भी जैसे एक दाग हो जाता है।

फिर भी एक बात अब तक भी कुछ वाणी तक आई है, प्रैक्टिकल में नहीं आई है। कौन सी बात वाणी तक आई है, प्रैक्टिकल नहीं? यही ड्रामा की ढाल जो सुनाई।

(25.01.1969)

अभी सभी के दिल में यही संकल्प है कि अब जल्दी-जल्दी ड्रामा की सीन चलकर खत्म हो। लेकिन जल्दी होगी? हो सकती है? होगी या हो सकती है? भावी जो बनी हुई है-वह तो बनी हुई बनी ही रहेगी। लेकिन बनी हुई भावी में यह इतना नज़र आता है कि अगर कल्प पहले माफिक संकल्प आता है तो संकल्प के

साथ-साथ अवश्य पहले भी पुरूषार्थ तीव्र किया होगा, तब तो यह भी संकल्प आता है कि ड्रामा का सीन जल्दी पूरा कर सभी अव्यक्तवतन वासी बन जाएं। बनना तो है।

कई बच्चों के मन में यह भी प्रश्न है कि-ना मालूम जो बापदादा कहते थे कि सभी को साथ में ले जायेंगे, अब वह तो चले गये। लेकिन वह चले गये हैं? मुक्तिधाम में जा नहीं सकते - सिवाए बारात वा बच्चों के। बारात के बिगर अकेले जा सकते हैं? बारात तैयार है? यही सुना है अब तक कि बारात के साथ ही जायेंगे। जब बारात ही सज़ रही है तो अकेले कैसे जायेंगे। अभी तो सूक्ष्मवतन में ही अव्यक्त रूप से स्थापना का कार्य चलता रहेगा। जब तक स्थापना का कार्य समाप्त नहीं हुआ है तब तक बिना कार्य सफल किये हुए घर नहीं लौटेंगे। साथ ही चलेंगे और फिर चलने के बाद क्या करेंगे? मालूम है, क्या करेंगे? साथ चलेंगे और साथ रहेंगे। और फिर साथ-साथ ही सृष्टि पर आयेंगे। आप बच्चों का जो गीत है-कभी भी हाथ और साथ न छूटे, तो बच्चों का भी वायदा है तो बाप का भी वायदा है। बाप अपने वायदे से बदल नहीं सकते। और भी कोई प्रश्न है? यूं तो समय प्रति समय सब स्पष्ट होता ही जायेगा। कईयों के मन में यह भी है ना कि-ना मालूम जन्म होगा वा क्या होगा? जन्म होगा? जैसे आप की मम्मा का जन्म हुआ वैसे होगा? आप बच्चों का विवेक क्या कहता है? ड्रामा की भावी को देख सकते हो? थोड़ा-थोड़ा देख सकते हो? जब आप लोग सबको कहते हो कि-हम त्रिकालदर्शी बाप के बच्चे हैं तो आने वाले काल को नहीं जानते हो? आपके मन के विवेक अनुसार क्या होना चाहिए? अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर 'हाँ' वा 'नाँ' कहो-तो जवाब निकल आयेगा। (इस रीति से बापदादा ने दो चार से पूछा) बहुत करके सभी का यही विचार था कि नहीं होगा। आज ही उत्तर चाहते हो या बाद में ! हलचल तो नहीं मच रही है। यह भी एक खेल रचा जाता है। छोटे-छोटे बच्चे तालाब में पत्थर मारकर उनकी लहरों से खेलते हैं। तो यह भी एक खेल है। बाप तुम सभी के विचार सागर में प्रश्नो के पत्थर फेंक कर तुम्हारे बुद्धि रूपी सागर

में लहर उत्पन्न कर रहे हैं। उन्हीं लहरों का खेल बापदादा देख रहे हैं। अभी आप सबके साथ ही अव्यक्त रूप से स्थापना के कार्य में लगे रहेंगे। जब तक स्थापना का पार्ट है तब तक अव्यक्त रूप से आप सभी के साथ ही हैं। समझ गये?

स्नेह को देखते हैं तो ड्रामा याद आ जाता है। ड्रामा जब बीच में आता है तो साइलेन्स हो जाते हैं। स्नेह में आये तो क्या हाल हो जायेगा। नदी बन जायेंगे। लेकिन नहीं, ड्रामा। जो कर्म हम करेंगे वह फिर सभी करेंगे, इसलिए साइलेन्स। अगर सभी साथ होते तो जो अन्तिम कर्मातीत अवस्था का अनुभव था वह ड्रामा प्रमाण और होता। लेकिन था ही ऐसे इसलिए थोड़े ही सामने थे। सामने होते भी जैसे सामने नहीं थे। स्नेह तो वतन में भी है और रहेगा। अविनाशी है ना। लेकिन जो सुनाया कि स्नेह को ड्रामा साइलेन्स में ले आता है। और यही साइलेन्स, शक्ति को लायेगी। फिर वहाँ साकार में मिलन होगा। अभी अव्यक्त रूप में मिलते हैं, फिर साकार रूप में सतयुग में मिलेंगे। वह सीन तो याद आती है ना। खेलेंगे, पाठशाला में आयेंगे, मिलेंगे। आप नूरे रत्न सतयुग की सीनरी वतन में देखते रहते हो। जो बाप देखते हैं वह बच्चे भी देखते रहते हैं और देखते जायेंगे।

(02.02.1969)

यह तो अभी पढ़ाई का समय है। बाप अपना कर्तव्य कर रहे हैं, डायरेक्शन देते, पढ़ाते हैं। जब तक पढ़ाना है, पढ़ाते रहेंगे। विनाश सामने खड़ा है, उसका कनेक्शन बाप के साथ है। ऐसे मत समझो-बाप की जुदाई है। जुदाई भी नहीं, विदाई भी नहीं। जब तक विनाश नहीं तब तक बाप साथ है। वतन में बाप गया है कोई कार्य के लिए। समय अनुसार वह सब कुछ होता रहेगा। इसमें न कोई विदाई है, न जुदाई। जुदाई लगती है? तुमने विदाई दी थी? अगर विदाई दी होगी तो जुदाई भी होगी। विदाई नहीं दी होगी तो जुदाई भी नहीं होगी। यह ड्रामा के अन्दर पार्ट चलता रहता है। बाप का खेल चल रहा है। खेल में खेल चलता रहेगा। आगे तो बहुत ही खेल देखने हैं। इतनी हिम्मत है? जब हिम्मत रखेंगे तब बहुत देखेंगे। आगे

बहुत-कुछ देखना है। परन्तु कदम को सम्भाल-सम्भाल कर चलाना है। अगर सम्भल कर नहीं चलेंगे तो कहाँ खड्डा भी आ जायेग, एक्सीडेंट भी हो पड़ेंगे। बच्चों से मिलने के लिए थोड़े समय के लिए आया हूँ। बहुत कार्य करना है। वतन से बहुत-कुछ करना पड़ता है। बच्चों की भी दिल पूरी करनी पड़ती है तो भक्तों की भी दिल पूरी करनी पड़ती है। सभी कार्य संगम पर ही होते हैं। बाप का परिचय मिला, खजाना, लाटरी मिली। अभी बच्चों की सर्विस पूरी की। वतन से अभी सबकी करनी है। बच्चे सगे भी हैं तो लगे भी हैं। सर्विस तो सबकी करनी है। सवेरे भी आकर दृष्टि से परिचय दे दिया। दृष्टि द्वारा सर्च-लाइट दे सभी को सुख देना बाप का कर्तव्य है।

(15.02.1969)

आप का भी संगम का मुख्य श्रृंगार है मस्तक पर आत्मा का दीपक जलाना। इसकी निशानी बल्ब जलाते हैं। लेकिन यह सभी बातें होने लिए होली का अर्थ याद रखना है। 'होली' - जो कुछ हुआ वह हो गया, हो लिया। जो सीन हुई - हो ली अर्थात् बीत चुकी। वर्तमान समय जो प्वाइन्ट ध्यान में रखनी है वह है यह होली की अर्थात् ड्रामा के ढाल की। जब ऐसे मजबूत होंगे तब वह रंग भी पक्का लग सकेगा। अगर होली का अर्थ जीवन में नहीं लायेंगे तो रंग कच्चा हो जाता है। पक्का रंग रंगने के लिए हर वक्त सोचो - हो ली, जो बीता हो ही गया। ऐसी होली मना रहे हो? वा कभी-कभी ड्रामा की सीन देखकर कुछ मंथन चलता है? ज्ञान का मंथन दूसरी बात है। लेकिन ड्रामा की सीन पर मंथन करना - क्यों, क्या, कैसे...; यह किस चीज का मंथन है? दही को जब मंथन किया जाता है तब मक्खन निकलता है। अगर पानी को मंथन करेंगे तो क्या निकलेगा? कुछ भी नहीं। रिजल्ट में यही होगा - एक तो थकावट; दूसरा - टाइम वेस्ट। इसलिए यह हुआ पानी का मंथन। ऐसा मंथन करने के बजाये ज्ञान का मंथन करना है।

(04.03.1969)

अगर बीती हुई बातों को सोचते रहेंगे तो यह भी एक समस्या हो जायेगी। समस्यायें तो बहुत आती है, यह भी एक नई समस्या खड़ी कर देंगे। बीती को परिवर्तन में लाने, बल भरने के लिए - उस रूप से सोचो। अगर यह सोचेंगे कि - यह क्यों, कैसे हुआ, अब कैसे होगा, जम्प दे सकूँगा या नहीं। क्वेश्चन नहीं करो। क्वेश्चन मार्क के बदली फुलस्टॉप, बिन्दी लगाओ। बिन्दी लगाना सहज होता है। क्वेश्चन मार्क तो कोई लिख सके वा नहीं। लेकिन यहाँ क्वेश्चन लगाना सभी को आता है! बिन्दी लगाते जाओ तो बिन्दी-रूप में स्थित हो सकेंगे।

(28.11.1969)

सतयुग में खिलौने कैसे होते हैं? वहाँ रत्नों से खेलेंगे। आप लोगों ने सतयुगी सुखों की लिस्ट और कलियुगी दु:खों की लिस्ट तो लगाई हैं। लेकिन संगम के सुखों की लिस्ट बनायेंगे तो इससे भी दुगुने हो जायेंगे। वही सतयुगी संस्कार अभी भरने हैं। जैसे छोटे बच्चे सारा दिन खेल में ही मस्त होते हैं, कोई भी बात का फिक्र नहीं होता है। इसी रीति हर वक्त सुखों की लिस्ट, रत्नों की लिस्ट बुद्धि में दौड़ाते रहो अथवा इन सुखों रूपी रत्नों से खेलते रहो तो कभी भी ड्रामा के खेल में हार न हो। अभी तो कहाँ-कहाँ हार भी हो जाती है।

(17.05.1969)

दूसरा प्रश्न यह देते हैं। होमवर्क तो तुम्हारा चल ही रहा है, उसमें विशेष ध्यान खिंचवाते हैं। यह जो पार्ट भावी प्रमाण हुआ है उस साकार रूप को अव्यक्त क्यों बनाया? इनके भी कई गुह्य रहस्य हैं। इसकी गहराई में जाना, सागर के लहरों में नहाने नहीं लग जाना। लेकिन सागर के तले में जाना। फिर जो रत्न मिले वह ले आना। यह सोचना इनका गुह्य रहस्य ड्रामा में क्या नूंधा हुआ है? ऊपर कोई गुह्य

रहस्य है। बिना रहस्य के तो कोई भी चलन हो ही नहीं सकती। अच्छा-अभी टाइम हो गया है।

(26.06.1969)

आज की सभा में कौनसी विशेष खुशबू भी है और विशेष आकर्षण भी है? स्नेह तो सभी का है ही। आप को किसलिए बुलाया है? ऐसे समझें कि यह जो भी सभी आये हैं वह वापस जाने के लिए तैयार होकर आये हैं? एवररेडी जो होते हैं वह सदैव तैयार ही होते हैं। बुलावा हुआ और एक सेकेण्ड में अपना रहा हुआ सभी - कुछ समेट भी सकते और जम्प भी दे सकते। प्रैक्टिकल में देखा भी ना कि ड्रामा के बुलावे पर कितना टाइम लगा? एक तरफ समेटना, दूसरे तरफ हाई जम्प देना। यह दोनों सीन देखी। यह ड्रामा में किसलिए हुआ? सिखलाने के लिए। तो ऐसे एवररेडी बनना पड़ेगा। अभी एवररेडी की लाइन चालू हो गई है। इस लाईन के अन्दर किसका भी नम्बर आ सकता है। जो सभी के संकल्प में है वह कभी नहीं होना है। होगा फिर भी अनायास ही। यह ब्राह्मण कुल की रीति-रस्म चालू हो चुकी है। यह रीति-रस्म भी ड्रामा में क्यों बनी हुई है, उसका भी बहुत गुप्त रहस्य है। तो ऐसा पुरुषार्थ पहले से ही कर लो जो फौरन समेट भी सको और जम्प भी दे सको। समेटने की शक्ति किसमें हो सकती है? जो सरल स्वभाव वाले होंगे उसमें समेटने की शक्ति सहज आ सकती है। जो सरल स्वभाव वाला होगा वह सभी का सहयोगी भी होगा। जो सभी का स्नेही होता है उनको सभी द्वारा सहयोग प्राप्त होता है। इसलिए सभी बातों का सामना करना वा समेटना सहज ही कर सकता है। और जितना सरल स्वभाव वाले होंगे उतना माया कम सामना करेगी। वह सभी को प्रिय लगता है। सरल स्वभाव वाले का व्यर्थ संकल्प कभी नहीं चलता, समय व्यर्थ नहीं जाता। व्यर्थ संकल्प न चलने के कारण उनकी बुद्धि विशाल और दूरांदेशी रहती है। इसलिए उनके आगे कोई भी समस्या सामना नहीं कर सकती। जितनी सरलता होगी उतनी स्वच्छता भी होगी। स्वच्छता सभी को अपने तरफ आकर्षित करती है।

स्वच्छता अर्थात् सच्चाई और सफाई। सच्चाई और सफाई तब होगी जब अपने स्वभाव को सरल बनायेंगे। सरल स्वभाव वाला बहुरूपी भी बन सकता है।

इस मधुबन के लिए ही गायन है कि कोई ऐसा-वैसा पाँव नहीं रख सकता। मधुबन है सौभाग्य की लकीर, उसके अन्दर और कोई पाँव नहीं रख सकता। आप सभी को बापदादा समझाते हैं कि यह स्नेह की लकीर है, जिस स्नेह के घेराव के अन्दर बापदादा निवास करते हैं। इसके अन्दर कोई आ नहीं सकता- चाहे भल अपना शीश भी उतार कर रखे। साकार रूप में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है। उसके लिए तो आगे चलकर जब रोना देखेंगे तब आप लोगों को उसकी वैल्यू का मालूम होगा। रो-रोकर आप के चरणों में गिरेंगे। स्नेह की एक बूँद की प्यासी हो चरणों में गिरेंगे। आप लोगों ने स्नेह के सागर को अपने में समाया है। वह एक बूँद के भी प्यासे रहेंगे। ऐसा सौभाग्य किसका हो सकता है? सर्व सम्बन्धों का सुख, रसना जो आप आत्माओं में भरी हुई है वह और कोई में नहीं हो सकती। तो ड्रामा में अपने इतने ऊंच भाग्य को सदैव सामने रखना। सामने रखने से रिटर्न देना आप ही याद आयेगा।

(06.12.1969)

इस वर्ष में पहली परीक्षा कौन सी हुई? इस निश्चय की परीक्षा में हरेक ने कितने-कितने मार्क्स ली। वह अपने आप को जानते हैं। निश्चय की परीक्षा तो हो गई। अब कौन सी परीक्षा होनी है? परीक्षा का मालूम होते भी फेल हो जाते हैं। कोई-कोई के लिए यह बड़ा पेपर है लेकिन कोई-कोई का अब बड़ा पेपर होना है। जैसे इस पेपर में निश्चय की परीक्षा हुई वैसे ही अब कौन सा पेपर होना है? व्यक्त में भी अब भी सहारा है। जैसे पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन सहारा था वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए साकार में सहारा हैं। पहले भी निमित्त ही थे। अब भी निमित्त हैं। यह पूरे परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है। अव्यक्त में तो साथ है ही। जितना स्नेह होता है उतना सहयोग भी मिलता है। स्नेह की कमी के

कारण सहयोग भी कम मिलता है। साकार से स्नेह अर्थात् सारे सिजरे से स्नेह। साकार अकेला नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है। माला के मणके हो ना। माला में अकेला मणका नहीं होता है। माला में एक ही याद के सूत्र में, स्नेह में परिवार समाया हुआ है। तो यह जैसे माला में स्नेह के सूत्र में पिरोये हुए हैं। दैवी कुल तो भविष्य में है, इस ब्राह्मण कुल का बहुत महत्व है। जितना-जितना ब्राह्मण कुल से स्नेह और समीपता होगी उतना ही दैवी राज्य में समीपता होगी।

(18.01.1970)

सुनी हुई बातों का वर्णन करना कुछ मुश्किल होता है लेकिन देखी हुई बात का वर्णन करना सहज होता है और स्पष्ट होता है। तो इन दिव्य नेत्र वा अव्यक्त नेत्रों द्वारा हरेक के तीनों रूप भी इतना ही सहज वर्णन करना होता है। वैसे ही आप सभी को भी एक दो के यह तीनों रूप देखने में आयेंगे। अभी यथायोग्य, यथाशक्ति है। लेकिन कुछ समय बाद यह यथा शक्ति शब्द भी खत्म हो जायेगा। और हरेक अपने अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हो जायेंगे। तो बापदादा आप सभी के सम्पूर्ण मुखड़े देखते हैं। सम्पूर्णता नम्बरवार होगी। माला के 108 मणके जो हैं, तो नम्बर वन मणका और एक सौ आठवाँ मणका दोनों को सम्पूर्ण कहेंगे कि नहीं? विजयी रत्न कहेंगे? विजयी रत्न अर्थात् अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हो। उनके लिए सारे ड्रामा के अन्दर वही सम्पूर्णता की फर्स्ट स्टेज है। जैसे सतयुग में विश्व महाराजन् तो 8वाँ भी कहलायेगा लेकिन फर्स्ट विश्व-महाराजन् की सृष्टि के सम्पूर्ण सुख और 8वें के सम्पूर्णता के सुख में अन्तर होगा ना। वैसे ही यहाँ भी हरेक अपने-अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हो रहे हैं। इसलिए बापदादा सम्पूर्ण स्टेज को देखते रहते और वर्तमान समय के पुरुषार्थ को देखते रहते हैं। क्या हैं और क्या बनने वाले हैं।

अव्यक्त मुलाकात भी मिलन ही है। इसलिए सभी को यही निश्चय रखना है कि हम राज्य पद लेकर ही छोड़ेंगे। हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे। कोटों में कोई

कौन-सी आत्मायें गिनी जाती है? ऐसे कोटों में से कोई हम आत्मायें ड्रामा के अन्दर हैं। यह अपना निश्चय नहीं भूलना। बापदादा सभी बच्चों का भविष्य देख हर्षित होते हैं। एक एक से मिलना, मन की बात तो यह है। लेकिन आप सब के समान इस व्यक्त दुनिया में.....बापदादा को अभी यह व्यक्त दुनिया नहीं है। तो आप के दुनिया के प्रमाण समय को भी देखना पड़ता है। वतन में समय नहीं होता। घड़ी नहीं होती। लेकिन इस व्यक्त दुनिया में यह सभी बातें देखनी पड़ती हैं। वहाँ तो जब सूर्य, चाँद ही नहीं तो रात दिन किस हिसाब से हो। इसलिए समय का बन्धन नहीं है।

(22.01.1970)

मंथन करने के लिये तो बहुत खजाना है। इसमें मन को बिजी रखना है। समय की रफ्तार तेज है वा आप लोगों के पुरुषार्थ की रफ्तार तेज है? अगर समय तेज चल रहा है और पुरुषार्थ ढीला है तो उसकी रिजल्ट क्या होगी? समय आगे निकल जायेगा और पुरुषार्थी रह जायेंगे। समय की गाड़ी छूट जायेगी। सवार होने वाले रह जायेंगे। समय की कौन सी तेजी देखते हो? समय में बीती को बीती करने की तेजी है। वही बात को समय फिर कब रिपीट करता है? तो पुरुषार्थ की जो भी कमियां हैं उसमें बीती को बीती समझ आगे हर सेकेण्ड में उन्नति को लाते जाओ तो समय के समान तेज चल सकते हो। समय तो रचना है ना। रचना में यह गुण है तो रचयिता में भी होना चाहिए। ड्रामा क्रियेशन है तो क्रियेटर के बच्चे आप हो ना। तो क्रियेटर के बच्चे क्रियेशन से ढीले क्यों? इसलिए सिर्फ एक बात का ध्यान रहे कि जैसे ड्रामा में हर सेकेण्ड अथवा जो बात बीती, जिस रूप से बीत गई वह फिर से रिपीट नहीं होगी फिर रिपीट होगी 5000 वर्ष के बाद। वैसे ही कमजोरियों को बार-बार क्यों रिपीट करते हो? अगर यह कमजोरियां रिपीट न होने पायें तो फिर पुरुषार्थ तेज हो जायेगा। जब कमजोरी समेटी जाती है तब कमजोरी की जगह पर शक्ति भर जाती है। अगर कमजोरियां रिपीट होती रहती हैं तो शक्ति नहीं भरती

है। इसलिए जो बीता सो बीता, कमजोरी की बीती हुई बातें फिर संकल्प में भी नहीं आनी चाहिए। अगर संकल्प चलते हैं तो वाणी और कर्म में आ जाते हैं। संकल्प में ही खत्म कर देंगे तो वाणी कर्म में नहीं आयेंगे। फिर मन वाणी कर्म तीनों शक्तिशाली हो जायेंगे। बुरी चीजों को सदैव फौरन ही फेंका जाता है। अच्छी चीज को प्रयोग किया जाता है तो बुरी बातों को ऐसे फेंको जैसे बुरी चीज़ को फेंका जाता है। फिर समय पुरुषार्थ से तेज नहीं जायेगा। समय का इंतजार आप करेंगे तो हम तैयार बैठे हैं। समय आये तो हम जायें। ऐसी स्थिति हो जायेगी। अगर अपनी तैयारी नहीं होती है तो फिर सोचा जाता है कि समय थोड़ा हमारे लिये रूक जाये।

(26.01.1970)

बच्चों के पास अभी कौन सी क्यू लगी हुई है? जब यह क्यू खत्म हो जायेगी, तब वह क्यू लगेगी। मालूम है अभी कौन सी क्यू लगी हुई है? (संकल्पों की) संकल्पों में भी मुख्य क्या हैं, जो ही पुरुषार्थ में ढीलापन लाती है। व्यर्थ संकल्पों का मूल कारण क्या होता है? पुराने संस्कार किस रूप में आते हैं? एक शब्द बताओ जिसमें व्यर्थ संकल्पों का बीज आ जाये। व्यर्थ संकल्प वा विकल्प जो चलते हैं तो एक ही शब्द बुद्धि में आता है कि यह क्यों हुआ, क्यों से व्यर्थ संकल्पों की क्यू शुरू हो जाती है। अंग्रेजी में भी आप देखेंगे क्यूं शब्द की निशानी सभी से टेढ़ी होती है। तो क्यों की क्यू बड़ी लम्बी है। इस क्यू के समाप्ती बाद ही सम्पूर्णता आयेगी। फिर वह क्यूं लगेगी। जब क्यों शब्द निकलेगा, फिर ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे। तो अभी क्यों के क्यू को खत्म करना है। समझा। एक क्यों शब्द से सेकेण्ड में कितने संकल्प पैदा हो जाते हैं? क्यों से फिर कल्पना करना शुरू हो जाता हैं। तो बाप भी बच्चों से यह जल की लोटी चढ़वाने के लिए आये हैं। कोई भी प्रतिज्ञा करते हैं तो जल को साक्षी रखकर करते हैं। तो अब यह लोटी चढ़ानी है।

(05.03.1970)

(दीदी):- बालक मालिक है इसलिए समान बिठाते हैं तख्त पर (सन्दली पर)। व्यक्त रूप में तो यह सेरिमनी कर रहे हैं लेकिन अव्यक्त रूप में यह सेरीमनी होती है? बालक को मालिक बनाया अब से तख्त नशीन बनाते हैं। साकार में थी दिल के तख्त नशीन, अब हैं सर्विस की तख्त नशीन और भविष्य में होंगी राज्य तख्त नशीन। संगम पर तख्त नशीन अभी बनते हैं। ड्रामा में जो पार्ट नूँधा हुआ है वह कितना रहस्य युक्त है। इसको दिन प्रतिदिन स्पष्ट समझते जायेंगे। स्नेह से भी कर्तव्य कहां बन्धन में बांधता है। जैसे स्नेह का बन्धन है वैसे कर्तव्य का भी बन्धन है। तो यह है कर्तव्य का बन्धन। कर्तव्य के बन्धन में अव्यक्तरूप में हैं। स्नेह के बन्धन में साकार रूप में थे।

(23.03.1970)

अब भाषा भी चेंज हो। साकार रूप में सभी दिखाया। कब कहा कि मैं यह चला रहा हूँ? मैंने मुरली अच्छी चलाई, कब कहा? मैंने सर्विस की, मैंने बच्चों को टच किया कब कहा। यह अंगीकार करना खत्म हो जाना है। इसको कहा जाता है जो वायदा किया है वह निभाना। आप लोग एक गीत गाते थे तुम्हीं पर मिटेंगे हम....याद आता है? मर मिटना किसको कहा जाता है? मैं पन मिटाना यही मर मिटना है। अंगीकार न करो तो ललकार कर सकते हो। कोई भी बात न निन्दा-स्तुति, न मैं, न तुम, न मेरा तेरा कुछ भी अंगीकार (स्वीकार) न करना तब ललकार होगी। आप मन में संकल्प पीछे करते हो। आप के मन में संकल्प पहुँचते ही वहां पहुंच जाता है। क्यों पहले पहुँचता है यह भी गुह्य पहेली है। आप लोग मन में जो संकल्प करते हो वह आपके मन में पीछे आता है उनके पहले बापदादा के पास स्पष्ट हो जाता है। क्योंकि सम्पूर्ण बनने से ड्रामा की हर नूंध स्पष्ट देखने में आती है। इसलिए ड्रामा की नूंध को पहले से ही स्पष्ट देख सकते। इसलिए भविष्य देखो करके पहले से बात करते हैं। पहले से जैसे कि पहुंचा ही हुआ है। फिर जब आप लोग पार्ट बजाते हो, बापदादा भी पार्ट बजाते हैं। आप रूह रूहान करने का

पार्ट बजाते हो, बापदादा सुनने का पार्ट बजाते हैं। समझा। जो जैसा है वैसा स्वयं को पूरा न भी जान सके लेकिन बापदादा जान-सकते हैं। तो अब चारों बल समानता में लाने है। तब साकार के समान बन जायेंगे। जितना संस्कारों को समानता में लावेंगे उतना ही समीप आयेंगे। कौनसे संस्कार? साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षी दृष्टा यह साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इन गुणों से सर्व के दिलों पर विजयी होंगे। जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनते है। विश्व में सर्व आ जाते हैं। तो बीज यहां डालना है फल वहां लेना है।

(02.04.1970)

हरेक अपनी रिज़ल्ट को तो देखते ही है। मैजारटी क्या दिखाई देती है? कोई में स्नेहीपन की विशेषता है, कोई में सहयोगीपन की, लेकिन शक्ति रूप की धारणा कम है। इसकी निशानी फिर क्या दिखाई देती है, मालूम है? शक्तिपन के कमी की निशानी क्या है? परखने की शक्ति कम की निशानी क्या है? एक बात तो सुनाई - सर्विस की सफलता नहीं। उनकी स्पष्ट निशानी दो शब्दों में यह दिखाई देगी - उनका हर बात में क्यों, क्या, कैसे....? क्वेश्चन मार्क बहुत होगा। ड्रामा का फुल-स्टॉप देना उनके लिए बड़ा मुश्किल होगा। इसलिए स्वयं ही 'क्यों, क्या कैसे' की उलझन में होगा।

(22.01.1971)

सदैव हर संकल्प निश्चयबुद्धि का होना चाहिए। कर्म करने के पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है। अनेक कल्प विजयी बने हो। जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हो, तो अब वही रिपीट नहीं करेंगे? वही बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है। इसलिए कहा जाता है कि बना-बनाया...। बना हुआ है लेकिन अब फिर से

रिपीट कर 'बना-बनाया' जो कहावत है उसको पूरा करना है।

(24.05.1971)

सहनशीलता बहुत मुख्य धारणा है। जितनी सहनशीलता अपने में देखेंगे। उतना समझो स्वयं से भी सन्तुष्ट हैं, दूसरे भी सन्तुष्ट हैं। सन्तुष्ट होना माना सफलता पाना। जो कोई भी बात को सहन कर लेता है तो सहन करना अर्थात् उसकी गहराई में जाना। जैसे सागर के तले में जाते हैं तो रत्न लेकर आते हैं। ऐसे ही जो सहनशील होते हैं वह गहराई में जाते हैं, जिस गहराई से बहुत शक्तियों की प्राप्ति होती है। सहनशील ही मनन- शक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। सहनशील जो होता है वह अन्दर ही अन्दर अपने मनन में तत्पर रहता है और जो मनन में तत्पर रहता है वही मग्न रहता है। तो सहनशीलता बहुत आवश्यक है। उनका चेहरा ही गुण मूर्त्त बन जायेगा। सहनशीलता की धारणा पर इतना अटेन्शन रखना है। सहनशील ही ड्रामा की ढाल पर ठहर सकता है। सहनशीलता नहीं तो ड्रामा की ढाल को पकड़ना भी मुश्किल है। सहनशीलता वाला ही साक्षी बन सकता है और ड्रामा की ढाल को पकड़ सकता है।

(08.06.1971)

निश्चय बुद्धि हो कल्याण की भावना रखने से दृष्टि और वृत्ति दोनों ही बदल जाते हैं। कैसा भी कोई क्रोधी आदमी सामना करने वाला वा कोई इनसल्ट करने वाला, गाली देने वाला हो, लेकिन जब कल्याण की भावना हर आत्मा प्रति रहती है तो रोब बदलकर रहम हो जायेगा। फिर रिजल्ट क्या होगी? उसको हिला सकेंगे? वह शुभ कल्याण की भावना उसके संस्कारों को परिवर्तन करने का फल दिखायेगी। यह ज़रूर होता है - कोई बीज़ से प्रत्यक्ष फल निकलता है कोई फौरन प्रत्यक्ष फल नहीं देते। कुछ समय लगता है। इसमें अधीर्य नहीं होना है कि फल तो निकलता ही नहीं है। सभी फल फौरन नहीं मिलते। कोई कोई बीज फल तब देता है

जब नेचुरल वर्षा होती है। पानी देने से नहीं निकलता। यह भी ड्रामा की नूँध है। अब अविनाशी बीज़ जो डाल रहे हो कोई तो प्रत्यक्षफल दिखाई देंगे। कोई फिर नेचुरल केलेमिटीज होंगी, जब ड्रामा का सीन बदलने वाला होगा तो वह नेचुरल वायुमण्डल, वातावरण उस बीज़ का फल निकालेगा। विनाश तो होगा - यह तो गैरन्टी है। जब बीज़ ही अविनाशी है तो फल न निकल-यह तो हो नहीं सकता। लेकिन कोई नज़दीक आते हैं, कोई पीछे आने वाले हैं तो अभी आयेंगे कैसे? वह फल भी पीछे देंगे। इसलिए कभी भी सर्विस करते, यह नहीं देखना वा यह नहीं सोचना कि जो किया वह कोई व्यर्थ गया। नम्बरवार समय प्रमाण फल दिखाई देते जायेंगे।

(11.07.1971)

मास्टर रचयिता की स्टेज पर ठहरने से ऐसा दृश्य दिखाई देगा। कोई सार नहीं दिखाई देगा। बिगर अर्थ बोल दिखाई देंगे। तो सत्यता को प्रसिद्ध करने की हिम्मत और हुल्लास आता है? सत्य को प्रसिद्ध करने का उमंग आता है कि अभी समय पड़ा है? क्या अभी सत्य को प्रसिद्ध करने में समय पड़ा है? फलक भी हो और झलक भी हो। ऐसी फ़लक हो जो महसूस करें कि सत्य के सामने हम सभी के अल्पकाल के यह आडम्बर चल नहीं सकेंगे। जैसे स्टेज पर ड्रामा दिखाते हैं ना- कैसे विकार विदाई ले हाथ जोड़ते, सिर झुकाते हुए जाते हैं! यह ड्रामा प्रैक्टिकल विश्व की स्टेज पर दिखाना है। अब यह ड्रामा की स्टेज पर करने वाला बेहद के स्टेज पर लाओ इसको कहा जाता है सर्विस। ऐसे सर्विसएबुल विजयी माला के विशेष मणके बनते हैं। तो ऐसे सर्विसएबुल बनना पड़े। अभी तो यह प्रैक्टिस कर रहे हैं। पहले प्रैक्टिस की जाती है तो छोटे-छोटे शिकार किए जाते हैं फिर होता है, शेर का शिकार। लास्ट प्रैक्टिकल पार्ट हु-ब-हू ऐसे देखेंगे जैसे यह छोटा ड्रामा। तब एक तरफ जयजयकार और एक तरफ हाहाकार होगी। दोनों एक ही स्टेज पर।

(27.09.1971)

निश्चय बुद्धि अपनी विजय वा सफलता निश्चित समझ कर चलता। निश्चय ही है, जो ऐसे निश्चित सफलता समझकर चलने वाले हैं उनकी स्थिति कैसी रहेगी? उनके चेहरे में क्या विशेष झलक दिखाई देगी? निश्चय तो सुनाया कि निश्चय होगा-विजय हमारी निश्चित है; लेकिन उनके चेहरे पर क्या दिखाई देगा? जब विजय निश्चित है तो निश्चिन्त रहेगा ना। कोई भी बात में चिन्ता की रेखा दिखाई नहीं देगी। ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी, निश्चित और सदा निश्चिन्त रहने वाले हो? अगर नहीं तो निश्चय बुद्धि 100 परसेन्ट कैसे कहेंगे? 100 परसेन्ट निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चित विजयी और निश्चिन्त। अब इससे अपने आपको देखो कि 100 परसेन्ट सभी बातों में निश्चय बुद्धि हैं? सिर्फ बाप में निश्चय को भी निश्चय बुद्धि नहीं कहा जाता। बाप में निश्चय बुद्धि, साथ-साथ अपने आप में भी निश्चय बुद्धि होने चाहिएं और साथ-साथ जो भी ड्रामा के हर सेकेण्ड की एक्ट रिपीट हो रही है-उसमें भी 100 परसेन्ट निश्चय बुद्धि चाहिए -इसको कहा जाता है निश्चय बुद्धि। जैसे बाप में 100 परसेन्ट निश्चय बुद्धि हो ना-उसमें संशय की बात नहीं। सिर्फ एक में पास नहीं होना है। अपने आप में भी इतना ही निश्चय होना चाहिए कि मैं भी वही कल्प पहले वाली, बाप के साथ पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ और साथ-साथ ड्रामा के हर पार्ट को भी इसी स्थिति से देखें कि हर पार्ट मुझ श्रेष्ठ आत्मा के लिए कल्याणकारी है। जब यह तीनों प्रकार के निश्चय में सदा पास रहते हैं। ऐसे निश्चय बुद्धि ही मुक्ति और जीवन-मुक्ति में बाप के पास रहते हैं।

(27.02.1972)

हर कर्म और संकल्प को चेक करो कि महान् है अथवा मेहमान बनकर के चल रहे हैं वा कार्य कर रहे हैं? तो फिर अटैचमेन्ट खत्म हो जायेगी। मेहमान सिर्फ इस सृष्टि में भी नहीं लेकिन इस शरीर रुपी मकान में भी मेहमान हो। देह के भान की जो आकर्षण होती है वा स्मृति के रुप में जो संस्कार रुके हुए हैं वह बहुत ही सहज मिट सकते हैं, जब अपने को मेहमान समझेंगे। कोई आपका मकान है,

आप उसको कारणे-अकारणे बेच देते हो, बेच दिया तो फिर अपना-पन चला गया। फिर भले उसी स्थान पर रहते भी हो लेकिन मेहमान समझकर रहेंगे। तो अपना समझ रहने में और मेहमान समझ रहने में कितना फर्क हो जाता है। तो यह शरीर जिसको समझते थे कि मैं शरीर हूँ, अभी इसको ऐसा समझो कि यह मेरा नहीं है। अभी मेरा कहेंगे? अभी यह शरीर आपका नहीं रहा जिससे मरजीवा बने तो मेरा शरीर भी नहीं। तन अर्पण कर दिया वा मेरा समझती हो? अभी इस पुराने शरीर की आयु तो समाप्त हो चुकी। यह तो ड्रामा अनुसार ईश्वरीय कर्तव्य अर्थ शरीर चल रहा है। इसलिए आप अभी यह नहीं कह सकतीं कि यह मेरा शरीर है। इस शरीर में भी मेरापन खत्म हो गया। अभी तो बाप ने आत्मा को कर्म करने के लिए यह टैम्प्रेरी लोन के रुप में दिया है। जैसे बाप समझते हैं मेरा शरीर नहीं, लोन लेकर कर्तव्य करने के लिए पार्ट बजाते हैं तो आप भी बाप समान हो ना। मेरा शरीर समझेंगे तो सभी बातें आ जायेंगी। मेरा शब्द के साथ बहुत कुछ है। मेरापन ही खत्म तो उनके कई साथी भी खत्म हो जायेंगे। उपराम हो जायेंगे। यह शरीर लोन लिया है-ईश्वरीय कर्तव्य के लिए। और कोई कर्तव्य के लिए यह शरीर नहीं है। ऐसे अपने को मेहमान समझकर चलने से हर कर्म महान् स्वत: ही होगा।

(02.04.1972)

अपनी लक बनाई जा सकती है वा बनी हुई के ऊपर चलना होता है? तकदीर को चेन्ज कर सकते हो वा नहीं? अनलकी से लक्की बन सकते हो? लक बनाने के लिए पुरुषार्थ की मार्जिन है? (हां) तकदीर जगाकर आये हो वा तकदीर जगाने के लिए आये हो? तकदीर जो जगी हुई है वह साथ ले आये हो ना, फिर क्या बनायेंगे? तकदीर जो जगाकर आये हैं उस अनुसार ही बाप के बने लेकिन बाप के बनने में ही तकदीर की बात है ना। तकदीर बनाकर भी आये हैं और बना भी सकते हैं, ऐसे? जब कोई बात पर ज्यादा पुरुषार्थ कर लेते हो तो अपने अन्दर से कब संकल्प आता है कि मेरी तकदीर में तो यही देखने में आता है? पुरुषार्थ के

बाद भी सफलता नहीं होती है तो समझते हो ना-तकदीर में यह ऐसा है। सफलता न मिलने का कारण क्या है? अपनी रीति से पुरुषार्थ किया फिर भी सफलता नहीं मिलती तो फिर क्या कहते हो? ड्रामा में ऐसा ही है। तो ड्रामा का बना हुआ लक ही ले आये हो ना?

(27.04.1972)

मुख्य किस बात का अटेन्शन रहना चाहिए जो बहुत सहज है और सभी कर सकते हैं? रिवाइज कोर्स मे भी वही सहज युक्ति बार-बार रिवाइज हो रही है। रिवाइज कोर्स अटेन्शन से सुनते हो, पढ़ते हो? ऐसे तो नहीं समझते हो-जानी-जाननहार हो गये? जानी-जाननहार अपने को समझ कर रिवाइज कोर्स को हल्का तो नहीं छोड़ देते हो? आज पेपर लेते हैं। ऐसा कौन है जो एक दिन भी रिवाइज़ कोर्स की मुरली मिस नहीं करते हैं वा धारणा में अटेन्शन नहीं देते हैं, वह हाथ उठावें ? कहाँ आने-जाने में जो मुरली मिस करते हो वा पढ़ते हो वा मिस हो जाती है? ऐसे तो नहीं समझते हो अब नॉलेज को जान ही चुकें हैं? भले जान चुके हो, लेकिन अभी बहुत कुछ जानने को रह गया है। जो अच्छी तरह से रिवाइज कोर्स को रिवाइज करते वह स्वयं भी ऐसा अनुभव करतें हैं। वह रिवाइज करते भी पुराना लगता है वा नया लगता है? नयों के लिए तो कई बातें होंगी लेकिन जो पुराने हैं वह फिर से रिवाइज कोर्स से क्या अनुभव करते हैं? नया लगता है? क्योंकि ड्रामा अनुसार रिवाइज क्यों हुआ? यह भी ड्रामा की नूंध थी। रिवाइज क्यों कराया जाता हैं? अटेन्शन कम हो जाती है, स्मृति कम होती है तो बार-बार रिवाइज कराया जाता हैं। यह भी रिवाइज इसीलिए हो रहा है, क्योंकि अभी प्रैक्टिकल में नहीं आये हो। जितना सुना है, जितना सुनाते हो उतनी प्रैक्टिकल में नहीं भरी है, इसलिए पावरफुल बनाने के लिए फिर से यह कोर्स चल रहा है। पुरानों को पावरफुल बनाने के लिए और नयों को पावरफुल बनाने के साथ-साथ अपना हक पूरा मिलने के कारण भी यह रिवाइज कोर्स चल रहा है। तो अब इसी कमी

को भी भरने के लिए अटेन्शन को बार-बार रिवाइज करना।

(24.06.1972)

परीक्षाएं बहुत आनी हैं। पेपर तो होने ही हैं। जैसे-जैसे अन्तिम फाइनल रिजल्ट का समय समीप आ रहा है वैसे समय-प्रति-समय प्रैक्टिकल पेपर स्वत: ही होते रहते हैं। पेपर प्रोग्राम से नहीं लिया जाता। आटोमेटिकली ड्रामा अनुसार समय प्रति समय हरेक का प्रैक्टिकल पेपर होता रहता है। तो पेपर में पास होने की हिम्मत अपने में समझते हो? घबराने वाले तो नहीं हो ना? अंगद के माफिक जरा भी अपने बुद्धियोग को हिलाने वाले नहीं हो?

(12.07.1972)

अभी परेशानी होती है? अगर अब तक किसी भी प्रकार की परेशानी होती है तो अन्य आत्माओं की परेशानी को कैसे मिटावेंगे? परेशानियों को मिटाने वाले हो वा स्वयं भी परेशान होने वाले हो? जैसे जो भी भट्ठी करते हो तो उसका समाप्ति-समारोह वा परिवर्तन-समारोह मनाते हो। तो यह जो बेहद की भट्ठी चल रही है उसमें कमजोरियों की समाप्ति का समारोह वा परिवर्तन समारोह कब मनावेंगे? इसकी कोई फिक्स डेट है? ड्रामा करावेगा? ड्रामा तो सर्व आत्माओं का पुरानी दुनिया से समाप्ति समारोह करावेगा लेकिन आप तीव्र पुरुषार्थी श्रेष्ठ आत्माओं को तो पहले ही कमजोरियों के समाप्ति समारोह को मनाना है ना कि आप भी अन्य आत्माओं के साथ अन्त में करेंगे। जैसे और सेमिनार आदि करते हो, उसकी डेट फिक्स करते हो। उसी प्रमाण तैयारी करते हो और उस कार्य को सफल कर सम्पन्न करते हो। ऐसे यह कमियों को मिटाने की सेमिनार की डेट फिक्स नहीं हो सकती? यह सेमिनार होना सम्भव है?

(18.07.1972)

अभी तो ऐसे पेपर्स आने वाले हैं जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा। प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जैसे हद का ड्रामा साक्षी हो देखा जाता है। फिर चाहे दर्दनाक हो वा हंसी का हो, दोनों पार्ट को साक्षी हो देखते हैं, अन्तर नहीं होता है क्योंकि ड्रामा समझते हैं। तो ऐसी एकरस अवस्था होनी चाहिए। चाहे रमणीक पार्ट हो, चाहे कोई स्नेही आत्मा का गम्भीर पार्ट भी हो तो भी साक्षी होकर देखो। साक्षी दृष्टा की अवस्था होनी चाहिए। घबराई हुई या युद्ध करती हुई अवस्था ना हो। कोई घबराते भी नहीं हैं, युद्ध में लग जाते हैं। जरुर कुछ कल्याण होगा। लेकिन साक्षी दृष्टा की स्टेज बिल्कुल अलग है। इसको ही एकरस अवस्था कहा जाता है।

(19.09.1972)

कोई अपने संस्कार वा स्वभाव के रुप में आपके सामने परीक्षा के रुप में आवे लेकिन आप सेकेण्ड में अपने श्रेष्ठ संस्कार, एक की स्मृति से ऐसी आत्मा के प्रति भी रहमदिल के संस्कार वा स्वभाव धारण कर सकते हो। कोई देहधारी दृष्टि से सामने आये आप एक सेकेण्ड में उनकी दृष्टि को आत्मिक दृष्टि में परिवर्तित कर लो। कोई गिराने की वृत्ति से, वा अपने संगदोष में लाने की दृष्टि से सामने आवे तो आप उनको सदा श्रेष्ठ संग के आधार से उसको भी संगदोष से निकाल श्रेष्ठ संग लगाने वाले बना दो। ऐसी परिवर्तन करने की युक्ति आने से कब भी विघ्न से हार नहीं खायेंगे। सर्व सम्पर्क में आने वाले आप की इस सूक्ष्म श्रेष्ठ सेवा पर बलिहार जावेंगे। जैसे बाप आत्माओं को परिवर्तित करते हैं तो बाप के लिये शुक्रिया गाते हो, बलिहार जाते हो, ऐसे सर्व सम्पर्क में आने वाली आत्माएं आप लोगों का शुक्रिया मानेंगी। एक ही सहज युक्ति है ना। वैसे भी कोई भी बात, कोई दृश्य, कोई भी चीज परिवर्तन तो होनी ही है। यह ड्रामा ही परिवर्तनशील है। लेकिन जैसे लोगों को कहते हो कि विनाश तो होना ही है, मुक्तिधाम में तो सभी को जाना ही है लेकिन अगर विनाश के पहले ज्ञान-योग के आधार से विकर्म

विनाश कर देंगे तो सजाओं से छूट जावेंगे। जाना तो है ही, फिर भी जो करेगा सो पावेगा।

(24.12.1972)

अब ड्रामा की रील जल्दी-जल्दी परिवर्तित होनी है, जो अब वर्तमान समय चल रहा है, यह सभी बातें परिवर्तन होनी हैं। व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन- यह सभी तीव्र परिवर्तन होने हैं। इस कारण अव्यक्त मिलन का विशेष अनुभव विशेष रुप से कराया है और आगे भी अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन के विचित्र अनुभव बहुत करेंगे। इस वर्ष को अव्यक्त मिलन द्वारा विशेष शक्तियों की प्राप्ति का वरदान मिला हुआ है। इसलिए ऐसे नहीं समझना कि यह मास समाप्त हुआ लेकिन इसी अभ्यास को और इसी अनुभव को जो लगातार आगे आगे बढ़ाते रहेंगे उनको बहुत नये-नये अनुभव होते रहेंगे। समझा?

(23.01.1973)

जो भी शक्तियाँ है उनको प्रेक्टिकल में लाना, यही गुण है। और कर्तव्य क्या है? मुश्किल को सहज करना, परिवर्तन करना। भागने वाले नहीं। निवास स्थान कौन-सा है? - जिस स्थान पर स्थित होने से ब्राह्मणपन के मुख्य कर्तव्य को बहुत अच्छी रीति कर सकते हो। वह स्थान कौन-सा है? जो ब्राह्मण का मुख्य कर्तव्य है बुद्धि को स्थिर करने का। जिस स्थान पर फिर निरंतर रह भी सको। चलते-फिरते भी उस स्थिति में रह सको। सभी बातों का उसमें सार आ जाये। विस्तार में तो यह सभी बातें आ जायेंगी लेकिन विस्तार को एक शब्द में समाओ। निवास स्थान अर्थात् सदा उस स्थिति में स्थित होने का जो स्थान है वह है साक्षी द्रष्टा। जब यह साक्षी द्रष्टा की ढाल व ड्रामा के पट्टे पर हर कर्म और संकल्प चलने के लिए यह साक्षी द्रष्टापन की अवस्था सदा होनी चाहिए।

(09.04.1973)

अभी तो अपने पुरुषार्थ व अपने तन के लिए समय देना पड़ता है, शक्ति भी देनी पड़ती है। अपने पुरुषार्थ के लिए मन भी लगाना पड़ता है, फिर यह स्टेज समाप्त हो जावेगी। फिर यह पुरुषार्थ बदली होकर ऐसा अनुभव होगा कि एक सेकेण्ड में और एक संकल्प भी अपने प्रति न जाये बल्कि विश्व के कल्याण के प्रति ही हो। ऐसी स्टेज को कहा जावेगा- 'सम्पूर्ण अर्थात् सम्पन्न'। अगर सम्पन्न नहीं तो सम्पूर्ण भी नहीं। क्योंकि सम्पन्न स्टेज ही सम्पूर्ण स्टेज है। तो ऐसे अपने पुरुषार्थ को और ही महीन करते जाना है। विशेष आत्माओं का पुरुषार्थ भी जरुर न्यारा होगा। तो क्या पुरुषार्थ में ऐसा परिवर्तन अनुभव होता जा रहा है? अभी तो दाता के बच्चे दातापन की स्टेज पर आने हैं। देना ही उनका लेना होना है। तो अब समय की समीपता के साथ सम्पन्न स्टेज भी चाहिए। आप आत्माओं की सम्पन्न स्टेज ही सम्पूर्णता को समीप लायेगी। तो आप लोग अभी स्वयं को चेक करें कि जैसे पहले अपने पुरुषार्थ में समय जाता था अभी दिन-प्रतिदिन दूसरों के प्रति ज्यादा जाता है? अपनी कॉनशस अभिमान नेचुरली ड्रामा अनुसार समाप्त होता जाएगा। सरकमस्टॉन्सेस प्रमाण भी ऐसे होता जाएगा। इससे ऑटोमेटिकली सोलकॉन्शस होंगे। कार्य में लगना अर्थात् सोलकॉन्शस होना। बगैर सोलकॉन्शस के कार्य सफल नहीं होगा। तो निरन्तर आत्म-अभिमानी बनने की स्टेज स्वत: ही हो जावेगी। विश्व-कल्याणकारी बने हो या आत्म-कल्याणकारी बने हो? अपने हिसाब-किताब करने में बिजी हो या विश्व की सर्व-आत्माओं के कर्मबन्धन व हिसाब-किताब चुक्तु कराने में बिजी हो? किसमें बिजी हो? लक्ष्य रखा है, सदा विश्व-कल्याण के प्रति तन, मन, धन सभी लगाओ।

(13.04.1973)

कैसी भी कोई परिस्थिति आये, कैसे भी विघ्न हिलाने के लिए आ जाएँ लेकिन जिसके साथ स्वयं बाप सर्वशक्तिवान् है उनके सामने वह विघ्न क्या हैं? उनके आगे विघ्न, परिवर्तन होकर क्या बन जायेंगे? 'विघ्न लगन का साधन बन

जायेंगे।' हर्षित होंगे ना? यदि कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति विघ्न लाने के निमित्त बनता है तो उसके प्रति घृणा-दृष्टि, व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होनी चाहिए लेकिन उसके प्रति वाह-वाह निकले। अगर यह दृष्टि रखो तो आप सभी की श्रेष्ठ दृष्टि हो जावेगी। कोई कैसा भी हो, लेकिन अपनी दृष्टि और वृत्ति सदैव शुभचिन्तक की हो और कल्याण की भावना हो। हर बात में कल्याण दिखाई दे। कल्याणकारी बाप की सन्तान कल्याणकारी हो ना? कल्याणकारी बनने के बाद कोई भी अकल्याण की बात हो नहीं सकती। यह निश्चय और स्मृति-स्वरूप हो जाओ तो आप कभी डगमगा नहीं सकेंगे।

जैसे कोई हरा या लाल चश्मा पहनता है तो उसको सभी हरा अथवा लाल ही दिखाई पड़ता है। वैसे आप लोगों के तीसरे नेत्र पर कल्याणकारी का चश्मा पड़ा है। तीसरा नेत्र है ही कल्याणकारी। उसमें अकल्याण दिखाई पड़े, यह हो ही नहीं सकता। जिसको अज्ञानी लोग अकल्याण समझते हैं लेकिन आपका उस अकल्याण में ही कल्याण समाया हुआ है। जैसे लोग विनाश को अकल्याण समझते हैं लेकिन आप समझते हो कि इससे ही गति-सद्गति के गेट्स खुलेंगे। तो कोई भी बात सामने आती है, 'सभी में कल्याण भरा हुआ है' - ऐसे निश्चय-बुद्धि होकर चलो तो क्या प्राप्ति होगी? - एक-रस अवस्था हो जावेगी। किसी भी बात में रूकना नहीं चाहिए। जो रूकते हैं वे कमजोर होते है। महावीर कभी नहीं रूकते। ऐसे नहीं विघ्न आयें और रूक जावें।

(20.06.1973)

यदि कभी भी स्थिति डगमग होती है तो उसका कारण है कि मेला अर्थात् मिलन उससे बुद्धि को किनारे कर देते हो; अर्थात् मेले से निकल जाते हो और उसे खेल नहीं समझते हो। तो मेला और खेल यह दो शब्द सदा याद रखो। मेले में सभी बातें आ जाती हैं। जैसे पहले सुनाया था ना कि मिलन किन-किन बातों का होता है? मेला शब्द याद आने से संस्कारों का मिलन, बाप और बच्चों

का मिलन और सर्व-सम्बन्धों से सदा प्राप्ति का मिलन सभी इस मेले में आ जाते हैं। यह सृष्टि एक खेल है, यह तो मुख्य बात है। लेकिन यह माया की भिन्न-भिन्न परीक्षायें व परिस्थितियाँ जो आती हैं यह भी आप लोगों के लिए एक खेल है। अगर इसको खेल समझो तो खेल में कभी परेशान नहीं होंगे, हँसते रहेंगे। तो परीक्षायें भी एक खेल है। तीसरी बात खेल समझने से जो भी भिन्न-भिन्न वैरायटी संस्कारों का पार्ट देखते हो, उन पार्टधारियों का इस बेहद के खेल में यह पार्ट अर्थात् खेल नूँधा हुआ है। यह स्मृति में आने से कभी भी अवस्था डगमग नहीं होगी। सदैव एक-रस अवस्था रहेगी। जब स्मृति में रहेगा कि यह वैरायटी पार्ट ड्रामा अर्थात् खेल है तो वैरायटी खेल में पार्ट न हो कभी यह हो सकता है क्या? जब नाम ही है वैरायटी ड्रामा। जैसे हद के सिनेमा में भिन्न-भिन्न नाम से भिन्न-भिन्न खेल होते हैं। समझो नाम ही है-खूनी नाहक खेल-फिर उसमें अगर कोई भयानक व दर्दनाक सीन देखो तो विचलित होंगे क्या? क्योंकि समझते हो कि खेल ही खूनी नाहक का है। पहले से ही ऐसा समझकर फिर उसे देखेंगे। वैसे ही मानों कोई लड़ाई, झगड़े, क्रोधी स्टोरीज़ हैं तो उसको देखकर हँसेंगे या रोयेंगे? जरूर हँसेंगे ना? क्योंकि जानते हो कि यह एक खेल है। ऐसे ही इस बेहद के खेल का नाम ही है-वैरायटी ड्रामा अर्थात् खेल। तो उसमें वैरायटी संस्कार व वैरायटी स्वभाव व वैरायटी परिस्थितियाँ देखकर कभी विचलित होंगे क्या? या उसे भी साक्षी हो एक-रस स्थिति में स्थित में स्थित हो देखेंगे? तो अगर यह समझो व याद रखो कि यह एक वैरायटी खेल है तो जो पुरूषार्थ करने में मुश्किल समझते हो, क्या वह सहज नहीं हो जावेगा?

यह दो शब्द भी भूल जाते हो, मेले को भी और खेल को भी भूल जाते हो और भूलने से ही स्वयं को परेशान करते हो। क्योंकि स्मृति अर्थात् साक्षीपन की सीट छोड देते हो। सीट को छोड़कर अगर कोई ड्रामा देखे तो फिर क्या हाल होगा उसका? तो सीट पर सैट होकर वैरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए, अगर एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे। मुख से वाह-वाह निकलेगी।

वाह! मीठा ड्रामा! यह क्या हुआ, क्यों हुआ यह नहीं निकलेगा बल्कि वाह-वाह शब्द मुख से निकलेंगे अर्थात् सदा खुशी में झूमते रहेंगे। सदा अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान् अनुभव करेंगे। क्या ऐसे स्वयं को प्रैक्टिकल में अनुभव करते हो?

(08.07.1973)

एडवान्स पार्टी का क्या कार्य चल रहा है? आप लोगों के लिये आज सारी फील्ड तैयार कर रहे हैं। उनके परिवार में जाओ, न जाओ लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है उसके लिये वह निमित्त बनेंगे। कोई पॉवरफुल स्टेज लेकर निमित्त बनेंगे। ऐसे पॉवर्स लेंगे जिससे स्थापना के कार्य में मददगार बनेंगे। आजकल आप देखेंगे दिन-प्रतिदिन न्यु-ब्लड का रिगार्ड ज्यादा है। जितना आगे बढ़ेंगे, उतना छोटों की बुद्धि काम करेगी जो की बड़ों की नहीं। बड़ी आयु की तुलना में फिर भी छोटेपन में सतोप्रधानता रहती है। कुछ-न-कुछ प्युरिटी की पॉवर होने के कारण उनकी बुद्धि जो काम करेगी वह बड़ों की नहीं करेगी। यह चेंज होगी। बड़े भी बच्चों की राय को रिगार्ड देंगे। अब भी जो बड़े हैं वह समझते हैं कि हम तो पुराने जमाने के हैं। यह आजकल के हैं उनको रिगार्ड न देंगे और उन्हें बड़ा समझ नहीं चलावेंगे तो काम नहीं चलेगा। पहले बच्चों को रोब से चलाते थे। अभी ऐसे नहीं। बच्चों को भी मालिक समझ कर चलाते हैं। तो यह भी ड्रामा में पार्ट है। छोटे ही कमाल कर दिखायेंगे। एडवान्स पार्टी का तो अपना कार्य चल रहा है लेकिन वह भी आपकी स्थिति एडवान्स में जाने के लिए रुके हुए हैं। उनका कार्य भी आपके कनेक्शन से चलना है।

(02.08.1973)

क्या सभी उन्नति की ओर बढ़ते जा रहे हो? चढ़ती कला की निशानी क्या है, क्या वह जानते हो? सदा लगन में मग्न और विघ्न-विनाशक यह दोनों निशानियाँ क्या अनुभव में आ रही हैं? या विघ्नों को देख विघ्न-विनाशक बनने के

बजाय, विघ्नों को देख अपनी स्टेज से नीचे तो नहीं आ जाते हो? क्या अनेक प्रकार के आये हुए तूफान आपकी बुद्धि में तूफान तो पैदा नहीं करते हैं? जैसे कोई के द्वारा तोहफा मिलता है तो बुद्धि में हलचल नहीं होती है बल्कि हुल्लास होता है। इसी प्रकार आये हुए तूफान उल्लास बढ़ाते हैं या हलचल बढ़ाते हैं? अगर तूफान को तूफान समझा तो हलचल होगी और तोहफा समझा व अनुभव किया तो उससे उल्लास और हिम्मत अधिक बढ़ेगी। यह है चढ़ती कला की निशानी। घबराने के बजाय गहराई में जाकर अनुभव के नये-नये रत्न इन परीक्षाओं के सागर से प्राप्त करेंगे तो क्या ऐसे अनुभव करते हो? यह क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है और ऐसे कैसे चलेगा? यह जो संकल्प चलते हैं इसको हलचल कहा जाता है। हलचल के अन्दर रत्न समाये हुए हैं। ऊपर-ऊपर से अर्थात् बर्हिमुखता की दृष्टि और बुद्धि द्वारा देखने से हलचल दिखाई देगी अथवा अनुभव होगी लेकिन उसी आई हुई बातों को अन्तर्मुखी दृष्टि व बुद्धि से देखने से अनेक प्रकार के ज्ञान-रत्न अर्थात् प्वाइन्ट्स प्राप्त होंगे।

अगर कोई भी बात को देखते या सुनते हुए आश्चर्य अनुभव होता है तो यह भी फाइनल स्टेज नहीं है। ऐसा तो होना नहीं चाहिए, अच्छा जो हुआ वह होना ही चाहिए, अगर ऐसा संकल्प ड्रामा के होने पर भी उत्पन्न होता है तो इसको भी अंश-मात्र की हलचल का रुप कहेंगे। अब तक यह क्यों-क्या का क्वेश्चन का अर्थ है-हलचल। विघ्न आना आवश्यक है और जितना विघ्न आना आवश्यक है अगर उतना यह बुद्धि में रहेगा तो उतना ही ऐसा महारथी हर्षित रहेगा। नथिंग न्यू यह है फाइनल स्टेज। यदि कोई भी हलचल का कर्तव्य करते हो व पार्ट बजाते हो तो सागर समान ऊपर से हलचल भले ही दिखाई दे रही हो अर्थात् चाहे कर्मेन्द्रियों की हलचल में आ रहे हों लेकिन स्थिति नथिंग न्यू की हो। एकाग्र, एकरस, एकान्त अर्थात् एक रचयिता और रचना के अन्त को जानने वाले त्रिकालदर्शी की स्टेज पर, क्या आराम से शान्ति की स्टेज पर स्थित है, या कर्मेन्द्रियों की हलचल आन्तरिक स्टेज को भी हिलाती है? जब स्थूल सागर दोनों ही रुप दिखाता है तो

क्या मास्टर ज्ञान सागर ऐसा रुप नहीं दिखा सकते? यह प्रकृति ने पुरुष से कॉपी की है। आप तो पुरुषोत्तम हो। जो प्रकृति अपनी क्वॉलिफिकेशन दिखा सकती है, क्या वह पुरुषोत्तम नहीं दिखा सकते?

(15.04.1974)

आज सभी बच्चों को सूक्ष्म वतन का समाचार सुनाते हैं। आप सबकी रूचि होती है ना, कि सूक्ष्म वतन की सैर करें अर्थात् एक बार वतन को जरूर देखें? पता है कि यह इच्छा व संकल्प क्यों होता है? क्योंकि बाप-दादा, सूक्ष्म वतन वासी बन, पार्ट बजाते हैं इसलिए संकल्प आता है कि हम भी एक बार बाप-दादा के साथ यह अनुभव करें। इसलिए बाप-दादा ही अपना अनुभव सुना देते हैं। यह तो मालूम है ना कि सबसे मुख्य अनुभव करने व सुनने का दृश्य किस समय होता है? विशेष बच्चों के प्रति अमृतवेले का समय ही निश्चित है। फिर तो, विश्व की अन्य आत्माओं के प्रति, यथा-शक्ति भावना का फल व कोई भी रजोप्रधान कर्म, अल्पकाल के लिए जिन आत्माओं द्वारा होते रहते हैं उनको भी उनके कर्मो के अनुसार अल्पकाल के लिये फल देने के प्रति, साथ-साथ सच्चे भक्तों की पुकार सुनने और भक्तों की भिन्न-भिन्न प्रकार की भावना के अनुसार साक्षात्कार कराने और अब तक भी चारों ओर कल्प पहले वाले छुपे हुए ब्राह्मण आत्माओं को सन्देश पहुंचाने के लिए, बच्चों को निमित्त बनाने के कार्य में, पुरानी दुनिया को समाप्त कराने-अर्थ निमित्त बने हुए, वैज्ञानिकों की देख-रेख करने, ज्ञानी तू आत्मा, स्नेही व सहयोगी बच्चों को, सारे दिन के अन्दर ईश्वरीय सेवा का कार्य करने व मायाजीत बनने में 'हिम्मते बच्चे, मददे बाप' के नियम के अनुसार, उनको भी मदद देने के कर्तव्य में, ड्रामानुसार निमित्त बने हैं। अब समझा कि बाप सारे दिन क्या करते हैं? साकार बाप भी अब अव्यक्त होने के कारण क्विक-स्पीड में निराकार बाप के साथी व सहयोगी सदाकाल के लिए बनने का पार्ट बजा सकते हैं।

साइंस वाले, समय को और अपनी एनर्जी अर्थात् मेहनत को, साधनों के

विस्तार को, सूक्ष्म और शार्ट कर रहे हैं। कम-से-कम ऐक सेकेण्ड तक पहुंचने का तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं और सफलता को पा रहे हैं जैसे विनाश के अर्थ, निमित्त बनी हुई आत्माओं की गति, सूक्ष्म और तीव्र होती जा रही है तो ऐसे ही स्थापना के अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की स्थिति और गति भी सूक्ष्म और तीव्र होनी चाहिये ना? तभी तो दोनों कार्य सम्पन्न होंगे। तो अब व्यक्त शरीर में और अव्यक्त शरीर में अन्तर समझा? अव्यक्त होना ड्रामा अनुसार किस सेवा के निमित्त बना हुआ है, क्या इस रहस्य को समझा? ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में, अन्त तक नूंधा हुआ है। जब तक, स्थापना का कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है, तब तक निमित्त बनी हुई आत्मा (ब्रह्मा) का पार्ट समाप्त नहीं होना है। वह तब तक दूसरा पार्ट नहीं बजा सकते। जगत पिता के नये जगत की रचना सम्पन्न करने का पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है। मनुष्य-सृष्टि की सर्व-वंशावली रचने का सिर्फ ब्रह्मा के लिए ही गायन है ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर इसीलिये गाया हुआ है। सिर्फ स्थिति, स्थान और गति (स्पीड) का परिवर्तन हुआ है, लेकिन पार्ट ब्रह्मा का अभी तक वही है।

कइयों के संकल्प पहुंचते हैं कि इतना समय बाबा क्या कर रहा है? बाप भी प्रश्न पूछते हैं कि क्या ब्रह्मा के साथ ब्राह्मणों का, सर्व-आत्माओं के कल्याण-अर्थ निमित्त बनने का पार्ट व नई सृष्टि की स्थापना का नूंधा हुआ पार्ट समाप्त हुआ है? जब पार्ट समाप्त नहीं हुआ और सृष्टि का परिवर्तन ही नहीं हुआ, तो ब्रह्मा का पार्ट समाप्त कैसे होगा? स्नेह के कारण ही संकल्प आता है कि वतन में इतना समय क्या करेंगे? वतन का पार्ट इतना समय क्यों और कैसे, यह संकल्प कब आता है? यह भी एक गुप्त रहस्य है। कर्म-बन्धन से मुक्त, सम्पन्न हुई आत्मा, इस कल्प के जन्म-मरण के चक्र को समाप्त करने वाली आत्मा, निराकार बाप की फर्स्ट नम्बर साथी आत्मा, विश्व के कल्याण प्रति निमित्त बनी हुई फर्स्ट आत्मा, स्वयं के प्रति और विश्व के प्रति सर्व-सिद्धि प्राप्त हुई आत्मा, जहाँ चाहे और जितना समय चाहे, वह वहाँ स्वतन्त्र रुप में पार्ट बजा सकती है। जब अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त करने वाली आत्माएं, अपनी सिद्धि के आधार पर अपने रुप परिवर्तन कर

सकती है, तो सर्व-सिद्धि प्राप्त हुई आत्मा अव्यक्त रुपधारी बन कर, जितना समय चाहे क्या वह उतना समय ड्रामा-अनुसार नहीं रह सकती?

(30.06.1974)

मुख्य यह दो कम्पलेन्ट्स हैं। एक-दो पार्टी से मिलते हो तो यह कम्पलेन्ट ही विशेष होती है। इसलिये ड्रामानुसार बार-बार यही बातें करना और बार-बार बाप द्वारा यही शिक्षा मिलना इसका भी हिसाब-किताब बनता है। इसलिए ड्रामानुसार अब तक भी स्पेश्यल सर्विस लेना यह भी पार्ट समाप्त हो रहा है। इसमें भी रहस्य है। वही बात कई बार पूछते हैं-एक वर्ष वायदा करके जाते हैं कि अगले वर्ष यह कम्पलेन्ट नहीं होगी। दूसरे वर्ष फिर दोबारा कहते कि अगले वर्ष नहीं होगी। जो वर्ष बीता वह किस खाते में गया? समझते हैं कि बाप-दादा को वायदा भूल जाता है। समझते हैं बाप-दादा को क्या याद होगा? बाप-दादा को सबके वायदे याद रहते हैं लेकिन बाप-दादा बच्चों का डिस-रिगार्ड नहीं करते। सामने बैठ कहे कि वायदा नहीं निभाया, यह भी डिस-रिगार्ड है। जब सिर का ताज बना रहे हैं, स्वयं से भी आगे रख रहे हैं, तो ऐसी आत्मा का डिस-रिगार्ड कैसे करेंगे? इसलिए मुस्कराते हैं। ऐसे नहीं कि याद नहीं रहता है। आत्माओं को तो चला देते हैं। निमित्त बनी हुई टीचरों को बड़ी चतुराई से चला देते हैं। कहेंगे आपने हमारे भावार्थ को नहीं समझा। हमारा भाव यह नहीं था, शब्द मुख से निकल गया। लेकिन बाप-दादा भाव के भी भाव को जानता है। उससे छिपा नहीं सकेंगे। टीचर फिर भी समझेंगे मेरे से गल्ती हो गई; हो सकता है। लेकिन बाप से तो नहीं हो सकती है ना? इसलिये अब छोटी-छोटी बातों के लिये समय नहीं। यह भी व्यर्थ में एड हो जाता है। बाप से जितनी मेहनत लेते हो, उतना रिटर्न करना होगा। व्यक्त रुप में मेहनत ली। अव्यक्त रुप में भी कितने वर्ष हो गये। छठा वर्ष चल रहा है। अव्यक्त रुप में भी छः वर्ष इन्हीं बातों पर शिक्षा मिलती रही। अब तक भी वही शिक्षा चाहिए? अभी सर्विस लेने का टाइम है अथवा रिटर्न करने का टाइम है? अगर रिटर्न नहीं

करेंगे तो प्रजा नहीं बना सकेंगे। इसलिये अब स्वयं को पॉवरफुल बनाओ। नॉलेजफुल बनाओ। अनेक प्रकार की क्यू से स्वयं को मुक्त करो। युक्ति जो मिलती है उसको काम में नहीं लगाते हो, इसलिये मुक्त नहीं हो पाते। अच्छा यह हुआ क्यू का रेसपॉस। अब बाप-दादा बच्चों से विदाई लेते हैं।

(11.07.1974)

कल्याणकारी बाप की श्रीमत पर चलने वाली आत्मायें सिवाय कल्याण के, चढ़ती कला के और कोई भी संकल्प कर नहीं सकती हैं। उनका हर संकल्प, हर कार्य के प्रति समय, वर्तमान वा भविष्य के प्रति समर्थ संकल्प होगा, व्यर्थ नहीं होगा। घबराते तो नहीं हो? सामना करना पड़ेगा। पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना, अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। इसका मतलब यह तो नहीं समझते हो कि होना नहीं है। ड्रामा में जो होता रहा है, समय-प्रति-समय, उसमें माखन से बाल ही निकलता है न? कोई मुश्किल हुआ है? बाप-दादा नयनों पर बिठाये, दिल तख्त पर बिठाये पार करते ले आ रहे हैं ना? कोई क्या अन्त तक साथ निभाने का या किसी भी परिस्थितियों से पार ले जाने का वायदा व कार्य निभायेंगे। नहीं साथ ले ही जाना है न। सर्वशक्तिमान साथी होते हुए भी यह संकल्प उत्पन्न होना - उसको क्या कहेगे? ऐसे व्यर्थ संकल्प समाप्त कर जिस स्थापना के कार्य के निमित्त हो, बाप-दादा के मददगार हो, उस कार्य में मग्न रहो। अपनी लगन की अग्नि को तीव्र करो। जिस लगन की अग्नि से ही विनाश की अग्नि तीव्र गति का स्वरूप धारण करेगी। अपने रचे हुए अविनाशी ज्ञान यज्ञ, जिसके निमित्त ब्राह्मण बने हुए हो, इस यज्ञ में पहले स्वयं की सर्व कमजोरियों व कमियों की आहुति डालो। तभी सारी पुरानी दुनिया को आहुति पड़ने के बाद समाप्ति होगी। अब दृढ़ संकल्प की तीली लगाओ। तब यह सम्पन्न होगा।

(08.02.1975)

जैसे कल्प पहले का गायन है - पाण्डवों ने तीर मारा और जल निकला अर्थात् पुरुषार्थ किया और फल निकला। अब प्रत्यक्ष फल का समय है। सीजन है, समय का वरदान है। इसका लाभ उठाओ। अपने साधनों व अपने प्रति समय व सम्पत्ति का त्याग करो, तब यह प्रत्यक्ष फल का भाग्य प्राप्त कर सकेंगे। स्वयं को आराम, स्वयं के प्रति सेवा-अर्थ अर्पण की हुई सम्पत्ति लगाने से कभी सफ़लता नहीं मिलेगी। जैसे सेवा के प्रारम्भ में अपने पेट की रोटी भी कम करके हर वस्तु को सेवा में लगाने से उसका प्रत्यक्ष फल आप आत्मायें हो। ऐसे मध्य में बाप ने ड्रामा ने सहज साधनों को स्वयं के प्रति लगाने का अनुभव भी कराया है। लेकिन अब अन्त में प्रकृति दासी होते हुए भी सर्व साधन प्राप्त होते हुए भी स्वयं के प्रति नहीं लेकिन सेवा के प्रति लगाओ। क्योंकि अब आगे चलकर अनेक आत्मायें साधन और सम्पत्ति आपके आगे ज्यादा से ज्यादा अर्पण करेंगी। लेकिन स्वयं के प्रति स्वीकार कभी नहीं करना। स्वयं के प्रति स्वीकार करना अर्थात् स्वयं को श्रेष्ठ पद से वंचित करना।

(10.02.1975)

स्वयं को फर्स्ट नम्बर में समझते हो या सेकेण्ड नम्बर के? लण्डन का ग्रुप कौन से नम्बर में है? जबकि डबल विदेशी ग्रुप ने बाप-दादा का विशेष आह्वान किया है। विदेशी तो सब हैं लेकिन यह डबल विदेशी हैं। तो डबल विदेशियों को विशेष रूप से बाप-दादा का शो करना पड़े। वह तब कर सकेंगे जब नयनों के नूर बनेंगे। भुजायें नहीं। विदेशियों को सर्विस का नया प्लैन बनाना चाहिए। जैसे भारत में निवास करने वाली सर्विसएबल आत्मायें नई-नई इन्वेन्शन निकालती है। ऐसे डबल विदेशियों ने क्या इन्वेन्शन निकाली है? जैसे भारत में निकली हुई विदेश में भी करते हो वैसे विदेश की इन्वेन्शन फिर भारत में हो। जैसे प्रदर्शनी, फेयर, प्रोजेक्टर-शो व गीता पाठशालायें, यह भारत में निवास करने वालों की इन्वेन्शन

हैं। ऐसे विदेशियों ने क्या इन्वेन्शन की है? (मौरीशस में प्राइममिनिस्टर को बुलाया था) किसी को बुलाना - यह भी यहाँ से शुरू हुआ है लेकिन उसको प्रैक्टिकल में वहाँ लाया है। भारत ने प्रैक्टिकल नहीं किया। यह तो ठीक है, जो कुछ किया है उसके लिए बाप-दादा धन्यवाद कहते हैं। लेकिन वहाँ से कोई नयी इन्वेन्शन निकली है? विदेशियों को ऐसी कोई विहंग-मार्ग की सर्विस इन्वेन्शन विदेश के वातावरण-प्रमाण निकालनी है, जो थोड़े समय के अन्दर विदेश में सन्देश पहुँच जाए। टी.वी. व रेडियो में आप लोगों का आता है वह तो वहाँ के लिए कॉमन बात है। जैसे आपका आता है वैसे औरों का भी आता है। इण्डिया में यह बड़ी बात है। लेकिन यही बात कई स्थानों में कॉमन है। तो जितना पुरुषार्थ किया है, थोड़े समय में हिम्मत, उमंग, उत्साह दिखलाते हुए सर्विस को आगे बढ़ाया है उसके लिये बाप-दादा लास्ट इज फास्ट का टाइटल तो देते ही हैं। लेकिन अब आपस में सब विदेशी मिल कर ऐसी नई इन्वेन्शन निकालो जो विदेश में इतना फोर्स का आवाज हो जो वह भारतवासियों तक पहुँचे। विदेश की सर्विस का मूल फाउण्डेशन ही यह है कि विदेश की आवाज द्वारा भारत के कुम्भकरण जागेंगे। विदेश-सर्विस की एम ऑब्जेक्ट यह है। विदेश का विदेश में दिखाया यह कोई बड़ी बात नहीं है। उस लक्ष्य से विदेश की सेवा ड्रामा में नूंधी हुई है और अब तक भी कोई भी इन्वेन्शन का आवाज विदेश से ही होता आया है। इन्वेन्शन भारत की ही होती है, लेकिन भारत-वासी भारत की इन्वेन्शन को विदेशियों द्वारा ही मानते आये हैं। ऐसे ही यह ईश्वरीय प्रत्यक्षता की आवाज विदेश सर्विस ही भारत में नाम-बाला करेगी। तो विदेशी इस कार्यार्थ निमित्त बने हुए हैं। इसलिये अब ऐसी इन्वेन्शन निकालो। कोई ऐसी आत्मा को निमित्त बनाओ जिनके अनुभव का आवाज हो, मुख का आवाज नहीं। अनुभव का आवाज विदेश से भारत तक पहुँचे। अन्तिम समय में विदेश सेवा को इतना महत्व क्यों दिया है, जबकि जाने वालों का भी संकल्प होता है कि ऐसे नाजुक व नजदीक समय पर विदेश में क्यों भेजा जाता है? जब कि अन्त में विदेश से भारत में ही आना है। फिर भी विदेश सेवा आगे बढ़ रही है। अच्छे-अच्छे

हैण्डस विदेश-सेवार्थ भेजे जा रहे हैं, जबकि भारत में आवश्यकता है। निमन्त्रण हैं - फिर भी क्यों भेजा जा रहा है? और यह भी जानते हैं कि अन्य मत मतान्तरों का स्वर्ग में आने का पार्ट नहीं है, लेकिन जो ट्रॉन्सफर हो गये हैं, व कन्वर्ट हो गये हैं उन आत्माओं को अपने आदि धर्म में लाने के लिये भेजा जाता है जो बहुत थोड़े होंगे। इसका मूल आधार व विदेश सर्विस की एम-आब्जेक्ट यह है कि विदेश द्वारा भारत तक आवाज पहुँचने का राज ड्रामा में नूंधा हुआ है। इसलिए विदेश की सर्विस को फर्स्ट चान्स दिया हुआ है। बाकी गीता पाठशालायें खोलीं व टी.वी. में बोला वह कोई एम-आब्जेक्ट नहीं। वह सब साधन हैं एम-आब्जेक्ट तक पहुँचने का। समझा? तो अब आपस में ऐसी राय करो कि जल्दी से जल्दी भारत तक आवाज़ कैसे फैलावें? विदेश द्वारा भारत में आवाज कैसे हो?

(02.08.1975)

इनके आह्वान के साथ दूसरी ओर बाप-दादा भी आह्वान कर रहे हैं कि समान और सम्पूर्ण बन कर सूक्ष्म वतन निवासी फरिश्ता बनकर बाप के साथ घर चलें। चलना है या संगम ज्यादा भाता है? क्या एवर-रेडी बन गये हो? जहाँ बिठायें, जिस रूप में बिठायें और जब तक बिठायें ऐसे वायदे में सदा स्थित रहते हो? लास्ट ऑर्डर रूहानी मिलिट्री को कितने समय में मिलेगा? एक सेकेण्ड का ऑर्डर होगा। एक घण्टा पहले इतला नहीं होगी। तब तो आठ रत्न निकलते हैं। डेट निश्चित बता करके पेपर नहीं लेंगे। अर्थात् लास्ट डेट जो ड्रामा में निश्चित है, वह निश्चित डेट और समय नहीं बतलाया जायेगा। यह तो एवरेज बताया जाता है। लेकिन लास्ट पेपर एक ही क्वेश्चन का और एक ही सेकेण्ड का होगा। इसलिए बच्चों को एवर-रेडी बनना है।

(02.09.1975)

फरिश्ते स्वरूप की स्थिति में सदा स्थित रहते हो? फरिश्ते स्वरूप की

लाइट में अन्य आत्माओं को भी लाइट ही दिखाई देगी। हद के एक्टर्स जब हद के अन्दर अपने एक्ट करते दिखाई देते हैं, तो लाइट के कारण अति सुन्दर स्वरूप दिखाई देते हैं। वही एक्टर, साधारण जीवन में, साधारण लाइट के अन्दर पार्ट बजाते हुए कैसे दिखाई देते हैं? रात-दिन का अन्तर दिखाई देता है ना? लाइट का फोकस उनके फीचर्स को ही परिवर्तित कर देता है। ऐसे ही बेहद ड्रामा के आप हीरो हीरोइन एक्टर्स, अव्यक्त स्थिति की लाइट के अन्दर हर एक्ट करने से क्या दिखाई देंगे? अलौकिक-फरिश्ते! साकारी की बजाय सूक्ष्म वतनवासी नजर आयेंगे। साकारी होते हुए भी आकारी अनुभव होंगे। हर एक्ट हरेक को स्वत:ही आकर्षित करने वाला होगा।

जैसे आज हद का सिनेमा व ड्रामा कलियुगी मनुष्यों के आकर्षण का मुख्य-केन्द्र है-छोड़ना चाहते हुए और न देखना चाहते हुए भी हद के एक्टर्स की एक्ट अपनी ओर खींच लेती है, लेकिन उसका आधार लाईट है, ऐसे ही इस अन्तिम समय में माया के आकर्षण की अति के बाद अन्त होने पर, बेहद के हीरो एक्टर्स, जो सदा जीरो स्वरूप में स्थित होते हुए जीरो बाप के साथ हर पार्ट बजाने वाले हैं और दिव्य ज्योति स्वरूप वाले जिनकी स्थिति भी लाइट की है और स्टेज पर हर पार्ट भी लाइट में हैं - अर्थात् जो डबल लाइट वाले फरिश्ते हैं - वे हर आत्मा को स्वत:ही अपनी तरफ आकर्षित करेंगे। आजकल की दुनिया में ड्रामा के अतिरिक्त और कौनसी वस्तु है जो ऐसे फरिश्तों के नयनों जैसी आकर्षण करने वाली है? टी.वी.। जैसे टी.वी. द्वारा इस संसार की कैसी-कैसी सीन-सीनरियाँ देखते हुए कई आकर्षित होते, अर्थात् गिरती कला में जाते हैं - ऐसे ही फरिश्तों के नयन दिव्य दूर-दर्शन का काम करेंगे। हर एक के नयनों द्वारा सिर्फ इस संसार के ही नहीं लेकिन तीनों लोकों के दर्शन करेंगे। ऐसे फरिश्तों के मस्तक में चमकती हुई मणि आत्माओं को सर्च-लाइट व लाइट हाऊस के समान स्वयं का स्वरूप, स्व-मार्ग और श्रेष्ठ मंजिल का स्पष्ट साक्षात्कार करायेंगी।

(05.09.1975)

माया के अनेक प्रकार के चक्करों की निशानी क्या होगी? जैसे चक्रधारी आत्मा लाइट के ताजधारी होंगी और बाप के वर्से की अधिकारी होंगी वैसे माया के अनेक प्रकार के चक्कर में आने वाले की निशानी क्या होगी? जैसे उनके सिर पर लाइट का ताज है, वैसे उनके सिर पर अनेक प्रकार के विघ्नों का बोझ होगा। ताज नहीं। सदैव किसी-न-किसी प्रकार का बोझ उनके सिर पर अर्थात् बुद्धि में महसूस होगा। ऐसी आत्मा सदैव कर्जदार और मर्जदार होगी - उनके मस्तक पर, मुख पर सदैव क्वेश्चन मार्क होंगे। हर बात में क्यों, क्या और कैसे, यह क्वेश्चन होंगे। एक सेकण्ड भी बुद्धि एकाग्र अर्थात् फुलस्टॉप में नहीं होंगी। फुलस्टॉप की निशानी बिन्दी (.) होती है अर्थात् मन्सा में भी बिन्दु स्वरूप की स्थिति नहीं होगी। वाचा और कर्मणा में भी बीती सो बीती, नथिंग न्यू। जो होता है वह कल्याणकारी है, ऐसा फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दी लगानी नहीं आवेगी।

(18.09.1975)

इस विशेष कमज़ोरी को मिटाने के लिये विशेष संगठन चाहिये। महाकाली स्वरूप शक्तियों का संगठन चाहिये जो अपने योग-अग्नि के प्रभाव से इस वातावरण को परिवर्तन करे। अभी तो ड्रामा अनुसार हर एक चलन रूपी दर्पण में अन्तिम रिजल्ट स्पष्ट होने वाली है। आगे चल कर महारथी बच्चे अपने नॉलेज की शक्ति द्वारा हर एक के चेहरे से उन्हों की कर्म-कहानी को स्पष्ट देख सकेंगे। जैसे मलेच्छ भोजन की बदबू समझ में आ जाती है, वैसे मलेच्छ संकल्प रूपी आहार स्वीकार करने वाली आत्माओं की वायब्रेशन से बुद्धि में स्पष्ट टचिंग होगी। इसका यन्त्र है बुद्धि की लाइन क्लियर। जिसका यह यन्त्र पॉवरफुल होगा वह सहज जान सकेंगे।

(28.10.1975)

अब प्रत्यक्षता वर्ष मनाने से पहले स्वयं में वा निमित्त बने हुए सेवाधारियों के संगठित रूप से यह शक्ति भी प्रत्यक्ष होनी चाहिए। अगर स्वयं में ही शक्ति की

प्रत्यक्षता नहीं होगी, तो बाप को प्रत्यक्ष करने में जितनी सफ़लता चाहते हो, उतनी नहीं होगी। ड्रामानुसार होना है, वह तो हो ही जाता है। लेकिन निमित्त बने हुए को निमित्त बनने का फल दिखाई दे, वह नहीं होता। भावी करा रही है।

(09.12.1975)

अब अपने-आप से पूछो कि मैं कौन-सा परवाना हूँ? अनेक प्रकार की स्मृतियों के चक्कर समाप्त हुए हैं या अब तक भी कोई-न-कोई चक्कर अपनी तरफ खींच लेता है? अगर कोई भी व्यर्थ स्मृति के चक्कर अब तक लगाते हो तो स्वदर्शन चक्रधारी, संगमयुगी ब्राह्मणों का टाइटल प्राप्त नहीं हो सकेगा! जो स्वदर्शन-चक्रधारी नहीं, वह भविष्य का चक्रवर्ती राजा भी नहीं होगा। 63 जन्म भक्ति-मार्ग के अनेक प्रकार के व्यर्थ चक्कर लगाने में गंवाया। वही संस्कार अब संगम पर भी न चाहते हुए भी क्यों इमर्ज कर लेते हो? चक्कर लगाने में प्राप्ति का अनुभव होता है या निराशा होती है? 63 जन्म चक्कर लगाते, सब-कुछ गंवाते, स्वयं को और बाप को भूलते हुए अब तक भी थके नहीं हो? कि ठिकाना मिलते भी चक्कर काटते हो? अविनाशी प्राप्ति होते, विनाशी अल्प-काल की प्राप्ति अब भी आकर्षित करती है? अब तक कोई अन्य ठिकाना प्राप्ति कराने वाला नज़र आता है क्या? या श्रेष्ठ ठिकाना जानते हुए भी अल्पकाल के ठिकाने आईवेल अर्थात् ऐसे समय के लिये बना कर रखे हैं? ऐसे भी बहुत चतुर हैं। लेने के समय सब लेने में होशियार हैं, लेकिन छोड़ने के समय बाप से चतुराई करते हैं। क्या चतुराई करते हैं? छोड़ने के समय भोले बन जाते हैं। 'पुरुषार्थी हैं, समय पर छूट जावेगा, सरकमस्टाँसिज़ ऐसे हैं, हिसाब-किताब कड़ा है, चाहता हूँ लेकिन क्या करूँ? धीरे-धीरे हो ही जायेगा' - ऐसे भोले बन बातें बनाते हैं। नॉलेजफुल बाप को भी नालेज देने लग जाते हैं! कर्मों की गति को जानने वाले को अपनी कर्म-कहानियाँ सुना देते हैं। और लेते समय चतुर बन जाते हैं। चतुराई में क्या बोलते हैं - 'आप तो रहमदिल हो, वरदाता हो। मैं भी अधिकारी हूँ, बच्चा बना हूँ तो पूरा अधिकार मुझे

मिलना चाहिये।' लेने में पूरा लेना है और छोड़ने में कुछ-न-कुछ छुपाना है अर्थात् कुछ-न-कुछ अपने पुराने संस्कार, स्वभाव व सम्बन्ध - वह भी साथ-साथ रखते रहना है। तो चतुर हो गये ना। लेंगे पूरा लेकिन देंगे यथा-शक्ति। ऐसे चतुराई करने वाले कौन-सी प्रारब्ध को पायेंगे। ऐसे चतुर बच्चों के साथ ड्रामा अनुसार कौन-सी चतुराई होती है?

स्वर्ग के अधिकारी तो सब बन जाते हैं, लेकिन राजधानी में नम्बरवार तो होते ही हैं ना। स्वर्ग का वर्सा बाप सबको देता है, लेकिन सीट हरेक की अपने नम्बर की है। तो ड्रामा-अनुसार जैसा पुरुषार्थ, वैसा पद स्वत: प्राप्त हो जाता है। बाप नम्बर नहीं बनाते, किसी को राजा का, किसी को प्रजा का ज्ञान अलग-अलग नहीं देते; किसी को सूर्यवंशी, किसी को चन्द्रवंशी की अलग पढ़ाई नहीं पढ़ाते किसी को महारथी, किसी को घोड़ेसवार की छाप नहीं लगाते, लेकिन ड्रामा के अनुसार जैसा और जितना जो करता है वैसा ही पद प्राप्त कर जाता है। इसलिए जैसा लेने में चतुर बनते हो वैसे देने में भी चतुर बनो, भोले न बनो! माया की चतुराई को जानकर मायाजीत बनो। चेक करो कि एक यथार्थ ठिकाने की बजाय और कोई अल्प-काल के ठिकाने अब तक रह तो नहीं गये हैं; जहाँ न चाहते हुए भी बुद्धि चली जाती है? बुद्धि के कहीं जाने का अर्थ है कि ठिकाना है। तो सब हद के ठिकाने चेक करके अब समाप्त करो। नहीं तो यही ठिकाने सदाकाल के श्रेष्ठ ठिकाने से दूर कर देंगे। बाप श्रीमत स्पष्ट देते हैं कि ऐसे करो लेकिन बच्चे 'ऐसे को कैसे' में बदल लेते हैं। 'कैसे' को समाप्त कर, जैसे बाप चला रहे हैं, ऐसे चलो।

(01.02.1976)

भक्तों के पोतामेल में भक्ति के अल्पकाल का फल जो भक्तों को प्राप्त होता है उसमें देखा कि 75 परसेन्ट भक्त सिर्फ अपने नाम, मान और शान प्रति स्वार्थ स्वरूप के भक्त हैं। इसलिये उनके कर्म के फल का खाता समाप्त हुआ पड़ा

है। बाप को फल देने की आवश्यकता नहीं। बाकी 25 परसेन्ट भक्त नम्बरवार लगन प्रमाण भक्ति कर रहे हैं। उनकी भक्ति का फल इसी पुरानी दुनिया में प्राप्त होना है क्योंकि भक्ति का खाता अब आधा कल्प के लिए समाप्त होना है। उसकी गतिविधि क्या देखी कि भक्तों को भी अपनी भक्ति का फल - अभी-अभी किया, अभी-अभी मिला। अर्थात् अल्पकाल की लगन का फल अभी ही अल्पकाल में प्राप्त हो जाता है, भविष्य जमा नहीं होता। भक्तों की प्राप्ति का रूप ऐसे है कि जैसे बारिश के मौसम में चींटियों को पंख लग जाते हैं और वे बहुत खुशी में उड़ने लग जाती हैं। लेकिन वह अल्पकाल की उड़ान उसी सीज़न में ही उनको समाप्त कर देती है। वहाँ ही प्राप्ति और वहाँ ही समाप्ति। वैसे ही अब के भक्त अर्थात् कलियुगी तमोप्रधान भक्त अल्पकाल के फल की प्राप्ति में खुश हो जाने वाले हैं। इसलिये उनके फल की प्राप्ति का कार्य ड्रामा अनुसार जैसे समाप्त हुआ ही पड़ा है। सिर्फ 5 परसेन्ट प्राप्ति का कार्य अब रहा हुआ है, जो अब अति अर्थात् फुल फोर्स से चिल्लायेंगे। उसमें भी विशेष शक्तियों को पुकारेंगे कि - 'वरदान दो, शक्ति दो, साहस और हिम्मत दो।' अभी यह अति में जाकर फिर समाप्त होने वाला है। तो भक्तों के पोतामेल का रजिस्टर समाप्त हुआ ही पड़ा है। जो थोड़ा-बहुत रहा है वह अभी-अभी कर्म और अभी-अभी फल के रूप में समाप्त हो जावेगा। यह था भक्तों का समाचार।

(02.02.1976)

महारथियों के महान् स्थिति की विशेष निशानी, जिससे स्पष्ट हो जाये कि यह महारथी-पन का पुरुषार्थ है, वह क्या होगी? एक तो महान् पुरुषार्थी अर्थात् महारथी जो भी दृश्य देखेंगे, वह समझेंगे - ड्रामा प्लैन अनुसार अनेक बार का अब फिर से रिपीट हो रहा है, वह 'नथिंग-न्यू' लगेगा। कोई नई बात अनुभव नहीं होगी जिसमें 'क्यों' और 'क्या' का क्वेश्चन उठे। और, दूसरा - ऐसे अनुभव होगा जैसे प्रैक्टिकल में, स्मृति-स्वरूप में अनेक बार देखी हुई सीन अब सिर्फ निमित्त

मात्र रिपीट कर रहे हैं। कोई नई बात नहीं कर रहे हैं, लेकिन रिपीट कर रहे हैं। स्मृति लानी नहीं पड़ेगी। कल्प पहले जो हुआ था वही अब हो रहा है। लेकिन जैसे एक सेकेण्ड की बीती हुई बात बहुत स्पष्ट रूप से स्मृति में रहती है वैसे वह कल्प पहले की बीती हुई सीन ऐसे ही स्मृति में होगी जैसे कि एक सेकेण्ड पहले बीती हुई सीन स्मृति में रहती है। क्योंकि एक साक्षीपन, दूसरा त्रिकालदर्शी - यह दोनों स्टेज महारथियों की होने के कारण कल्प पहले की स्मृति बिल्कुल फ्रेश व ताज़ी रहेगी। इसलिये नथिंग-न्यू और दूसरा क्या होगा?

कोई भी कितनी भी विकराल रूप की परिस्थिति हो या बड़े रूप की समस्या हो लेकिन अपनी स्टेज ऊँची होने के कारण वह बिल्कुल छोटी लगेगी। बड़ी बात अनुभव नहीं होगी और न विकराल अनुभव होगी। जैसे ऊँची पहाड़ी पर खड़े होकर नीचे की कोई भी चीज को देखो तो बड़ी चीज़ भी छोटी नजर आती है ना। बड़े से बड़ा कारखाना भी एक मॉडल रूप-सा दिखाई पड़ता है। इसी रीति महारथी के महान् पुरुषार्थ के सामने उसे कोई भी बड़ी बात बड़ी अनुभव नहीं होगी। तो महावीर अर्थात् महारथी के महान् पुरुषार्थ की यह दो निशानियाँ हैं जिसको दूसरे शब्दों में कहा जाता – सूली काँटा अनुभव होगी। ऐसे महावीर के मुख से जो होने वाली रिजल्ट होगी अर्थात् जो होनी होगी, सदैव वही शब्द मुख से निकलेंगे जो भावी बनी हुई होगी। इसको ही 'सिद्धि-स्वरूप' कहा जाता है। जो बोल निकलेगा, जो कर्म होगा वह सिद्ध होने वाले होंगे, व्यर्थ नहीं होंगे। महारथी की निशानी है – विकर्मों का खाता तो समाप्त होता ही है लेकिन व्यर्थ का खाता भी समाप्त। मास्टर सर्वशक्तिवान् है ना। तो मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज का प्रैक्टिकल स्वरूप विकर्मों के खाते के साथ-साथ व्यर्थ का खाता भी समाप्त होगा। यह है महारथियों के पुरुषार्थ की निशानी।

(07.02.1976)

सभी सदा खुश हो ना? जो तीनों कालों के राज़ को जान गए तो राज़ी हो

गए हो ना? कभी भी कोई नाराज़ होता है अर्थात् ड्रामा के राज़ को भूल जाता है। जो सदा ड्रामा के राज़ को और तीनों कालों को जानता है तो वह राज़ी रहेगा ना। नाराज़ होने का कारण राज़ को नहीं जानना है। तीनों कालों के ज्ञाता बनने वाले को 'त्रिकालदर्शी' कहा जाता है। वह सदा राज़ी और खुश रहता है। मधुबन निवासी अर्थात् सदा खुश और राज़ी रहने वाले। दूसरे से नाराज़ होना अर्थात् अपने को राज़ जानने की स्टेज से नीचे ले आना। तख्त छोड़ कर नीचे आते हो तब नाराज़ होते हो। त्रिकालदर्शी अर्थात् नालेजफुल। नालेजफुल की स्टेज एक तख्त है, ऊँचाई है। जब इस तख्त को छोड़कर नीचे आते हो तब नाराज़ होते हो। जैसा स्थान वैसी स्थिति होनी चाहिए।

(29.01.1977)

'स्मृति में रहने से समर्थी आती है।' अगर समर्थी होगी तो कोई भी परिस्थिति स्वस्थिति को डगमग नहीं करेगी। परीक्षाओं को एक खेल समझकर चलेंगे। अगर खेल में या नाटक में किसी प्रकार की परिस्थिति देखते तो डगमग होते हैं क्या? कोई मरे वा कुछ भी हो लेकिन स्थिति डगमग नहीं होगी। क्योंकि समझते हैं यह खेल है। ऐसे ही परिस्थितियों को एक पार्ट समझो। परिस्थिति के पार्ट को साक्षी हो देखने से डगमग नहीं होंगे, मुरझायेंगे नहीं, मजा आएगा। मुरझाते तब हैं जब ड्रामा की प्वाइन्ट को भूल जाते हैं।

(28.04.1977)

बापदादा बेहद के अनादि अविनाशी ड्रामा की सीन के अन्दर विशेष कौन सी सीन देख हर्षाते हैं? जानते हो? वर्तमान समय बाप-दादा ब्राह्मणों की लीला, विचित्र और हर्षाने वाली देख रहे हैं। जैसे बच्चे कहते हैं, 'हे प्रभु तेरी लीला आपरम्पार है' वैसे बाप भी कहते हैं, 'बच्चों की लीला बहुत वन्डरफुल (आश्चर्यवत) है, वैरायटी लीला है।' सबसे वन्डरफुल लीला कौन सी देखने में आती है, वह

जानते हो? अभी-अभी कहते बहुत कुछ हैं, लेकिन करते क्या हैं? वह खुद भी समझते। क्यों कर रहे हैं, यह भी जानते। जैसे किसी भी आत्मा के, वा किसी भी विकारों के वशीभूत आत्मा; परवश आत्मा, बेहोश आत्मा क्या कहती, क्या करती, कुछ समझ नहीं सकते। ऐसी लीला ब्राह्मण भी करते हैं। तो बाप-दादा ऐसी लीला को देख रहमदिल भी बनते हैं, और साथ-साथ न्यायकारी सुप्रीम जस्टिस भी बनते हैं अर्थात् लव और लॉ (प्यार और कानून) दोनों का बैलेंस (संतुलन) करते हैं। एक तरफ रहमदिल बन बाप के सम्बन्ध से रियायत भी करते हैं। अर्थात् एक, दो, तीन बार माफ भी करते हैं। दूसरी तरफ सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण, बच्चों के कल्याण अर्थ ईश्वरीय लॉज (कानून) भी बताते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि लॉ कौन सा है? ड्रामा प्लान अनुसार एक लाख गुणा प्राप्ति और पश्चात्ताप, वा भोगना,यह ऑटोमेटीकली (स्वत:) लॉ अर्थात् नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म माफ़िक कहना वा करना नहीं पड़ता, कि इस कर्म का यह लेना, वा इस कर्म की सज़ा यह है। लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी (स्वचालित ईश्वरीय यंत्र) है, जिस मशीनरी को कोई बच्चे जान नही सकते, इसलिए गाया हुआ है - 'कर्मों की गति अति गुह्य है।'

जो आधार विनाशी और परिवर्तनशील है, उसको आधार बनाने कारण, स्वयं भी सर्व प्राप्तियों के अनुभव को विनाशी समय के लिए ही अनुभव करते हैं, और स्थिति भी एकरस नहीं, लेकिन बार-बार परिवर्तन होती रहती। अभी-अभी बहुत खुशी और आनन्द में होंगे, अभी-अभी मुरझाई हुई मूर्त, उदास और नीरस मूर्त होंगे। कारण? कि आधार ही ऐसा है। कई आत्माएं बहुत अच्छे हुल्लास, उमंग, हिम्मत और बाप के सहयोग से बहुत आगे मंजिल के समीप तक पहुँच जाती हैं, लेकिन 63 जन्मों के हिसाब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज हो, सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं, उस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं - क्या लास्ट तक यही चलेगा? अब तक भी यह टक्कर क्यों होता? इन व्यर्थ संकल्पों की उलझन के कारण प्यार नहीं कर पाते। सोचने में

ही टाईम वेस्ट कर देते हैं और कोटों में कोई तूफानों को भी ड्रामा का तोफ़ा समझ स्वभाव संस्कारो की टक्कर को आगे बढ़ने का आधार समझ, माया को परखते हुए पार करते, सदा बाप को साथी बनाते हुए, साक्षी हो हर पार्ट देखते, सदा हर्षित हो चलते रहते। सदैव यह निश्चय रहता है कि अब तो पहुँचे। तो बाप इतने प्रकार की लीला बच्चों की देखते हैं।

(03.05.1977)

निश्चयबुद्धि की निशानी है सदा निश्चिंत। जो निश्चिंत होंगे वही एकरस रहेगा। कुछ भी हुआ सोचो नहीं। क्यों? क्या? में कभी नहीं जाओ। त्रिकालदर्शी बन निश्चिंत रहो। हर कदम में कल्याण है, जिस बात में अकल्याण भी दिखाई देता है उसमें भी कल्याण समाया हुआ है। सिर्फ अन्तर्मुख होकर देखो। ब्राह्मणों का कभी भी अकल्याण हो नहीं सकता। क्योंकि कल्याणकारी बाप का हाथ पकड़ा है ना!

(05.05.1977)

हर प्रकार के टेंशन से परे, स्वयं और समय का, बाप के साथ का अटेंशन रखते हुए सेकेण्ड-सेकेण्ड का, पार्ट बजाओ। मास्टर सर्वशक्तिवान, आलमाइटी अथार्टी की सन्तान - ऐसी नालेजफुल (ज्ञान सागर) आत्माओं में टेन्शन का आधार दो शब्द हैं। कौन से दो शब्द? 'क्यों और क्या?' किसी भी बात में, यह क्यों हुआ? यह क्या हुआ? जब यह दो शब्द बुद्धि में आ जाते हैं, तब किसी भी प्रकार का टेंशन पैदा होता है। लेकिन संगमयुगी श्रेष्ठ पार्टधारी आत्माएं क्यों, क्या का टेंशन नहीं रख सकती हैं, क्योंकि सब जानते हैं। 'साक्षी और साथीपन' की विशेषता से, ड्रामा के हर पार्ट को बजाते हुए कभी टेंशन नहीं आ सकता। तो अपने इस विशेष कल्याणकारी समय को समझते हुए हर सेकेण्ड के संस्कारों का रिकार्ड नम्बरवन स्टेज में भरते जाओ।

(09.05.1977)

प्रश्नः- कौन सा भोजन आत्मा को सदा शक्तिशाली बना देगा?

उत्तरः- खुशी का। कहते हैं ना खुशी जैसी खुराक नहीं। खुशी में रहने वाला शक्तिशाली होगा। ड्रामा की ढ़ाल को अच्छी तरह से कार्य में लाने से सदा खुश रहेंगे, मुरझायेंगे नहीं। अगर सदा ड्रामा ही स्मृति रहे तो कभी भी मुरझा नहीं सकते। सदा खुशी बुद्धि तक, नालेज के रूप में नहीं। कोई भी दृश्य हो अपना कल्याण निकाल लेना चाहिए। तो सदा खुश रहेंगे।

(14.05.1977)

दीदी जी से:- साक्षी होकर सर्व आत्माओं का अपना-अपना पार्ट देखते हुए कोई भी पार्ट को देख, 'ऐसा क्यों' की हलचल होती है? महारथी और घोड़े सवार दोनों का विशेष अन्तर यही है। घोड़े सवार की निशानी क्या होगी? क्वेश्चन मार्क (प्रश्न चिन्ह) और महारथियों की निशानी होगी फुल स्टॉप (पूर्ण विराम)। जैसे कोई भी सेना होती है तो उसमें फर्स्ट नम्बर है, यह सेकेण्ड है, उसकी निशानी होती है। फिर उनको मैडल मिलता है जिससे मालूम पड़ जाता है कि यह फर्स्ट, यह सेकेण्ड है। तो अनादि ड्रामा में रूहानी सेना के सेनानियों को कोई मैडल नहीं देता है लेकिन ऑटोमेटीकली (स्वत:) ड्रामानुसार उन्हों को स्थिति रूपी मैडल प्राप्त हो ही जाता है। कोई मैडल लगाता नहीं है - स्वत: ही लगा हुआ होता है। तो सुनाया कि महावीर का मैडल होगा - फुल स्टाप। स्टाप भी नहीं फुल स्टाप। और सेकेण्ड नम्बर अर्थात् घोड़े सवार की निशानी - कब स्टाप, कब क्वेश्चन। विशेष निशानी 'क्वेश्चन' की होगी। इससे ही समझना चाहिए कि किस स्टेज वाली आत्मा है। यह निशानी ही मैडल है। स्पष्ट दिखाई देता है न? दिन-प्रतिदिन हरेक आत्मा अपना स्वयं ही साक्षात्कार कराती रहती। न चाहते हुए भी हरेक की स्टेज प्रमाण स्थिति दिखाई देती जा रही है। सरकमटेंसस (परिस्थिति) ऐसे आयेंगे, समस्याएं ऐसी उन्हों के सामने आयेगी जो न चाहते हुए भी स्वयं को छिपा नहीं सकेंगे। क्योंकि अब जैसे समय समीप आ रहा है तो समीप समय के कारण माला स्वयं ही अपना

साक्षात्कार करायेगी। स्थिति अपना नम्बर आटोमेटीकली प्रसिद्ध करती जा रही है। ऐसे अनुभव होता है ना? किसको आगे बढ़ना है तो उसको चान्स ही ऐसा मिल जाता। किसको पीछे का नम्बर है तो ऑटोमेटिकली समस्या वा बातें ऐसी सामने आयेगी जिस कारण स्वत: आगे बढ़ने की ठहरती कला हो जायेगी। कितना भी चाहें लेकिन आगे बढ़ नहीं सकेंगे। दीवार को पार करने की शक्ति नहीं होगी। और इसका भी मूल कारण कि शुरू से हर गुण, शक्ति का पाइन्ट का अनुभवी बनकर नहीं चले हैं। बहुत थोड़ी आत्माएं होंगी जिन्हों का फाउन्डेशन अनुभव है। लेकिन मैजारिटी का आधार संगठन को देखना वा सिर्फ सात्विक जीवन पर प्रभावित होना, एक सहारा समझ कर चलना वा किसके साथ से उल्लास उमंग से चल पड़ना, किसके कहने से चल पड़ना, नालेज अच्छी है उसके सहारे चल पड़े - ऐसे चलने वालों का अनुभव का फाउन्डेशन मजबूत न होने कारण चलते-चलते उलझते बहुत हैं। लेकिन नम्बर तो बनने ही हैं। कई ऐसे अब भी हैं जो योग सिखाते हैं लेकिन योग का अनुभव नहीं है। वर्णन करते हैं योग किसको कहा जाता है, योग से यह प्राप्ति होती है, लेकिन योगी जीवन किसको कहा जाता है, उसका अनुभव बहुत अल्पकाल का है। 'ड्रामा' कहते, लेकिन ड्रामा के रहस्य को जान ड्रामा के आधार पर जीवन में अनुभव करना वह बहुत कम। ऐसा दिखाई देता है ना? फिर भी बाप कहते हैं ऐसी आत्माओं को भी साथ देते हुए मंजिल तक तो ले जाना ही है ना? बाप अपना वायदा तो निभायेंगे ना। लेकिन संगमयुग की प्राप्ति का जो 'श्रेष्ठ भाग्य' है उससे खाली रह जाते हैं। सहयोग की लिफ्ट से चलते रहेंगे। लेकिन जो सारे कल्प में नहीं मिलना है और अब मिल रहा उससे वंचित रह जाते हैं। ऐसे को देख करके रहम भी आता है, तरस भी पड़ता है। सागर के बच्चे बन कर भी तालाब में नहाने के अधिकारी बन जाते हैं। अपनी छोटी-छोटी कमज़ोरी की बातों में समय बिताना यह तालाब में नहाना हुआ ना?

(19.05.1977)

सदा हर्षित, सदा संतुष्ट इस प्राप्ति का वरदान, सेवाधारी को स्वत: ही प्राप्त होता है। क्योंकि वह जानते हैं कि हर आत्मा का भिन्न पार्ट है। पार्टधारी के किसी भी प्रकार के पार्ट को देख, असंतुष्ट न हो। ऐसे सेवाधारी के मन से सदैव हर्षित और संतुष्ट रहने के गीत कौन-से निकलते? वाह बाबा! वाह मेरा पार्ट! और वाह मीठा ड्रामा! जब स्वंय सदा यह मन के गीत गाते तब ही सर्व आत्माएं भी अब भी और सारे कल्प में भी उनकी वाह-वाह करती हैं।

(21.05.1977)

सारे ड्रामा के अन्दर और धर्म की आत्माओं को देखो और अपने को देखो तो महान अन्तर है। पहली बात सुनाई कि डायरेक्ट बच्चे हो। माता-पिता वा सर्व सम्बन्धों का सुख का अनुभव करने वाले, डायरेक्ट बच्चे होने के कारण, विश्व के राज्य का वर्सा सहज प्राप्त हो जाता है। सृष्टि के आदिकाल सतयुग अर्थात् स्वर्ग की सतो प्रधान, सम्पूर्ण प्राप्ति आप आत्माओं को ही प्राप्त होती है। और सर्व आत्माएं आती ही मध्यकाल में हैं। आप श्रेष्ठ आत्माओं का भोगा हुआ सुख वा राज्य रजो प्रधान रूप में प्राप्त करते हैं। जैसे आप आत्माओं को धर्म और राज्य दोनों प्राप्ति हैं, लेकिन अन्य आत्माओं को धर्म है तो राज्य नहीं, राज्य है तो धर्म नहीं। क्योंकि द्वापर युग से धर्म और राज्य का दोनों पुर अलग-अलग हो जाते हैं। जिसकी निशानी सारे ड्रामा के अन्दर डबल ताजधारी सिर्फ आप हो। और कोई देखा है? और भी विशेषताएं हैं। सम्पूर्ण प्राप्ति अर्थात् तन, मन, धन, सम्बन्ध और प्रकृति के सर्व सुख, जिसमें अप्राप्त कोई वस्तु नहीं, दु:ख का नाम-निशान नहीं - ऐसी श्रेष्ठ प्राप्ति अन्य कोई आत्मा को प्राप्त नहीं होती है। डायरेक्ट बच्चे होने के कारण, ऊँच ते ऊँच बाप की सन्तान होने के कारण, परम पूज्य पिता की सन्तान होने कारण आप आत्माएं भी डबल रूप में पूजी जाती हो। एक सालिग्राम के रूप में, दूसरा देवी वा देवता के रूप में। ऐसे विधि पूर्वक पूज्य, धर्मपिता वा कोई भी नामी-ग्रामी आत्मा नहीं बनती। कारण? क्योंकि तुम डायरेक्ट वंशावली हो।

समझा कितने भाग्यशाली हो, जो स्वयं भगवान आपका भाग्य बाला करते हैं! तो सदा अपने ऐसे भाग्य को स्मृति में रखो। कमज़ोरी के गीत नहीं गाओ। भक्त कमज़ोरी के गीत गाते हैं और बच्चे भाग्य के गीत गाते हैं। तो अपने आप से पूछो कि भक्त हूँ वा बच्चा हूँ? समझा अपने श्रेष्ठ भाग्य को?

(24.05.1977)

(पर दादी को) ड्रामा आपको भी समीप पार्ट बजाने के निमित्त बनाता है। जैसे कल्प पहले बजाया था, वैसे अभी भी बजाते हैं। प्लॉन सोचने से नहीं होता है, लेकिन न चाहते भी ड्रामा का पार्ट निमित्त बना देता हैं। इसमें भी बड़ा रहस्य है। वरदान है आपको। लौकिक अलौकिक बाप के कुल का नाम बाला करने वाली निमित्त आत्मा हो। यह भी विशेष वरदान है। इसलिए आपको देखकर के दोनों याद आ जाते हैं। लौकिक भी फीचर्स (शक्ल) याद आयेंगे और फीचर्स द्वारा जो फ्यूचर (भविष्य) बनता है, वह भी याद आयेगा। आपके हर कदम में जो वरदान है - दोनों कुल का नाम बाला करना, वह समाया हुआ है। इसलिए ड्रामा स्वयं ही सीट की तरफ खींचता जा रहा हैं।

(28.05.1977)

और क्या कहते कि सम्बन्धी नहीं सुनते वा संग अच्छा नहीं है, इस कारण शक्तिशाली नहीं बनते। बाप-दादा ने तो पहले से ही सुना दिया है कि हर आत्मा का अपना-अपना अलग-अलग पार्ट है। कोई सतोगुणी, कोई रजोगुणी, कोई तमोगुणी। जब वैरायटी आत्माएं हैं और वैरायटी ड्रामा है, तो सब आत्माओं को एक जैसा पार्ट हो नहीं सकता। अगर किसी आत्मा का तमोगुणी अर्थात् अज्ञान का पार्ट है, तो शुभ भावना और शुभकामना से उन आत्मा को शान्ति और शक्ति का दान दो। लेकिन उसी अज्ञानी के पार्ट को देख, अपनी श्रेष्ठ स्थिति के अनुभव को भूल क्यों जाते हो? अपनी स्थिति में हलचल क्यों करते हो? साक्षी हो पार्ट

देखते हुए, जो शक्ति का दान देना है, वह दो। लेकिन घबराओ मत। अपने सतोप्रधान पार्ट में स्थित रहो। तमोगुणी आत्मा के संग के रंग का प्रभाव पड़ने का कारण है - सदा बाप के श्रेष्ठ संग में नहीं रहते। सदा श्रेष्ठ संग में रहने वाले के ऊपर और कोई संग का रंग प्रभाव नहीं डाल सकता। तो निवारण का सोचो।

(31.05.1977)

जैसे बाप-दादा ड्रामा के रहस्य को मास्टर त्रिकालदर्शी बनाने के कारण सर्व रहस्य बच्चों के आगे स्पष्ट करते हैं। बाप ड्रामा के राज अनुसार पुरुषार्थियों के नम्बर वा राजधानी के रहस्य सुनाते हैं कि ड्रामा में राजधानी में सब प्रकार के पद पाने वाले होते हैं। वा माला नम्बर वार बनती है तो सब महारथी तो बनेंगे नहीं। अथवा सभी विजयमाला में तो आयेंगे नहीं। सब महाराजा तो बनेंगे नहीं। इसलिए हमारा पार्ट ही ऐसा दिखाई देता है। बाप सुनाते हैं एडवान्स में जाने के लिए, लेकिन बच्चे एडवान्स जाने की बजाए उल्टा एडवान्टेज (लाभ) उठा लेते हैं। अर्थात् अपने अलबेलेपन और आलस्य को नहीं मिटाते लेकिन बाप की बात का भाव बदल उसी बात को आधार बना देते हैं। और बाप को सुनाते हैं कि आपने ऐसे कहा। इसी प्रकार अपने भिन्न-भिन्न स्वभाव के वश यथार्थ बातों का भाव बदल, रुकती कला की बाज़ी बहुत अच्छी दिखाते हैं। मायाजीत बनने की युक्तियों को समय पर कार्य में लगाने का अटेंशन खुद कम रखते हैं, लेकिन अपने आप को बचाने का साधन - बाप के बोल को यूज़ करते हैं, क्या कहते हैं कि आपने ही तो कहा है कि माया बड़ी दुस्तर है। ब्रह्मा बाप को भी नहीं छोड़ती, महारथियों को भी माया वार करती है। जब ब्रह्मा बाप को भी नहीं छोड़ती, महारथियों को भी नहीं छोड़ती तो हमारे पास आई और हार खाई तो क्या बड़ी बात है, यह तो होना ही है, अन्त तक यह तो चलना ही है! इस प्रकार पुरुषार्थ में रुकने के बोल, अपना आधार बनाए चढ़ती कला में जाने से वंचित हो जाते हैं। बाप कहते हैं माया आयेगी लेकिन मायाजीत जगतजीत बनना कौन गाए हुए हैं? अगर माया ही न आवे तो बिना

दुश्मन का सामना करने कोई विजयी कहलाते हैं? माया आयेगी लेकिन हार खाना यह तो बाप नहीं कहते। माया पर वार करना है न कि हार खाना है। कल्प-कल्प के विजयी रत्न हैं और विजयी बनकर ही दिखायेंगे - यह समर्थ बोल भूल जाते हैं। लेकिन अपनी कमज़ोरी के कारण बाप के बोल को भी कमज़ोर बना देते हैं। जैसे ब्रह्मा बाप ने मायाजीत बन जगतजीत का पद प्राप्त कर ही लिया, जो कल्प-कल्प की नूंध यादगार रूप में भी है। तो जैसे बाप ब्रह्मा ने, माया प्रबल होते हुए भी, स्वयं को बलवान बनाया; न कि घबराया। तो ऐसे फॉलो फादर (बाप के पद-चिन्ह पर) करो।

सदा निश्चय बुद्धि विजयी रत्न हैं - यह स्मृति रहती है? निश्चय का फल है - 'विजय'। कोई भी कार्य करते हैं, अगर कार्य करते हुए स्वयं में, बाप में, ड्रामा में निश्चय है, सब प्रकार से निश्चय है तो कभी भी विजय न हो ऐसा हो नहीं सकता। अगर हार होती तो उसका कारण - निश्चय में कमी। अगर स्वयं में भी संशय है - यह होगा-नहीं होगा; सफ़लता होगी या नहीं, तो भी सम्पूर्ण निश्चय नहीं कहेंगे। निश्चय बुद्धि का संकल्प दृढ़ होगा, कमज़ोरी का नहीं। जो होगा वह कर लेंगे, यह भी संशय का संकल्प है। जो होगा, नहीं, हुआ ही पडा है - ऐसा निश्चय। कर्म करने के पहले भी निश्चय हो कि हुआ ही पड़ा है। ऐसी स्टेज है? कैसी भी माया आवे लेकिन डगमग न हों। निश्चय बुद्धि हर तूफान व माया के विघ्न को ऐसे पार करेगा जैसे कुछ है ही नहीं। जैसे साइंस के साधन हैं तो गर्मी होते भी उसके लिए गर्मी नहीं है। ऐसे जो निश्चयबुद्धि होगा उनके आगे माया के तूफान आएंगे लेकिन उसके लिए बड़ी बात नहीं होगी। सेफ (बचाव) रहने के साधन उसके पास हैं तो मायाजीत बन जाएंगे।

(07.06.1977)

सभी देखते हैं ब्रह्माकुमारियाँ क्या कहती हैं और क्या करती हैं। इसलिए जो कहते हो वह करने वाले बनो। 'भगवान मिला', 'भगवान मिला' का नारा तो

लगाते, लेकिन भगवान मिला तो और कुछ रह गया है क्या जो उस तरफ बुद्धि जाती? तो सर्व प्राप्तियों का अनुभव सबके आगे दिखाओ। आपका शक्ति-स्वरूप अब सब देखना चाहते हैं। अभी महारथियों को कोई प्लान बनाना है। विघ्न-विनाशक बनने का साधन कौन सा है? ड्रामा अनुसार जो होता है उसको भावी समझ आगे चलते जावे। आत्माओं का जो अकल्याण हो जाता है, तो रहमदिल के नाते क्या होना चाहिए, जिससे उन आत्माओं का अकल्याण न हो। इसकी कोई न कोई युक्ति रचनी चाहिए। वातावरण भी पॉवरफुल बनाने के लिए अब कोई प्लान चाहिए। अभी यह एक लहर चल रही है। एक जनरल विघ्न, दूसरा जिसमें अनेक आत्माओं का अकल्याण है। आजकल जो लहर है - कई आत्माएं अपने आप ही अकल्याण के निमित्त बनी हैं। उनके लिए प्लान बनाओ। महारथियों का संकल्प करना या प्लान बनाना - यह भी वातावरण में फैला है। वातावरण को चेंज करना है। आजकल इस बात की आवश्यकता है जो विघ्न-विनाशक नाम है, वह अपने संकल्प, वाणी, कर्म में दिखाई दे। जैसे आग बुझाने वाले होते हैं - वह आग लगी है तो आग बुझाने सिवाय रह नहीं सकते। कैसा भी मुश्किल काम है, प्लान बना कर आग को बुझाते हैं। आप भी विघ्न विनाशक हो। वातवारण कैसे समाप्त हो? संकल्प रचेंगे तभी वायुमण्डल बदलेगा। हल्का मत करो, यह तो शुरू से ही चलता आया है, ये विघ्न तो पड़ने हैं। झाड़ को तो झड़ना ही है। विघ्न पड़े हुए को खत्म करो। जैसे कोई स्थूल नुकसान होता हुआ देख छोड़ नहीं देते, दूर से भी भागते हो नुकसान को बचाने के लिए, नैचुरल बचाने का संकल्प आएगा। ऐसे नहीं कि यह तो होता रहता है। यह तो ड्रामा है। हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है। हलचल में नहीं आते, परन्तु आप सेफ्टी तथा रहम करने वाले हो - इस भावना से सोचना है। विघ्न विनाशक हो - यह लक्ष्य रखना है। जिस बात का लक्ष्य रखते हो वह धीरे-धीरे हो जाता है। सिर्फ लक्ष्य और अटेंशन चाहिए। महारथियों सिर्फ स्वयं प्रति सर्व विधियां, सर्व शक्तियां यूज नहीं करनी हैं, अभी यह सोच चलता है वा नहीं? चलना चाहिए। इनसे किनारा नहीं करना है। किनारा करेंगे तो इन्डिविज्युल

(व्यक्तिगत) राजा बनेंगे। विश्व-महाराजन नहीं। विश्व-कल्याण की भावना रखने से विश्व-महाराजन बनेंगे।

(10.06.1977)

सदैव साक्षीपन की सीट पर स्थित होकर रहते हुए हर एक्ट अपनी और दूसरों की देखते हो? कोई ड्रामा की सीन सीट पर स्थित ही देखने में मजा आता है। कोई भी सीन सीट के बिना नहीं देखा जाता। तो साक्षीपन की सीट पर सदा स्थित रहते हो? यह बेहद का ड्रामा सदा चलता रहता है। यह दो-तीन घंटे का नहीं, अविनाशी है तो सदा देखने के लिए सीट भी सदा चाहिए। ऐसे नहीं दो घंटे सीट पर बैठा फिर उतर जाओ। तो सदा साक्षी हो देखेंगे वह 'कभी हार और जीत' के दृश्य को देखकर डगमग नहीं होंगे। सदा एक रस रहेंगे। ड्रामा याद रहे तो सदा एकरस रहेंगे। ड्रामा को भूले तो डगमग रहेंगे। अगर ड्रामा कभी-कभी याद रहता तो राज्य भी कभी-कभी करेंगे? अगर साक्षी कभी-कभी रहते तो स्वर्ग में साथी भी कभी-कभी होंगे। नॉलेजफुल तो हो ना? सब जानते हो लेकिन जानते हुए भी 'साक्षीपन' की स्टेज पर न रहने का कारण अटेंशन में अलबेलापन, स्वचिंतन की बजाए अपना व्यर्थ बातों में स्वचिन्तन को गंवा देते। स्वचिन्तन में न रहने वाला साक्षी नहीं रह सकता। परचिन्तन को समाप्त करने का आधार क्या है? अगर हर आत्मा के प्रति शुभ चिन्तक होंगे तो परचिन्तन कभी नहीं करेंगे। तो सदा शुभचिन्तन और शुभचिन्तक रहने से सदा साक्षी रहेंगे। साक्षी अर्थात् अभी भी साथी और भविष्य में भी साथी।

(14.06.1977)

सदा अपने को निश्चिय बुद्धि निश्चिंत आत्मा अनुभव करते हो? जो निश्चय बुद्धि होगा वह निश्चिंत होगा। किसी प्रकार का चिंतन वा चिंता नहीं होगी। क्या हुआ, क्यों हुआ, ऐसे नहीं होता - यह व्यर्थ चिंतन है। निश्चय बुद्धि निश्चिंत और

व्यर्थ चिंतन नहीं करेगा। सदा स्व-चिंतन में रहने वाले, स्व-स्थिति में रहने से परिस्थिति पर विजय प्राप्त करते हैं। दूसरे तरफ से आई हुई स्थिति को स्वीकार क्यों करते? परिस्थिति को किनारा करो तो सदा स्व-चिंतन में रहेंगे। और जो स्व-स्थिति में स्थित रहता वह सदा सुख के सागर में समाया हुआ रहता।

(16.06.1977)

जब किसी भी प्रकार का पेपर आता है तो गभराओ नहीं। क्वेश्चन मार्क में नहीं आओ कि यह क्यूं आया? इस सोचने में टाइम वेस्ट मत करो। क्वेश्चन मार्क खत्म और फुलस्टॉप लगे तब क्लास चेन्ज होगा, अर्थात् पेपर में पास हो जायेंगे। फुलस्टॉप देने वाला फुल पास होगा क्योंकि फुलस्टॉप है बिन्दी की स्टेज।

(22.06.1977)

आजकल की लहर कौन-सी है? महारथियों के मन में जैसे शुरू में जोश था कि अपने हमजिन्स को अपवित्रता से पवित्रता में लाना ही है। पहला जोश याद है? कैसी लगन थी? सबको छुड़ाने की भी लगन थी; शक्ति भरने की भी लगन थी। आदि में जोश था कि हमजिन्स को छुड़ाना ही है, बचाना है। अभी ऐसी लहर है? चाहे चलते-चलते कमज़ोर होने वाले, चाहे नई आत्मएं जो कि बन्धनयुक्त हैं, ऐसे को बन्धनमुक्त बनाएं - इतना जोश है या ड्रामा कह छोड़ देते हो? वर्तमान समय आप लोगों का पार्ट कौन सा है? वरदानी का, महादानी का, कल्याणकारी का। ड्रामा तो है, लेकिन ड्रामा में आपका पार्ट क्या है? तो यह लहर जरूर फैलनी चाहिए? जैसे फायर ब्रिगेडियर को जोश आता है। आग लग रही है, तो रुक नहीं सकते। तो ऐसी लहर होनी चाहिए। आपकी लहर से उन्हों का बचाव हो। अगर आप लोग ड्रामा कह छोड़ देंगे, या सोचेंगे राजधानी स्थापन हो रही है, तो उन्हों का कल्याण कैसे होगा? नालेजफुल होने के कारण यह नालेज है कि यह ड्रामा है, लेकिन ड्रामा के अन्दर आपका कर्त्तव्य कौन सा है? तो महारथियों की लहर क्या

होनी चाहिए? कुछ भी सुनते हो तो 'शुभचिन्तन' चलना चाहिए, परचिन्तन नहीं। आपका शुभचिन्तन उन्हीं की बुद्धियों को शीतल कर सकता है। आप लोग छोड़ देंगे तो वह तो गए। क्योंकि प्रैक्टिकल में निमित्त शक्तियों का पार्ट है। बाप तो बैक बोन (सहारा) है। शक्तियों को कौन सी स्थिति में रहना चाहिए? जैसे देवियों के चित्र में दो विशेषताएं दिखाते हैं। आंखों में मात्र भावना और हाथों से शस्त्रधारी अर्थात् असुर का संघार करने वाली। मात्र भावना अर्थात् रहम की भावना और संघार की भावना भी। संघार करना अर्थात् उन्होंके आसुरी संस्कारों के खत्म करने का प्लान भी हो और रहम भी हो। लॉफुल और लवफुल का बैलेन्स हो। दोनों साथ-साथ हो। यह जो कमज़ोरी की लहर है, यह ऐसे नहीं कि विनाश के कारण प्रत्यक्ष हो गए हैं, कमज़ोरी बहुत समय की होती, लेकिन अभी छिप नहीं सकते। पहले अन्दर-अन्दर गुप्त कमज़ोरी चलती रहती, अभी समय नजदीक आ रहा है। इसलिए कमज़ोरी छिप नहीं सकती। राजा बनने वाला, प्रजा पद वाले, कम पद पाने वाले, सेवाधारी बनने वाले, सब अभी प्रत्यक्ष होंगे। अन्त में जो साक्षात्कार कहा है, वह कैसे होगा? यह साक्षात्कार करा रहे हैं। बाकी ऐसे नहीं है, कमज़ोरी नहीं थीं अब हुई है - लेकिन अब प्रसिद्ध रूप में चान्स मिला है। जैसे समाप्ति के समय सब बीमारी निकलती, वैसे समाप्ति का समय होने के कारण हरेक की वैरायटी कमज़ोरियां प्रत्यक्ष होंगी। अभी तो एक लहर देखी है और भी कई लहरें देखेंगे। अति में जाना जरूर है, अति हो तब तो अन्त हो। जो भी अन्दर कमज़ोरियां हैं, अन्दर छिप नहीं सकती, किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष रूप में आएगी, लेकिन आपकी भावना रहे कि - इन सबका भी कल्याण हो जाए। आप वरदानी हो तो आपका हर संकल्प, हर आत्मा के प्रति कल्याण का हो। लहरें तो और भी आएगी एक खत्म होगी, दूसरी आएगी, यह सब मनोरंजन के बाइप्लाटस हैं। और पद भी स्पष्ट हो रहे हैं। यह होते रहेंगे। आश्चर्यवत् सीन होनी चाहिए। एक तरफ नए-नए रेस में आगे दिखाई देंगे। दूसरे तरफ थकने वाले, रुकने वाले भी प्रसिद्ध होंगे। तीसरे तरफ जो बहुत समय से कमज़ोरियाँ रही हुई हैं, वह भी प्रत्यक्ष होगी। नथिंग न्यू हैं,

लेकिन रहम की दृष्टि और भावना दोनों साथ हों।

(25.06.1977)

आप जैसा बड़ा परिवार और किसका है? तो सब आत्माओं को सामने रखते हुए, स्वयं को बेहद की सेवा अर्थ निमित्त समझते हुए, अपने समय और शक्तियों को कार्य में लगाते हो? मास्टर रचता की स्थिति स्मृति में रहती है वा अपने प्रति ही कमाया और खाया, वा कुछ खाया, कुछ गंवाया, ऐसे अलबेले हो चल रहे हो? तो अपने सर्व खजानों की बजट बनाओ। इतनी बड़ी जिम्मेवारी का कार्य उठाने वाली आत्माएं अगर जमा न होगा तो कार्य कैसे सफल कर सकेंगी। ड्रामानुसार होना ही है - यह हुई नॉलेज की बात। लेकिन ड्रामा में मुझे भी निमित्त बन सेवा द्वारा श्रेष्ठ प्राप्ति करनी है, यह लक्ष्य रखते हुए हर खजाने की 'बजट' बनाओ।

(28.06.1977)

बाप जानते हैं, मेहनत भी बहुत करते हैं; त्याग भी किया है, सहन भी बहुत करते हैं। लेकिन जिससे स्नेह होता है उसकी छोटी-सी कमज़ोरी भी देख नहीं सकते हैं। सदा श्रेष्ठ बनाने की शुभ भावना रहती है। इसलिए यह सब देखते, सुनते हुए भी, सम्पन्न बनाने के लिए इशारा दे रहे हैं। बाप-दादा सदा बच्चों के साथ हर कदम में सहयोगी है और अन्त तक रहेंगे। बाप को किसी के प्रति घृणा नहीं होती। सदैव अपकारी के भी 'शुभ चिन्तक' हैं। इसलिए सदा सहयोग लेते चलते चलो। अमृतवेले का महत्व जान बाप द्वारा वरदान लेते रहो। सीज़न की समाप्ति की अर्थात् सहयोग की समाप्ति नहीं है। हरेक बच्चे के साथ सर्व स्वरूपों से सर्व सम्बन्धों से, 'बाप-दादा का सदा हाथ और साथ है'। अभी ड्रामानुसार समय मिला है, यह अपना लक (भाग्य) समझ समय का लाभ उठाओ। विनाश की घड़ी के कांटे 'आप' हो। आपका सम्पन्न होना समय का सम्पन्न होना है। इसलिए सदा

स्व-चिन्तन, स्वदर्शन चक्रधारी बनो। अच्छा।

सुनने का अन्दाज कितना है? इसी सीजन में भी कितना सुना होगा? अब ड्रामा की भावी सुना रही है कि - आवाज़ से परे जाना है। यह शरीर की खिटखिट भी निमित्त सुना रही है कि शिक्षा बहुत हो गई है। अभी सुनने के बाद समाना अर्थात् स्वरूप बनना - उसकी सीजन है। सुनने की सीजन कितने वर्ष चली! चाहे साकार द्वारा, चाहे रिवाईज कोर्स द्वारा, सुनने का सीजन बहुत चला है। तो अभी स्वरूप द्वारा सर्विस करना। अभी लास्ट यही सीजन रह गया है ना, जिसमें ही प्रत्यक्षता का नगाड़ा बज़ेगा। आवाज़ बन्द होगा, साइलेन्स होगा। लेकिन साइलेन्स द्वारा ही नगाड़ा बजेगा। जब तक मुख से नगाड़े ज्यादा हैं, तब तक प्रत्यक्षता नहीं। जब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा तब मुख के नगाड़े बन्द हो जाएंगे। गाया हुआ भी है 'साइंस के ऊपर साइलेन्स की जीत', न कि वाणी की। समय की समाप्ति की निशानी क्या होगी? ऑटोमेटीकली आवाज़ में आने की दिल नहीं होगी - प्रोग्राम प्रमाण नहीं, लेकिन नैचुरल स्थिति। जैसे साकार बाप को देखा, तो सम्पूर्णता की निशानी क्या दिखाई दी? दो मिनट हैं या एक मिनट है, उसकी पहचान इस स्थिति से होती जा रही है। ऑटोमेटिक वैराग आएगा ज्यादा आवाज़ में आने से। जैसे अभी चाहते हुए भी आदत आवाज़ में ले आती, वैसे चाहते हुए भी आवाज़ से परे हो जाएंगे। प्रोग्राम बनाकर आवाज में आएंगे। जब यह चेन्ज दिखाई दे, तब समझो अभी विजय का नगाड़ा बजने वाला है। आजकल चारों ओर मैजारिटी से पूछेंगे तो सबको सुख से भी शान्ति आधिक चाहिए। वह एक घड़ी भी शान्ति का अनुभव इतना श्रेष्ठ मानते हैं जैसे भगवान की प्राप्ति हो गई। तो एक सेकेण्ड में शान्ति का अनुभव कराने वाले स्वयं शान्त स्वरूप में स्थित होंगे ना। विनाश कब होगा? उसके लिए कौन निमित्त बनेगा? घड़ी की सुइयां कौन सी होगी? घंटे बजने के निमित्त सुई होती है ना? तो विनाश के घंटे बजने के लिए सुई कौन है?

(30.06.1977)

बाप-दादा सर्व बच्चों के वर्तमान स्वरूप से धारणा स्वरूप को देखते विशेष एक बात देख रहे हैं। कौन सी? सर्व बच्चों में से सदा सन्तुष्ट मणियाँ कितनी हैं। सबसे विशेष गुण, जो चेहरे से चमके वह सन्तुष्टता है। सन्तुष्टता तीनों ही प्रकार की चाहिए। एक-बाप से सन्तुष्ट। दूसरा-सदा अपने आप से सन्तुष्ट। तीसरा - सर्व सम्बन्ध और सम्पर्क से सन्तुष्ट। इसमें चैतन्य आत्मायें और प्रकृति दोनों आ जाते हैं। सन्तुष्टता की निशानी प्रत्यक्ष रूप में प्रसन्नता दिखाई देगी। सदा प्रसन्नचित। इस प्रसन्नता के आधार पर प्रत्यक्ष फल ऐसी आत्मा की सदा स्वत: ही सर्व से प्रशन्सा होगी। विशेषता है सन्तुष्टता, उसकी निशानी प्रसन्नता, उसका प्रत्यक्षफल प्रशन्सा। अब अपने आपको देखो। प्रशंसा को प्रसन्नता से ही प्राप्त कर सकते हो। जो सदा स्वयं सन्तुष्ट वा प्रसन्न रहते उसकी प्रशंसा हरेक अवश्य करते हैं। चलते-चलते पुरुषार्थी जीवन में समस्यायें या परिस्थितियाँ तो ड्रामा अनुसार आनी ही हैं। जन्म लेते ही आगे बढ़ने का लक्ष्य रखना अर्थात् परीक्षाओं और समस्याओं का आह्वान करना। अपने किए हुए आह्वान को भूल जाते हो! जब रास्ता तय करना है तो रास्ते के नज़ारे न हो यह हो सकता है? नज़ारों को देखते रुक जाते हो इसलिए मंज़िल दूर अनुभव करते हो। नज़ारे देखते हुए पार करते चलना है। लेकिन नज़ारों को देख यह क्यों, यह क्या, यह ऐसे नहीं - यह वैसे नहीं इन बातों में रुक जाते हैं। हर नज़ारे को करेक्शन करने लग जाते हो। पार करने के बजाए करेक्शन करने में बिज़ी हो जाते हो। इसलिए बाप की याद का कनेक्शन लूज़ कर देते हो - मनोरंजन के बजाए मन को मुरझा देते हो। वाह नज़ारा वाह। वाह-वाह के बजाये अई बहुत कहते हो। अई अर्थात् आश्चर्यजनक। इसलिए चलते-चलते रुक जाते हो। थकने के कारण कभी बाप से मीठे-मीठे उल्हनें देते हुए रायल रूप में बाप से भी असन्तुष्ट हो जाते हो - कई बच्चे कहते हैं इतना पहले क्यों नहीं बताया - सहज मार्ग कहा - सहन मार्ग तो कहा नहीं। सहज मार्ग के बजाए सहन करने का मार्ग अनुभव करते हैं। लेकिन सहन करना ही आगे बढ़ना है। वास्तव में सहन करना नहीं होता लेकिन अपनी कमज़ोरी के कारण सहन अनुभव होता है। जैसे आग का गुण है जलाना -

लेकिन उसके गुण का ज्ञान न होने कारण उससे लाभ लेने के बजाए नुकसान कर देते तो सुख के बजाए सहन करना पड़ता है - क्योंकि वस्तु के बजाए स्वयं को जला देते। गुण का ज्ञान न होने के कारण सुख के बजाए सहन करना पड़ता। वैसे समस्यायें वा परिस्थिति आने के कारण, उनका ज्ञान न होने के कारण आगे बढ़ने के सुख के अनुभव के बजाए सहन करने का अनुभव करते हैं।

(29.11.1978)

आपका पहला वचन क्या है? एक बाप दूसरा न कोई अर्थात् मरना। नाम मरना है लेकिन सब कुछ पाना है - निभाना मुश्किल लगता है क्या? है सहज सिर्फ परिवर्तन करना नहीं आता - भाव और भावना का परिवर्तन करना नहीं आता। वाह ड्रामा वाह! जब कहते हो तो यह सब क्या हुआ। हर बात वाह-वाह हो गई ना ! हाय-हाय खत्म कर दो, वाह-वाह आ जाती है। वाह बाप, वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट। इसी स्मृति में रहो तो विश्व वाह-वाह करेगा।

(03.12.1978)

सदा अपने भाग्य का सिमरण करते खुशी में रहते हो? वाह मेरा भाग्य! यह गीत सदा मन में बजता रहता है ? वाह बाप, वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट - सदा इसी स्मृति में हर कार्य करते ऐसे अनुभव होता है - जैसे कर्म करते हुए भी कर्म के बन्धन से मुक्त, सदा जीवन मुक्त है। सतयुग की जीवनमुक्ति का वर्सा तो प्राप्त होगा ही लेकिन अभी के जीवनबन्ध से जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव सतयुग से भी ज़्यादा है। तो अभी भी अपने ज्ञान और योग की शक्ति से जीवनमुक्त अवस्था का अनुभव करते हैं कि अभी भी बन्धन हैं? बन्धन सब समाप्त हो गये और जीवनमुक्त हो गए। कुछ भी हो जाये लेकिन जीवन मुक्त होने के कारण ऐसे अनुभव होता है जैसे एक खेल कर रहे हैं, परीक्षा नहीं लेकिन खेल है। तन का रोग हो जाए - माया के अनेक प्रकार के वार भी हों लेकिन खेल अनुभव हो। खेल में

दु:ख नहीं होता, खेल किया ही जाता है मनोरंजन के लिए, दु:ख के लिए नहीं। तो खेल समझने से जीवन-मुक्त स्थिति का अनुभव करेंगे। जीवनमुक्त हो या जीवन बन्ध हो? शरीर का,सम्बन्ध का कोई भी बन्धन न हो। यह तो खेल-खेल में फर्ज अदाई निभा रहे हैं। फर्ज अदाई का भी खेल कर रहे हैं। निर्बन्धन आत्मा ही ऊँची स्थिति का अनुभव कर सकेगी। बन्धन वाला तो नीचे ही बंधा रहेगा, निर्बन्धन ऊपर उड़ेगा।

स्थापना के कार्य में आदि से जो आत्मायें सहयोगी हैं, उन्हीं को विशेष सहयोग ड्रामा अनुसार किसी न किसी रूप से प्राप्त ज़रूर होता है। गारन्टी है। बाप-दादा यहाँ का यहाँ रिटर्न भी करते हैं और भविष्य के लिए भी जमा होता है।

(05.12.1978)

टीचर्स को विशेष लिफ्ट है क्योंकि टीचर्स का काम ही है सर्व आत्माओं को मार्ग दर्शन कराना। तो दिन रात एक ही लगन में रहने वाले, एक की ही याद और एक ही कार्य - इससे एक रस स्थिति सहज ही बन जाती है। एक की लगन में रहने से सहज मंज़िल का अनुभव होता है। एक ही एक है तो सहज मार्ग हो गया ना। सेकेण्ड में स्वीच आन किया और मंज़िल पर पहुँचे। सोचा और स्वरूप हुआ यह है लिफ़्ट। टीचर्स को अपने भाग्य को देख सदा बाप के गुण गाने चाहिएं। वाह बाबा और वाह ड्रामा यही गीत सदा चलता रहे। इसी खुशी में चाहे तन का बन्धन हो चाहे मन का हो लेकिन कुछ नहीं लगेगा। सदा बिज़ी रहने से किसी भी प्रकार से माया का वार, वार नहीं कर सकता। माया की हार होगी वार नहीं हो सकता।

(07.12.1978)

मधुबन की शक्ति सेना अर्थात् विशेष आत्माओं की सेना। हरेक अपनी विशेषता को अच्छी तरह से जानते हो। विशेषता के कारण ही विशेष भूमि के निवासी बने हैं यह खुशी रहती है? पिछला खाता तो हरेक का अपना-अपना है जो

चुक्तु भी होता रहता है लेकिन साथ-साथ ड्रामा अनुसार कोई न कोई विशेषता भी है। जिस कारण विशेष पार्ट मिला है। सदा पुण्य भूमि और श्रेष्ठ आत्माओं के संग का विशेष पार्ट यह कम भाग्य नहीं है। जड़ चित्रों के मन्दिर के पुजारी भी अपने को कितना महान समझते हैं - हैं पुजारी - लेकिन नशा कितना रहता। क्योंकि समझते हैं मूर्ति के समीप सम्बन्ध वाले हैं। तो जड़ चित्रों के पुजारी भी इतना नशा रखते यहाँ तो पुजारी की बात नहीं। यहाँ तो सम्पर्क में रहने वाले संग में रहने वाले संगी साथियों को कितना नशा और खुशी होनी चाहिए। ईश्वरीय परिवार में आई हुई आत्मा में कोई विशेषता न हो यह हो नहीं सकता। तो अपनी विशेषता को जान उसको कर्म में लगाओ। जो भी गुण अथवा विशेषता हो चाहे कर्मणा का गुण हो चाहे मधुरता का गुण हो - स्नेह का हो उसको कार्य में लगाओ। जैसे लोहा पारस से लग पारस बन जाता है वैसे एक गुण या विशेषता सेवा में लगाने से सेवा का फल एक का लाख गुणा मिलने से वह एक विशेषता अनेक समय का फल देने के लायक बन जाती। जैसे एक बीज डालने से कितने फल निकलते वैसे एक भी विशेषता कर्म में लगाना अर्थात् धरनी में बीज डालना है। तो समझे कितने खुशनसीब हो ! ब्राह्मण परिवार में जन्म हुआ है तो जन्म के साथ कोई न कोई विशेषता की तकदीर साथ लेकर ही आये हैं। सिर्फ अन्तर यह हो जाता कि उसको कार्य में कहाँ तक लगाते हैं। जन्म का भाग्य है लेकिन भाग्य को कर्म या सेवा में लगाने से अनेक समय के भाग्य का फल निकालना, बीज बोने का यह तरीका आना चाहिए। फल तो अवश्य निकलेगा। बीज बोना अर्थात् विशेषता रूपी बीज को सेवा में लगाना। यहाँ तो सब सदा भाग्य के तख्तनशीन हैं। जिस भाग्य के लिये कल्प पहले की यादगार में भी अब तक एक सेकेण्ड का समीप रहना भी महान समझते हैं - तो जो प्रैक्टिकल में हैं उन्हीं की खुशी, उन्हीं का भाग्य कितना श्रेष्ठ है। श्रेष्ठता को सामने रखने से व्यर्थ बातें समाप्त हो जाती हैं।

पाण्डव अर्थात् सदा के विजयी। पाण्डवों का नाम विजय के कारण ही प्रसिद्ध है। पाण्डव सेना वह भी विशेष सागर के कंठे पर श्रेष्ठ संग में रहने वाली।

तो ऐसी पाण्डव सेना सदा विजयी हो? विजय का खेल सदा चलता है या हार-जीत का - अब के समय और सहयोग के प्रमाण ड्रामा अनुसार जो भाग्य प्राप्त है उसी प्रमाण सदा विजयी का खेल चलना चाहिए।

ड्रामा अनुसार जो विशेषता प्राप्त है उसे सदा कार्य में लगाओ तो औरों की भी विशेषता दिखाई देगी। विशेषता न देख बातों को देखते हो इसलिए हार होती है। हरेक की विशेषता को स्मृति में रखो एक दो में फ़ेथफुल रहो तो उनकी बातों का भाव बदल जावेगा। अगर आपस में दो मित्र होते हैं और उनके बीच तीसरा उनकी कुछ ग्लानि करने आता तो वह उसके भाव को बदल देते हैं। जैसे आपको कोई ब्रह्मा बाप के लिए कहे कि यह क्या, यह तो गाली देते हैं - लेकिन तुम उन्हें निश्चय से समझावेंगे कि यह गाली नहीं है यह तो स्पष्टीकरण है। जहाँ निश्चय होता है वहाँ शब्द का भाव बदल साधारण बात हो जाती है। हरेक की विशेषता को देखो तो अनेक होते भी एक दिखाई देंगे। एक मत संगठन हो जावेगा। कोई किसकी ग्लानि की बातें सुनावे तो उसे टेका देने के बजाए सुनाने वाले का रूप परिवर्तन कर दो। अर्थ में भावना परिवर्तन कर दो। यह अभ्यास चाहिए नहीं तो एक की बात दूसरे से सुनी, दूसरे की तीसरे से सुनी और फिर वह व्यर्थ बातें वातावरण में फैलती रहतीं, जिस कारण पावरफुल वातावरण नहीं बन पाता। साक्षात्कार मूर्त्त भी नहीं बन सकते। इसलिए सदैव सबके प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना हो। एक-दो की ग्लानि की बातें सुनना टाइम वेस्ट करना है। कमाई से वंचित होना है।

(10.12.1978)

और क्या करते हैं? अपने ही व्यर्थ संकल्पों का तूफान स्वयं ही रचते और उसी तूफान में स्वयं ही हिल जाते। अपने निश्चय के फाउण्डेशन वा अनेक प्रकार की प्राप्तियों के आधार में स्वयं ही हिल जाते हैं। ना-मालूम विनाश होगा या नहीं होगा, भगवानुवाच ठीक है वा नहीं है, दुनिया के आगे निश्चय से कहें वा नहीं कहें,

गुप्त रहें वा प्रत्यक्ष होवें-जमा करें वा सेवा में लगायें...प्रवृत्ति को सम्भालें वा सेवा में लगें। आखिर भी क्या होना है। बाप तो निराकार और आकारी हो गये-साकार में सामना करने वाले तो हम हैं। ऐसे व्यर्थ संकल्पों का तूफान रच स्वयं को ही डगमग करते हैं। अपने निश्चय के फाउण्डेशन को हिला देते हैं। जैसे तूफान कहाँ पहुँचा देता है-वैसे यह व्यर्थ संकल्पों का तूफ़ान तीव्र पुरुषार्थ से पुरुषार्थ तरफ़ ले आता है। ऐसे तूफानों में मत आओ-बाप-दादा ऐसे बच्चों से पूछते हैं कि क्या अब तक भी ट्रस्टी हो वा गृहस्थी हो? जब ट्रस्टी हो तो ज़िम्मेवार कौन, आप वा बाप? जब बाप ज़िम्मेवार है तो होगा वा नहीं होगा, क्या होगा यह बाप की ज़िम्मेवारी है वा आपकी है? निश्चयबुद्धि की पहली निशानी क्या है? निश्चयबुद्धि अर्थात् सदा निश्चिंत। जब बाप ने आपकी सब चिंतायें अपने ऊपर ले लीं फिर आप क्यों चिंता करते। विनाश हो न हो वा कब होगा यह चिंता ब्राह्मण जीवन में क्यों? क्या ब्राह्मण जीवन हीरे तुल्य जीवन, बाप से मिलन मनाने की जीवन, चढ़ती कला की जीवन, सर्व खजानों से सम्पन्न होने वाली जीवन, सर्व अनुभूति सम्पन्न जीवन अच्छी नहीं लगती है? जल्दी समाप्त करने चाहते हो? कोई कष्ट वा तकलीफ है क्या? भक्तिमार्ग में यही पुकारा कि यह अतीन्द्रिय सुख की जीवन के दिन एक से चौगुने हो जायें-और अब थक गये हो। ऐसा संकल्प करने वालों के ऊपर बाप-दादा को हंसी आती है। अप्राप्ति क्या है जो ऐसे संकल्प उठाते हो-जब कल्याणकारी बाप कहते हो, कल्याणकारी जीवन कहते हो तो जो भी भगवानुवाच है उसमें अनेक प्रकार के कल्याण समाये हुए हैं। क्यों और कैसे कहा, इस संकल्प से निश्चयबुद्धि का फाउण्डेशन हिलाते क्यों हो? अगर ऐसे छोटे-छोटे तूफ़ानों में फाउण्डेशन हिल जाता है तो महाविनाश के महान तूफान में कैसे ठहर सकेंगे। यह तो सिर्फ एक अपने व्यर्थ संकल्पों का तूफान है लेकिन महाविनाश में अनेक प्रकार के चारों ओर के तूफान होंगे फिर क्या करेंगे? इतनी छोटी सी बात में जिसमें और ही आगे के लिए समय मिला है, साथ मिला है, अनेक प्रकार के खजाने मिल रहे हैं, प्राप्ति होते हुए समाप्ति की उत्कण्ठा क्यों करते हो? सुख के दिनों में धीरज धरो। कब

और क्यों के अधीर्य में मत आओ। अपने ही व्यर्थ संकल्पों के तूफान समाप्त करो, सम्पत्तिवान बनो, समर्थीवान बनो। सदा निश्चयबुद्धि। कल्याणकारी बाप और कल्याणकारी समय का हर सेकेण्ड लाभ उठाओ। सारे कल्प में ऐसे सम्पतिवान, भाग्यवान दिन, भाग्य विधाता के संग के दिन फिर नहीं आने वाले हैं। विनाश के समय भी यह प्राप्ति का समय याद करेंगे इसलिए ड्रामा अनुसार कल्याण अर्थ जो ड्रामा का दृश्य चल रहा है उसको त्रिकालदर्शी बन हिम्मत और उल्लास वाली समर्थ आत्मायें बन स्वयं भी समर्थ रहो और विश्व को भी समर्थ बनाओ। पत्थर तोड़ने में थको मत, स्वयं के तूफान में हिलो मत, अचल बनो। समझा।

(14.12.1978)

वाह ड्रामा इसी स्मृति से अनेकों की सेवा - सभी सदैव वाह ड्रामा वाह इसी स्मृति में ड्रामा के हर सीन को देखते हुए चलते हो? कोई भी सीन को देखते हुए घबराते तो नहीं! जब ड्रामा का ज्ञान मिल गया तो वर्तमान समय कल्याणकारी युग है, जो भी दृश्य सामने आता है उसमें कल्याण भरा हुआ है, वर्तमान न भी जान सको लेकिन भविष्य में समाया हुआ कल्याण प्रत्यक्ष हो जाएगा - वाह ड्रामा वाह याद रहे तो सदा खुश रहेंगे, पुरूषार्थ में कभी भी उदासी नही आएगी, स्वत: ही आप द्वारा अनेकों की सेवा हो जाएगी।

(01.01.1979)

सदा कल्प पहले माफिक अपने को अंगद के समान अचल समझते हो? अंगद के समान अचल अर्थात् सदा निश्चय बुद्धि विजयन्ती। जरा भी हलचल में आये तो विजयी बन नहीं सकेंगे। माया के विघ्न यह तो ड्रामा में महावीर बनाने के लिए पेपर के रूप में आते हैं। बिना पेपर के कभी क्लास चेन्ज नहीं होता। पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढ़ना। तो पेपर आने से खुश होना चाहिए न कि हलचल में आना है। माया से भी लेसन सीखो, वह कभी भी हलचल में नहीं आती

- अटल रहती, यही लेसन माया से सीख मायाजीत बन जाओ।

(18.01.1979)

दूसरी बात सुहाग के साथ भाग्य देखा। लौकिक रीति से भी भाग्य का आधार - तन की तन्दरूस्ती, मन की खुशी, धन की समृद्धि, सम्बन्ध की सदा सन्तुष्टी और सम्पर्क में सदा सफल मूर्त होता है, इन सब बातों से भाग्य को देखते हैं - तो अब संगमयुग का श्रेष्ठ भाग्य अनुभव कर रहे हो ना। संगमयुग के अलौकिक जीवन की विशेषतओं को जानते हो ना। सदा स्वस्थ अर्थात् सदा स्व में स्थित रहने से तन का कर्मभोग भी कर्मयोग से सूली से काँटा हो जाता है। कर्मभोग को भी बेहद के ड्रामा के अन्दर खेल समझ कर खेलते हैं। तो तन का रोग योग में परिवर्तन हो गया। इसलिए सदा स्वस्थ हो। बीमारी को बीमारी नहीं समझते लेकिन अनेक जन्मों का बोझ हल्का हो रहा है, हिसाब चुक्तू हो रहा है - ऐसे समझने से सदा स्वस्थ समझते हो - साथ-साथ मन की खुशी तो सदा प्राप्त है ही। मनमनाभव होना अर्थात् खुशियों के खजाने से सम्पन्न होना।

(23.01.1979)

तीसरी बात - स्वयं का रिगार्ड - इसमें भी बाप द्वारा इस अलौकिक श्रेष्ठ जीवन वा ब्राह्मण जीवन के जो भी टाइटिल हैं वा अनेक गुणों और कर्तव्य के आधार पर जो स्वरूप वा स्थिति का गायन हे - जैसे स्वदर्शन चक्रधारी - ज्ञान स्वरूप प्रेम स्वरूप फरिशतेपन की स्थिति - जो बाप ने नालेज के आधार पर टाइटिल दिये हैं ऐसे अपने को अनुभव करना वा ऐसी स्थिति में स्थित रहना। जो हूँ वैसा अपने को समझकर चलना - जो हूँ अर्थात् श्रेष्ठ आत्मा हूँ, डायरेक्ट बाप की सन्तान हूँ, बेहद के प्रापर्टी की अधिकारी हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ ऐसे जो हूँ वैसे समझकर चलना इसको कहा जाता है स्वयं का रिगार्ड। मैं तो कमजोर हूँ, मेरी हिम्मत नहीं हैं। बाप कहते हैं लेकिन मैं नहीं बन सकती, मेरा ड्रामा में पार्ट ही

पीछे का है, जितना है उतना ही अच्छा है, ऐसे स्वयं से दिलशिकस्त होना यह भी स्वयं का डिसरिगार्ड है। यह भी चैक करो कि स्वयं के रिगार्ड का रिकार्ड क्या रहा।

(25.01.1979)

हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करने से कभी भी कोई कर्म विकर्म नहीं हो सकता। सदा सुकर्म होगा। ऐसे ही साक्षी-द्रष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म-बन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे।

(30.01.1979)

ड्रामानुसार कलियुगी दुनिया का दु:ख और अशान्ति का नज़ारा देख बेहद के वैरागी बनते जायेंगे। कुछ भी होता है, अपनी सदा चढ़ती कला हो। दुनिया के लिए हाहाकार है और आपके लिए जय-जयकार है। आप जानते हो यह दुनिया हाहाकार होने वाली है। हाहाकार होना अर्थात् जाना। किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं। हमारे लिए तैयारी हो रही है। साक्षी होकर सब प्रकार का खेल देखो। कोई रोता है, चिल्लाता है, साक्षी होकर देखने से मज़ा आता है। 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन भी नहीं उठता। यह होना ही है। ऐसे अटल हो ना? 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन तो नहीं उठता। अनेक बार यह सब हलचल देखी है और अब भी देख रहे हो। क्या भी हो दुनिया में, लेकिन याद की भट्टी में रहने वाले सदा सेफ रहते हैं।

(07.12.1979)

माया तंग करती है क्या? अब नमस्कार करने का समय है न कि वार करने का। क्या अभी तक माया का वार होता है? समय प्रति समय जैसे स्टेज आगे बढ़ती जा रही है, अब माया का वार नहीं होना चाहिए। अगर माया आये भी, तो उसे खेल समझकर देखो। ऐसे अनुभव हो जैसे साक्षी होकर हद का ड्रामा

देखते हैं। ऐसे इस माया के खेल का ड्रामा देखो तो बहुत मज़ा आयेगा, फिर घबरायेंगे नहीं। तो ऐसी स्टेज अभी होनी चाहिए। कैसी भी विकराल रूप से माया आये लेकिन आप उसको खिलौना समझेंगे तो वह खेल हो जायेगा। जैसे शिकारी शिकार करता है, उसमें भी वार होता है, लेकिन शिकार समझने के कारण वह घबराता नहीं है। खुश होता है। आप सब भी माया के शिकारी हो। शिकारी कभी डरते नहीं। घबराते नहीं, खुश होते हैं। इस बार मधुबन से यह दृढ़ संकल्प करके जाओं कि सदा खिलाड़ी बन करके खेल देखेंगे। ताकि विदेश से माया वार करने की बजाए नमस्कार करना शुरू कर दे। ऐसे विदेशी संकल्प करते हैं? अब सभी तरफ से माया का वार समाप्त।

(12.11.1979)

जो भी ड्रामा की सीन देखते हो, चाहे वह हलचल की सीन हो या अचल की, लेकिन दोनों में निश्चय। हलचल की सीन में भी कल्याण का अनुभव हो। ऐसा निश्चयबुद्धि। वातावरण हिलाने वाला हो, समस्या विक्राल हो लेकिन सदा निश्चयबुद्धि। इसको कहते हैं - विजयी। तो निश्चय के आधार से विक्राल समस्या भी शीतल हो जायेगी।

ड्रामा की नालेज से क्या-क्यों के क्वेश्चन को समाप्त करने वाले ही प्रकृतिजीत और मायाजीत बनते हैं - सभी प्रकृतिजीत वा मायाजीत बने हो? यह 5 तत्व भी अपनी तरफ आकर्षित न करें और 5 विकार भी वार न करें। ऐसे मायाजीत और प्रकृतिजीत दोनो ही पेपर में पास हो! अगर कोई प्रकृति द्वारा पेपर आये तो पास होने की शक्ति धारण हो गई है? हलचल में तो नहीं आयेंगे? ज़रा भी हलचल में आना अर्थात फेल। यह क्या, यह क्यों, यह क्वेश्चन भी उठा तो क्या रिज़ल्ट होगी। अगर ज़रा भी कोई प्रकृति की समस्या वार करने वाली बन गई तो फेल हो जायेंगे। कुछ भी हो, लेकिन अन्दर से सदा यह आवाज़ निकले वाह मीठा ड्रामा। इतना ड्रामा का ज्ञान पक्का किया है! या जब अच्छी बाते है तो ड्रामा है,

हलचल की बातें हैं तो हाय-हाय। 'हाय क्या हुआ' यह संकल्प में भी न आये, ऐसे मज़बूत हो? क्योंकि आगे चलकर अब ऐसी समस्यायें प्रकृति द्वारा भी आने वाली है! प्राकृति आपदायें तो दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाली हैं ना। तो ऐसी स्थिति हो जो कोई भी संकल्प में भी हलचल न हो। ऐसे अचल और अडोल बने हो? अगर बहुत समय का मायाजीत वा प्रकृतिजीत का अभ्यास नहीं होगा तो रिज़ल्ट क्या होंगी! एक सेकेण्ड का पेपर आना है। उस समय अगर तैयारी करने में लग गये तो रिज़ल्ट निकल जायेगा। एक सेकेण्ड में पास हो जाएं, इसका अभ्यास चाहिए। अगर यह भी सोचा कि योग लगायें, याद में बैठें तो भी सेकेण्ड तो बीत जायेगा। युद्ध में ही शरीर छोड़ देंगे। पुरूषार्थी जीवन में युद्ध करते-करते ही शरीर छूटा तो रिज़ल्ट क्या होगी! चन्द्रवंशी बन जायेंगे। इसलिए हरेक सदा 108 की माला में आने का लक्ष्य रखो। लक्ष्य श्रेष्ठ होगा तो लक्षण आटोमेटिकली आ जायेंगे। 16 हजार का लक्ष्य कभी नहीं करना। नम्बर वन आने का पुरूषार्थ और लक्ष्य रखो।

(05.12.1979)

ड्रामानुसार कलियुगी दुनिया का दु:ख और अशान्ति का नज़ारा देख बेहद के वैरागी बनते जायेंगे। कुछ भी होता है, अपनी सदा चढ़ती कला हो। दुनिया के लिए हाहाकार है और आपके लिए जय-जयकार है। आप जानते हो यह दुनिया हाहाकार होने वाली है। हाहाकार होना अर्थात् जाना। किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं। हमारे लिए तैयारी हो रही है। साक्षी होकर सब प्रकार का खेल देखो। कोई रोता है, चिल्लाता है, साक्षी होकर देखने से मज़ा आता है। 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन भी नहीं उठता। यह होना ही है। ऐसे अटल हो ना? 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन तो नहीं उठता। अनेक बार यह सब हलचल देखी है और अब भी देख रहे हो। क्या भी हो दुनिया में, लेकिन याद की भट्टी में रहने वाले सदा सेफ रहते हैं।

(07.12.1979)

पत्ते-पत्ते को भगवान हिलाता है - इस गायन का रहस्य

भक्ति मार्ग में बिना समझ के भी कहावत है और उनकी मान्यता भी है अगर पत्ता भी हिल रहा है उस पत्ते को हिलाने वाला भी बाप है। लेकिन इस रहस्य को आप जानते हो कि उन पत्तों को बाप नहीं हिलाता लेकिन ड्रामा अनुसार यह सब चल रहा है। यह गायन कोई स्थूल पत्तों से नहीं लगता, लेकिन कल्प वृक्ष के आप सब पहले पत्ते हो। संगमयुगी आप सब गोल्डन एजेड पत्ते जो बाप द्वारा लोहे से पारस बन गये हो, इन चैतन्य पत्ते को इस समय डायरेक्ट बाप चला रहे हैं।

(19.05.1979)

यह तीन स्मृतियाँ हैं - एक स्वयं की स्मृति, दूसरी बाप की स्मृति और तीसरी ड्रामा के नालेज की स्मृति। इन विशेष तीन स्मृतियों में सारे ही ज्ञान का विस्तार समाया हुआ है। नालेज के वृक्ष की यह तीन स्मृतियाँ हैं। जैसे वृक्ष का पहले बीज होता है, उस बीज द्वारा पहले दो पत्ते निकलते हैं, फिर वृक्ष का विस्तार होता है ऐसे मुख्य हैं बीज बाप की स्मृति। फिर दो पत्ते अर्थात विशेष स्मृतियाँ - आत्मा की सारी नालेज और ड्रामा की स्पष्ट नालेज। इन तीन स्मृतियों को धारण करने वाले 'स्मृति भव' के वरदानी बन जाते हैं। इन तीन स्मृतियों के आधार पर मायाजीत जगतजीत बन जाते हैं। तीनों स्मृतियों की संगमयुग पर विशेषता है। इसलिए राजयोगी-तिलक तीन स्मृतियों का अर्थात् तीन बिन्दी के रूप में हरेक के मस्तक पर चमकता है। जैसे - त्रिशूल से अगर एक भाग खत्म हो जाए तो यथार्थ शस्त्र नहीं कहा जावेगा।

(26.12.1979)

सुनाया कि सूक्ष्मवतन में मेहनत नहीं करनी पड़ती है चेकिंग करने में। संकल्प का स्विच ऑन किया और हरेक का सब प्रकार का टोटल इमर्ज हो जाता है। साकार दुनिया के माफिक मेहनत नहीं करनी पड़ती है। जो साइन्स के साधन

अभी निकाल रहे हैं उसका रिफाइन रूप वहाँ पहले से ही है। यह टी.वी. तो अभी निकली है लेकिन आप बच्चों को सूक्ष्मवतन में स्थूल वतन का दृश्य स्थापना के आदि में ही दिखाकर अनुभव कराया है। साइन्स वाले मेहनती बच्चे हैं, अब सितारों तक मेहनत कर रहे हैं। चन्द्रमा में कुछ नहीं मिला तो सितारें ही सही। लेकिन आप बच्चे साइलेन्स की शक्ति से सितारों से भी परे परमधाम का अनुभव आदि से कर रहे हो फिर भी हरेक बच्चे को मेहनत का फल जरूर मिलता है। उनको भी विश्व में नाम-मान-शान और सफलता की अल्पकाल की खुशी प्राप्त हो जाती है। यह भी ड्रामा के अन्दर परवश हैं अर्थात पार्ट के वश हैं। जो गाया हुआ है देवताओं के आगे प्रकृति हीरे रतनों की थालियाँ भर कर आये। पृथ्वी और सागर यह आपके लिए चारों ओर फैला हुआ सोना और मोती हीरे एक स्थान पर इकट्ठा करने के निमित्त बनेंगे। इसी को कहा जाता है - थालियाँ भरकर आये। थाली में बिखरी हुई चीज़ इकट्ठी हो जाती हैं ना। तो यह भारत और आसपास, यह स्थान थाली बन जायेंगे। सेवक बनकर विश्व के मालिकों के लिए तैयारी कर आपके आगे रखेंगे। ऐसे ही देवताओं के लिए सर्व रिद्धि-सिद्धियाँ भी सेवाधारी बनती हैं। यह जो भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों द्वारा सफलता अर्थात सिद्धि को प्राप्त करते हैं यह सब सिद्धियाँ अर्थात साइन्स का भी रिफाइन रूप, सफलता रूप सिद्धि के रूप में आपके सेवाधारी बनेंगे। अभी तो एक्सीडेन्ट भी है और प्राप्ति है। लेकिन रिफाइन सिद्धि रूप में दु:ख का कारण समाप्त हो सदा सुख और सफलता रूप बन जायेंगे। यह जो भिन्न-भिन्न डिपार्टमेन्ट वाले हैं वे अपनी-अपनी नालेज की सिद्धि, इन्वेन्शन की सिद्धि आपकी सेवा में लायेंगे। इसको कहा जाता है प्रकृति भी दासी और सर्व रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति। आर्डर किया और कार्य हुआ। इसको कहा जाता है - 'सिद्धि स्वरूप'।

(04.02.1980)

सेवाधारी भाई-बहनों से :- सेवाधारी अर्थात बाप-समान। बाप भी सेवाधारी बन करके आते हैं। सेवाधारी बनना अर्थात् बाप-समान बनना। तो ये भी समझो ड्रामा में लॉटरी में नाम निकला है। सेवा का चान्स मिलना अर्थात लॉटरी का नाम निकलना। सदा सेवा का चान्स लेते रहना। सभी की रिज़ल्ट अच्छी है - मुबारक हो।

(07.02.1980)

दादी जी से :- समय समीप आ रहा है वा आप समय के समीप आ रही हो? स्वयं को ला रहे हैं वा समय स्वयं को खींच रहा है? ड्रामा आपको चला रहा है या आप ड्रामा को चला रहे हैं? मास्टर आप हो या ड्रामा? रचता ड्रामा है या आप हो?

अभी कई बार वाणी में निकलता है कि जो ड्रामा में होगा वही होगा। लेकिन आगे चलते हुए ड्रामा में कया होना है वह इतना स्पष्ट टच होगा जो फिर ऐसा नहीं कहेंगे कि जो होना होगा वह होगा। अथार्टी से कहेंगे कि यही ड्रामा में होना है। और वही होगा। जैसे भविष्य प्रालब्ध स्पष्ट है वैसे ड्रामा में कया होना है वह भी स्पष्ट होगा। कोई कितना भी कहे कि यह नूंध है नहीं, बनते हैं वा नहीं बनते, क्या पता। तो मानेंगे? नहीं। जेसे इस बात में नालेज़फुल के आधार पर मास्टर हो गये, बस होना ही है। जो कल होना है वा एक सेकेण्ड के बाद होना है वह भी इतना अथार्टी से, नालेज़फुल की पावर से, स्पष्टता की पावर से ऐसे बोलेंगे कि यह होना ही है। जो होगा वह देख लेंगे - नहीं। देखा हुआ है, और वही होगा। इतना अथार्टी वाले बनते जायेंगे। यह भी एक अथार्टी है ना। बनना ही है, राज्य हमारा होना ही है। कितनी भी हिलाने की कोशिश कोई करे लेकिन वह स्पष्ट है जैसे इस पाइंट की अथार्टी हो जायेंगे। यह तब होगा जब थोड़ा सा एकान्तवासी होंगे। जितना एकान्तवासी होंगे उतना टचिंग्स अच्छी आयेंगी। क्या होना है, यह वर्तमान समान भविष्य किलियर हो जायेगा। अभी समय कम मिलता है। पर्दे के अन्दर ड्रामा की यह सीन है। यह भी अनुभूति होगी। इसलिए कहा कि इस वर्ष में जितना

सेवा की हलचल उतना ही बिल्कुल जैस अण्डरग्राउण्ड चले जाओ। कोई भी नई इन्वेंशन और शक्तिशाली इन्वेंशन होती है तो उतना अन्डरग्राउण्ड करते हैं तो एकान्तवासी बनना ही अन्डरग्राउण्ड है। जो भी समय मिले, इकट्ठा एक घण्टा वा आधा घण्टा समय नहीं मिलेगा। यह भी अभ्यास हो जायेगा। अभी-अभी बात की, अभी-अभी 5मिनट भी मिले तो सागर के तले में चले जायेंगे। जो आने वाला भी समझेगा कि यह कहाँ और स्थान पर है। यहाँ नहीं है। उनके भी संकल्प ब्रेक में आ जायेंगे। वाणी में आना चाहेंगे तो आ न सकेंगे। साइलेन्स द्वारा ऐसा स्पष्ट उत्तर मिलेगा जो वाणी द्वारा भी कम स्पष्ट होता। जैसे साकार में देखा बीच-बीच में कारोबार में रहते भी गुम अवस्था की अनुभूति होती थी ना। सुनते-सुनाते डायरेक्शन देते अन्डरग्राउण्ड हो जाते थे। तो अभी इस अभ्यास की लहर चाहिए। चलते-चलते देखें कि यह जैसे कि गायब है। इस दुनिया में है नहीं। यह फरिश्ता इस देह की दुनिया और देह के भान से परे हो गये। इसको ही सब साक्षात्कार कहेंगे। जो भी सामने आयेगा वह इसी स्टेज में साक्षात्कार का अनुभव करेगा। जैसे शुरू में साक्षात्कार की लहर थी ना। उसी से ही आवाज़ फैला ना। चाहे जादू अथवा कुछ भी समझते थे परन्तु आवाज़ तो इससे हुआ ना। ऐसी स्टेज में जब अनुभव समान साक्षात्कार होंगे तो फिर प्रत्यक्षता होगी। नाम बाला होगा। साक्षात्कार होगा। प्रत्यक्षफल अनुभव होगा। इसी प्रत्यक्ष फल की सीज़न में प्रत्यक्षता होगी। इसी को ही वरदानी रूप कहा जाता। जो आये वह अनुभव कर जाए। बात करते-करते खुद भी गुम दूसरे को भी गुम कर देंगे। यह भी होना है। वाणी द्वारा कार्य चलाकर देख रहे हैं। लेकिन यह अनुभव करने और कराने की स्टेज समस्याओं का हल सेकेण्ड में करेगी। टाइम कम और सफलता ज्यादा होगी। आजकल किसको भी कोई बात वाणी द्वारा दो तो क्या कह देते? हाँ यह तो सब पता है। नालेजफुल हो गये हैं। सेकेण्ड में कहेंगे यह तो हम जानते हैं। यही सुनने को मिलेगा। यह भी सब समझ गये हैं कि फलानी भूल की क्या शिक्षा मिलेगी। तो अब नया तरीका चाहिए। वह यह है। अनुभूति की कमी है, पाइंटस की कमी नहीं है। एक सेकेण्ड भी किसी

को अनुभूति करा दो, शक्ति रूप की, शान्ति रूप की तो वह चुप हो जायेंगे।

(20.01.1981)

जो कुछ भी ड्रामा में होता है उसमें कल्याण ही भरा हुआ है, अगर यह स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी। समझदार बच्चे यही सोचेंगे कि जो कुछ होता है वह कल्याणकारी है। क्यों, क्या का क्वेशचन समझदार के अन्दर उठ नहीं सकता। अगर स्मृति रहे कि यह संगमयुग कल्याणकारी युग है, बाप भी कल्याणकारी है तो श्रेष्ठ स्टेज बनती जायेगी। चाहे बाहर की रीति से नुकसान भी दिखाई दे लेकिन उस नुकसान में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा निश्चय हो। जब बाप का साथ और हाथ है तो अकल्याण हो नहीं सकता। अभी पेपर बहुत आयेंगे, उसमें क्या, क्यों का क्वेशचन न उठे। कुछ भी होता है होने दो। बाप हमारा, हम बाप के तो कोई कुछ नहीं सकता, इसको कहा जाता है 'निश्चय बुद्धि'। बात बदल जाए लेकिन आप न बदलो - यह है निश्चय। कभी भी माया से परेशान तो नहीं होते हो? कभी वातावरण से, कभी घर वालों से, कभी ब्राह्मणों से परेशान होते हो? अगर अपने शान से परे होते तो परेशान होते हो। 'शान की सीट पर रहो'। साक्षीपन की सीट शान की सीट है इससे परे न हो तो परेशानी खत्म हो जायेगी। प्रतिज्ञा करो कि 'कभी भी कोई बात में न परेशान होंगे, न करेंगे'। जब नालेजफुल बाप के बच्चे बन गये, त्रिकालदर्शी बन गये, तो परेशान कैसे हो सकते? संकल्प में भी परेशानी न हो। 'क्यों' शब्द को समाप्त करो। 'क्यों' शब्द के पीछे बड़ी क्यू है।

विदाई के समय - दीदी से

मेला देखकर खुशी हो रही है ना? यह भी ड्रामा में जो कुछ होता है वह अच्छे ते अच्छा होता है। अभी तो बहुत आयेंगे, यह तो कुछ भी नहीं है। प्रबन्ध बढ़ाते जायेंगे, बढ़ने वाले बढ़ते जायेंगे। जब मधुबन में भीड़ लगे तब भक्ति में यादगार बनें। जितना बनाते जायेंगे उतना बढ़ते ही जायेंगे, यह भी वरदान मिला

हुआ है। यही यादगार में कहानियाँ बनाकर दिखाते हैं कि सागर तक भी पहुँच गये। फिर भी छोटा हो गया। अभी आबूरोड तक तो पहुँचो तब गायन हो। आबू रोड से माउण्ट तक बैठें तब प्रत्यक्षता होगी। सोचेंगे यह क्या हो रहा है। अटेन्शन तो जाता है ना। ब्र0कु0 कहाँ तक पहुँच गई हैं। अभी यह तो बच्चों का मेला है लेकिन बच्चे और भक्त जब मिक्स हो जायेंगे तब क्या हो जायेगा? अभी तो बहुत तैयारी करनी है। जब बाप का आना है तो बच्चों का भी बढ़ना है। वृद्धि न हो तो सेवा काहे की? सेवा का अर्थ ही है - वृद्धि।

(07.03.1981)

वैसे सेवा में वा स्वंय की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है - एक बाप से अटूट प्यार। बाप सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ। ऐसी लवलीन आत्मा एक शब्द भी बोलती है तो उसके स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बाँध देते हैं। ऐसी लवलीन आत्मा का एक 'बाबा' शब्द ही जादू की वस्तु का काम करता है। लवलीन आत्मा रूहानी जादूगर बन जाती है। एक बाप का लव अर्थात् लवलीन आत्मा। दूसरा सफलता का आधार - हर ज्ञान की पाइंट के अनुभवी मूर्त होना। जैसे ड्रामा की पाइंट देते हैं, तो एक होता है नालेज के आधार पर पाइंट देना। दूसरा होता है - अनुभवी मूर्त होकर पाइंट देना। ड्रामा की पाइंट के जो अनुभवी होंगे वह सदा साक्षीपन की स्टेज पर स्थित होंगे। एक रस, अचल और अडोल होंगे। ऐसी स्थिति में स्थित रहने वाले को अनुभवी मूर्त कहा जाता है। रिजल्ट में बाहर के रूप से भले अच्छा हो वा बुरा हो। लेकिन ड्रामा के पाइंट की अनुभवी आत्मा कभी भी बुरे में भी बुराई को न देख अच्छाई ही देखेगी अर्थात् स्व के कल्याण का रास्ता दिखाई देगा। अकल्याण का खाता खत्म हुआ। कल्याणकारी बाप के बच्चे होने कारण, कल्याणकारी युग होने कारण अब कल्याण खाता

आरम्भ हो चुका है। इस नालेज और अनुभव की अथार्टी से सदा अचल रहेंगे।

(11.03.1981)

टीचर्स के साथ - टीचर्स तो है ही सदा भरपूर आत्मायें। ड्रामा अनुसार निमित्त बने हो, अच्छी मेहनत कर रहे हो और आगे भी करते ही रहेंगे। रिजल्ट अच्छी है। और भी अच्छी होगी। समय समीप आने के कारण जल्दी-जल्दी सेवा का विस्तार बढ़ता ही जायेगा। क्योंकि संगम पर ही त्रेता के अन्त तक की प्रजा, रायल फैमली और साथ-साथ कलियुग के अन्त तक की अपने धर्म की आत्मायें तैयार करनी है। विदेश के सभी स्थान पिकनिक के स्थान बनेंगे लेकिन ब्राह्मण आत्मायें तो राजाई घराने में आयेंगी, वहाँ राजाई नहीं करनी है, राजाई तो यहाँ करेंगे। सब अच्छी सेवा कर रहे हो लेकिन अभी और भी सेवा में, मन्सा सेवा पावरफुल कैसे हो इसका विशेष प्लैन बनाओ। वाचा के साथ-साथ मंसा सेवा भी बहुत दूर तक कार्य कर सकती है। ऐसे अनुभव होगा। जैस आजकल फलाईग सासर देखते हैं वैसे आप सबका फरिश्ता स्वरूप चारों ओर देखने में आयेगा और आवाज निकलेगा कि यह कौन हैं जो चक्र लगाते हैं। इस पर भी रिसर्च करेंगे। लेकिन आप सबका साक्षात्कार ऊपर से नीचे आते ही हो जायेगा और समझेंगे यह वही ब्रहमाकुमार कुमारियाँ हैं जो फरिश्ते रूप में साक्षात्कार करा रही हैं। अभी यह धूम मचाओ। अन्त: वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास करो। ऐसा समय आयेगा जो प्लेन भी नहीं मिल सकेगा। ऐसा समय नाजुक होगा तो आप लोग पहले पहुँच जायेंगे। अन्त: वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास जरूरी है। ऐसा अभ्यास करो जैसे प्रैक्टिकल में सब देखकर मिलकर आये हैं। दूसरे भी अनुभव करें - हाँ यह हमारे पास वहीं फरिश्ता आया था। फिर ढूंढने निकलेंगे फरिश्तों को। अगर इतने सब फरिश्ते चक्र लगायें तो क्या हो जाये? ऑटोमेटिकली सबका अटेन्शन जायेगा। तो अभी साकारी के साथ-साथ आकारी सेवा भी जरूर चाहिए।

अच्छा - अभी अमृतबेले शरीर से डिटैच हो कर चक्र लगाओ।

(13.03.1981)

'आप और बाबा' ये दो शब्द में ज्ञान और योग आ जाता है। इसलिए टाइटल ही है सहज राजयोगी। इसलिए सहज होते भी मुश्किल लगने का कारण अपनी ही कमजोरी है। कोई-न-कोई पुराना संस्कार सहज रास्ते के बीच में बंधन बन रुकावट डालता है और शक्ति न होने के कारण पत्थर को तोड़ने लग जाते हैं। और तोड़ते तोड़ते दिलशिकस्त हो जाते हैं। लेकिन सहज तरीका क्या है?, पत्थर तोड़ना नहीं लेकिन पत्थर को जम्प लगा कर उड़ना है। ये क्युं हुआ? ये होना नहीं चाहिए, आखिर ये कहाँ तक होगा? ये तो बड़ा मुश्किल है, ऐसा क्युं? - ऐसे व्यर्थ संकल्प करना ही पत्थर तोड़ना है, लेकिन एक शब्द 'ड्रमा' याद आ जाता तो इस शब्द के आधार से हाई-जम्प दे देते हैं। उसमें कुछ दिन या मास लग जाते हैं और इसमें एक सेकण्ड लगता है। तो ये अपनी नॉलेज की कमजोरी हुई ना?

(17.03.1981)

कोई भी मुश्किल कार्य आत्माओं के ऊपर आता है तो किसके पास जाते हैं? या बाप के पास या आप देव आत्माओं के पास। जो औरों की भी मुश्किल को सहज करने वाले है वह स्वयं मुश्किल अनुभव कैसे करेंगे। मुश्किल अनुभव करने के समय विशेष कौन-सी बात बुद्धि में आती है जो मुश्किल बना देती है? बहुत अनुभवी हो ना! 'बाप को देखने के बजाए बातों को देखने लग जाते हो। बातों में जाने से फिर कई क्वेश्चन उत्पन्न हो जाते हैं। अगर बाप को देखो जैसे बाप बिन्दु है वैसे ही हर बात को बिन्दु लगा दो। बातें है वृक्ष और बाप है बीज। आप विस्तार वाले वृक्ष को हाथ में उठाने चाहते हो इसलिए न बाप हाथ में आता है, न वृक्ष। बाप को भी किनारे कर देते हो और वृक्ष के विस्तार को भी अपनी बुद्धि में समा नहीं सकते हो। तो जो चाहना रखते हो वह न पूरी होने के कारण दिलशिकस्त हो जाते

हो। दिलशिकस्त को कोई छोटा कार्य भी मुश्किल लगता है। दिलशिकस्त की मुख्य निशानी होगी - बार-बार किसी-न-किसी की चाहे परिस्थिति की, चाहे व्यक्ति की शिकायतें ही करते रहेंगे। और जितनी शिकायतें करते उतना ही खुद आपे ही फँसते जाते। क्योंकि यह विस्तार एक जाल बन जाता है। जितना ही फिर से उससे निकलने की कोशिश करते है उतना फँसते जाते। या होगी बातें या होगा बाप। बातें सुनना और बातें सुनाना यह तो आधा कल्प किया। भक्ति मार्ग का भागवत या रामायण क्या है? कितनी लम्बी बातें है। जब बातें थी तो बाप नहीं था। अब भी जब बातों में जाते हो तो बाप को खो लेते हो। फिर कौन-सा खेल करते हो? (आँख मिचौनी का) तीसरे नेत्र को पट्टी बाँधकर और ढूंढते हो। बाप बुलाता रहता और आप ढूंढते रहते। आखिर क्या होता? बाप स्वयं ही आकर स्वयं का साथ दिलाओ। ऐसे खेल क्यों करते हो? क्योंकि बातों के विस्तार में रंग-बिरंगी बातें होती हैं, वह अपनी तरफ आकर्षित कर लेती है। उससे किनारा हो जाए तो सदा सहज योगी हो जाए।

(18.03.1981)

भारतवासी बच्चों को देखते हुए बापदादा बोले - फारेनर्स का अपना भाग्य, भारत वालों का अपना भाग्य। भारत वाले भाग्यशाली न बनते तो फारेनवाले कैसे आते। विदेश की महिमा लास्ट सो फास्ट के हिसाब से है लेकिन जो हैं ही आदि में वह आदि में रहेंगे। भारत वालों ने भगवान को अपना बनाया है, और उन्हों को बना बनाया भगवान मिला है। अगर भारतवासी बाप को न पहचानते तो उन्हों को पहचान कौन देता। बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त तो फिर भी पहले भारत वाले हैं। गुप्त से प्रत्यक्ष पहले भारत वालों ने किया फिर उन्होंने माना। जैसे दुकान खोलते हैं तो पहली रेढ़ी पर या पटरी पर लगाते हैं। फिर वृद्धि होते-होते बड़ी दुकान हो जाती। ऐसे भारत वालों ने पहले बहुत मेहनत की, दुकान खोले तब तो आप लोग आये हो ना जितना सहन भारत वालों ने किया उतना फारेनर्स ने कहाँ

किया है, इसलिए भारतवासी बच्चे इसमें नम्बरवन हैं। जो सहन करने में नम्बरवन हैं उन्हें वर्सा भी उसी हिसाब से मिलता है। आप लोग प्रैक्टिकल चरित्र करने वाले हो और वह सुनने वाले हैं। आप कहेंगे हमने ऑखों से ब्रह्मा में शिव बाप को देखा यही विशेषता है। वैसे तो सब एक दो से आगे हैं क्योंकि ड्रामा अनुसार संगमयुग को ऐसा वरदान मिला हुआ है जो हरेक में कोई-न-कोई विशेषता सब में विशेष है। अभी देखो 'भोली' की विशेषता और भाषण करने वालों की विशेषता। अगर भोली न होती तो भी काम नहीं चलता। अच्छा - यह भी होली खेल रहे हैं। आज है ही मनाना। यह भी पिचकारी लग रही है।

(21.03.1981)

माया कनेक्शन को ही ढ़ीला करती है उसकी सिर्फ सम्भाल करो। यह समझ लो कि कनेक्शन कहाँ लूज हुआ है। तब निर्बलता आई है। क्यों हुआ, क्या हुआ यह नहीं सोचो। कयों क्या के बजाए कनेक्शन को ही ठीक कर दो तो खत्म। सहयोग के लिए समय भल लो। योग का वायुमण्डल वायब्रेशन बनाने के लिए सहयोग भल लो, बाकी और व्यर्थ बातें करना वा विस्तार में जाना इसके लिए कोई का साथ न लो। वह हो जायेगा शुभचिन्तक। और वह हो जायेगा परचिन्तन। सब समस्याओं का मूल कारण कनेक्शन लूज होना है। है ही यह एक बात। मेरा पार्ट ड्रामा में नहीं है, मेरे को सहयोग नहीं मिला, मेरे को स्थान नहीं मिला। यह सब फालतू बातें हैं। सब मिल जावेगा सिर्फ कनेक्शन को ठीक करो तो सर्व शक्तियाँ आपके आगे घूमेंगी। कहाँ जाने की फुर्सत ही नहीं होगी। बापदादा के सामने जाकर बैठ जाओ तो कनेक्शन जोड़ने के लिए बापदादा आपके सहयोगी बन जायेंगे। अगर एक दो सेकेण्ड अनुभव न भी हो तो कनफ्यूज न हो जाओ। थोड़ा सा जो टूटा हुआ कनेक्शन है उसको जोड़ने में एक सेकेण्ड वा मिनट लग भी जाता है तो हिम्मत नहीं हारो। निश्चय के फाउन्डेशन को हिलाओ नहीं। और ही निश्चय को परिपक्व करो। 'बाबा मेरा मैं बाबा का', इसी आधार से निश्चय की

फाउन्डेशन को और ही पक्का करो। बाप को भी अपने निश्चय के बन्धन में बाँध सकते हो। बाप भी जा नहीं सकते। इतनी अथार्टी इस समय बच्चों को मिली हुई है। अथार्टी को, नालेज को यूज करो। परिवार के सहयोग को यूज करो। कम्पलेन्ट लेकर नहीं जाओ सहयोग की भी माँग नहीं करो। प्रोग्राम सेट करो, कमजोर होकर नहीं जाओ, क्या करूँ, कैसे करूँ, घबरा के नहीं जाओ। लेकिन सम्बन्ध के आधार से सहयोग के आधार से जाओ।

दीदी से :- वैरायटी देख करके खुशी होती है ना। फिर भी अच्छी हिम्मत वाले हैं। अपना सब कुछ चेन्ज करना और दूसरे को अपना बनाना यह भी इन्हों को हिम्मत है। इतना ट्रान्सफर हो गये हैं जो अपने ही परिवार के लगते हैं यह भी ड्रामा में इन्हों का विशेष पार्ट है। अपने पन की भासना से ही यह आगे बढ़ते हैं। एक-एक को देख करके खुशी होती है। पहले तो थे एक ही भारत की अनेक लकड़ियों का एक वृक्ष। लेकिन अभी विश्व के चारों कोनो से अनेक संस्कार, अनेक भाषायें, अनेक खानपान, सब आत्मायें एक वृक्ष के बन गये हैं यह भी तो वन्डर है। यही कमाल है जो सब एक थे और है और होंगे। ऐसा ही अनुभव करते हैं। विशेष सर्व का स्नेह प्राप्त हो ही जाता है।

(29.03.1981)

सभी अपने को महान भाग्यशाली समझते हो ना? देखो कितना बड़ा भाग्य है जो वरदान भूमि पर वरदानों से झोली भरने के लिए पहुँच गये हो। ऐसा भाग्य विश्व में कितनी आत्माओं का है। कोटों में कोई और कोई में कोई में भी कोई। तो यह खुशी सदा रखो कि जो सुनते थे, वर्णन करते थे, कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा, वह हम ही है। इतनी खुशी है? सदा इसी खुशी में नाचते रहो - वाह मेरा भाग्य। यही गीत गाते रहो और इसी गीत के साथ खुशी में नाचते रहो। यह गीत गाना तो आता है ना - 'वाह रे मेरा भाग्य' और वाह मेरा बाबा। वाह ड्रामा वाह, यह गीत गाते रहो। बहुत लकी हो। बाप तो सदा हर बच्चे को लवली बच्चा

ही कहते हैं। तो लवली भी हो, लकीएस्ट भी हो। कभी अपने को साधारण नहीं समझना, बहुत श्रेष्ठ हो। भगवान आपका बन गया तो और क्या चाहिए। जब बीज को अपना बना दिया तो वृक्ष तो आ ही गया ना। तो सदा इसी खुशी में रहो। आपकी खुशी को देख दूसरे भी खुशी में नाचते रहेंगे।

(13.04.1981)

सभी सदा साक्षी स्थिति में स्थित हो हर पार्ट बजाते हो? साक्षीपन की स्टेज कायम रहती है? कभी साक्षी के बजाए पार्ट बजाते-बजाते पार्ट में साक्षीपन की स्टेज को भूल तो नहीं जाते। जो साक्षी होगा वह कभी भी किसी पार्ट में चलायमान नहीं होगा। न्यारा होगा, प्यारा भी होगा। अच्छे में अच्छा, बुरे में बुरा ऐसे नहीं होगा। साक्षी अर्थात् सदा हर कार्य करते हुए कल्याण की वृत्ति में रहने वाले। जो कुछ हो रहा है उसमें कल्याण भरा हुआ है। अगर कोई माया का विघ्न भी आता तो उसमें भी लाभ उठाकर, शिक्षा लेकर आगे बढ़ेगें रूकेंगे नहीं। ऐसे हो? सीट पर बैठकर खेल देखते हो। साक्षीपन है सीट। इस सीट पर बैठकर ड्रामा देखो तो बहुत मजा आयेगा। सदा अपने को साक्षी की सीट पर सेट रखो, फिर वाह ड्रामा वाह। यही गीत गाते रहेंगे!

(15.04.1981)

(मीठी दादी जी अम्बाला मेले में जाने की छुट्टी बापदादा से ले रही हैं)

बापदादा अनेक बच्चों की खुशी देखकर खुश होते हैं! सेवा के लिए जहाँ भी जाओ, अनेक खज़ाने अनेकों को मिल जाते हैं। इसलिए ड्रामा में अब तक जाने का है, तो चल रहा है, स्टाप होगा तो सेकेण्ड में हो जायेगा। जैसे साकार में देखा, तैयारी की हुई भी थी पार्ट समाप्त था तो तैयारी होते भी नहीं जा सके। ऐसे यह भी ड्रामा में समाप्त होगा तो सेकेण्ड में अचानक होगा।

(12.10.1981)

आज भाग्यविधाता बाप अपने भाग्यशाली बच्चों को देख रहे हैं। भाग्यशाली तो सभी बने हैं लेकिन भाग्यशाली शब्द के आगे कहां सौभाग्यशाली, कहां पद्मापदम भाग्यशाली। भाग्यशाली शब्द दोनों के लिए कहा जाता है। कहां सौ और कहां पदम, अन्तर हो गया ना, भाग्य विधाता एक ही है। विधाता की विधि भी एक ही है। समय और वेला भी एक ही है। फिर भी नम्बरवार हो गये। विधाता की विधि कितनी श्रेष्ठ और सहज है। वैसे लौकिक रीति से आजकल किसी के ऊपर ग्रहचारी के कारण तकदीर बदल जाती है तो ग्रहचारी को मिटा कर श्रेष्ठ तकदीर बनाने के लिए कितने प्रकार की विधियां करते हैं। कितना समय, कितनी शक्ति और सम्पत्ति खर्च करते हैं। फिर भी अल्पकाल की तकदीर बनती है। एक जन्म की भी गारन्टी नहीं क्योंकि वे लोग विधाता द्वारा तकदीर नहीं बदलते। अल्पज्ञ, अल्प-सिद्धि के प्राप्त हुए व्यक्ति द्वारा अल्पकाल की प्राप्ति करते हैं। वह हैं अल्पज्ञ व्यक्ति और यहां है विधाता। विधाता द्वारा अविनाशी तकदीर की लकीर खिंचवा सकते हो। क्योंकि भाग्यविधाता दोनों बाप इस समय बच्चों के लिए हाजिर-नाजिर हैं। जितना भाग्य विधाता से भाग्य लेने चाहो उतना अब ले सकते हो। इस समय ही भाग्य-दाता भाग्य बांटने के लिए आयें हैं। इस समय को ड्रामा अनुसार वरदान है। भाग्य के भण्डारे भरपूर खुले हुए हैं। तन का भण्डारा; मन का, धन का, राज्य का, प्रकृति दासी बनने का, भक्त बनाने का, सब भाग्य के भण्डारे खुले हैं। किसी को भी विधाता द्वारा स्पेशल प्राप्ति का चाँस नहीं मिलता है। सबको एक जैसा चाँस है। कोई भी बातों का कारण भी बन्धन के रूप में नहीं है। पीछे आने का कारण, प्रवृत्ति में भी रहने का कारण, तन के रोग का कारण, आयु का कारण, स्थूल डिग्री या पढ़ाई का कारण किसी भी प्रकार के कारण का ताला भण्डारे में नहीं लगा हुआ है। दिन-रात भाग्य विधाता के भण्डारे भरपूर और खुले हुए हैं। कोई चौकीदार रखा हुआ है क्या? कोई चौकीदार नहीं है। फिर भी देखो लेने में नम्बर बन जातें हैं। भाग्य विधाता नम्बर से नहीं देते हैं। यहां भाग्य लेने के लिए क्यू में भी नहीं खडा नहीं करते है। इतने बडे भण्डारे है - भाग्य के। जब

चाहो, जो चाहते अधिकारी हो। ऐसे है ना? कोई ताज और क्यू तो नहीं है ना? अमृतबेले देखो- देश-विदेश के सभी बच्चे एक ही समय पर भाग्य विधाता से मिलन मनाने आते, तो मिलना हो ही जाता है। मिलन मनाना ही मिलना हो जाता है। मांगते नहीं हैं, लेकिन बड़े ते बड़े बाप से मिलना अर्थात् भाग्य की प्राप्ति होना। एक है बाप बच्चों का मिलना, दूसरा है कोई चीज मिलना। तो मिलन भी हो जाता है और भाग्य मिलना भी हो जाता है। क्योंकि बड़े आदमी कभी भी किसी को खाली नहीं भेज सकते हैं। तो बाप तो है ही विधाता, वरदाता, भरपूर भण्डारे। खाली कैसे भेज सकते। फिर भी भाग्यशाली, सौभाग्यशाली, पदम भाग्य शाली, पद्मापद्म भाग्यशाली, ऐसे क्यों बनतें हैं? देने वाला भी है, भाग्य का खजाना भी भरपूर है, समय का भी वरदान है। इन सब बातों का ज्ञान अर्थात् समझ भी हैं। अनजान भी नहीं हैं फिर भी अन्तर क्यों (ड्रामा अनुसार) ड्रामा को ही अभी वरदान है, इसलिए ड्रामा नहीं कह सकते।

(14.10.1981)

सदा अपने को इस सृष्टि ड्रामा के अन्दर हीरो पार्टधारी समझकर चलते हो? जो हीरो पार्टधारी होते हैं उनको हर कदम पर अपने ऊपर अटेन्शन रहता है, उनका हर कदम ऐसा उठता है जो सदा वाह-वाह करें, वन्समोर करें। अगर हीरो पार्टधारी का कोई भी एक कदम नीचे ऊपर हो जाता है तो वह हीरो नहीं कहला सकता। तो आप सभी डबल हीरो हो। हीरो विशेष पार्टधारी भी हो और हीरो जैसा जीवन बनाने वाले भी। तो ऐसा अपना स्वमान अनुभव करते हो? एक है जानना और दूसरा है जानकर चलना। तो जानते हो वा जानकर चलते हो? तो सदा अपने हीरो पार्ट को देख हर्षित रहो, वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट। अगर जरा भी साधारण कर्म हुआ तो हीरो नहीं कहला सकते। जैसे बाप हीरो पार्टधारी है तो उनका हर कर्म गाया और पूजा जाता है, ऐसे बाप के साथ जो सहयोगी आत्मायें हैं उन्हों का भी हीरो पार्ट होने के कारण हर कर्म गायन और पूजन योग्य हो जाता

है। तो इतना नशा है या भूल जाता है? आधाकल्प तो भूले, अभी भी भूलना है क्या? अब तो याद स्वरूप बन जाओ। स्वरूप बनने के बाद कभी भूल नहीं सकते।

(17.10.1981)

बापदादा बच्चों के स्नेह की शक्ति देख रहे हैं कि स्नेह की शक्ति के आधार पर सेकेण्ड में कितनी भी दूर से समीप पहुंच जाते हैं। जितनी स्नेह की शक्ति महान है, उतनी सम्मुख पहुंचने की स्पीड महान है। कितने अमूल्य रतन सामने आ रहे हें। एक-एक रत्न की महिमा महान है। किस-किस महारथी का वर्णन करें। शमा के ऊपर परवाने आ रहे हैं। सभी बच्चों को बापदादा सदा 'सहजयोगी भव' का वरदान दे रहे हैं। सिर्फ एक बिन्दी को याद करो। सबसे सरल मात्रा बिन्दी है। तो बापदादा सिर्फ बिन्दी का ही हिसाब बताते हैं। स्वयं भी बिन्दु रुप बनो, याद भी बिन्दु को करो और ड्रामा के हर दृश्य को जाने, करने के बाद बिन्दु की मात्रा लगा दो। एक बिन्दु की मात्रा में आप, बाप और रचना, सब आ जाता है। तो जानना ही क्या है- 'बिन्दु'। करना भी क्या है- 'बिन्दु को याद'। इसी बिन्दु की मात्रा के महत्व को जान सदा सहजयोगी बन सकते हो। कितना भी बड़ा विस्तार है लेकिन समाया हुआ-बिन्दु में है। बीज बिन्दु, उसी में सारा वृक्ष समाया हुआ है। आत्मा बिन्दु उसी में 84 जन्मों के संस्कार समाये हुए हैं। 5 हजार वर्ष के ड्रामा को अब संगम के अन्त में समाप्त कर रहे हो, अब ड्रामा का चक्र पूरा हुआ। अर्थात् जो चक्र बीत चुका उसको फुल स्टाप अर्थात् बिन्दी लगाये, बिन्दी बन, अब घर जाना है। बिन्दु के साथ बिन्दु बनकर जाना है। घर भी सर्व बिन्दुओं का घर है। संकल्प, कर्म, संस्कार सब मर्ज अर्थात् बिन्दी लगी हुई है। समाप्ति की मात्रा है ही बिन्दु। सर्वगुण, सर्वज्ञान के खजानों के सागर...लेकिन सागर भी है 'बिन्दु'। सम्बन्ध और सम्पर्क मे भी आओ तो सर्व के मस्तक में क्या चमक रहा है-बिन्दु। सर्व कार्यकर्ता कौन हैं? बिन्दु ही हैं ना। चाहे धरनी से चन्द्रमा तक पहुंचे तो भी बिन्दु पहुंचा। चाहे आप साइलेन्स की शक्ति से 3 लोकों तक पहुंचते तो भी कौन

पहुंचता-बिन्दु। साइंस की शक्ति या साइलेन्स की शक्ति, निर्माण करने की शक्ति वा निर्वाण में जाने की शक्ति है तो बिन्दु ना! बीज से इतना सारा वृक्ष विस्तार को पाता लेकिन विस्तार के बाद समाता किसमे है? बीज अर्थात् बिन्दु में। तो अनादि अविनाशी है ही बिन्दु। आप भी तीन कालों की नालेज, तीन लोकों की नालेज प्राप्त करते हो लेकिन प्राप्त करने वाला कौन? 'बिन्दु'। आदि से अन्त तक वैरायटी पार्ट बजाया लेकिन पार्टधारी कौन? किसने पार्ट बजाया? बिन्दु ने। तो महत्व सारा बिन्दु का है। और बिन्दु को जाना तो सब कुछ जाना। सब कुछ पाया। बिन्दु रुप में स्थित हो जो संकल्प करो, जो भावना रखो, जो बोल बोलो, जो कर्म करो, जैसे बिन्दु महान है वैसे सर्व बातें महान हो जाती हैं अर्थात् स्वत: श्रेष्ठ हो जाती हैं।

(11.11.1981)

किसी भी प्रकार का विघ्न व समस्या अभी खेल के समान अनुभव होनी चाहिए। वार नहीं है, खेल है! तो खेल समझने से खुशी-खुशी पार कर लेंगे और वार समझने से घबरायेंगे भी और हलचल में भी आ जायेंगे। ड्रामा में पार्टधारी होने के कारण कोई भी सीन सामने आती है तो ड्रामा के हिसाब से सब खेल है, यह स्मृति रहे तो एकरस रहेंगे, हलचल नहीं होगी। तो अभी से यह परिवर्तन करके जाना। हलचल यहाँ ही समाप्त करते जाना। सदा अपने मस्तक पर विजय का तिलक लगा हुआ अनुभव करो तो हलचल खत्म हो जायेगी। देखो, अमेरिका विश्व में ऊँचा स्थान है, तो ब्राह्मण कितने ऊँचे होंगे? जैसे देश की महिमा है उससे ज़्यादा ब्राह्मण आत्माओं की महिमा है। तो आप लोगों को सेवा में नम्बरवन लेना चाहिए। हरेक अगर बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए लाइट हाउस हो जाए तो 'व्हाइट हाउस' और 'लाइट हाउस' कांट्रास्ट हो जायेगा। वह विनाशकारी और यह स्थापना वाले। अभी कमाल करके दिखाओ। विशेष आत्माओं को निमित्त तो बनाया है, अभी और सम्पर्क से सम्बन्ध में लाना है। ऐसा समीप सम्बन्ध में लाओ

जो उन्हों के मुख द्वारा बाप की महिमा सारे विश्व में हो जाए। देखो, बापदादा ने जो बच्चे और-और धर्मों में मिक्स हो गये हैं, उन्हों को भी चुन करके निकाला है। तो विशेष भाग्यवान हुए ना! आपने बाप को नहीं ढूँढा लेकिन बाप ने आपको ढूँढ लिया है। आप ढूँढते तो भी नहीं ढूँढ सकते क्योंकि परिचय ही नहीं था ना। इसीलिए बाप ने आप आत्माओं को चुनकर अपने बगीचे के पुष्प बना दिया। तो अभी आप सब अल्लाह के बगीचे के रूहानी गुलाब हो। ऐसे भाग्यवान अपने को समझते हो ना?

(04.01.1982)

सिर्फ एक बात है, छोटी बात को बड़ा नहीं बनाओ। बड़े को छोटा बनाओ। यह भी होता है क्या? यह क्वेश्चन नहीं। यह क्या हुआ? ऐसे भी होता है? इसके बजाए जो होता है कल्याणकारी है। क्वेश्चन खत्म होने चाहिए। फुलस्टॉप। बुद्धि को इसमें ज्यादा नहीं चलाओ नहीं तो एनर्जी वेस्ट चली जाती है और अपने को शक्तिशाली नहीं अनुभव करते। क्वेश्चन मार्क ज्यादा होते हैं। तो अब मधुबन की वरदान भूमि में क्वेश्चन मार्क खत्म करके, फुल स्टॉप लगाके जाओ। क्वेश्चन मार्क मुश्किल है, फुलस्टॉप सहज है। तो सहज को छोड़कर मुश्किल को क्यों नहीं अपनाते हो। उसमें एनर्जी वेस्ट है। तो क्या करना चाहिए? अभी वेस्ट नहीं करना। हर संकल्प बेस्ट, हर सेकण्ड बेस्ट।

(08.01.1982)

स्टीवनारायण (ग्याना के उपराष्टपति) तथा उनके परिवार को यादप्यार देते हुऐ :- उन्हें ज़िगरी बहुत-बहुत याद देना। बहुत अच्छे तन-मन-धन तीनों से पूरे सहयोगी, निश्चयबुद्धि नम्बरवन बच्चे हैं। उस बजट के कारण नहीं आ सके लेकिन पांडव गवर्मेन्ट की बजट में बुद्धि से यहाँ पहुंचे हुए हैं। बहुत ही नम्रचित्त बच्चा है। परिवार ही ड्रामा अनुसार सर्विसएबुल है। हिम्मत भी अच्छी है। परिवार

का परिवार ही स्नेही है। अन्धश्रद्धा नहीं है, नालेज के आधार पर स्नेही है। इन्हों के ही सम्पर्क से अमेरिका में पहुँचे। यह बेहद सेवा के निमित्त, विशेष आत्माओं की सेवा के निमित्त बने हुए हैं। इसको कहते हैं - एक की नालेज से अनेकों पर प्रभाव। बड़ा माइक है। इनको देखकर वहाँ की गवर्मेन्ट पर भी अच्छा प्रभाव है। नालेज का, योग का अच्छा प्रभाव है। अच्छे सेवाधारी हैं।

(14.01.1982)

डबल विदेशी बच्चों का एक प्रश्न रहता है कि हमें डबल सर्विस (ईश्वरीय सेवा के साथ नौकरी) के लिए क्यों कहा जाता है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए बापदादा बोले-

समय कम है और प्राप्ति करने चाहते हो सबसे ज्यादा। इसके कारण तन भी लगे, मन लगे और धन भी लगे, इसलिए तीनों प्रकार की सर्विस करनी पड़े। थोड़े समय में आपका तीनों प्रकार का लाभ जमा होता है क्योंकि धन की भी मार्क्स हैं। वह मार्क्स जमा होने कारण नम्बर आगे ले लेते हो। तो आप लोगों के फायदे के लिए कहा जाता है कि अपना धन लगाना तो धन की सबजेक्ट में भी एक का पद्म मिलता है। सब तरफ से अगर एक ही समय में लाभ हो सकता है तो क्यों न करो। बाकी जब निमित्त बनी हुई आत्मायें देखेंगी, समय ही नहीं है, इसे फुर्सत ही नहीं है, अपने खाने का भी समय नहीं मिलता, यह इतना बिजी हो गये हैं तो आटोमेटिकली उससे फ्री कर देंगी। लेकिन जब तक इतने बिजी हो जाओ तब तक यह ज़रूरी है। यह व्यर्थ नहीं जाता है, इसकी भी मार्क्स जमा हो रही हैं। बिजी हो जायेंगे तो ड्रामा ही आपको वह नौकरी करने नहीं देगा। कोई न कोई कारण ऐसा बनेगा जो चाहो भी लेकिन कर नहीं सकेंगे। इसीलिए जैसे अभी चल रहे हो उस में ही कल्याण है। ऐसे नहीं समझो हम सरेन्डर नहीं हैं। सरेन्डर हो, डायरेक्शन प्रमाण कर रहे हो। अपने मन से करते हो तो सरेन्डर नहीं हो। इसमें अगर अपनी मत चलाते हो, कि नहीं! मैं तो नहीं करुंगी, और ही मनमत है। इसलिए स्वयं को

सदा हल्का रखो। जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं वह अगर कहती हैं तो समझो इसमें हमारा कल्याण है। इसमें आप निश्चिन्त रहो। इसमें जो ज्यादा सोचेंगे - मेरा शायद पार्ट नहीं है, मेरे को क्यों नहीं कहा जाता है, यह फिर व्यर्थ है। समझा।

(12.03.1982)

(दीदी जी- दिल्ली मेले की ओपनिंग पर जाने की छुट्टी ले रहीं हैं)

सभी को उड़ाने के लिए जा रही हो ना! याद में, स्नेह में, सहयोग में, सबमें उड़ाने के लिए जा रही हो। यह भी ड्रामा में बाइप्लाट्स रखे हुए हैं। तो अच्छा है अभी-अभी जाना, अभी-अभी आना। आत्मा ही प्लेन बन गई। जैसे प्लेन में आना, जाना मुश्किल नहीं वैसे आत्मा ही उड़ता पंछी हो गई है। इसलिए आने-जाने में सहज होता है। यह भी ड्रामा में हीरो पार्ट है, थोड़े समय में भासना अधिक देने का। तो यह हीरो पार्ट बजाने के लिए जा रही हो। अच्छा - सभी को याद देना और सदा सफलता स्वरूप का शुभ संकल्प रखते आगे बढ़ते चलो - यही स्मृति स्वरूप बनाकर आना। फिर भी दिल्ली है। दिल्ली को तो पवित्र स्थान बनाना ही है। आवाज़ फिर भी दिल्ली से ही निकलेगा। सबके माइक दिल्ली से ही पहुँचेगे। जब गवर्मेंट से आवाज़ निकलेगा तब समाप्ति हो जायेगी। तो भारत के नेतायें भी जागेंगे। उसकी तैयारी के लिए जा रही हो ना!

(24.03.1982)

आज बापदादा माला बना रहे थे। कौन सी माला? हरेक श्रेष्ठ आत्मा के श्रेष्ठ गुण की माला बना रहे थे क्योंकि बापदादा जानते हैं कि श्रेष्ठ बाप के हरेक श्रेष्ठ बच्चे की अपनी-अपनी विशेषता है। अपने-अपने गुण के आधार से संगमयुग में श्रेष्ठ प्रालब्ध पा रहे हैं। बापदादा आज विशेष प्यादे ग्रुप के गुणों को देख रहे थे। चाहे पुरुषार्थ में लास्ट ग्रुप कहा जायेगा लेकिन उन्हों में भी विशेष गुण ज़रूर है। और वही विशेष गुण उन आत्माओं को बाप का बनने में विशेष आधार है। तो

बापदादा पहले नम्बर से लास्ट नम्बर तक नहीं गये। लेकिन लास्ट से फर्स्ट तक गुण देखा। बिल्कुल लास्ट नम्बर में भी गुणवान थे। परमात्म-सन्तान, और कोई गुण न हो यह हो नहीं सकता। उसी गुण के आधार से ही ब्राह्मण जन्म में जी रहे हैं अर्थात् जिन्दा हैं। ड्रामा अनुसार उसी गुण ने ही ऊँचे ते ऊँचे बाप का बच्चा बनाया है। उसी गुण के कारण ही प्रभु पसन्द बने हैं। इसलिए गुणों की माला बना रहे थे। ऐसे ही हर ब्राह्मण आत्मा के गुण को देखने से श्रेष्ठ आत्मा का भाव सहज और स्वत: ही होगा क्योंकि गुण का आधार है ही - श्रेष्ठ आत्मा। कई आत्मायें गुण को जानते हुए भी जन्म-जन्म की गन्दगी को देखने के अभ्यासी होने कारण गुण को न देख अवगुण ही देखती हैं। लेकिन अवगुण को देखना, अवगुण को धारण करना ऐसी ही भूल है जैसे स्थूल में अशुद्ध भोजन पान करना। स्थूल भोजन में अगर कोई अशुद्ध भोजन स्वीकार करता है तो भूल महसूस करते हो ना! लिखते हो ना कि खान-पान की धारणा में कमज़ोर हूँ। तो भूल समझते हो ना! ऐसे अगर किसी का अवगुण अथवा कमज़ोरी स्वयं में धारण करते हो तो समझो अशुद्ध भोजन खाने वाले हो। सच्चे वैष्णव नहीं, विष्णु वंशी नहीं। लेकिन राम सेना हो जायेंगे। इसलिए सदा गुण ग्रहण करने वाले - 'गुण मूर्त' बनो।

(29.03.1982)

(निर्वैर भाई विदेश सेवा पर जाने की छुट्टी ले रहे हैं)

यह भी जा रहे हैं! एवररेडी बन गये ना! इसको कहा जाता है मीठा ड्रामा। तीनों बिन्दियों के तिलक की सौगात हो गई। जब से संकल्प किया और तीन बिन्दियों का तिलक ड्रामा अनुसार फिर से लग गया। लगा हुआ है और फिर से लग गया। यह अविनाशी तिलक सदा मस्तक पर लगा हुआ है ना! तीनों ही बिन्दी साथ-साथ हैं। बापदादा ने इस तिलक से वतन में स्वागत कर लिया, ठीक है ना! विशेष कौन से स्वरूप द्वारा सन्देश देने जा रहे हो? विशेष पाठ क्या याद दिलायेंगे?

'सदा उमंग उत्साह में उड़ते चलो' यही विशेष पाठ सभी को अनुभव द्वारा

पढ़ाना। अनुभव द्वारा पाठ पढ़ना यह अविनाशी पाठ हो जाता है। तो विशेष नवीनता यही हो - अनुभव में रह अनुभव कराना। मुख की पढ़ाई तो बहुत समय चली। अभी सभी को इसी पढ़ाई की आवश्यकता है। इसी विधि द्वारा सभी को उड़ती कला में ले जाना। क्योंकि अनुभव बड़े से बड़ी अथार्टी है। जिसको अनुभव की अथार्टी है उसको और कोई अथार्टी वार नहीं कर सकती। माया की अथार्टी चल नहीं सकती। तो यही विधि विशेष ध्यान में रखकर चक्कर लगाना। तो यह नवीनता हो जायेगी ना। क्योंकि जब भी कोई जाता है तो तभी सभी यही सोचते हैं कि कोई नवीनता मिले। बोलना और स्वरूप बनकर स्वरूप बनाना, यह साथ-साथ हो। आपकी पसन्दी भी यह है ना! ड्रामा अनुसार अभी समय जो नूँधा हुआ है वही सेवा के लिए योग्य समझो। संकल्प तो समाप्त हो गया ना! एवररेडी बन सब तैयारियाँ भी सेकण्ड में हो गई हैं ना। स्थूल साधन तो वहाँ सब हैं। बने बनाये साधन हैं। कुछ रह गया तो भी कोई बड़ी बात नहीं। यहाँ से तो दो ड्रेस में भी चले जाओ तो हर्जा नहीं। वहाँ रेडीमेड मिल जाता है। सूक्ष्म तैयारी तो हो गई है ना! स्थूल तैयारी बड़ी बात नहीं।

(13.06.1982)

बिन्दी लगाना आता है वा बिन्दी पर फिर क्वेश्चन आ जाता? आजकल की दुनिया में ऐसा बारूद चलाते हैं जो इतनी छोटी बिन्दी से इतना बड़ा सांप बन जाता है। यहाँ भी लगानी चाहिए बिन्दी। बिन्दी में सब समा जाता है। अगर संकल्प की तीली लगा देते तो फिर वह सांप हो जाता। न तीली लगाओ, न सांप बने। बापदादा बच्चों का यह खेल देखता रहता है। जो होता, सब में कल्याण भरा हुआ है। ऐसा क्यों वा क्या? नहीं। जो कुछ अनुभव करना था वह किया। परिवर्तन किया और आगे बढ़ो। यह है बिन्दी लगाना। सभी विदेशियों को भी यह खेल बताना। उन्हों को ऐसी बातें अच्छी लगती है।

(13.06.1982)

स्वीडन पार्टी से :- 'सदा निश्चयबुद्धि विजयी रत्न हैं।' - इसी नशे में रहो। निश्चय का फाउन्डेशन सदा पक्का है! अपने आप में निश्चय, बाप में निश्चय और ड्रामा की हर सीन को देखते हुए उसमें भी पूरा निश्चय। सदा इसी निश्चय के आधार पर आगे बढ़ते चलो। अपनी जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो, कमजोरियों को नहीं, तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना तो फिर खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। बाप का हाथ लिया तो बाप का हाथ पकड़ने वाले सदा आगे बढ़ते हैं, यह निश्चय रखो। जब बाप सर्वशक्तिवान है तो उसका हाथ पकड़ने वाले पार पहुँचे कि पहुँचे। चाहे खुद भले कमजोर भी हो लेकिन साथी तो मजबूत है ना। इसलिए पार हो ही जायेंगे। सदा निश्चयबुद्धि विजयी रत्न, इसी स्मृति में रहो। बीती सो बीती, बिन्दी लगाकर आगे बढ़ो।

(28.12.1982)

बापदादा हर एक बच्चे के भाग्य को देख हर्षित होते हैं। हरेक बच्चा अपना भाग्य ले रहा है। संगम पर हरेक आत्मा का भाग्य अपना-अपना है। और हरेक का श्रेष्ठ भाग्य है। क्यों? क्योंकि जब श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाप के बच्चे बने तो श्रेष्ठ भाग्य हो गया ना। न इससे कोई बाप श्रेष्ठ है, न इससे कोई भाग्य श्रेष्ठ है। ऊँचे ते ऊँचा बाप। यही याद रहता है ना! भाग्य विधाता मेरा बाप है। इससे बड़ा नशा और क्या हो सकता है। लौकिक रीति से बच्चे को नशा रहता - मेरा बाप इन्जीनियर है, डाक्टर है, जज है या प्राइम मिनिस्टर है। लेकिन आपको नशा है कि हमारा बाप 'भाग्यविधाता' है। ऊँचे ते ऊँचा भगवान है। यही नशा सदा रहता है या कभी कभी भूल जाते हो? **भाग्य को भूला तो क्या होगा? फिर भाग्य को पाने का प्रयत्न करना पड़ेगा। खोई हुई चीज़ को पाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। बाप ने आकर मेहनत से बचाया। आधाकल्प मेहनत की, व्यवहार में भी मेहनत, भक्ति में, धर्म के क्षेत्र में, सब में मेहनत ही की। और अभी सभी मेहनत से छूट गये।** अभी व्यवहार भी परमार्थ के

आधार पर सहज हो जाता है। निमित्त मात्र कर रहे हैं। निमित्त मात्र करने वाले को सदा सहज अनुभव होगा। व्यवहार नहीं है लेकिन खेल है। माया का तूफान नहीं लेकिन यह ड्रामा अनुसार आगे बढ़ने का तोफा है। तो मेहनत छूट गई ना! तोफ़ा अर्थात् सौगात लेने में मेहनत नहीं होती है ना। तो ऐसे मेहनत से अपने को बचाने वाले, सदा भाग्य विधाता के साथ मास्टर भाग्य विधाता बन रहने वाले, इसको कहा जाता है - श्रेष्ठ आत्मा।

(31.12.1982)

पहले तो विदेश की टीचर्स कहती थीं वी. आई.पी. को लाना बड़ा मुश्किल है। ऐसा तो कोई दिखाई नहीं देता। अब तो दिखाई दिया ना। भले विघ्न पड़े, यह तो ब्राह्मणों के कार्यों में विघ्न न पड़े तो लगन भी लग न सके। नहीं तो अलबेले हो जायें। इसलिए ड्रामा अनुसार लगन बढ़ाने के लिए विघ्न पड़ते हैं। अभी एक एक द्वारा आवाज़ सुनकर फिर अनेकों में उमंग आयेगा।

बच्चों ने अच्छी कमाल की है। सर्विस मे सबूत अच्छा दिखाया है। सेवा का चांस दिलाने के निमित्त तो बन गये ना। एक द्वारा सहज ही अनेको तक आवाज तो फैला ना! अमेरिका वालों ने अच्छी मेहनत की। हिम्मत अच्छी की, ज़्यादा से ज़्यादा आवाज़ फैलाने वाली निमित्त आत्मा को ड्रामा अनुसार विदेश वालों ने ही लाया ना। भारतवासी बच्चों ने भी मेहनत बहुत अच्छ की। उस मेहनत का फल संख्या अच्छी आई। अभी भारत की विशेष आत्मायें भी आयेंगी।

(21.02.1983)

परतंत्रता के बन्धन अपने ही मन के व्यर्थ कमज़ोर संकल्पों की जाल है। उसी रची हुई जाल में स्वयं को परतंत्र तो नहीं बना रहे हो? क्वेश्चन की जाल है। जो जाल रचते हो उसका चित्र निकालो तो क्वेश्चन का ही रूप होगा। क्वेश्चन क्या

उठते हैं, अनुभवी हो ना! क्या होगा, कैसे होगा, ऐसे तो नहीं होगा, यह है जाल। पहले भी सुनाया था - संगमयुगी ब्राह्मणों का एक ही सदा समर्थ संकल्प है कि - 'जो होगा वह कल्याणकारी होगा। जो होगा श्रेष्ठ होगा, अच्छे ते अच्छा होगा'। यह संकल्प है जाल को समाप्त करने का। जबकि बुरे दिन, अकल्याण के दिन समाप्त हो गये। संगमयुग का हर दिन बड़ा दिन है, बुरा दिन नहीं। हर दिन आपका उत्सव है ना। हर दिन मनाने का है। इस समर्थ संकल्प से व्यर्थ संकल्पों की जाल को समाप्त करो।

(27.03.1983)

सदा साक्षीपन की स्थिति में स्थित रहते हुए ड्रामा के हर दृश्य को देखते हो? साक्षीपन की स्थिति सदा ड्रामा के अन्दर हीरो पार्ट बजाने में सहयोगी होती है। अगर साक्षीपन नहीं तो हीरो पार्ट बजा नहीं सकते। हीरो पार्टधारी से साधारण पार्टधारी बन जाते हैं। साक्षीपन की स्टेज सदा ही डबल हीरो बनाती है। एक हीरे समान बनाती है और दूसरा हीरो पार्टधारी बनाती है। साक्षीपन अर्थात् देह से न्यारे, आत्मा मालिकपन की स्टेज पर स्थित रहे। देह से भी साक्षी। मालिक। इस देह से कर्म कराने वाली, करने वाली नहीं। ऐसी साक्षी स्थिति सदा रहती है? साक्षी स्थिति सहज पुरुषार्थ का अनुभव कराती है क्योंकि साक्षी स्थिति में किसी भी प्रकार का विघ्न या मुश्किलात आ नहीं सकती। यह है मूल अभ्यास। यही साक्षी स्थिति का पहला और लास्ट पाठ है। क्योंकि लास्ट में जब चारों ओर की हलचल होगी, तो उस समय साक्षी स्थिति से ही विजयी बनेंगे। तो यही पाठ पक्का करो।

(14.04.1983)

सदा निश्चियबुद्धि सभी बातों में निश्चिंत रहते हैं। निश्चय की निशानी है निश्चिंत। ज्ञान की शक्ति से सब जान गये। ज्ञान है - जो होगा वह अच्छे ते अच्छा

होगा। तो सदा शुभ चिन्तक, सदा चिन्ताओं से परे निश्चयबुद्धि, निश्चिंत आत्मायें - यही तो जीवन है।

(19.04.1983)

आपके जड़ चित्रों के लिए भक्त जागरण करते हैं, कभी तो आप लोगों ने भी किया है तभी भक्त कॉपी करते हैं। यह जागरण डबल कमाई वाला जागरण है। वर्तमान की कमाई हुई और वर्तमान के आधार पर भविष्य भी श्रेष्ठ हुआ। बाप ने अपने समान बना दिया। बाप कल्याणकारी तो बच्चे भी कल्याणकारी। बच्चों को बाप अपने से भी आगे रखते हैं। डबल पूजा आपकी है, डबल राज्य आप करते हो। इतना नशा और इतनी खुशी सदा रहे - वाह! रे मैं श्रेष्ठ आत्मा, वाह! रे मैं पुण्य आत्मा, वाह! रे मैं शिव-शक्ति - इस स्मृति में सदा रहो।

(16.05.1983)

आज अटल राज्य अधिकारी, अटल, अचल स्थिति में रहने वाले विजयी बच्चों को देख रहे हैं। अभी से अटल बनने के संस्कारों के आधार पर अटल राज्य की प्रालब्ध पाने के पहले पुरुषार्थ में कल्प-कल्प अटल बने हो। ड्रामा के हर दृश्य को ड्रामा चक्र में संगमयुगी टॉप पाइंट पर स्थित हो कुछ भी देखेंगे तो स्वत: ही अचल अडोल रहेंगे। टॉप पाइंट से नीचे आते हैं तब ही हलचल होती है। सभी ब्राह्मण श्रेष्ठ आत्मायें सदा कहाँ रहते हो? चक्र में संगमयुग ऊँचा युग है। चित्र के हिसाब से भी संगमयुग का स्थान ऊँचा है। और युगों के हिसाब से छोटा सा युग पाइंट ही कहेंगे। तो इसी ऊँची पाइंट पर, ऊँचा स्थान पर, ऊँची स्थिति पर, ऊँची नालेज में, ऊँचे ते ऊँचे बाप की याद में। ऊँचे ते ऊँची सेवा स्मृति स्वरूप होंगे तो सदा समर्थ होंगे। जहाँ समर्थ है वहाँ व्यर्थ सदा के लिए समाप्त है। हरेक ब्राह्मण - पुरुषार्थ ही व्यर्थ को समाप्त करने का कर रहे हो। व्यर्थ का खाता वा व्यर्थ का हिसाब-किताब समाप्त हुआ ना। वा अभी भी कुछ पुराना व्यर्थ का खाता है?

जबकि ब्राह्मण जन्म लेते प्रतिज्ञा की - 'तन-मन-धन सब तेरा' तो व्यर्थ संकल्प समाप्त हुआ, क्योंकि मन समर्थ बाप को दिया।

आप लोग ही सोचते हो और बार-बार पूछते हो कि एडवांस पार्टी की विशेष आत्मायें अब तक गुप्त क्यों? तो प्रत्यक्ष करने चाहते हो ना। समय प्रमाण कुछ एडवांस पार्टी की आत्मायें श्रेष्ठ योगबल की श्रेष्ठ विधि को आरम्भ करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं का आह्वान कर रही हैं। ऐसे आदि परिवर्तन के विशेष कार्य अर्थ आदिकाल वाली आदि रत्न आत्मायें चाहिए। विशेष योगी आत्मायें चाहिए। जो अपने योगबल का प्रयोग कर सकें। भाग्यविधाता बाप की भागीदार आत्मायें चाहिये। भाग्यविधाता ब्रह्मा को भी कहा जाता है। समझा क्यों बुलाया है। यह सोचते हो यहाँ क्या होगा? कैसे होगा? ब्रह्मा बाप अव्यक्त हुए तो क्या हुआ और कैसे हुआ, देखा ना। दादी को अकेले समझते हो? वह नहीं समझती है, आप लोग समझते हो। ऐसे है ना? (दादी की ओर ईशारा) आपकी डिवाइन युनिटी नहीं है, है ना? तो डिवाइन युनिटी की भुजायें नहीं हैं क्या? डिवाइन युनिटी है ना? किसलिए यह ग्रुप बनाया? सदा एक-दो के सहयोगी बनने के लिए। जब चाहो जिसको चाहो सभी सेवा के लिए जी हाजिर हैं। इन दादियों की आपस में बहुत अन्दरूनी प्रीति है, आप लोगों को पता नही है इसलिए समझते हो अभी क्या होगा। एक दीदी ने यह साबित कर दिखाया कि हम सभी आदि रत्न एक है। दिखाया ना? ब्रह्मा बाप के बाद साकार रूप में 9 रत्नों की पूज्य आत्मायें सेवा की स्टेज पर प्रत्यक्ष हुई तो 9 रत्न वा आठ की माला सदा एक दो के सहयोगी हैं। कौन हैं आठ की माला? जो ओटे सेवा में वह अर्जुन अर्थात् अष्ट माला है। तो सेवा की स्टेज पर अष्ट रत्न, 9 रत्न अपना पार्ट बजा रहे हैं। और पार्ट बजाना ही अपना पार्ट वा अपना नम्बर प्रत्यक्ष करना है। बापदादा ऐसे नम्बर नहीं देंगे लेकिन पार्ट ही प्रत्यक्ष कर रहा है। तो अष्ट रत्न हैं - आपस में सदा के स्नेही और सदा के सहयोगी। इसलिए सदा आदि से सेवा के सहयोगी आत्मायें सदा ही सहयोग का पार्ट बजाती रहेंगी। समझा। और क्या क्वेश्चन है? बताया क्यों नहीं, यह क्वेश्चन है? बतलाते तो दीदी

के योगी बन जाते। ड्रामा का विचित्र पार्ट है, विचित्र का चित्र पहले नहीं खींचा जाता है। हलचल का पेपर अचानक होता है। और अभी भी इस विशेष आत्मा का पार्ट, अभी तक जो आत्मायें गई हैं, उन्हों से न्यारा और प्यारा है। हर एक क्षेत्र में इस श्रेष्ठ आत्मा का साथ, सहयोग की अनुभूति करते रहेंगे। ब्रह्मा बाप का अपना पार्ट है, उन जैसा पार्ट नहीं हो सकता। लेकिन इस आत्मा की विशेषता सेवा के उमंग उत्साह दिलाने में, योगी, सहयोगी और प्रयोगी बनाने में सदा रही है। इसलिए इस आत्मा का यह विशेष संस्कार समय प्रति समय आप सबको भी सहयोगी रहने का अनुभव कराता रहेगा। यह भी हर एक आत्मा का अपना अपना विचित्र पार्ट है।

आज के संगठन में कमल बच्ची (दीदी जी की लौकिक भाभी) भी याद आई, वह भी याद कर रही है और जिन्होंने भी स्नेही श्रेष्ठ आत्मा के प्रति अपना सहयोग दिया उन अथक बच्चों को चाहे यहाँ बैठे हैं वा नहीं भी बैठे हैं लेकिन सभी बच्चों ने शुभ भावना, शुभ कामना और एक ही लगन से जो अपना स्नेह दिखाया वह बहुत ही श्रेष्ठ रहा। इसके लिए विशेष बापदादा को दीदी ने कहा कि हमारी तरफ से ऐसे स्नेही सेवाधारी परिवार को याद और थैंक्स देना। तो दीदी का काम आज बापदादा कर रहे हैं। आज बापदादा सन्देशी बन सन्देश दे रहे हैं। जो हुआ बहुत ही राजों से भरा हुआ ड्रामा हुआ। आप सबको दीदी प्रिय हैं और दीदी को सेवा प्रिय है। इसलिए सेवा ने अपनी तरफ खींच लिया। जो हुआ बहुत ही परिवर्तन के पर्दे को खोलने के लिए अच्छे ते अच्छा हुआ। न भगवती (डॉक्टर) का दोष है, न भगवान का दोष है। यह तो ड्रामा का राज़ है। इसमे न भगवती कुछ कर सकता, न भगवान। कभी भी उसके प्रति नहीं सोचना कि इसने ऐसा किया, ऐसा आपरेशन कर लिया, नहीं। उसका स्नेह लास्ट तक भी माँ का ही रहा। इसलिए उसने अपनी तरफ से कोई कमी नहीं की। यह तो ड्रामा का खेल है। समझा - इसलिए कोई संकल्प नहीं करना।

(30.07.1983)

आज बापदादा अति स्नेही और सिकीलधे बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा अति स्नेह से मिलन मनाने अपने घर में पहुँच गये हैं। इसी भूमि को कहा जाता है - अपना घर, दाता का दर। यह महिमा इसी स्वीट होम की है। स्वीट होम में स्वीट बच्चों से स्वीटेस्ट बाप मिलन मना रहे हैं। बापदादा हर बच्चे के मस्तक पर आज विशेष अधिकार की तीन लकीरें देख रहे हैं। हर एक के मस्तक पर तीन लकीरें तो लगी हुई हैं, क्योंकि बच्चें तो सभी हैं। बच्चे होने के नाते अधिकारी तो सभी हैं लेकिन नम्बरवार हैं। किसी बच्चे की तकदीर, सुख के अधिकार की लकीर बहुत स्पष्ट और गहरी है। कितनी भी परिस्थितियाँ आवें, दु:ख की लहर भी उत्पत्ति दिलाने वाली लहर हो लेकिन दु:ख शब्द की अविद्या वाले हों। दुख की परिस्थिति को अपने सुख के सागर से प्राप्त हुए अधिकार द्वारा दुख की परिस्थितियों में भी, 'वाह मीठा ड्रामा, वाह हरेक पार्टधारी का पार्ट'- इस नालेज की रोशनी द्वारा, अधिकार की खुशी द्वारा दुख को सुख में परिवर्तन कर देता। अधिकार से दुख के अंधकार को परिवर्तन कर, मास्टर सुखदाता बन स्वयं तो सुख के झूले में झूलते ही हैं लेकिन औरों को भी सुख के वायब्रेशन देने के निमित्त बनते हैं। ऐसे सुख के अधिकार की लकीर स्पष्ट और गहरी हैं, जिसको कोई मिटा न सके। मिटाने वाले बदल जाएँ लेकिन वह नहीं। मास्टर सुख दाता से सुख की अंचली ले लें। ऐसे लकीर वाले भी देखे। इसको कहा जाता है - नम्बर वन तकदीरवान! सुनाया था 'वन की निशानी है विन'।

(01.12.1983)

'सदा एक बल और एक भरोसा' - इसी स्थिति में रहते हो? एक में भरोसा अर्थात् बल की प्राप्ति। ऐसे अनुभव करते हो? निश्चयबुद्धि विजयी, इसी को दूसरे शब्दों में कहा जाता है - 'एक बल, एक भरोसा'। निश्चय बुद्धि की विजय न हो यह हो नहीं सकता। अपने में ही जरा-सा संकल्प मात्र भी संशय आता कि यह होगा या नहीं होगा, तो विजय नहीं। अपने में बाप में और ड्रामा में पूरा-पूरा

निश्चय हो तो कभी विजय न मिले, यह हो नहीं सकता। अगर विजय नहीं होती तो ज़रूर कोई न कोई पाईन्ट में निश्चय की कमी है। जब बाप में निश्चय है तो स्वयं में भी निश्चय है। मास्टर है ना। जब मास्टर सर्वशक्तिवान हैं तो ड्रामा की हर बात को भी निश्चयबुद्धि होकर देखेंगे! ऐसे निश्चय बुद्धि बच्चों के अन्दर सदा यही उमंग होगा कि मेरी विजय तो हुई पड़ी है। ऐसे विजयी ही - विजय माला के मणके बनते हैं। विजय उनका वर्सा है। जन्म-सिद्ध अधिकार में यह वर्सा प्राप्त हो जाता है।

(12.12.1983)

कदमों में पदमों की सेवा समाई हुई है। चक्रवर्ती बन चक्र लगाए अपने यादगार स्थान बना लिए। कितने तीर्थ बने! महावीर बच्चों का चक्र लगाना माना यादगार बनना। हर चक्र में अपनी-अपनी विशेषता होती है। इस चक्र में भी कई आत्माओं के दिलों की आशा पूर्ण करने की विशेषता रही। यह दिल की आशा पूर्ण करना अर्थात् वरदानी बनना। वरदानी भी बनी और महादानी भी बनी। ड्रामा अनुसार जो प्रोग्राम बनता है उसमें कई राज़ भरे हुए होते हैं। राज़ उड़ाके ले जाते हैं।

(14.01.1984)

पूजा में, चित्रों में दो विशेषतायें विशेष हैं। एक तो है बिन्दू की विशेषता और दूसरी है - बूँद-बूँद की विशेषता। पूजा की विधि में बूँद-बूँद का महत्व है। इस समय आप बच्चे 'बिन्दू' के रहस्य में स्थित होते हो। विशेष सारे ज्ञान का सार एक बिन्दू शब्द में समाया हुआ है। बाप भी बिन्दू, आप आत्मायें भी बिन्दू और ड्रामा का ज्ञान धारण करने के लिए जो हुआ - फिनिश अर्थात् फुलस्टाप। बिन्दू लगा दिया। परम आत्मा, आत्मा और यह प्रकृति का खेल अर्थात् ड्रामा तीनों का ज्ञान प्रैक्टिकल लाइफ़ में 'बिन्दू' ही अनुभव करते हो ना। इसलिए भक्ति में भी प्रतिभा के बीच बिन्दू का महत्व है। **दूसरा है - बूँद का महत्व- आप सभी याद में बैठते हो या किसी को भी याद में बिठाते हो तो किस विधि से कराते**

हो? संकल्पों की बूँदों द्वारा - मैं आत्मा हूँ, यह बूँद डाली। बाप का बच्चा हूँ - यह दूसरी बूँद। ऐसे शुद्ध संकल्प की बूँद द्वारा मिलन की सिद्धि को अनुभव करते हो ना। तो एक है शुद्ध संकल्पों की स्मृति की बूँद। दूसरा जब रुह-रुहान करते हो, बाप की एक-एक महिमा और प्राप्ति के शुद्ध संकल्प की बूँद डालते हो ना। आप ऐसे हो, आपने हमको यह बनाया। यही मीठी-मीठी शीतल बूँदे बाप के ऊपर डालते अर्थात् बाप से रुह-रुहान करते हो। एक-एक बात करके सोचते हो ना, इकट्ठा ही नहीं। तीसरी बात - सभी बच्चे अपने तन-मन-धन से सहयोग की बूँद डालते। इसलिए आप लोग विशेष कहते हो - फुरीफुरी तालाब। इतना बड़ा विश्व-परिवर्तन का कार्य, सर्व शक्तिवान का बेहद का विशाल कार्य उसमें आप हरेक जो भी सहयोग देते हो, बूँद समान ही तो सहयोग है। लेकिन सभी की बूँद-बूँद के सहयोग से, सहयोग का विशाल सागर बन जाता है। इसलिए पूजा की विधि में भी बूँद का महत्व दिखाया है।

(28.02.1984)

सभी अपने को इस सृष्टि ड्रामा के अन्दर विशेष पार्टधारी समझते हो? कल्प पहले वाले अपने चित्र अभी देख रहे हो! यही ब्राह्मण जीवन का वन्डर है। सदा इसी विशेषता को याद करो कि क्या थे और क्या बन गये! कौड़ी से हीरे तुल्य बन गये। दु:खी संसार से सुखी संसार में आ गये। आप सब इस ड्रामा के हीरो हीरोइन एक्टर हो। एक-एक ब्रह्माकुमार-कुमारी बाप का सन्देश सुनाने वाले सन्देशी हो। भगवान का सन्देश सुनाने वाले सन्देशी कितने श्रेष्ठ हुए! तो सदा इसी कार्य के निमित्त अवतरित हुए हैं। ऊपर से नीचे आये हैं यह सन्देश देने - यही स्मृति खुशी दिलाने वाली हैं। बस, आपना यही आक्यूपेशन सदा याद रखो कि खुशियों की खान के मालिक हैं। यही आपका टाइटिल है।

आज सवेरे (18-4-84) अमृतवेले भुवनेश्वर के एक भाई ने हार्टफेल होने

से अपना पुराना शरीर मधुबन में छोड़ा उस समय अव्यक्त बापदादा के उच्चारे हुए महावाक्य .....

सभी ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो देखने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो ना! कोई भी सीन जो भी ड्रामा में होती है उसको कहेंगे कल्याणकारी। नथिंग न्यू। (उनकी लौकिक भाभी से) क्या सोच रही हो? साक्षीपन की सीट पर बैठ सब दृश्य देखने से अपना भी कल्याण है और उस आत्मा का भी कल्याण है। यह तो समझती हो ना! याद में शक्ति रुप हो ना। शक्ति सदा विजयी होती है। विजयी शक्ति रुप बन सारा पार्ट बजाने वाली। यह भी पार्ट है। पार्ट बजाते हुए कभी भी और कोई संकल्प नहीं करना। हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है। अभी उस आत्मा को शान्ति और शक्ति का सहयोग दो। इतने सारे दैवी परिवार का सहयोग प्राप्त हो रहा है। इसलिए कोई सोचने की बात नहीं है। महान तीर्थ स्थान है ना! महान आत्मा है, महान तीर्थ है। सदा महानता ही सोचो। सभी याद में बैठे हो ना! एक लाडला बच्चा, अपने इस पुराने शरीर का हिसाब पूरा कर अपने नये शरीर की तैयारी में चला। इसलिए अभी सभी उस भाग्यवान आत्मा को शान्ति, शक्ति का सहयोग दो। यही विशेष सेवा है। क्यों, क्या में नहीं जाना लेकिन स्वयं भी शक्ति स्वरुप हो, विश्व में शान्ति की किरणें फैलाओ। श्रेष्ठ आत्मा है, कमाई करने वाली आत्मा है। इसलिए कोई सोचने की बात नहीं। समझा!

(17.04.1984)

सदा याद की खुशी में रहते हो ना? खुशी ही सबसे बड़े ते बड़ी दुआ और दवा है। सदा यह खुशी की दवा और दुआ लेते रहो तो सदा खुश होने के कारण शरीर का हिसाब-किताब भी अपनी तरफ खींचेगा नहीं। न्यारे और प्यारे होकर शरीर का हिसाब-किताब चुक्तू करेंगे। कितना भी कड़ा कर्मभेग हो, वह भी सूली से कांटा हो जाता है। कोई बड़ी बात नहीं लगती। समझ मिल गई यह हिसाब-किताब है तो खुशी-खुशी से हिसाब-किताब चुक्तू करने वाले के लिए सब सहज

हो जाता है। अज्ञानी हाय-हाय करेंगे और ज्ञानी सदा वाह मीठा बाबा! वाह ड्रामा की स्मृति में रहेंगे। सदा खुशी के गीत गाओ। बस यही याद करो कि जीवन में पाना था वह पा लिया। जो प्राप्ति चाहिए वह सब हो गई। सर्व प्राप्ति के भरपूर भण्डार हैं। जहाँ सदा भण्डार भरपूर हैं वहाँ दु:ख-दर्द सब समाप्त हो जाते हैं। सदा अपने भाग्य को देख हर्षित होते रहो - वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य, यही सदा मन में गीत गाते रहो। कितना बड़ा आपका भाग्य है। दुनिया वालों को तो भाग्य में सन्तान मिलेगी, धन मिलेगा, सम्पत्ति मिलेगी लेकिन यहाँ क्या मिलता? स्वयं भाग्य विधाता ही भाग्य में मिल जाता है! भाग्य विधाता जब अपना हो गया तो बाकी क्या रह गया!

(26.04.1984)

जो संगम पर ताजपोशी दिवस मनाया उसी का ही यादगार अविनाशी चलता रहेगा। स्वयं बाप साकार वतन से वानप्रस्थ हुए ना! अव्यक्त वतन में सेवाधारी हैं लेकिन साकार वतन से तो वानप्रस्थ हुए ना! साकार वतन से वानप्रस्थ हो बच्चों को ताज तख्त दे और स्वयं अव्यक्त वतन में चले। तो ताजपोशी का दिन हो गया ना! विचित्र ड्रामा है ना। अगर जाने के पहले बताते तो वन्डरफुल ड्रामा नहीं होता। ऐसा विचित्र ड्रामा है जिसका चित्र नहीं खींचा जा सकता। विचित्र बाप का विचित्र पार्ट है। जिसका चित्र बुद्धि में संकल्प द्वारा भी नहीं खींच सकते, इसको कहते हैं- 'विचित्र'। इसलिए विचित्र ताजपोशी हुई। बापदादा सदा महावीर बच्चों को ताजपोशी करने वाले ताजधारी स्वरुप में देखते हैं। बापदादा साथ देने में नहीं छिपे लेकिन साकार दुनिया से छिपकर अव्यक्त दुनिया में उदय हो गये। साथ रहेंगे, साथ चलेंगे यह तो वायदा है ही। यह वायदा कभी छूट नहीं सकता। इसलिए तो ब्रह्मा बाप इन्तजार कर रहे हैं। नहीं तो कर्मातीत बन गये तो जा सकते हैं। बन्धन तो नहीं है ना। लेकिन स्नेह का बन्धन है। स्नेह के बन्धन के कारण साथ चलने का वायदा निभाने के कारण बाप को इन्तजार करना ही है। साथ निभाना है और साथ चलना है। ऐसे ही अनुभव है ना। अच्छा हरेक विशेष है। विशेषता एक-

एक की वर्णन करें तो कितनी होगी? माला बन जायेंगी। इसलिए दिल में ही रखते हैं, वर्णन नहीं करते।

(07.05.1984)

क्वेश्चन भी बहुतों का उठा कि अब क्या होगा? लेकिन क्वेश्चन को फुलस्टाप के रूप में परिवर्तन करो। अर्थात् अपने को सभी सब्जेक्ट में फुल करो। यह है 'फुलस्टाप'। ऐसे समय पर क्या होगा? यह क्वेश्चन नहीं उठता लेकिन क्या करना है, मेरा कर्तव्य ऐसे समय पर क्या है, उस सेवा में लग जाओ। जैसे आग बुझाने वाले आग को बुझाने में लग गए। क्वेश्चन नहीं किया कि यह क्या हुआ। अपनी सेवा में लग गये ना। ऐसे रूहानी सेवाधारी का कर्तव्य है अपनी रूहानी सेवा में लग जाना। दुनिया वालों को भी न्यारापन अनुभव हो। समझा! फिर भी समय प्रमाण पहुंच तो गए हो ना। परिस्थिति क्या भी हो लेकिन ड्रामा ने फिर भी मिलन मेला मना लिया। और ही लकी हो गये ना जो पहुंच तो गये हो ना। खुश हो रहे हो ना कि हमारा भाग्य है जो पहुंच गए। भले आये। मधुबन की रौनक आप सब बच्चे हैं। मधुबन का श्रृंगार मधुबन में पहुंचा। सिर्फ मधुबन वाले बाबा नहीं,मधुबन वाले बच्चे भी हैं।

(19.11.1984)

कानपुर का मकान (सेन्टर) जला - गंगे दादी से मुलाकात

बापदादा बच्चों को सदा सेफ रखते हैं। सेफ्टी का साधन सदा बापदादा द्वारा मिला हुआ है, इसलिए सदा ही बाप के स्नेह का हाथ और साथ है। 'नथिंग न्यू' के अभ्यासी हो गये हो इसलिए जो बीता नथिंग न्यू, और जो हो रहा है वह नथिंग न्यू। यह रिहर्सल हो रही है। फाइनल में हाहाकार के बीच जयजयकार होनी है। अति के बाद अंत और नये युग का आरंभ हो जायेगा। ऐसे समय पर न चाहते भी सबके मन से प्रत्यक्षता के नगाड़े बजेंगे। तो रिहर्सल से पार हो गये बेफिकर

बादशाह बन पार्ट बजाया, बहोत अच्छा किया। सोच से तो असोच है ही। जो हुआ वाह! वाह! इससे भी कईयों का कुछ कल्याण ही होगा। इसलिए जलने में भी कल्याण तो बचने में भी कल्याण। हाय! जल गया! ऐसे नहीं कहेंगे। बचने के समय जैसे वाह! वाह! कहते हैं ऐसे जलने के समय भी 'वाह'। इसी को ही एकरस स्थिति कहा जाता है। बचना अपना फर्ज है लेकिन जलनेवाली चीज जलनी ही है। इसमें भी कोई हिसाब-किताब होंगे। आप तो बेफिकर बादशाह। 'एक गया, लाख पाया' - ये है ब्राह्मणों का स्लोगन। गया नहीं लेकिन पाया इसलिए बेफिकर। कोई अच्छा मिलना होता है इसलिए जलना भी खेल, बचना भी खेल। यही तो देखेंगे कि जल रहा है लेकिन यह कितने बेफिकर बादशाह है। क्योंकि छत्रछाया के अन्दर है। वे फिकर में पड़ जाते हैं कि क्या होगा, कैसे होगा, कहाँ से खायेंगे, कहाँ से चलेंगे और बच्चों को ये फिकर है ही नहीं।

(26.11.1984)

कई बच्चे बड़ें चतुर हैं। चतुर सुजान से भी चतुराई करते हैं। होती हद की इच्छा है और फिर कहेंगे ऐसे ऐसे। यह शुभ इच्छा है, सेवा प्रति इच्छा है। होती अपनी इच्छा है लेकिन बाहर का रूप सेवा का बना देते हैं। इसलिए बापदादा मुस्कराते हुए, जानते हुए, देखते हुए, चतुराई समझते हुए भी कई बच्चों को बाहर से ईशारा नहीं देते। लेकिन ड्रामा अनुसार ईशारा मिलता जरूर है। वह कैसे? हद की इच्छायें पूर्ण होते हुए रूप प्राप्ति का होता लेकिन अन्दर एक इच्छा और इच्छाओं को पैदा करती रहती है। इसलिए मन की उलझन के रूप में ईशारा मिलता रहता है। बाहर से कितना भी कोई हद की प्राप्ति में खाता पीता गाता रहे लेकिन यह मन की उलझन को छिपाने का साधन करते। अन्दर मन तृप्त नहीं होगा। अल्पकाल के लिए होगा लेकिन सदाकाल की तृप्त अवस्था वा यह दिल का गीत कि 'बाप मिला संसार मिला',यह नहीं गा सकता। वह बाप को भी कहते हैं-आप तो मिले लेकिन यह भी जरूर चाहिए। यह चाहिए चाहिए की चाहना की

तृप्ती नहीं होगी। समय प्रमाण अभी सबका एक 'इच्छा मात्रम् अविद्या' का आवाज़ हो तब औरों की इच्छायें पूर्ण कर सकेंगे। अभी थोड़े समय में आप एक-एक श्रेष्ठ आत्मा को विश्व चैतन्य भण्डार अनुभव करेगा। भिखारी बन आयेंगे। यह आवाज़ निकलेगा कि आप ही भरपूर भण्डार हो। अभी तक ढूँढ रहे हैं कि कोई हैं, लेकिन वह कहाँ हैं, कौन हैं यह स्पष्ट समझ नहीं सकते। लेकिन अभी समय का 'ऐरो' लगेगा। जैसे रास्ते दिखाने के चिह्न होते हैं ना। ऐरो दिखाता है कि यहाँ जाओ। ऐसे सभी को यह अनुभूति होगी कि यहाँ जाओ। ऐसे भरपूर भण्डार बने हो? समय भी आपका सहयोगी बनेगा। शिक्षक नहीं, सहयोगी बनेगा। बापदादा समय के पहले सब बच्चों को सम्पन्न स्वरूप में भरपूर भण्डार के रूप में, इच्छा मात्रम् अविद्या, तृप्त स्वरूप में देखना चाहता है। क्योंकि अभी से संस्कार नहीं भरेंगे तो अन्त में संस्कार भरने वाले बहुत काल की प्राप्ति के अधिकारी नहीं बन सकते। इसलिए विश्व के लिए विश्व आधार मूर्त हो। विश्व के आगे जहान के नूर हो। जहान के कुल दीपक हो। जो भी श्रेष्ठ महिमा है - सर्व श्रेष्ठ महिमा के अधिकारी आत्मायें अब विश्व के आगे अपने सम्पन्न रूप में प्रत्यक्ष हो दिखाओ। समझा।

(05.12.1984)

सभी पुण्य आत्मायें बने हो? सबसे बड़ा पुण्य है - दूसरों को शक्ति देना। तो सदा सर्व आत्माओं के प्रति पुण्य आत्मा अर्थात् अपने मिले हुए खज़ाने के महादानी बनो। ऐसे दान करने वाले जितना दूसरों को देते हैं उतना पद्मगुणा बढ़ता है। तो यह देना अर्थात् लेना हो जाता है। ऐसे उमंग रहता है? इस उमंग का प्रैक्टिकल स्वरूप है सेवा में सदा आगे बढ़ते रहो। जितना भी तन-मन-धन सेवा में लगाते उतना वर्तमान भी महादानी पुण्य आत्मा बनते और भविष्य भी सदाकाल का जमा करते। यह भी ड्रामा में भाग्य है जो चांस मिलता है अपना सब कुछ जमा करने का। तो यह गोल्डन चांस लेने वाले हो ना। सोचकर किया तो सिल्वर चांस,

फ़राखदिल होकर किया तो गोल्डन चांस तो सब नम्बरवन चांसलर बनो।

(14.01.1985)

आज विशेष बापदादा ने क्या किया? सारा संगठन देख बापदादा भाग्यवान बच्चों के भाग्य बनाने की महिमा गा रहे थे। दूर वाले नजदीक के हो गये और नजदीक आबू में रहने वाले कितने दूर हो गये हैं! पास रहते भी दूर हैं। और आप दूर रहते भी पास हैं। वह देखने वाले और आप दिलतख्त पर सदा रहने वाले। कितने स्नेह से मधुबन आने का साधन बनाते हैं। हर मास यही गीत गाते हैं - बाप से मिलना है, जाना है। जमा करना है। तो यह लगन भी मायाजीत बनने का साधन बन जाती है। अगर सहज टिकट मिल जाए तो इतनी लगन में विघ्न ज़्यादा पड़ें। लेकिन फुरी-फुरी तालाब करते हैं। इसलिए बूँद-बूँद जमा करने में बाप की याद समाई हुई होती है। इसलिए यह भी ड्रामा में जो होता है कल्याणकारी है। अगर ज़्यादा पैसे मिल जाएँ तो फ़िर माया आ जाए फ़िर सेवा भूल जायेगी। इसलिए धनवान, बाप के अधिकारी बच्चे नहीं बनते हैं।

अर्जन्टीना की सभी आत्मायें 'अर्जुन' समान प्यासी आत्मायें हैं। दिन रात वह घड़ी देखते रहते हैं कि कौन-सी घड़ी आयेगी जब मधुबन निवासी बनेंगे। बापदादा बच्चों की इस लगन को देखते हैं, जानते हैं कि सभी अर्जुन समान आत्मायें हैं। उन्हों को कहना कि अर्जुन के लिए ही विशेष बाप आये थे और आये हैं। इसलिए दूर बैठे भी सिकीलधे हो। दूर रहने वाले बच्चों का दिलतख्त पर सदा नम्बर है। सभी बच्चों के पत्र बापदादा के पास पहले ही पहुँच गये हैं। सभी की पुकार और उल्हनें बाप के पास पहुँचे। बापदादा कहते हैं - ड्रामा में कभी भी किसी बच्चों का ऐसा भाग्य नहीं हो सकता जो दूर होने के कारण वंचित रह जाएं। ड्रामा में सभी को अधिकार मिलना ही है।

(27.02.1985)

जैसे ड्रामा की पाइंट्स उठाओ। यह बहुत बड़ा विजय प्राप्त करने का शक्तिशाली शस्त्र है। जिसको ड्रामा के ज्ञान की शक्ति प्रैक्टिकल जीवन में धारण है वह कभी भी हलचल में नहीं आ सकता। सदा एकरस अचल अडोल बनने और बनाने की विशेष शक्ति यह ड्रामा की पाइंट है। शक्ति के रूप में धारण करने वाला कभी हार नहीं खा सकता। लेकिन जो सिर्फ पाइंट के रूप में धारण करते हैं वह क्या करते हैं? ड्रामा की पाइंट वर्णन भी करेंगे। हलचल में भी आ रहे हैं और ड्रामा की पाइंट भी बोल रहे हैं। कभी-कभी आँखों से आँसू भी बहाते जाते हैं! पता नहीं क्या हो गया, पता नहीं क्या है। और ड्रामा की पाइंट भी बोलते जाते हैं। हाँ, विजयी तो बनना ही है। हूँ तो विजयी रत्न। ड्रामा याद है लेकिन पता नहीं क्या हो गया।

(21.03.1985)

दादीजी से - बचपन से बाप ने ताजधारी बनाया है। आते ही सेवा की जिम्मेवारी का ताज पहनाया और समय प्रति समय जो भी पार्ट चला - चाहे बेगरी पार्ट चला, चाहे मौजों का पार्ट चला, सभी पार्ट में ज़िम्मेवारी का ताज ड्रामा अनुसार धारण करती आई हो। इसलिए अव्यक्त पार्ट में भी ताजधारी निमित्त बन गई। तो यह विशेष आदि से पार्ट है। सदा ज़िम्मेवारी निभाने वाली। जैसे बाप जिम्मेवार है तो ज़िम्मेवारी के ताजधारी बनने का विशेष पार्ट है। इसलिए अन्त में भी दृष्टि द्वारा ताज, तिलक सब देकर गये। इसलिए आपका जो यादगार है ना उसमें ताज ज़रूर होगा। जैसे कृष्ण को बचपन से ताज दिखाते हैं तो यादगार में भी बचपन से ताजधारी रूप से पूजते हैं। और सब साथी हैं लेकिन आप ताजधारी हो। साथ तो सभी निभाते लेकिन समान रूप में साथ निभाना। इसमें अन्तर है।

(30.03.1985)

ड्रामा में जो भी सेवा का पार्ट मिलता है उसमें विशेषता भरी हुई है। हिम्मत

से मदद का अनुभव किया! अच्छा। स्वयं द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने का श्रेष्ठ संकल्प रहा। क्योंकि जब बाप को प्रत्यक्ष करेंगे तब इस पुरानी दुनिया की समाप्ति हो, अपना राज्य आयेगा। बाप को प्रत्यक्ष करना अर्थात् अपना राज्य लाना। अपना राज्य लाना है यह उमंग-उत्साह सदा रहता है ना! जैसे विशेष प्रोग्राम में उमंग-उत्साह रहा ऐसे सदा इस संकल्प का उमंग-उत्साह। समझा।

(13.11.1985)

आज तो शरीर को भी संभालना है। जब लोन लेते हैं तो अच्छा मालिक वो ही होता है जो शरीर को, स्थान को शक्ति प्रमाण कार्य में लगावे। फ़िर भी बापदादा दोनों के शक्तिशाली पार्ट को रथ चलाने के निमित्त बना है। यह भी ड्रामा में विशेष वरदान का आधार है। कई बच्चों को क्वेश्चन भी उठता है कि यही रथ निमित्त क्यों बना? दूसरे तो क्या इनको (गुल्जार बहिन को) भी उठता है। लेकिन जैसे ब्रह्मा भी अपने जन्मों को नहीं जानते थे ना, यह भी अपने वरदान को भूल गई है। यह विशेष साकार ब्रह्मा का आदि साक्षात्कार के पार्ट समय का बच्ची को वरदान मिला हुआ है। ब्रह्मा बाप के साथ आदि समय एकान्त के तपस्वी स्थान पर इस आत्मा के विशेष साक्षात्कार के पार्ट को देख ब्रह्मा बाप ने बच्ची के सरल स्वभाव, इनोसेन्ट जीवन की विशेषता को देख यह वरदान दिया था कि जैसे अभी इस पार्ट में आदि में ब्रह्मा बाप की साथी भी बनी और साथ भी रही ऐसे आगे चल बाप के साथी बनने की, समान बनने की ड्यूटी भी सम्भालेगी। ब्रह्मा बाप के समान सेवा में पार्ट बजायेगी। तो वो ही वरदान तकदीर की लकीर बन गये और ब्रह्मा बाप समान रथ बनने का पार्ट बजाना यह नूँध नूँधी गई। फ़िर भी बापदादा इस पार्ट बजाने के लिए बच्ची को भी मुबारक देते हैं। इतना समय इतनी शक्ति को एडजस्ट करना, यह एडजस्ट करने की विशेषता की लिफ़्ट के कारण एक्स्ट्रा गिफ़्ट है। फ़िर भी बापदादा को शरीर का सब देखना पड़ता है। बाजा पुराना है और चलाने वाले शक्तिशाली हैं। फ़िर भी हाँ जी, हाँ जी के पाठ के कारण अच्छा

चल रहा है। लेकिन बापदादा भी विधि और युक्ति पूर्वक ही काम चला रहे हैं। मिलने का वायदा तो है लेकिन विधि, समय प्रमाण परिवर्तन होती रहेगी। अभी तो अठारहवें वर्ष में सब सुनायेंगे। 17 तो पूरा करना ही है।

(19.12.1985)

प्रवृत्ति में रहते सदा न्यारे और बाप के प्यारे हो ना! कभी भी प्रवृत्ति से लगाव तो नहीं लग जाता? अगर कहाँ भी किसी से अटैचमेन्ट है तो वह सदा के लिए अपने जीवन का विघ्न बन जाता है। इसलिए सदा निर्विघ्न बन आगे बढ़ते चलो। कल्प पहले मिसल 'अंगद' बन अचल अडोल रहो। अगंद की विशेषता क्या दिखाई है? ऐसा निश्चयबुद्धि जो पाँव भी कोई हिला न सके। माया निश्चय रूपी पाँव को हिलाने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार से आती है। लेकिन माया हिल जाए आपका निश्चय रूपी पाँव न हिले। माया स्वयं सरेण्डर होती है। आप तो सरेण्डर नहीं होंगे ना! बाप के आगे सरेण्डर होना, माया के आगे नहीं, ऐसे निश्चयबुद्धि सदा निश्चिन्त रहते हैं। अगर जरा भी कोई चिंता है तो निश्चय की कमी है। कभी किसी बात की थोड़ी सी भी चिंता हो जाती है - उसका कारण क्या होता, ज़रूर किसी न किसी बात के निश्चय में कमी है। चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी हो, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी हो, चाहे बाप में निश्चय की कमी हो। तीनों ही प्रकार के निश्चय में ज़रा भी कमी है तो निश्चिन्त नहीं रह सकते। सबसे बड़ी बीमारी है - 'चिंता'। चिंता में बीमारी की दवाई डाक्टर्स के पास भी नहीं है। टैम्प्रेरी सुलाने की दवाई दे देंगे लेकिन सदा के लिए चिंता नहीं मिटा सकेंगे। चिंता वाले जितना ही प्राप्ति के पीछे दौड़ते हैं उतना प्राप्ति आगे दौड़ लगाती है। इसलिए सदा निश्चय के पाँव अचल रहें। सदा एक बल एक भरोसा - यही पाँव है। निश्चय कहो, भरोसा कहो एक ही बात है। ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है।

(13.01.1986)

अच्छा - दीदी ने क्या कहा? दीदी रूह-रूहान बहुत अच्छी कर रही थी। वह कहती है कि आपने सभी को बिना सूचना दिये क्यों बुला लिया। छुट्टी लेकर तैयार हो जाती। आप छुट्टी देते थे? बापदादा बच्चों से रूह-रूहान कर रहे थे - देह सहित देह के सम्बन्ध, देह के संस्कार सबके सम्बन्ध, लौकिक नहीं तो अलौकिक तो हैं। अलौकिक सम्बन्ध से, देह से, संस्कार से 'नष्टोमोहा' बनने की विधि, यही ड्रामा में नूंधी हुई है। इसलिए अन्त में सबसे नष्टोमोहा बन अपनी ड्यूटी पर पहुँच गई। चाहे विश्व किशोर का पहले थोड़ा-सा मालूम था लेकिन जिस समय जाने का समय रहा उस समय वह भी भूल गया था। यह भी ड्रामा में नष्टोमोहा बनने की विधि नूँधी हुई थी जो रिपीट हो गई। क्योंकि कुछ अपनी मेहनत और कुछ बाप ड्रामा अनुसार कर्मबन्धन मुक्त बनाने में सहयोग भी देता है। जो बहुत काल के सहयोगी बच्चे रहे हैं, 'एक बाप दूसरा न कोई' इस मेन सबजेक्ट में पास रहे हैं, ऐसे एक बाप अनुभव करने वालों को बाप विशेष एक ऐसे समय सहयोग ज़रूर देता है। कई सोचते हैं कि क्या यह सब कर्मातीत हो गये, यही कर्मातीत स्थिति है? लेकिन ऐसे आदि से सहयोगी बच्चों को एक्स्ट्रा सहयोग मिलता है। इसलिए कुछ अपनी मेहनत कम भी दिखाई देती हो लेकिन बाप की मदद उस समय अन्त में एक्स्ट्रा मार्क्स दे पास विद आनर बना ही देती है। वह गुप्त होता है - इसलिए क्वेश्चन उठते हैं- कि क्या ऐसा हुआ? लेकिन यह सहयोग का रिटर्न है। जैसे कहावत है ना - 'आईवेल में काम आता है'। तो जो दिल से सहयोगी रहे हैं उन्हों को ऐसे समय पर एक्स्ट्रा मार्क्स रिटर्न के रूप में प्राप्त होती है। समझा - इस रहस्य को? इसलिए नष्टोमोहा की विधि से एक्स्ट्रा मार्क्स की गिफ्ट से सफलता को प्राप्त कर लिया। समझा - पूछते रहे हो ना कि आखिर क्या है? सो आज यह रूह-रूहान सुना रहे हैं। अच्छा - दीदी ने क्या कहा? उसका अनुभव तो सभी जानते भी हो। वह यही बोल, बोल रही थी कि 'सदा बाप और दादा की अँगुली पकड़ो या अँगुली दो। चाहे बच्चा बना के अँगुली पकड़ो, चाहे बाप बनाकर अँगुली दो। दोनों रूप से हर कदम में अँगुली पकड़ साथ का अनुभव कर चलना, यही मेरे सफलता का

आधार है।' तो यही विशेष रूह-रूहान चली। आदि रत्नों के संगठन में वह कैसे मिस होगी इसलिए वह भी इमर्ज थी। अच्छा - वह रही एडवांस पार्टी की बातें, आप क्या करेंगे?

शक्तियाँ बहुत हैं, आदि में निमित्त ज़्यादा शक्तियाँ बनी। गोल्डन जुबली में भी शक्तियाँ ज़्यादा रही हैं। पाण्डव थोड़े गिनती के हैं। फिर भी पाण्डव हैं। अच्छा है, हिम्मत रख आदि में सहन करने का सबूत तो यही आदि रतन हैं। विघ्न विनाशक बन निमित्त बन, निमित्त बनाने के कार्य में अमर रहें हैं। इसलिए बापदादा को भी अविनाशी, अमर भव के वरदानी बच्चे सदा प्रिय हैं। और यह आदि रतन स्थापना के, आवश्यकता के समय के सहयोगी हैं। इसलिए ऐसे निमित्त बनने वाली आत्माओं को, आईवेले पर सहयोगी बनने वाली आत्माओं को, ऐसी कोई भी वेला मुश्किल की आती है तो बापदादा भी उन्हें उसका रिटर्न देता है। इसलिए आप सभी जो भी ऐसे समय पर निमित्त बने हो उसकी यह एकस्ट्रा गिफ्ट ड्रामा मे नूंधी हुई है। इसलिए एक्स्ट्रा गिफ्ट के अधिकारी हो। समझा - माताओं के फुरी-फुरी बूंद-बूंद तालाब से स्थापना का कार्य आरम्भ हुआ और अभी सफ़लता के समीप पहुँचा। माताओं के दिल की कमाई है, धन्धे की कमाई नहीं। दिल की कमाई एक हज़ार के बराबर है। स्नेह का बीज डाला है इसलिए स्नेह के बीज का फल फलीभूत हो रहा है। है तो साथ पाण्डव भी। पाण्डवों के बिना भी तो कार्य नहीं चलता लेकिन ज़्यादा संख्या शक्तियों की है। इसलिए 5 पाण्डव लिख दिये हैं। फिर भी प्रवृत्ति को निभाते न्यारे और बाप के प्यारे बन हिम्मत और उमंग का सबूत दिया है इसलिए पाण्डव भी कम नहीं हैं। शक्तियों का सर्वशक्तिवान गाया हुआ है तो पाण्डवों का पाण्डवपति भी गाया है। इसलिए जैसे निमित्त बने हो ऐसे निमित्त बने हो ऐसे सदा स्मृति में रख आगे बढ़ते चलो।

(18.01.1986)

उड़ती कला सर्व आत्माओं को भिखारीपन से छुड़ाए बाप के वर्से के

अधिकारी बनाने वाली है। सभी आत्मायें अनुभव करेंगी कि हम सब आत्माओं के इष्ट देव वा इष्ट देवियाँ वा निमित्त बने हुए जो भी अनेक देवतायें हैं, सभी इस धरनी पर अवतरित हो गए हैं। सतयुग में तो सब सद्गति में होंगे लेकिन इस समय जो भी आत्मायें है - सर्व के सद्गतिदाता हो। जैसे कोई भी ड्रामा जब समाप्त होता है तो अन्त में सभी एक्टर्स स्टेज पर सामने आते हैं। तो अभी कल्प का ड्रामा समाप्त होने का समय आ रहा है। सारी विश्व की आत्माओं को चाहे स्वप्न में, चाहे एक सेकण्ड की झलक में, चाहे प्रत्यक्षता के चारों ओर के आवाज द्वारा यह ज़रूर साक्षात्कार होना है कि इस ड्रामा के हीरो पार्टधारी स्टेज पर प्रत्यक्ष हो गये। धरती के सितारे, धरती पर प्रत्यक्ष हो गये। सब अपने-अपने इष्ट देव को प्राप्त कर बहुत खुश होंगे। सहारा मिलेगा।

(सबने अपनी-अपनी संख्या सुनाई)

मतलब तो वृद्धि को प्राप्त कर रहे हो। अभी कोई विशेष स्थान रहा हुआ है? (बहुत हैं) अच्छा उसका प्लैन भी बना रहे हो ना? विदेश को यह लिफ्ट है कि बहुत सहज सेन्टर खोल सकते हैं। लौकिक सेवा भी कर सकते हैं और अलौकिक सेवा के भी निमित्त बन सकते हैं। भारत में फिर भी निमन्त्रण पर सेन्टर स्थापन होने की विशेषता रही है लेकिन विदेश में स्वयं ही निमन्त्रण स्वयं को देते। निमन्त्रण देने वाले भी खुद और पहुँचने वाले भी खुद तो यह भी सेवा में वृद्धि सहज होने की एक लिफ्ट मिली हुई है। जहाँ भी जाओ तो दो तीन मिलकर वहाँ स्थापना के निमित्त बन सकते हो और बनते रहेंगे। यह ड्रामा अनुसार गिफ्ट कहो, लिफ्ट कहो, मिली हुई है। क्योंकि थोड़े समय में सेवा को समाप्त करना है तो तीव्रगति हो तब तो समय पर समाप्त हो सके। भारत की विधि और विदेश की विधि में अन्तर है इसलिए विदेश में जल्दी वृद्धि हो रही है और होती रहेगी। एक ही दिन में बहुत ही सेन्टर खुल सकते हैं। चारों ओर विदेश में निमित्त रहने वाले विदेशियों को सेवा का चांस सहज है। भारत वालों को देखो 'वीसा' भी मुश्किल मिलती है। तो यह चांस है वहाँ के रहने वाले ही वहाँ की सेवा के निमित्त बनते हैं इसलिए सेवा का चांस है।

जैसे लास्ट सो फास्ट जाने का चांस है वैसे सेवा का चांस भी फास्ट मिला हुआ है इसलिए उल्हना नहीं रहेगा कि हम पीछे आये। पीछे आने वालों को फास्ट जाने का चांस भी विशेष है इसलिए हर एक सेवाधारी है। सभी सेवाधारी हो या सेन्टर पर रहने वाले सेवाधारी हैं? कहाँ भी हैं सेवा के बिना चैन नहीं हो सकती। सेवा ही चैन की निंद्रा है। कहते हैं - चैन से सोना यही जीवन है। सेवा ही चैन की निंद्रा कहो, सोना कहो। सेवा नहीं तो चैन की नींद नहीं। सुनाया ना, सेवा सिर्फ वाणी की नहीं, हर सेकण्ड सेवा है। हर संकल्प में सेवा है। कोई भी यह नहीं कह सकता - चाहे भारतवासी चाहे विदेश में रहने वाले कोई ब्राह्मण यह नहीं कह सकते कि सेवा का चांस नहीं है। बीमार है तो भी मन्सा सेवा, वायुमण्डल बनाने की सेवा, वायब्रेशन फैलाने की सेवा तो कर ही सकते हैं। कोई भी प्रकार की सेवा करो लेकिन सेवा में ही रहना है। 'सेवा ही जीवन है। ब्राह्मण का अर्थ ही है सेवाधारी।'

(20.02.1986)

आज यूरोप का टर्न है। यूरोप ने अच्छा विस्तार किया है। यूरोप ने अपने पड़ोस के देशों के कल्याण का प्लैन अच्छा बनाया है। जैसे बाप सदा कल्याणकारी है वैसे बच्चे भी बाप समान कल्याण की भावना रखने वाले हैं। अभी किसी को भी देखेंगे तो रहम आता है ना कि यह भी बाप के बन जाएँ। देखो बापदादा स्थापना के समय से लेकर विदेश के सभी बच्चों को किसी न किसी रूप से याद करते रहे हैं। और बापदादा की याद से समय आने पर चारों ओर के बच्चे पहुँच गये हैं। लेकिन बापदादा ने आह्वान बहुत समय से किया है। आह्वान के कारण आप लोग भी चुम्बक की तरह आकर्षित हो पहुँच गये हो। ऐसे लगता है ना कि नामालूम कैसे हम बाप के बन गये! बन गये यह तो अच्छा लगता ही है, लेकिन क्या हो गया, कैसे हो गया यह कभी बैठकर सोचो, कहाँ से कहाँ आकर पहुँच गये हो तो सोचने से विचित्र भी लगता है ना! ड्रामा में नूँध नूँधी हुई थी। ड्रामा की नूँध ने सभी को कोने-कोने से निकालकर एक परिवार में पहुँचा दिया। अभी यही परिवार अपना

लगने के कारण अति प्यारा लगता है। बाप प्यारे ते प्यारा है तो आप सभी भी प्यारे बन गये हो। आप भी कम नहीं हो। आप सभी भी बापदादा के संग के रंग में अति प्यारे बन गये हो। किसी को भी देखो तो हर एक, एक-दो से प्यारा लगता है। हर एक के चेहरे पर रूहानियत का प्रभाव दिखाई देता है।

(10.03.1986)

बाप से होली मनाना अर्थात् अविनाशी रुहानी रंग में बाप समान बनना। वह लोग तो उदास रहते हैं इसलिए खुशी मनाने के लिए यह दिन रखे हैं। और आप लोग तो सदा ही खुशी में नाचते, गाते, मौज मनाते रहते हो। जो ज्यादा मूँजते हैं - क्या हुआ, क्यों हुआ, कैसे हुआ वह मौज में नहीं रह सकते। आप त्रिकालदर्शी बन गये तो फिर 'क्या, क्यों, कैसे' यह संकल्प उठ ही नहीं सकते। क्योंकि तीनों कालों को जानते हो। क्यों हुआ? जानते हैं, पेपर है आगे बढ़ने के लिए। क्या हुआ? नथिंग न्यू। तो क्या हुआ का क्वेश्चन ही नहीं। कैसे हुआ? माया और मजबूत बनाने के लिए आई और चली गई। तो त्रिकालदर्शी स्थिति वाले इसमें मूँझते नहीं। क्वेश्चन के साथ-साथ रेसपाण्ड पहले आता। क्योंकि त्रिकालदर्शी हो। नाम त्रिकलदर्शी और वर्तमान को भी न जान सके। क्यों हुआ, कैसे हुआ तो उसको त्रिकालदर्शी कहेंगे। अनेक बार विजयी बने हैं और बनने वाले भी हैं। पास्ट और फ्युचर को भी जानते हैं कि हम ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता बनने वाले हैं। आज और कल की बात है। क्वेश्चन समाप्त हो फुलस्टॉप आ जाता है। होली का अर्थ भी है 'हो ली'। पास्ट इज पास्ट। ऐसे बिन्दी लगाने आती है ना? यह भी होली का अर्थ है।

(25.03.1986)

बापदादा सभी बच्चों के दिल के उमंग उत्साह को देख रहे हैं। हर एक के मन में स्नेह के सागर की लहरें लहरा रहीं हैं। यह बापदादा देख भी रहे हैं और

जानते भी हैं कि लगन ने विघ्न विनाशक बनाए मधुबन निवासी बना लिया है। सभी की सब बातें स्नेह में समाप्त हो गई। एवररेडी की रिहर्सल कर दिखाई। एवररेडी हो गये हो ना! यह भी स्वीट ड्रामा का स्वीट पार्ट देख बापदादा और ब्राह्मण बच्चे हर्षित हो रहे हैं। स्नेह के पीछे सब बातें सहज भी लगती हैं और प्यारी भी लगती। जो ड्रामा बना, वाह ड्रामा वाह! कितनी बार ऐसे दौड़े-दौड़े आये हैं। ट्रेन में आये हैं या पंखो से उड़के आये हैं! इसको कहा जाता है - जहाँ दिल है वहाँ असम्भव भी संभव हो जाता है। स्नेह का स्वरूप तो दिखाया, अब आगे क्या करना है। जो अब तक हुआ वह श्रेष्ठ है और श्रेष्ठ रहेगा।

जैसे मधुबन में भाग कर पहुँच गये हो ऐसे तपस्वी स्थिति की मंजिल तरफ भागो। अच्छा - भले पधारे। सभी ऐसे भागे हैं जैसे कि अभी विनाश होना है। जो भी किया, जो भी हुआ बापदादा को प्रिय है, क्योंकि बच्चे प्रिय हैं। हर एक ने यही सोचा है कि हम जा रहे हैं। लेकिन दूसरे भी आ रहे हैं यह नहीं सोचा! सच्चा कुम्भ मेला तो यहाँ लग गया है। सभी अन्तिम मिलन, अन्तिम टुब्बी देने आये है। यह सोचा कि इतने सब जा रहे हैं तो मिलने की विधि कैसी होगी! इस सुध-बुध से भी न्यारे हो गये! न स्थान देखा न रिजर्वेशन को देखा। अभी कब भी यह बहाना नहीं दे सकेंगे कि रिजर्वेशन नहीं मिलती। ड्रामा में यह भी एक रिहर्सल हो गई। संगम युग पर अपना राज्य नहीं है। स्वराज्य है लेकिन धरनी का राज्य तो नहीं है, न बापदादा को स्व का रथ है। पराया तन है। इसलिये समय प्रमाण नई विधि का आरम्भ करने के लिए यह सीजन हो गई। यहाँ तो पानी का भी सोचते रहते, वहाँ तो झरनों में नहायेंगे। जो भी जितने भी आये हैं, बापदादा स्नेह के रेसपाण्ड में स्नेह से स्वागत करते हैं।

(07.04.1986)

सदा अपने को अचल-अडोल आत्मायें अनुभव करते हो? किसी भी प्रकार की हलचल में अचल रहना यही श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं की निशानी है।

दुनिया हलचल में हो लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें हलचल में नहीं आ सकती। क्यों? **ड्रामा** की हर सीन को जानते हो। नालेजफुल हो। जो नालेजफुल होते हैं वह पावरफुल भी होते हैं। तो नालेजफुल आत्मायें, पावरफुल आत्मायें सदा स्वत: ही अचल रहती हैं। तो कभी वायुमण्डल से घबराते तो नहीं हो! निर्भय हो? शक्तियाँ निर्भय हो? या थोड़ा-थोड़ा डर लगता है? क्योंकि यह तो पहले से ही - स्थापना के समय से ही जानते हो कि भारत में 'सिविल वार होनी ही है। यह शुरू के चित्रों में ही आपका दिखाया हुआ है। तो जो दिखाया है वह होना तो है ना! भारत का पार्ट ही सिविल वार से है इसलिए नथिंग न्यू। तो नथिंग न्यू है या घबरा जाते हो - क्या हुआ, कैसे हुआ, यह हुआ... समाचार सुनते देखते भी ड्रामा की बनी हुई भावी को शक्तिशाली बन देखते और औरों को भी शक्ति देते - यही काम है ना आप सबका! दुनिया वाले घबराते रहते और आप उन आत्माओं में शक्ति भरते। जो भी सम्पर्क में आये, उसे शक्तियों का दान देते चलो। शांति का दान देते चलो।

(09.04.1986)

कोई नई बात कर रहे हो क्या! कितना बार की हुई बात को सिर्फ लकीर के ऊपर लकीर खींच रहे हो! ड्रामा की लकीर खींची हुई है। नई लकीर भी नहीं लगा रहे हो, जो सोचो कि पता नहीं, सीधी होगी वा नहीं। कल्प-कल्प की बनी हुई प्रालब्ध को सिर्फ बनाते हो। क्योंकि कर्मों के फल का हिसाब है। बाकी नई बात क्या है! यह तो बहुत पुरानी है। हुई पड़ी है। यह है अटल निश्चय। इसको दृढ़ता कहते हैं। इसको तपस्वी मूर्त कहते हैं। हर संकल्प में दृढ़ता माना - 'तपस्या'।

(11.04.1986)

यह मेला भी ड्रामा में नूँध था। 'वाह ड्रामा' कर रहे हैं ना। दूसरे लोग कभी 'हाय ड्रामा' करेंगे, कभी 'वाह ड्रामा' और आप सदा क्या कहते हो? वाह ड्रामा! वाह! जब प्राप्ति होती हैं ना, तो प्राप्ति के आगे कोई मुश्किल नहीं लगता है।

तो ऐसे ही, जब इतने श्रेष्ठ परिवार से मिलने की प्राप्ति हो रही है तो कोई मुश्किल, मुश्किल नहीं लगेगा। मुश्किल लगता है? खाने पर ठहरना पड़ता है। खाओ तो भी प्रभु के गुण गाओ और क्यू में ठहरो तो भी प्रभु के गुण गाओ। यही काम करना है ना। यह भी रिहर्सल हो रही है। अभी तो कुछ भी नहीं है। अभी तो और वृद्धि होगी ना। ऐसे अपने को मोल्ड करने की आदत डालो, जैसा समय वैसे अपने आपको चला सकें। तो पट (जमीन) में सोने की भी आदत पड़ गई ना। ऐसे तो नहीं-खटिया नहीं मिली तो नींद नहीं आई? टेन्ट में भी रहने की आदत पड़ गई ना। अच्छा लगा? ठण्डी तो नहीं लगती? अभी सारे आबू में टेन्ट लगायें? टेन्ट में सोना अच्छा लगा या कमरा चाहिए? याद है, पहले-पहले जब पाकिस्तान में थे तो महारथियों को ही पट में सुलाते थे? जो नामीग्रामी महारथी होते थे, उन्हों को हाल में पट में टिफुटी (तीन फुट) देकर सुलाते थे। और जब ब्राह्मण परिवार की वृद्धि हुई तो भी कहाँ से शुरू की? टेन्ट से ही शुरू की ना। पहले-पहले जो निकले, वह भी टेन्ट में ही रहे ।टेन्ट में रहने वाले सेन्ट (महात्मा) हो गये। साकार पार्ट के होते भी टेन्ट में ही रहे तो आप लोग भी अनुभव करेंगे ना। तो सभी हर रीति से खुश हैं? अच्छा, फिर और 10,000 मंगाके टेन्ट देंगे, प्रबन्ध करेंगे। सब नहाने के प्रबन्ध का सोचते हो, वह भी हो जायेगा। याद है, जब यह हाल बना था तो सबने क्या कहा था? इतने नहाने के स्थान क्या करेंगे? इसी लक्ष्य से यह बनाया गया, अभी कम हो गया ना। जितना बनायेंगे उतना कम तो होना ही है क्योंकि आखिर तो बेहद में ही जाना है।

(21.01.1987)

सफलता का सितारा, उसकी विशेष निशानी है-कभी भी स्व की सफलता का अभिमान नहीं होगा,वर्णन नहीं करेगा, अपने गीत नहीं गायेगा लेकिन जितनी सफलता उतना नम्रचित,निर्माण, निर्मल स्वभाव होगा। और (दूसरे) उसके गीत गायेंगे लेकिन वह स्वयं सदा बाप के गुण गायेगा। सफलता का सितारा कभी भी क्वेश्चन मार्क नहीं करेगा। सदा बिन्दी रूप में स्थित रह हर कार्य में औरों को भी

'**ड्रामा** की बिन्दी' स्मृति में दिलाये,विघ्नविनाशक बनाये, समर्थ बनाये सफलता की मंजिल के समीप लाता रहेगा।

नये बच्चों का नया उमंग-उत्साह मिलन मनाने का ड्रामा की नूँध प्रमाण पूरा हुआ। बहुत उमंग रहा ना। जायें-जायें...इतना उमंग रहा जो डायरेक्शन भी नहीं सुना। मिलन की मस्ती में मस्त थे ना! कितना कहा-कम आओ, कम आओ, तो कोई ने सुना? बापदादा ड्रामा के हर दृश्य को देख हर्षित होते हैं कि इतने सब बच्चों को आना ही था, इसलिए आ गये हैं। सब सहज मिल रहा है ना? मुश्किल तो नहीं है ना? यह भी ड्रामा अनुसार, समय प्रमाण रिहर्सल हो रही है। सभी खुश हो ना? मुश्किल को सहज बनाने वाले हो ना? हर कार्य में सहयोग देना, जो डायरेक्शन मिलते हैं उसमें सहयोगी बनना अर्थात् सहज बनाना। अगर सहयोगी बनते हैं तो 5000 भी समा जाते हैं और सहयोगी नहीं बनते अर्थात् विधिपूर्वक नहीं चलते तो 500 भी समाना मुश्किल है। इसलिए, दादियों को ऐसा अपना रिकार्ड दिखाकर जाना जो सबके दिल से यही निकले कि 5000, पाँच सौ के बराबर समाए हुए थे। इसको कहते हैं 'मुश्किल को सहज करना'। तो सबने अपना रिकार्ड बढ़िया भरा है ना? सर्टिफिकेट (प्रमाण-पत्र) अच्छा मिल रहा है। ऐसे ही सदा खुश रहना और खुश करना, तो सदा ही तालियाँ बजाते रहेंगे। अच्छा रिकार्ड है, इसलिए देखो, ड्रामा अनुसार दो बार मिलना हुआ है! यह नयों की खातिरी ड्रामा अनुसार हो गई है। अच्छा।

कुछ भी होता है, सुनते, देखते थोड़ा भी हलचल में तो नहीं आ जाते? जब 'नथिंग न्यू' है तो हलचल में क्यों आयें? कोई नई बात हो तो हलचल हो। यह 'क्या', 'क्यों' अनेक कल्प हुई है - इसको कहते हैं 'ड्रामा के ऊपर निश्चयबुद्धि'। सर्वशक्तिवान के साथी हैं, इसलिए बेपरवाह बादशाह हैं। सब फिकर बाप को दे दिये तो स्वयं सदा बेफिकर बादशाह। सदा रूहानी खुशबू फैलाते रहो तो सब विघ्न खत्म हो जायेंगे।

(23.01.1987)

तीसरी लकीर है - सच्चे सेवाधारी की। यह सेवाधारी की लकीर भी सभी के मस्तक पर है। सेवा के बिना भी रह नहीं सकते। सेवा ब्राह्मण जीवन को सदा निर्विघ्न बनाने का साधन भी है और फिर सेवा में ही विघ्नों का पेपर भी ज्यादा आता है। निर्विघ्न सेवाधारी को सच्चे सेवाधारी कहा जाता है। विघ्न आना, यह भी ड्रामा की नूँध है। आने ही हैं और आते ही रहेंगे क्योंकि यह विघ्न या पेपर अनुभवी बनाते हैं। इसको विघ्न न समझ, अनुभव की उन्नति हो रही है - इस भाव से देखो तो उन्नति की सीढ़ी अनुभव होगी। इससे और आगे बढ़ना है। क्योंकि सेवा अर्थात् संगठन का, सर्व आत्माओं की दुआ का अनुभव करना। सेवा के कार्य में सर्व की दुआयें मिलने का साधन है। इस विधि से, इस वृत्ति से देखो तो सदा ऐसे अनुभव करेंगे कि अनुभव की अथॉर्टी और आगे बढ़ रही है। विघ्न को विघ्न नहीं समझो और विघ्न अर्थ निमित्त बनी हुई आत्मा को विघ्नकारी आत्मा नहीं समझो, अनुभवी बनाने वाले शिक्षक समझो। जब कहते हो निंदा करने वाले मित्र हैं, तो विघ्नों को पास कराके अनुभवी बनाने वाला शिक्षक हुआ ना। पाठ पढ़ाया ना। जैसे आजकल के जो बीमारियों को हटाने वाले डॉक्टर्स हैं, वह एक्सरसाइज़ (व्यायाम) कराते हैं, और एक्सरसाइज में पहले दर्द होता है, लेकिन वह दर्द सदा के लिए बेदर्द बनाने के निमित्त होता है। जिसको यह समझ नहीं होती है, वह चिल्लाते हैं - इसने तो और ही दर्द कर लिया। लेकिन इस दर्द के अन्दर छिपी हुई दवा है। इस प्रकार रूप भल विघ्न का है, आपको विघ्नकारी आत्मा दिखाई पड़ती लेकन सदा के लिए विघ्नों से पार कराने के निमित्त, अचल बनाने के निमित्त वही बनते। इसलिए, सदा निर्विघ्न सेवाधारी को कहते हैं - 'सच्चे सेवाधारी'। ऐसे श्रेष्ठ लकीर वाले सच्चे सेवाधारी कहे जाते हैं।

(20.02.1987)

सन्तुष्टता की निशानी - वह मन से, दिल से, सर्व से, बाप से, ड्रामा से सन्तुष्ट होंगे; उनके मन और तन में सदा प्रसन्नता की लहर दिखाई देगी। चाहे कोई

भी परिस्थिति आ जाए, चाहे कोई आत्मा हिसाब-किताब चुक्तू करने वाली सामना करने भी आती रहे, चाहे शरीर का कर्म-भोग सामना करने आता रहे लेकिन हद की कामना से मुक्त आत्मा सन्तुष्टता के कारण सदा प्रसन्नता की झलक में चमकता हुआ सितारा दिखाई देगी। प्रसन्नचित्त कभी कोई बात में प्रश्नचित्त नहीं होंगे। प्रश्न हैं तो प्रसन्न नहीं। **प्रसन्नचित्त की निशानी - वह सदा निःस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा; किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा - न भाग्यविधाता के ऊपर कि मेरा भाग्य ऐसा बनाया, न ड्रामा पर कि मेरा ड्रामा में ही पार्ट ऐसा है, न व्यक्ति पर कि इसका स्वभाव-संस्कार ऐसा है, न प्रकृति के ऊपर कि प्रकृति का वायुमण्डल ऐसा है, न शरीर के हिसाब-किताब पर कि मेरा शरीर ही ऐसा है। प्रसन्नचित अर्थात् सदा निःस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले।** तो संगमयुग की विशेषता 'सन्तुष्टता' है और सन्तुष्टता की निशानी 'प्रसन्नता' है। यह है ब्राह्मण जीवन की विशेष प्राप्ति। सन्तुष्टता नहीं, प्रसन्नता नहीं तो ब्राह्मण बनने का लाभ नहीं लिया। ब्राह्मण जीवन का सुख है ही सन्तुष्टता, प्रसन्नता। ब्राह्मण जीवन बनी और उसका सुख नहीं लिया तो नामधारी ब्राह्मण हुए वा प्राप्तिस्वरूप प्रमाण हुए? तो बापदादा सभी ब्राह्मण बच्चों को यही स्मृति दिला रहे हैं - ब्राह्मण बने, अहो भाग्य! लेकिन ब्राह्मण जीवन का वर्सा, प्रापर्टी 'सन्तुष्टता' है। और ब्राह्मण जीवन की पर्सनल्टी 'प्रसन्नता' है। इस अनुभव से कभी वंचित नहीं रहना। अधिकारी हो। जब दाता, वरदाता खुली दिल से प्राप्तियों का खजाना दे रहे हैं, दे दिया है तो खूब अपनी प्रापर्टी और पर्सनल्टी को अनुभव में लाओ, औरों को भी अनुभवी बनाओ। समझा? हर एक अपने से पूछे कि मैं किस नम्बर की माला में हूँ? माला में तो है ही लेकिन किस नम्बर की माला में हूँ।

(05.10.1987)

बापदादा देख रह थे कि कई बच्चे मदद के पात्र होते भी मदद से वंचित क्यों रह जाते? इसका कारण सुनाया कि हिम्मत के विधि को भूलने कारण, अभिमान अर्थात् अलबेलापन और स्व के ऊपर अटेन्शन की कमी के कारण। विधि नहीं तो वरदान से वंचित रह जाते। सागर के बच्चे होते हुए भी छोटे-छोटे तालाब बन जाते। जैसे तालाब का पानी खड़ा हुआ होता है, ऐसे पुरूषार्थ के बीच में खड़े हो जाते हैं। इसलिए कभी मेहनत, कभी मौज में रहते। आज देखो तो बड़ी मौज में है और कल छोटे से रोड़े (पत्थर) के कारण उसको हटाने की मेहनत में लगा हुआ है। पहाड़ भी नहीं, छोटा-सा पत्थर है। है महावीर पाण्डव सेना लेकिन छोटा-सा कंकड़-पत्थर भी पहाड़ बन जाता। उसी मेहनत में लग जाते हैं। फिर बहुत हंसाते हैं। अगर कोई उन्हों को कहते हैं कि यह तो बहुत छोटा कंकड़ है, तो हंसी की बात क्या कहते? आपको क्या पता, आपके आगे आये तो पता पड़े। बाप को भी कहते - आप तो हो ही निराकार, आपको भी क्या पता। ब्रह्मा बाबा को भी कहते - आपको तो बाप की लिफ्ट है, आपको क्या पता। बहुत अच्छी-अच्छी बातें करते हैं। लेकिन इसका कारण है छोटी-सी भूल। हिम्मते बच्चे मददे खुदा - इस राज को भूल जाते हैं। यह एक ड्रामा की गुह्य कर्मो की गति है। हिम्मते बच्चे मददे खुदा, अगर यह विधि विधान में नहीं होती तो सभी विश्व के पहले राजा बन जाते। एक ही समय पर सभी तख्त पर बैठेंगे क्या? नम्बरवार बनने का विधान इस विध के कारण ही बनता है। नहीं तो, सभी बाप को उल्हना देवें कि ब्रह्मा को ही क्यों पहला नम्बर बनाया, हमें भी तो बना सकते? इसलिए यह ईश्वरीय विधान ड्रामा अनुसार बना हुआ है। निमित्त मात्र यह विधान नूँधा हुआ है कि एक कदम हिम्मत का और पद्म कदम मदद का। मदद का सागर होते हुए भी यह विधान की विधि ड्रामा अनुसार नूँधी हुई है। तो जितना चाहे हिम्मत रखो और मदद लो। इसमें कभी नहीं रखते। चाहे एक वर्ष का बच्चा हो, चाहे 50 वर्ष का बच्चा हो, चाहे सरेन्डर हो, चाहे प्रवृति वाले हो - अधिकार समान है। लेकिन विधि से प्राप्ति है। तो ईश्वरीय विधान को समझा ना?

सदा 'वाह-वाह' के गीत गाने वाले हो ना? 'हाय-हाय' के गीत समाप्त हो गये और 'वाह-वाह' के गीत सदा मन से गाते रहते। जो भी श्रेष्ठ कर्म करते तो मन से क्या निकलता? वाह मेरा श्रेष्ठ कर्म! या वाह श्रेष्ठ कर्म सिखलाने वाले! या वाह श्रेष्ठ समय, श्रेष्ठ कर्म कराने वाले! तो सदा 'वाह-वाह!' के गीत गाने वाली आत्मायें हो ना? कभी गलती से भी 'हाय' तो नहीं निकलता? हाय, यह क्या हो गया - नहीं। कोई दु:ख का नजारा देख करके भी 'हाय' शब्द नहीं निकलना चाहिए। कल 'हाय-हाय' के गीत गाते थे और आज 'वाह-वाह' के गीत गाते हो। इतना अन्तर हो गया! यह किसकी शक्ति है? बाप की या ड्रामा की? (बाप की) बाप भी तो ड्रामा के कारण आया ना। तो ड्रामा भी शक्तिशाली हुआ। अगर ड्रामा में पार्ट नहीं होता तो बाप भी क्या करता। बाप भी शक्तिशाली है और ड्रामा भी शक्तिशाली है। तो दोनों के गीत गाते रहो - वाह ड्रामा वाह! जो स्वप्न में भी न था, वह साकार हो गया। घर बैठे सब मिल गया। घर बैठे इतना भाग्य मिल जाए - इसको कहते हैं डायमन्ड लाटरी।

(22.11.1987)

सभी अपने को इस विशाल ड्रामा के अन्दर हीरो पार्टधारी आत्मायें अनुभव करते हो? आप सबका हीरो पार्ट है। हीरो पार्टधारी क्यों बने? क्योंकि जो ऊंचे ते ऊंचा बाप जीरो है - उसके साथ पार्ट बजाने वाले हो। आप भी जीरो अर्थात् बिन्दी हो। लेकिन आप शरीरधारी बनते हो और बाप सदा जीरो है। तो जीरो के साथ पार्ट बजाने वाले हीरो एक्टर हैं - यह स्मृति रहे तो सदा ही यथार्थ पार्ट बजायेंगे, स्वत: ही अटेन्शन जायेगा। जैसे हद के ड्रामा के अन्दर हीरो पार्टधारी को कितना अटेन्शन रहता है! सबसे बड़े ते बड़ा हीरो पार्ट आप सबका है। सदा इस नशे और खुशी में रहो - वाह, मेरा हीरो पार्ट जो सारे विश्व की आत्मायें बार-बार हेयर-हेयर करती हैं! यह द्वापर से जो कीर्तन करते हैं यह आपके इस समय के हीरो पार्ट का ही यादगार है। कितना अच्छा यादगार बना

हुआ है! आप स्वयं हीरो बने हो तब आपके पीछे अब तक भी आपका गायन चलता रहता है। अन्तिम जन्म में भी अपना गायन सुन रहे हैं। गोपीवल्लभ का भी गायन है तो ग्वाल बाल का भी गायन है, गोपिकाओं का भी गायन है। बाप का शिव के रूप में गायन है तो बच्चों का शक्तियों के रूप में गायन है। तो सदा हीरो पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हैं - इसी स्मृति में खुशी में आगे बढ़ते चलो।

(06.12.1987)

छोटी को बड़ी बात बनाना या बड़ी को छोटी बात बनाना - यह अपनी स्थिति के ऊपर है। परेशान होना वा अपने अधिकारीपन की शान में रहना - अपने ऊपर है। क्या हो गया वा जो हुआ वह अच्छा हुआ - यह अपने ऊपर है। यह निश्चय बूरे को भी अच्छे में बदल सकता है क्योंकि हिसाब-किताब चुक्तु होने के कारण वा समय प्रति समय प्रैक्टिकल पेपर ड्रामा अनुसार होने के कारण कोई बातें अच्छे रूप में सामने आयेंगी और कई बार अच्छा रूप होते हुए भी बाहर का रूप नुकसान वाला होगा वा जिसको आप कहते हो या इस रूप से अच्छा नहीं हुआ। बातें आयेंगी अभी तक भी ऐसे रूप की बातें आती रही हैं और आती भी रहेंगी। लेकिन नुकसान के पर्दे के अन्दर फायदा छिपा हुआ होता है। बाहर का पर्दा नुकसान का दिखाई देता है, अगर थोड़ा-सा समय धैर्यवत अवस्था, सहनशील स्थिति से अन्तर्मुखी हो देखो तो बाहर के पर्दे के अन्दर जो छिपा हुआ है आपको वही दिखाई देगा, ऊपर का देखते भी नहीं देखेंगे। होलीहंस हो ना? जब वह हंस कंकड़ और रत्न को अलग कर सकता है तो होलीहंस अपने छिपे हुए फायदे को ले लेगा, नुकसान के बीच फायदे को ढूँढ लेगा। समझा? जल्दी घबरा जाते हैं ना। इससे क्या होता? जो अच्छा सोचा जाता वह भी घबराने के कारण बदल जाता है। तो घबराओ नहीं। कर्म को देख कर्म के बन्धन में नहीं फँसो। क्या हो गया, कैसे हो गया, ऐसा तो होना नहीं चाहिए, मेरे से ही क्यों होता, मेरा ही भाग्य शायद ऐसा है - यह रस्सियाँ बांधते जाते हो। यह संकल्प ही रस्सियां हैं। इसलिए कर्म के बन्धन

में आ जाते हो। व्यर्थ संकल्प ही कर्मबन्धन की सूक्ष्म रस्सियां हैं। कर्मातीत आत्मा कहेगी - जो होता है वह अच्छा है, मैं भी अच्छा, बाप भी अच्छा, ड्रामा भी अच्छा। यह बन्धन को काटने की कैंची का काम करती है। बन्धन कट गये तो 'कर्मातीत' हो गये ना। कल्याणकारी बाप के बच्चे होने के कारण संगमयुग का हर सेकण्ड कल्याणकारी है। हर सेकण्ड का आपका धन्धा ही कल्याण करना है, सेवा ही कल्याण करना है। ब्राह्मणों का आक्यूपेशन ही है विश्व-परिवर्तक, विश्व-कल्याणी। ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मा के लिए हर घड़ी निश्चित कल्याणकारी है।

(18.12.1987)

जो बाप की दिल पर सदा रहता है वह सदा ही जो बोलेगा, जो करेगा वह स्वतः ही बाप समान होगा। बाप समान बनना मुश्किल नहीं है ना? सिर्फ डॉट (बिन्दी) याद रखो तो मुश्किल नोट हो जायेगी। डॉट को भूलते हो तो नोट नहीं होता। कितना सहज है डॉट बनना वा डॉट लगाना। सारा ज्ञान इसी एक डॉट शब्द में समाया हुआ है। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और जो बीत गया उसे भी बिन्दी लगा दो, बस। छोटा बच्चा भी लिखने जब शुरु करता है तो पहले जब पेन्सिल कागज पर रखता है तो क्या बन जाता? डॉट बनेगा ना? तो यह भी बच्चों का खेल है। यह पूरा ही ज्ञान की पढ़ाई खेल-खेल में हैं। मुश्किल काम नहीं दिया है। इसलिए काम भी सहज है और हो भी सहज योगी।

(31.12.1987)

ड्रामा में जो भी दृश्य होते हैं वह सभी अपने-अपने समय प्रमाण बहुत ही रहस्ययुक्त होते हैं। जो भी अनन्य स्नेही आत्माएं जाती हैं, हर एक आत्मा के जाने में भी भिन्न-भिन्न राज़ होते हैं। अनन्य आत्मायें सदा जहाँ भी जाती हैं सेवा के निमित्त जाती हैं। जैसे संगमयुग की ब्राह्मण जीवन में सेवा के संगठन से सेवा सफल होती जा रही है, ऐसे नई दुनिया की स्थापना के राज़ में भी संगठन द्वारा कार्य वृद्धि

को प्राप्त कर सफलता को प्राप्त कर रहा है। तो इस स्थापना के पार्ट में जिन आत्माओं का जिस समय पार्ट है, वह ड्रामा अनुसार आत्माओं का जाना और उसी कार्य के निमित्त बनना-यह रहस्य कुछ समय से चल रहा है और चलता रहेगा। इसलिए, अनन्य आत्माओं का जाना ऐसा ही है जैसे सेवा का पार्ट बदलना वा सेवा के पार्ट अनुसार शरीर रूपी वस्त्र बदली करना। जैसा पार्ट वैसे वस्त्र चाहिएं, वैसे सम्बन्ध चाहिएं, वैसा स्थान चाहिए। तो यह तो सेवा के पार्ट से आना-जाना चलता ही रहता है। तो इस आत्मा का भी सेवा का पार्ट है और इस शरीर से भी हिसाब-किताब पूरा होने का टाइम आता है। इसलिए, ऐसे कमाई करके जाने वाली आत्माओं के लिए कोई आत्माओं को फिकर करने की तो बात ही नहीं। सेवा पर जाने की तो खुशी है। क्योंकि पुराने शरीर से तो इतनी सेवा कर नहीं पाते। तो नया पार्ट बजाएंगे। और जाना तो सबको है, सिर्फ समय की बात है। इसलिए, सदा जैसे स्वयं खुश रहे, वैसे सभी को चाहे लौकिक सम्बन्धी हैं, चाहे अलौकिक हैं-सभी को उनकी खुशी की विशेषता सदा याद रखनी है। जैसे वह स्वयं हल्के रहे, जाने में भी हल्के रहे, रहने में भी हल्के रहे। इसी रीति से सभी को ऐसे ही उनकी विशेषता से स्नेह रखना ही आत्मा से स्नेह है। तो बहुत अच्छा पार्ट बजा के गये और आगे भी अच्छे ते अच्छा पार्ट बजाएंगे।

इसीलिए, हर आत्मा की विशेषता याद रखो, हर आत्मा का विशेष पार्ट याद रखो। तो इससे स्वयं में, वातावरण में सदा ही शांति और शक्ति रहेगी। और वह ऐसी आत्मा तो है ही नहीं जो उसको विशेष बल देंगे तभी खुश रहेगी। वह तो खुश है ही। बाकी अपने स्नेह की रीति याद की यात्रा से स्नेह का सहयोग देना वह तो ब्राह्मण जीवन की रीति-रस्म है। बाकी ऐसी आत्मा नहीं है जो शक्ति देंगे तो शक्ति आएगी। शक्तिशाली है, बाप के साथ सम्बन्ध होने के कारण बाप के पास ही शक्तिस्वरूप बन अनुभव कर रही है। इसलिए जो ड्रामा बीता वह अच्छा कहेंगे। दुनिया वाले तो कहेंगे कि 'हाय, वह चला गया!' और आप क्या कहेंगे? सेवा पर गया। चला नहीं गया, सेवा पर गया। सेवा पर कोई जाता है तो क्या करते

हो? खुश होते हो या रोते हो? तो यह भी सेवा पर गये। इसलिए, यह सदा हर्षित आत्मा थी, सदा हर्षित रहेगी। अच्छा! दुनिया के हिसाब से भी अपना पार्ट तो सब पूरा किया। उस हिसाब से भी कोई बड़ी बात नहीं। ब्राह्मणों के लिए तो कोई छोटा भी जाय तो भी बड़ी बात नहीं। यहाँ कोई जवान चला जाए तो रोयेंगे? वहाँ कोई बुजुर्ग जाता है तो लड्डू बाँटते हैं और यहाँ कोई जवान भी जाएगा तो हलुवे का भोग खायेंगे। उसको भी खिलाएंगे, आप भी खाएंगे। क्या करते हो? जब संस्कार करके आते हो तो क्या करते हो? हलुवा ही खाते हो ना। क्योंकि ज्ञान का है ना। इसलिए नथिंगन्यु। अच्छा! सभी को बहुत-बहुत याद और सभी को बापदादा स्नेह की शक्ति सदा देते रहते हैं और दे रहे हैं।

(14.01.1988)

ब्रह्मा की विशेष इस बात की कमाल रही जो आप सबके आगे साकार रूप में ब्रह्मा बाप एग्जैम्पल था लेकिन ब्रह्मा के आगे कोई साकार एग्जैम्पल नहीं था। सिर्फ अटल निश्चय, बाप की श्रीमत का आधार रहा। आप लोगों के लिए तो बहुत सहज है! और जितना जो पीछे आये हैं, उनके लिए और सहज है! क्योंकि अनेक आत्माओं के परिवर्तन की श्रेष्ठ जीवन आपके आगे एग्जैम्पल है। यह करना है, बनना है — क्लीयर है। इसलिए, आप लोगों को 'क्यूं, क्या' का क्वेश्चन उठने का मार्जिन नहीं है। सब देख रहे हो। लेकिन ब्रह्मा के आगे क्वेश्चन उठने की मार्जिन थी। क्या करना है, आगे क्या होना है, राइट कर रहा हूँ वा रांग कर रहा हूँ - यह संकल्प उठना सम्भव था लेकिन सम्भव को असम्भव बनाया। एक बल एक भरोसा - इसी आधार से निश्चयबुद्धि नम्बरवन विजयी बन गये। इसी समर्पणता के कारण बुद्धि सदा हल्की रही, बुद्धि पर बोझ नहीं रहा। मन निश्चिन्त रहा। चेहरे पर सदा ही बेफिकर बादशाह के चिन्ह स्पष्ट देखे। 350 बच्चे और खाने के लिए आटा नहीं और टाइम पर बच्चों को खाना खिलाना है! तो सोचो, ऐसी हालत में कोई बेफिकर रह सकता है एक बजे बेल (घन्टी) बजना है और 11.00 बजे तक

आटा नहीं, कौन बेफिकर रह सकता? ऐसी हालत में भी हर्षित, अचल रहा। यह बाप की जिम्मेवारी है, मेरी नहीं है, मैं बाप का तो बच्चे भी बाप के हैं, मैं निमित्त हूँ - ऐसा निश्चय और निश्चिन्त कौन रह सकता? मन-बुद्धि से समर्पित आत्मा। अगर अपनी बुद्धि चलाते कि पता नहीं क्या होगा, सब भूखे तो नहीं रह जायेंगे, यह तो नहीं होगा, वह तो नहीं होगा - ऐसे व्यर्थ संकल्प वा संशय की मार्जिन होते हुए भी समर्थ संकल्प चले कि सदा बाप रक्षक है, कल्याणकारी है। यह विशेषता है समर्पणता की। तो जैसे ब्रह्मा बाप ने समर्पण हाने से पहला कदम 'हिम्मत' का उठाया, ऐसे फालो फादर करो। निश्चय की विजय अवश्य होती है। तो टाइम पर आटा भी आ गया, बेल भी बज गया और पास हो गये। इसको कहते हैं क्वेश्चन मार्क अर्थात् टेढ़ा रास्ता न ले सदा कल्याण की बिन्दी लगाओ। फुलस्टाप। इसी विधि से ही सहज भी होगा और सिद्धि भी प्राप्त होगी। तो यह भी ब्रह्मा की कमाल। आज पहला एक कदम सुनाया है। फिकर के बोझ से भी बेफिकर बन जाओ। इसको की कहा जाता है स्नेह का रिटर्न करना।

(22.01.1988)

अभी धीरे-धीरे सभी धर्म वाले अपनी बातों में मोल्ड हो रहे हैं। पहले कट्टर रहते थे, अभी मोल्ड हो रहे हैं। चाहे क्रिश्चियन हैं, चाहे मुस्लिम हैं लेकिन भारत की फिलासॅफी (दर्शन) को अन्दर से रिगार्ड देते हैं क्योंकि भारत की फिलासॅफी में सब प्रकार की रमणीकता है। ऐसे और धर्मों में नहीं है। कहानियों की रीति से, ड्रामा की रीति से जो भारत की फिलासॅफी को प्रसिद्ध करते हैं, वैसे और धर्मों में कहाँ भी नहीं है। इसलिए, अन्दर-ही-अन्दर जो एकदम कट्टर रहे हैं, वह अन्दर समझते हैं कि भारत की फिलासॅफी, उसमें भी आदि सनातन फिलासॅफी कम नहीं है। वह भी दिन आ जायेंगे जो सब कहेंगे कि अगर फिलासॅफी है तो आदि सनातन धर्म की है। हिन्दू शब्द से बिगड़ते हैं लेकिन आदि सनातन धर्म को रिगार्ड देंगे। गॉड एक है तो धर्म भी एक है, हम सबका धर्म भी एक है - यह धीरे-

धीरे आत्मा के धर्म की तरफ आकर्षित होते जायेंगे।

(03.02.1988)

आज डबल विदेशियों से पर्सलन रुह-रूहान कर रहे हैं। बहुत अच्छी सेवा की है और करते ही रहना है। सेवा बढ़ना - यह ड्रामा अनुसार बना हुआ ही है। कितना भी आप सोचो - अभी तो बहुत हो गया, लेकिन ड्रामा की भावी बनी हुई है। इसलिए सेवा के प्लैन्स निकलने ही हैं और आप सबको निमित्त बन करनी ही है। यह भावी कोई बदल नहीं सकते। बाप चाहे एक वर्ष सेवा से रेस्ट दे देवें, नहीं बदल सकता। सेवा से फ्री हो बैठ सकेंगे? जैसे याद ब्राह्मण जीवन की खुराक है, ऐसे सेवा भी जीवन की खुराक है। बिना खुराक के कभी कोई रह सकता है क्या? लेकिन बैलेन्स जरूरी है। इतना भी ज्यादा नहीं करो जो बुद्धि पर बोझ हो और इतना भी नहीं करो जो अलबेले हो जाओ। न बोझ हो, न अलबेलापन हो इसको कहते हैं -बैलेन्स।

(20.02.1988)

'सदा हर आत्मा को सुख देने वाले सुखदाता बाप के बच्चे हैं' - ऐसा अनुभव करते हो? सबको सुख देने की विशेषता है ना। यह भी ड्रामा अनुसार विशेषता मिली हुई है। यह विशेषता सभी की नहीं होती। जो सबको सुख देता है, उसे सबकी आशीर्वाद मिलती है। इसलिए स्वयं को भी सदा सुख में अनुभव करते हैं। इस विशेषता से वर्तमान भी अच्छा और भविष्य भी अच्छा बन जायेगा। कितना अच्छा पार्ट है जो सबका प्यार भी मिलता, सबकी आशीर्वाद भी मिलती? इसको कहते हैं 'एक देना हजार पाना'। तो सेवा से सुख देते हो, इसलिए सबका प्यार मिलता है। यही विशेषता सदा कायम रखना।

(27.03.1988)

इस वर्ष बापदादा 6 मास के सेवा की रिजल्ट देखना चाहते हैं। सेवा में जो भी प्लैन्स बनाये हैं, वह चारों ओर एक दो के सहयोगी बन खूब चक्र लगाओ। सभी छोटे-बड़ों उमंग-उत्साह में लाकर तीनों प्रकार की सेवा में आगे बढ़ाओ। इसलिए बापदादा ने इस वर्ष में पूरा रात को दिन बनाकर सेवा दे दी। अब तीनों प्रकार की सेवा का फल खाने का यह वर्ष है। आने का नहीं है, फल खाने का है। इस वर्ष आने की नूँध नहीं है। अव्यक्त बापदादा सकाश तो बाप की सदा ही साथ है। जो ड्रामा की नूँध है, वह बता दी। ड्रामा की मंजूरी को मंजूर करना ही पड़ता है।

अभी तो मिलने का कोटा पूरा करना है। सुनाया ना - रथ को भी एक्सट्रा सकाश से चला रहे हैं। नहीं तो साधारण बात नहीं है। देखना तो सब पड़ता है ना। फिर भी सब शक्तियाँ की एनर्जी जमा है, इसलिए रथ भी इतना सहयोग दे रहा है। शक्तियाँ जमा नहीं होती तो इतनी सेवा मुश्किल हो जाती। यह भी ड्रामा में हर आत्मा का पार्ट है। जो श्रेष्ठ कर्म की पूँजी जमा होती है तो समय पर वह काम में आती है। कितनी आत्माओं की दुआयें भी मिल जाती है, वह भी जमा होती है! कोई न कोई विशेष पुण्य की पूँजी जमा होने के कारण विशेष पार्ट है। निर्विघ्न रथ चले - यह भी ड्रामा का पार्ट है। 6 मास कोई कम नहीं रहा। अच्छा! सभी को राजी करेंगे।

(31.03.1988)

भाग्यवान आत्मा की निशानी है — जन के रहे हुए हिसाब-किताब को सहज चुक्तू करते रहना और 95 प्रतिशत आत्माओं द्वारा सदा स्नेह और सहयोग की अनुभूति करना। जन के भाग्यवान आत्मायें, जन के सम्पर्क-सम्बन्ध में आते 'सदा प्रसन्न रहेगी', प्रश्नचित्त नहीं लेकिन प्रसन्नचित्त — यह ऐसा क्यों करता वा क्यों कहता, यह बात ऐसे नहीं, ऐसे होनी चाहिए। चित्त के अन्दर यह प्रश्न उत्पन्न होने वाले को 'प्रश्नचित्त' कहा जाता है और प्रश्नचित्त कभी सदा प्रसन्न नहीं रह सकता। उसके चित्त में सदा 'क्यों की क्यू' (लाइन) लगी रहती है। इसलिए उस

क्यू को समाप्त करने में ही समय चला जाता है और यह क्यू फिर ऐसी होती है जो आप छोड़ने चाहो तो भी नहीं छोड़ सकते, समय देना ही पड़ेगा। क्योंकि इस क्यू का रचता आप हो, जब रचना रच ली तो पालना करनी पड़ेगी, पालना से बच नहीं सकते। चाहे कितने भी मज़बूर हो जाओ, लेकिन समय, एनर्जी देनी ही पड़ेगी। इसलिए इस व्यर्थ रचना को कण्ट्रोल करो। यह बर्थ कण्ट्रोल करो। समझा? हिम्मत है? जैसे लोग कह देते हैं ना कि यह तो ईश्वर की देन है, हमारी थोड़ी ही ग़लती है। ऐसे ही ब्राह्मण आत्मायें फिर कहती हैं — ड्रामा की नूंध है। लेकिन ड्रामा के मास्टर क्रियेटर, मास्टर नॉलेजफुल बन हर कर्म को श्रेष्ठ बनाते चलो।

(19.11.1989)

दिल है दिलाराम के लिए। एक ही काम मिला है - बाप को याद करो, बस। जिसके दिल में बाप है वह सदा ही 'वाह-वाह' के गीत गाता है और बाप नहीं तो 'हाय-हाय' के गीत गाता है। दुनिया वाले 'हाय-हाय' करते और आप 'वाह-वाह' करते। स्वयं भी 'वाह-वाह' हो गये, बाप भी 'वाह-वाह' और ड्रामा में जो कुछ चल रहा है वह भी 'वाह-वाह'। तो सदा 'वाह-वाह' के गीत गाने वाले हो या कभी 'हाय-हाय' भी कर देते हो! मन से भी, स्वप्न में भी कभी 'हाय' नहीं निकल सकती। 'हाय' क्या हो गया! यह कभी कहते हो? जो हुआ वह भी वाह, जो हो रहा है वह भी 'वाह', जो होना है वह भी 'वाह'। तीनों ही काल - 'वाह-वाह' है। एक काल भी खराब नहीं हो सकता। क्योंकि बाप भी अच्छे-ते-अच्छा, संगमयुग भी सबसे अच्छा और जो प्राप्ति है वह भी अच्छे-ते-अच्छी और भविष्य जो प्राप्त होना है वह भी अच्छे-ते-अच्छा। सब अच्छा होना है तो 'वाह-वाह' के गीत गाते रहो। जहाँ सब अच्छा लगेगा वहाँ इच्छा नहीं होगी। अगर इच्छा होती है तो अच्छा नहीं होता और अच्छा होता है तो इच्छा नहीं होती। क्योंकि अच्छा तब कहेंगे जब सब प्राप्त हो। जब अप्राप्ति होती है तब इच्छा होती है। तो कोई अप्राप्ति है? माताओं को गहने चाहिए? सोना चाहिए? पांडवों को लाख वा पद्म चाहिए?

करोड़ चाहिए? नहीं चाहिए? क्योंकि अब के करोड़पति बनना अर्थात् सदा के करोड़ गँवाना। अभी क्या करेंगे? यह झूठी माया, झूठी काया - झूठा क्या करेंगे! शरीर निर्वाह के लिए, दाल-रोटी के लिए तो बहुत मिल रहा है और मिलता रहेगा। बाकि क्या चाहिए? लॉटरी वगैरह चाहिए? कई बच्चे समझते हैं लॉटरी आयेगी तो यज्ञ में लगा देंगे। लेकिन ऐसा पैसा यज्ञ में नहीं लगता। होती अपनी इच्छा है लेकिन कहते हैं लॉटरी आयेगी तो सेवा करेंगे! अभी तो सच्ची कमाई जमा कर रहे हो, इसलिए - 'इच्छा मात्रम् अविद्या'। क्योंकि इच्छा में अगर गये तो इच्छा के पीछे भागना ऐसे ही है जैसे मृगतृष्णा। तो इच्छा समाप्त हो गई, अच्छे बन गये! जब रचयिता ही आपका हो गया तो रचना क्या करेंगे! बेहद के आगे हद क्या लगती है? कुछ भी नहीं है। हद में फँस गये तो बेहद गया।

(01.12.1989)

बापदादा ने देखा कई बच्चे अपने से भी अप्रसन्न रहते हैं। छोटी-सी बात के कारण अप्रसन्न रहते हैं। पहला-पहला पाठ 'मैं कौन' इसको जानते हुए भी भूल जाते हैं। जो बाप ने बनाया है, दिया है - उसको भूल जाते हैं। बाप ने हर एक बच्चे को फुल वर्से का अधिकारी बनाया है। किसको पूरा, किसको आधा वर्सा नहीं दिया है। किसको आधा वा चौथा मिला है क्या? आधा मिला है या आधा लिया है? बाप ने तो सभी को मास्टर सर्वशक्तिवान का वरदान वा वर्सा दिया। ऐसे नहीं कि कोई शक्तियाँ बच्चों को दीं और कोई नहीं दी। अपने लिए नहीं रखी। सर्वगुण सम्पन्न बनाया है, सर्व प्राप्ति स्वरूप बनाया है। लेकिन बाप द्वारा जो प्राप्तियां हुई हैं उसको स्वयं में समा नहीं सकते। जैसे स्थूल धन वा साधन प्राप्त होते भी खर्च करना न आये वा साधनों को यूज़ करना न आये तो प्राप्ति होते भी उससे वंचित रह जाते हैं। ऐसे सब प्राप्तियां वा खज़ाने सबके पास हैं लेकिन कार्य में लगाने की विधि नहीं आती है और समय पर यूज़ करना नहीं आता है। फिर कहते - मैं समझती थी कि यह करना चाहिए, यह नहीं करना चाहिए लेकिन उस समय भूल गया। अभी

समझती हूँ कि ऐसा नहीं होना चाहिए। उस समय एक सेकण्ड भी निकल गया तो सफलता की मंज़िल पर पहुँच नहीं सकते क्योंकि समय की गाड़ी निकल गई। चाहे एक सेकण्ड लेट किया चाहे एक घण्टा लेट किया - समय निकल तो गया ना। और जब समय की गाड़ी निकल जाती है तो फिर स्वयं से दिलशिकस्त हो जाते हैं और अप्रसन्नता के संस्कार इमर्ज होते हैं - मेरा भाग्य ही ऐसा है, मेरा ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है। पहले भी सुनाया था - स्व से अप्रसन्न रहने के मुख्य दो कारण होते हैं दिलशिकस्त होना और दूसरा कारण होता है दूसरों की विशेषता को वा भाग्य को वा पार्ट को देख ईर्ष्या उत्पन्न होना। हिम्मत कम होती है, ईर्ष्या ज़्यादा होती है। दिलशिकस्त भी कभी प्रसन्न नहीं रह सकता और ईर्ष्या वाला भी कभी प्रसन्न नहीं रह सकता। क्योंकि दोनों हिसाब से ऐसी आत्माओं की इच्छा कभी पूर्ण नहीं होती और इच्छाएं - 'अच्छा' बनने नहीं देती। इसलिए प्रसन्न नहीं रहते। प्रसन्न रहने के लिए सदा एक बात बुद्धि में रखो कि ड्रामा के नियम प्रमाण संगमयुग पर हर एक ब्राह्मण आत्मा को कोई-न-कोई विशेषता मिली हुई है। चाहे माला का लास्ट 16,000 वाला दाना हो - उसको भी कोई-न-कोई विशेषता मिली हुई है। उनसे भी आगे चलो - नौ लाख जो गाये हुए हैं उन्हों में भी कोई-न-कोई विशेषता मिली हुई है। अपनी विशेषता को पहले पहचानो। अभी तो नौ लाख तक पहुँचे ही नहीं हैं तो ब्राह्मण जन्म के भाग्य की विशेषता को पहचानो। उसको पहचानो और कार्य में लगाओ। सिर्फ दूसरे की विशेषता को देख करके दिलशिकस्त वा ईर्ष्या में नहीं आओ। लेकिन अपनी विशेषता को कार्य में लगाने से एक विशेषता फिर और विशेषताओं को लायेगी। एक के आगे बिंदी लगती जायेगी तो कितने हो जायेंगे? एक को एक बिंदी लगाओ तो 10 बन जाता और दूसरी बिंदी लगाओ तो 100 बन जायेगा। तीसरी लगाओ तो ....., यह हिसाब तो आता है ना। कार्य में लगाना अर्थात् बढ़ना। दूसरों को नहीं देखो। अपनी विशेषता को कार्य में लगाओ। जैसे देखो, बापदादा सदा 'भोली-भण्डारी' (भोली दादी) का मिसाल देता है। महारथियों का नाम कभी आयेगा लेकिन इनका नाम आता है। जो विशेषता थी वह कार्य में

लगाई। चाहे भण्डारा ही सम्भालती है लेकिन विशेषता को कार्य में लगाने से विशेष आत्माओं के मिसल गाई जाती है। सभी मधुबन का वर्णन करते तो दादियों की भी बातें सुनायेंगे तो 'भोली' की भी सुनायेंगे। भाषण तो नहीं करती लेकिन विशेषता को कार्य में लगाने से स्वयं भी विशेष बन गई। दूसरे भी विशेष नज़र से देखते। तो प्रसन्न रहने के लिए क्या करेंगे? - विशेषता को कार्य में लगाओ। तो वृद्धि हो जायेगी और जब सर्व आ गया तो सम्पन्न हो जायेंगे और प्रसन्नता का आधार है -'सम्पन्नता'। जो स्व से प्रसन्न रहते वह औरों से भी प्रसन्न रहेंगे, सेवा से भी प्रसन्न रहेंगे। जो भी सेवा मिलेगी उसमें औरों को प्रसन्न कर सेवा में नम्बर आगे ले लेंगे। सबसे बड़े-ते-बड़ी सेवा आपकी प्रसन्नमूर्त करेगी। तो सुना, क्या चार्ट देखा!

यह भी ड्रामा में लक्की कुमारियां हो गई जो बचपन से श्रेष्ठ संग मिला है। फिर भी हिम्मत रखी है तो हिम्मत वालों को फल भी मिलता है। मातायें भी कुमारियों को देखकर खुश होती हैं ना! मातायें सोचती हैं - हम भी इतने जीवन में आते तो अच्छा होता। लेकिन सबका एक जैसा पार्ट तो हो नहीं सकता। वैराइटी चाहिए। सर्व का पिता है तो कुमार भी चाहिए, कुमारियां भी चाहिए, अधरकुमार-अधरकुमारियां भी चाहिए - सर्व सैम्पल चाहिए। पांडव यह तो नहीं सोचते कि अगर कुमारी होते तो टीचर बन जाते, सेंटर मिल जाता। हर एक के पार्ट की अपनी-अपनी विशेषता है, हर एक की विशेषता अलग और महान है। एक-दो के पार्ट को देखकर खुश रहो। अपने पार्ट को कम नहीं समझो। सबका पार्ट अच्छे-ते-अच्छा है।

(05.12.1989)

सदा अपने को संतुष्ट आत्मा अनुभव करते हो? क्योंकि ज्ञानी-योगी आत्मा की निशानी 'संतुष्टता' है। जहाँ संतुष्टता है वहां सर्वगुण और सर्वशक्तियाँ हैं। कोई भी गुण वा शक्ति की अप्राप्ति होगी तो अप्राप्ति की निशानी 'असंतुष्टता' है और प्राप्तियों की निशानी 'संतुष्टता' है। संतुष्ट आत्मा ड्रामा के हर दृश्य को देख

'वाह-ड्रामा-वाह' कहेगी और जो सदा संतुष्ट नहीं वह कभी तो 'वाह-वाह' कहेगी, कभी कहेगी - हाय, यह क्या हो गया, होना नहीं चाहिए था लेकिन हो गया! तो संतुष्टता एक खान है। अखण्ड खान है, खत्म होने वाली नहीं। जितना देता जायेगा उतना ही बढ़ता जायेगा। तो आप सभी संतुष्ट आत्माएं हो ना। मरजीवा बने ही हो संतुष्ट रहने के लिए। 'इच्छा-मात्रम्-अविद्या' - यह गायन किसका है? देवताओं का या ब्राह्मणों का? देवताई जीवन में तो इच्छा वा न इच्छा का सवाल ही नहीं। यहाँ नालेज है - इच्छा क्या है और निरइच्छा क्या है। तो नालेज होते 'इच्छा-मात्रम्-अविद्या' होना इसी को ही ब्राह्मण-जीवन कहा जाता है। किस चीज़ की इच्छा है? जब रचयिता अपना हो गया तो रचना कहाँ जायेगी? रचयिता को अपना बना लिया है ना, अच्छी तरह से बनाया है, ढीला-ढीला तो नहीं? माताओं के लिए गायन है कि भगवान को भी रस्सी से बांध लिया। तो अच्छी तरह से बांधा है? यह है स्नेह की रस्सी। तो स्नेह की रस्सी मज़बूत है ना, यह कभी टूट नहीं सकती। यह तो निमित्त मात्र दृष्टांत हैं। जहाँ बाप है वहाँ सब-कुछ है, इसलिए तो गाते हो - बाप मिला सब-कुछ मिला। जो भी मिला है वह इतना मिला है जो सर्व इच्छाएं इकट्ठी करो उनसे भी पद्मगुणा ज़्यादा है, उसके आगे इच्छा क्या हुई? जैसे सूर्य के आगे दीपक। सर्व प्राप्तियों के आगे कितनी भी अच्छी इच्छा हो, वह दीपक के समान है। इसलिए सदा संतुष्ट। क्वेश्चन ही नहीं उठता है। इच्छा उठने की तो बात छोड़ो लेकिन इच्छा होती भी है - यह क्वेश्चन भी नहीं उठ सकता। इतनी समाप्ति हो गई है, नाम-निशान नहीं। क्योंकि थोड़ा भी अगर अंश रहा तो अंश से वंश पैदा होता है। अंश-मात्र भी नहीं हो। इसीलिए देखो, रावण को जलाते भी हैं, पहले मारते हैं फिर जलाते हैं। जलाकर के फिर समाप्ति कर देते हैं। अंश-मात्र भी नहीं रहे। तो कोई अंश तो नहीं है? मोटे रूप में तो रावण के शीश खत्म हुए लेकिन सूक्ष्म में तो नहीं है ना? सुनाया था कई ऐसे कहते हैं - इच्छा तो नहीं है लेकिन अच्छा लगता है। मोटे रूप में कहेंगे - इच्छा नहीं है और महीन रूप में अच्छा लगता है। तो अच्छा लगा माना बुद्धि का झुकाव होगा ना। अच्छा लगता है तो अच्छा - अच्छा

होते इच्छा हो जायेगी। अच्छा लगता है तो सब अच्छा लगता है। एक चीज अच्छी क्यों लगती है या कोई एक व्यक्ति अच्छा क्यों लगे या कोई एक काम अच्छा क्यों लगे? सब अच्छा है। कई ऐसे कहते हैं कि इस आत्मा का योग अच्छा लगता है, इस आत्मा का भाषण अच्छा लगता है। लेकिन यह भी कोई अच्छा लगे, कोई अच्छा नहीं लगे - यह भी ठीक नहीं। अगर अच्छा लगता भी है तो बाप का हैं ना। बाप अच्छा लगे ना। अगर कोई भी व्यक्ति अच्छा लगा तो इच्छाओं की क्यू लग जायेगी। बाप अच्छा लगता तो अंश-मात्र में भी माया आ नहीं सकती। अगर किसी में गुण अच्छे हैं तो वह भी बाप की देन हैं। इसलिए बाप ही अच्छा लगे। तो सदा संतुष्ट रहेंगे। बाल-बच्चों को अंदर नहीं बिठा देना। अगर बाल-बच्चे भी छिपे हुए हैं तो सदा संतुष्ट नहीं रह सकते। बेहद सेवा की बात अलग है, लेकिन अपने प्रति यह होना चाहिए, यह होना चाहिए - यह हद की बातें असंतुष्ट करती हैं। बेहद के लिए जितना चाहे उतना सोचो, अपने प्रति हद की बातें नहीं सोचो। तो सभी संतुष्टमणि हो? संतुष्टमणि अर्थात् सदा रूहानियत से चमकने वाली। अच्छा!

(13.12.1989)

सदा अपने को निश्चयबुद्धि विजयी आत्माएं अनुभव करते हो? निश्चय की निशानी है - 'विजय'। अगर अपने में वा बाप में निश्चय है तो निश्चय की विजय नहीं हो - यह हो ही नहीं सकता। अगर विजय आधी होती है, पूरी नहीं होती तो इसका कारण है निश्चय की कमी। 'निश्चय और विजय, यह एक-दो के पक्के साथी हैं'। जहाँ निश्चय होगा वहाँ विजय ज़रूरी है। क्योंकि निश्चय है कि बाप सर्वशक्तिवान है और सर्वशक्तिवान बाप के निश्चय से विजय कैसे नहीं होगी! और अपने में भी निश्चय है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, तो विजय कहाँ जायेगी? निश्चयबुद्धि की कभी हार हो नहीं सकती। निश्चयबुद्धि औरों को भी हार से छुड़ाने वाले हैं, स्वयं कैसे हार खा सकते हैं। तो विजयी बनने का फाउनडेशन है 'निश्चय', फाउन्डेशन अगर पक्का है तो बिल्डिंग हिल नहीं सकती, निश्चिंत रहते हैं। अगर फाउन्डेशन

कच्चा है तो थोड़ा-सा भी तूफान आयेगा, थोड़ी भी धरनी हिलेगी तो भय होगा कि यह बिल्डिग हमारी गिर नहीं जाए या क्रेक (दरार) नहीं हो जाए। लेकिन फाउन्डेशन पक्का होगा तो निर्भय होंगे। ऐसे ही निश्चय का फाउन्डेशन पक्का है तो कोई तूफ़ान हिला नहीं सकता। तो ऐसे विजयी हो या कभी-कभी थोड़ी दरार पड़ जाती है? या कभी थोड़ी खिड़कियां, दरवाजे के शीशे हिलते हैं? तूफ़ान लगता है या धरनी की हलचल होती है तो क्या होता है? हलचल तो नहीं होती है ना! हलचल में अचल रहना - इसको कहा जाता है - निश्चयबुद्धि विजयी रत्न। सिर्फ बाप में निश्चय नही, अपने आप में भी निश्चय और ड्रामा में भी निश्चय। वाह ड्रामा वाह! अगर ड्रामा में निश्चय होगा तो अकल्याण की बात भी कल्याण में बदल जायेगी। निश्चय में इतनी शक्ति है! दिखाई ऐसे देगा कि अकल्याण की बात है लेकिन उसमें भी कल्याण छिपा हुआ होगा। पहले हिलाने के लिए ऐसा रूप आयेगा भी लेकिन आपको हिला नहीं सकता। ऐसे पक्के हो या थोड़ा-थोड़ा हिलते हो? संकल्प वा स्वप्न में भी हिलते तो नहीं? क्योंकि संकल्प में भी अगर थोड़ी-सी कमजोरी आ गई तो संकल्प का प्रभाव वाणी पर पड़ता, वाणी का प्रभाव कर्म पर पड़ता। इसीलिए बाप ने पहले संकल्प को ही बदली किया है, संकल्प करते हो - 'मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ'। यह शुद्ध संकल्प है, इस संकल्प से जीवन बदल गई। अगर संकल्प कमज़ोर हैं तो जीवन भी कमज़ोर बन जायेगी।

तीनों निश्चय साथ-साथ रहें - बाप, आप और ड्रामा। कभी संकल्प में भी कोई हिला न सके। 'अंगद' बन जाओ। नाखून को भी हिला न सके। टांग तो छोड़ो लेकिन नाखून को भी माया हिला नहीं सकती। ऐसे अंगद बन जाओ।

(21.12.1989)

यह ईश्वरीय संसार कितना प्यारा है! चाहे सेवा अर्थ संसारी आत्माओं के साथ रहते हो लेकिन मन सदा अलौकिक संसार में रहता है। इसको ही कहा जाता है 'स्मृति स्वरूप'। कोई भी परिस्थिति आ जाए लेकिन स्मृति स्वरूप आत्मा समर्थ

होने कारण परिस्थिति को क्या समझती? यह तो खेल है। कभी घबरायेगी नहीं। भल कितनी भी बड़ी परिस्थिति हो लेकिन समर्थ आत्मा के लिए मंजिल पर पहुंचने के लिए यह सब रास्ते के साइड सीन्स हैं अर्थात् रास्ते के नजारे हैं। साइड सीन्स तो अच्छी लगती हैं ना! खर्चा करके भी साइड सीन देखने जाते हैं। यहाँ भी आजकल आबू-दर्शन करने जाते हो ना! अगर रास्ते में साइड सीन्स न हों तो वह रास्ता अच्छा लगेगा? बोर हो जायेंगे। ऐसे स्मृति स्वरूप समर्थ-स्वरूप आत्मा के लिए परिस्थिति कहो, पेपर कहो, विघ्न कहो, प्रॉब्लम्स कहो, सब साइड सीन्स हैं। स्मृति में है कि यह मंजिल के साइड सीन्स अनगिनत बार पार की हैं। नथिंगन्यु इसका भी फाउण्डेशन क्या हुआ? 'स्मृति'। अगर यह स्मृति भूल जाती अर्थात् फाउण्डेशन हिला तो जीवन की पूरी बिल्डिंग हिलने लगती है। आप तो अचल हैं ना!

(02.01.1990)

चौथी बात - सम्बंध में स्वच्छता। इसका सार रुप में विशेष यह चेक करो कि संतुष्टता रुपी स्वच्छता कितने परसेन्ट में हैं? सारे दिन में भिन्न-भिन्न वैरायटी आत्माओं से सम्बंध होता है। तीन प्रकार के सम्बन्ध में आते हो। एक - ब्राह्मण परिवार के, दूसरा - आये हुये जिज्ञासू आत्माओं के, तीसरा - लौकिक परिवार के। तीनों ही सम्बंध में सारे दिन में स्वयं की संतुष्टता और सम्बनध में आने वाली दूसरी आत्माओं की संतुष्टता की परसेन्टेज कितनी रही? संतुष्टता की निशानी स्वयं की मन से हल्के और खुश रहेंगे और दूसरे भी खुश होंगे। असंतुष्टता की निशानी - स्वयं भी मन से भारी होंगे। अगर सच्चे पुरुषार्थी हैं तो बार-बार न चाहते भी ये संकल्प आता रहेगा कि ऐसे नहीं बोलते, ऐसे नहीं करते तो अच्छा। यह बोलते थे, यह करते थे - यह आता रहेगा। अलबेले पुरुषार्थी को यह भी नहीं आयेगा। तो यह बोझ खुश रहने नहीं देगा, हल्का रहने नहीं देगा। सम्बन्ध की स्वच्छता अर्थात् संतुष्टता। यही सम्बन्ध की सच्चाई और सफाई है। इसलिए आप कहते हो - 'सच तो बिठो नच'। अर्थात् सच्चा सदा खुशी में नाचता रहेगा। तो सुना, होलीहंस की

परिभाषा? अगर सत्यता की स्वच्छता नहीं है तो हंस हो लेकिन होलीहंस नहीं हो। तो चेक करो - सम्पन्न और संपूर्ण का जो गायन है, वह कहाँ तक बने हैं? अगर ड्रामा अनुसार आज भी इस शरीर का हिसाब समाप्त हो जाए तो कितनी परसेन्टेज में पास होंगे? वा ड्रामा को कहेंगे - थोड़ा समय ठहरो! यह तो सोचकर नहीं बैठे हो कि छोटे-छोटे तो जाने वाले हैं ही नहीं? एवररेडी का अर्थ क्या है? समय का इंतजार तो नहीं करते कि अभी 10-11 वर्ष तो हैं? बहुत करके 2000 का हिसाब सोचते हैं! लेकिन सृष्टि के विनाश की बात अलग है, अपने को एवररेडी रखना अलग बात है। इसलिए यह उससे नहीं मिलाना। भिन्न-भिन्न आत्माओं का भिन्न-भिन्न पार्ट है। इसलिए यह नहीं सोचो कि मेरा एडवांस पार्टी में तो नहीं है या मेरा तो विनाश के बाद भी पार्ट है! कोई आत्माओं का है लेकिन मैं एवररेडी रहूँ। नहीं तो अलबेलेपन का अंश प्रकट हो जायेगा। एवररेडी रहो, फिर चाहे 20 वर्ष जिंदा रहो कोई हर्जा नहीं। लेकिन ऐसे आधार पर नहीं रहना। इसको कहते हैं - 'होलीहंस'। ज्ञान-सागर के कण्ठे पर आये हो ना। तो आज होलीहंस की स्वच्छता सुनाई फिर विशेषता सुनायेंगे।

(06.01.1990)

बॉम्बे सायन सेन्टर की टीचर्स तथा भाईयों को देख बापदादा बोले- (ब्रिजेन्द्रा दादी ने शरीर छोड़ा तब)

यह सब कार्य समाप्त कर पहूँचे हैं। पास होके आये हो कि पास -विद-ऑनर होके आये हो? अच्छा पार्ट बजाया। यह भी स्नेह का रिटर्न आत्मा को प्राप्त होता ही है। जिसको स्नेह मिला है वह समय पर स्नेह का रिटर्न जरुर करता है। कई आत्माओं की इस समय के पार्ट में भी आवश्यक्ता है और नई दुनिया के आदि में भी आवश्यक्ता है। तो क्या करेंगे? ड्रामा तो चलना ही है ना! इसलिए जो भी गये हैं वा जा रहें हैं- विशेष आत्माओं की आदि में भी आवश्यक्ता है। यह नया चैप्टर (पाठ) शुरु करेंगे ना। योगबल की पैदाइश का नया चैप्टर शुरु करने के

लिए कौनसी आत्मायें चाहिए? योगी आत्माएं चाहिए ना! निमित्त बहाना कोई भी बन जाता है, लेकिन चुक्तू भी होना है और सेवा भी होनी है। अभी यह नहीं सोचना कि कृष्ण को जन्म कौन देगा, राधे को कौन जन्म देगा। इस विस्तार में नहीं जाना। यह कोई टॉपिक नहीं है। इसलिए कहा कि कर्मों की लीला 'वाह-वाह' है बाकी जन्म कोई भी दे- इनमें नहीं जाना। आपको जाना है यह सोचना है? अच्छा!

(10.01.1990)

सदैव एक बापदादा की श्रेष्ठ मत याद रखो कि जिन्हों को बाप ने निमित्त बनाया है वह निमित्त आत्माएं जो डायरेक्शन देती है, उसको महत्व देना चाहिए। उस समय यह नहीं सोचों की निमित्त बने हुए शायद कोई के कहने से कह रहे हैं। इसमें धोखा खा लेते हो। निमित्त बने हुए श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा जो शिक्षा वा डॉयरेक्शन मिलते हैं। उसको उस समय महत्व देने से अगर कोई बुरी बात भी होगी तो आप जिम्मेवार नहीं। जैसे ब्रह्मा बाप के लिए सदा कहते हैं कि अगर ब्रह्मा द्वारा कोई गलती भी होगी तो वह गलती भी बदल के आपके प्रति सही हो जायेगी। तो ऐसे निमित्त बनी हुई आत्माओं प्रति कभी भी यह व्यर्थ संकल्प नहीं उठना चाहिए। मानो कोई ऐसा फैसला भी दे देते हैं जो आपको ठीक नहीं लगता है। लेकिन आप उसमें जिम्मेवार नहीं हैं। आपका पाप नहीं बनेगा। आपका काम ठीक हो जायेगा। क्योंकि बाप बैठा है। बाप, पाप को बदल लेगा। यह गुह्य रहस्य है। गुप्त मशीनरी है। इसलिए निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं के श्रेष्ठ डॉयरेक्शन को महत्व से कार्य में लगाओ। इसमें आपका फायदा है, नुकसान भी बदलकर फायदे में हो जायेगा। यह बाप की गारंटी है। समझा? इसलिए सुनाया कि कर्मों की लीला बड़ी विचित्र है। बाप जिम्मेवार है। जिनको निमित्त बनाया है उसका भी जिम्मेवार बाप है। आपके पाप को बदलने का भी जिम्मेवार है। ऐसे ही निमित्त नहीं बनाया है, सोच-समझ के ड्रामा के ला-मुजीब निमित्त बनाया गया है। समझा!

इनमें फायदा है, बोझा हल्का हो गया। कोई भी बात आयेगी तो कहेंगे—

निमत्त बने हुए बड़े जाने। हल्के हो गये ना। लेकिन सिर्फ कहने मात्र नहीं, समझने-मात्र, स्नहे-मात्र, स्वमान-मात्र हो। इन गुह्य बातों को बाप जाने और जो समझादार बच्चे हैं वह जाने। निमित्त बनी हुई आत्माओं के लिए कुछ भी कहना अर्थात् बाप के लिए कहना। निमित्त बाप ने बनाया है ना। बाप से ज्यादा आपको परखने की शक्ति है?

(10.01.1990)

आज मात-पिता बच्चों को श्रेष्ठ भाग्य के गीत गा रहे थे। क्योंकि आज का विशेष सूर्य, चन्द्रमा का बैकबोन होकर सितारों को विश्व के आकाश में प्रत्यक्ष करने का दिन है। जैसे यज्ञ की स्थापना के आदि में ब्रह्मा बाप ने बच्चों के आगे अपना सब कुछ समर्पित किया अर्थात् 'विल' की। ऐसे आज के दिवस पर ब्रह्मा बाप ने बच्चों को सर्वशक्तियों की विल की अर्थात् विल पावर्स दी। आज के दिवस नयनों द्वारा और संकल्प द्वारा बाप ने बच्चों को विशेष 'सन शोज फादर' की विशेष सौगात दी। आज के दिवस बाप ने प्रत्यक्ष साकार रुप में करावनहार का पार्ट बजाने का प्रत्यक्ष रुप दिखाया। ब्रह्मा बाप भी आज के दिन प्रत्यक्ष रुप में करावनहार बाप के साथी बने, करनहार निमित्त बच्चों को बनाया और करावनहार मात-पिता साथी बने। आज के दिन ब्रह्मा बाप ने अपनी सेवा की रीति और गति परिवर्तन की। आज के दिवस विशेष ब्रह्मा बाप देह से सूक्ष्म फरिश्ता स्वरुप धारण कर ऊंचे वतन, सूक्ष्मवतन निवासी बने, किसलिए? बच्चों को तीव्र गति से ऊंचा उठाने के लिए। बच्चों को फरिश्ते रूप से उड़ाने के लिए इतना श्रेष्ठ महत्व का यह दिवस है! सिर्फ स्नेह का दिवस नहीं लेकिन विश्व की आत्माओं का, ब्राह्मण आत्माओं का और सेवा की गति का परिवर्तन ड्रामा में नूंधा हुआ था, जो बच्चे भी देख रहे हैं। विश्व की आत्माओं के प्रति बुद्धिवानों की बुद्धि बने। बुद्धि का परिवर्तन हुआ, सम्पर्क में आये सहयोगी बने। ब्राह्मण आत्माओं में श्रेष्ठ संकल्प द्वारा तीव्रगति से वृद्धि हुई। सेवा के प्रति 'सन शोज फादर' की गिफ्ट से विहंग-मार्ग की

सेवा आरम्भ की। यह गिफ्ट सेवा की लिफ्ट बन गई। परिवर्तन हुआ ना! अब आगे चल सेवा में और परिवर्तन देखेंगे।

अभी तक आप ब्राह्मण-आत्मायें अपने तन-मन की मेहनत से प्रोग्राम्स बनाते हो, स्टेज तैयार करते हो, निमंत्रण कार्ड छपाते हो, कोई वी.आई.पी. को बुलाते हो, रेडियो, टी.वी. वालों को सहायेगी बनाते हो, धन भी लगाते हो। लेकिन आगे चल आप स्वयं वी.आई.पी. हो जायेंगे। आपसे बड़ा कोई दिखाई नहीं देगा। बनी-बनाई स्टेज पर दूसरे लोग आपको निमंत्रण देंगे। अपने तन-मन-धन की सेवाओं की स्वयं ऑफर करेंगे। आपकी मिन्नते करेंगे। मेहनत आप नहीं करेंगे, वह रिक्वेस्ट करेंगे कि आप हमारे पास आओ। तब ही प्रत्यक्षता की आवाज बुलंद होगी और सबकी अटेन्शन आप बच्चों द्वारा बाप तरफ जायेगी। यह ज्यादा समय नहीं चलेगा। सबकी नजर बाप तरफ जाना अर्थात् पत्यक्षता होना और जय-जयकार के चारों ओर घंटे बजेंगे। यह ड्रामा का सूक्ष्म राज़ बना हुआ है। प्रत्यक्षता के बाद अनेक आत्माएं पश्चाताप करेंगी। और बच्चों का पश्चाताप बाप देख नहीं सकता। इसलिए परिवर्तन हो जायेगा। अभी आप ब्राह्मण-आत्माओं की ऊंची स्टेज सदाकाल की बन रही है। आपकी ऊंची स्टेज सेवा की स्टेज के निमंत्रण दिलायेगी। और बेहद विश्व की स्टेज पर जय-जयकार का पार्ट बजायेंगे। सुना, सेवा का परिवर्तन।

बाप के अव्यक्त बनने के ड्रामा में गुप्त राज़ भरे हुए थे। कई बच्चे सोचते हैं - कम से कम ब्रह्मा बाप छुट्टी तो लेके जाते। तो क्या आप छुट्टी देते? नहीं देते ना। तो बलवान कौन हुआ? अगर छुट्टी लेते तो कर्मातीत नहीं बन सकते। क्योंकि ब्लड- कनेक्शन से पद्मगुणा ज्यादा आत्मिक कनेक्शन होता है। ब्रह्मा को तो कर्मातीत होना था। या स्नेह के बंधन में जाना था? ब्रह्मा बाप भी कहते हैं - ड्रामा ने कर्मातीत बनाने के बंधन में बांधा। और बांधा कितने टाइम में! समय होता तो और पार्ट हो जाता। इसलिए घड़ी का खेल हो गया। बच्चों को भी अन्जान बना दिया, बाप को भी अन्जान बना दिया। इनको कहते हैं - वाह, ड्रामा वाह! ऐसा है

ना। जब 'वाह ड्रामा वाह' है तो कोई संकल्प उठ नहीं सकता। फुलस्टाप लगा दिया ना! नहीं तो कम से कम बच्चे पूछ तो सकते थे कि क्या हो रहा है। लेकिन बाप भी चुप, बच्चे भी चुप रहे। इसको कहते हैं ड्रामा का फुलस्टाप। उस घड़ी तो फुलस्टाप ही लगा ना। पीछे भल क्वेश्चन कितने भी उठे लेकिन उस घड़ी नहीं। तो 'वाह ड्रामा वाह' कहेंगे ना! बाबा-बाबा बुलाया भी पीछे, पहले नहीं बुलाया। यह ड्रामा की विचित्र नूँध होनी ही थी और होनी ही है। परिवर्तनशील ड्रामा पार्ट को भी परिवर्तन कर देता है।

(18.01.1990)

आज त्रिमूर्ति शिव बाप हर एक बच्चे के मस्तक पर तीन तिलक देख रहे हैं। सभी बच्चे दिल के उमंग-उत्साह से त्रिमूर्ति शिवजयन्ति मनाने आये हैं। तो त्रिमूर्ति शिव बाप अर्थात् ज्योतिर्बिन्दु बाप बच्चों के मस्तक पर तीन बिन्दियों का तिलक देख हर्षित हो रहे हैं। यह तिलक सारे ज्ञान का सार है। इन तीन बिंदियों में सारा ज्ञान-सागर का सार भरा हुआ है। सारे ज्ञान का सार तीन बातों में हैं - परमात्मा, आत्मा और ड्रामा अर्थात् रचना। आज का यादगार दिवस भी शिव अर्थात बिन्दु का है। बाप भी बिन्दु, आप भी बिन्दु और रचना अर्थात् ड्रामा भी बिन्दु। तो आप सभी बिन्दु, बिन्दु की जयन्ति मना रहे हो। बिन्दु बन मना रहे हो ना! सारा प्रकृति का खेल भी दो बातों का है - एक बिन्दु का और दूसरा लाइट, ज्योति का। बाप को सिर्फ बिन्दु नहीं लेकिन ज्योर्तिबिन्दु कहते हैं। रचता भी ज्योर्तिबिन्दु है और आप भी हीरो पार्टधारी ज्योर्तिबिन्दु हो, न कि सिर्फ बिन्दु हो। और सारा खेल भी देखो - जो भी कार्य करते हैं, उसका आधार लाइट है। आज संसार में अगर लाइट फेल हो जाए तो एक सेकण्ड में संसार, संसार नहीं लगेगा। जो भी सुख के साधन है उन सबका आधार क्या है? लाइट। रचयिता स्वयं भी लाइट है। आत्मा और परमात्मा की लाइट अविनाशी है। प्रकृति का आधार भी लाइट हैं लेकिन

प्रकृति की लाइट अविनाशी नहीं है। तो सारा खेल बिन्दु और लाइट पर है।

(22.02.1990)

सदा अपने दिल में बाप के गुणों के गीत गाते रहते हो ना! सभी को यह गीत गाना आता है? ब्राह्मण बने और यह गीत ऑटोमैटिक बजता रहता है, यह कितना मीठा गीत है! खुशी का गीत है, दु:ख या वियोग का गीत नहीं है। योगयुक्त होने का यह गीत है। योगी आत्मा ही यह गीत गा सकती है, दु:खी आत्मा नहीं गा सकती। गीत है ही क्या - 'वाह बाबा वाह और वाह मैं श्रेष्ठ आत्मा वाह, वाह ड्रामा वाह'। तो 'वाह-वाह' का गीत है, 'हाय-हाय' का नहीं। पहले थे 'हाय-हाय' के गीत, अभी हैं 'वाह-वाह' के गीत। कुछ भी हो जाए लेकिन आपके दिल से 'वाह' निकलेगा 'हाय' नहीं। दुनिया जिस बात को 'हाय-हाय' कहती, आपके लिए वही बात 'वाह-वाह' है। तो सभी यह गीत गाते हो ना! यह दिल के गीत हैं, मुख के नहीं। कोई भी बात होती है तो यह ज्ञान है कि नथिंग न्यु, हर सीन अनेक बार रिपीट की है। नथिंग न्यु की स्मृति से कभी भी हलचल में नहीं आ सकते, सदा ही अचल अटल रहेंगे। कोई नई बात होती है तो आश्चर्य से निकलता है - यह क्या, ऐसा होता है क्या? लेकिन नथिंग न्यू है तो 'क्या' और 'क्यों' का क्वेश्चन नहीं, फुलस्टॉप आ जाता है। तो फुलस्टॉप वाले हो या क्वेश्चन वाले हो या क्वेश्चन मार्क वाले हो? सबसे सहज बिंदी होती है। बच्चों को भी हाथ में पेंसिल देंगे तो पहले बिंदी लगायेगा। तो फुलस्टॉप बिंदी है। क्वेश्चन मार्क मुश्किल होता है। जो फुलस्टाप देना जानते हैं वह फुल पास होते हैं। तो फुल पास होने वाले हो या धक्के से पास होने वाले हो? पास होना है तो फुल। धक्के से पास होने वाले को पास नहीं कहेंगे। अच्छा! कहाँ भी रहते आप सबका मन कहाँ रहता है? सेवा के निमित्त भल अलग-अलग स्थानों पर रहते हो लेकिन मन तो मधुबन में रहता है ना। मधुबन अर्थात मधुरता वाले हो ना। या कभी बच्चों के ऊपर क्रोध करते हो? पांडव कभी दफ्तर में क्रोध करते हो? काम-काज में क्रोध करते हो या

मधुर रहते हो? माताएं कभी किसी के ऊपर क्रोध तो नहीं करती - चाहे बच्चों पर चाहे आपस में बड़ों से क्रोध तो नहीं करते? माताओं को क्रोध आता है?(बच्चों पर कभी-कभी आता है) तो उनको बच्चे नहीं समझो। बच्चे माना ही बेसमझ। बड़े तो नहीं हैं ना, बच्चे हैं। बच्चे कहने से कभी नहीं बदलते। कहने से सिर्फ दबते हैं, बदलते नहीं। आप आज उनको कहेंगे और कल वे दूसरों को कहेंगे। तो सिखाते हो। परिवर्तन नहीं लाते हो लेकिन सिखाते हो। कहां तक दबेंगे! एक घंटा दबकर बैठेंगे फिर वैसे-के-वैसे। इसलिए कैसा भी बच्चा हो, अन्जान हो, चाहे बड़ा भी है लेकिन ज्ञान से उस समय अन्जान है ना! अन्जान के ऊपर कभी क्रोध नहीं किया जाता, रहम किया जाता है। तो फॉलो फादर करो। बापदादा कभी गुस्सा करते हैं क्या? आप लोग गल्तियाँ करते हो, बार-बार भूल करते हो, विस्मृति में तो आते हो ना! तो बाप गुस्सा करता है क्या? तो फिर आप क्यों करते हो? बाप के आगे तो आप सब बड़े-बड़े भी बच्चे हैं ना! जैसे बाप रहम का सागर है ऐसे आप मास्टर हो। सदा शुभभावना, शुभकामना से परिवर्तन करो। बाप ने परिवर्तन किया? - शुभभावना रखी कि यह श्रेष्ठ आत्माएं हैं, ब्राह्मण-आत्माएं हैं। तो परिवर्तन हो गया ना! तो फॉलो फादर करो। पहले अपने को देखो मैं कितनी भूल करती हूँ फिर बाप क्या करता है उस जगह पर ठहर कर देखो, तो कभी क्रोध नहीं आयेगा। समझा! शुभ भावना, शुभकामना की दृष्टि से स्वयं भी संतुष्ट रहंगे। अनुभव है ना! संतुष्ट रहना ही संतुष्ट करना है। कुछ भी हो जाए, कितना भी कोई हिलाने की कोशिश करे लेकिन संतुष्ट रहना है और करना है - यह सदा स्मृति रहे। अच्छा तो यही लगता है ना! संतुष्ट रहने वाला सदा मनोरंजन में रहेगा। तो यह वरदान याद रखना। ब्राह्मण अर्थात् संतुष्ट। असंतुष्टता ब्राह्मण-जीवन नहीं है। अच्छा!

(01.03.1990)

बापदादा आज मुस्कारा रहे थे। बच्चों में तीन शब्दों के कारण कंट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर कम हो जाती है। वह तीन शब्द हैं - 1. व्हाई (क्यों),

2.व्हॉट(क्या), 3.वान्ट (चाहिए)। यह तीन शब्द खत्म कर एक शब्द बोलो। व्हाई आये तो भी एक शब्द बोलो - 'वाह', व्हाट शब्द आये तो भी बोलो 'वाह'। 'वाह' शब्द तो आता है ना। 'वाह बाबा, वाह मैं और वाह ड्रामा'। सिर्फ 'वाह' बोले तो यह तीन शब्द खत्म हो जायेंगे। उस दिन भी सुनाया ना कि बापदादा ने कौन-सा खेल देखा! आप लोगों का एक चित्र पहले का बनाया हुआ है जिसमें दिखाया है - योगी योग लगा रहा है, बुद्धि को एकाग्रचित कर रहा है, बैलेंस रख रहा है, बैलेंस की तराजू दिखाई है, जितना बुद्धि का बैलेंस करता उतना कोई बन्दर आकर बैठ जाता है। इन तीनों बातों के बन्दर आ जाते हैं तो बैलेंस क्या होगा! हलचल हो जायेगी, बैलेंस नहीं रहेगा। तो यह तीन शब्द बैलेंस को समाप्त कर देते हैं, बुद्धि को नचाने लगते हैं। बन्दर आराम से बैठ सकता है क्या? और कुछ नहीं हो तो पूंछ को ही हिलाता रहेगा। तो इसमें भी बैलेंस न होने के कारण बाप द्वारा हर कदम में जो दुआयें मिलती हैं वा आत्मिक-स्नेह कारण परिवार द्वारा जो दुआयें मिलती हैं उससे वंचित हो जाते हैं। जैसे बाप से सम्बंध रखना आवश्यक है, ऐसे ईश्वरीय परिवार से सम्बंध रखना भी अति आवश्यक है। सारे कल्प में नम्बरवन आत्मा ब्रह्मा बाप और ईश्वरीय परिवार के सम्बंध-सम्पर्क में आना है। ऐसे नहीं समझना - अच्छा, बाप तो हमारा है, हम बाप के है। यह भी पास विद ऑनर की निशानी नहीं है। क्योंकि आप सन्यासी आत्माएं नहीं हो। ऋषि-मुनि की आत्माएं नहीं हो। किनारा करने वाले नहीं हो लेकिन विश्व का सहारा बनने वाली आत्माएं हो। विश्व-किनारा नहीं, विश्व-कल्याणकारी हो। ब्राह्मण-आत्माओं की तो बात छोड़ों लेकिन प्रकृति को भी परिवर्तन करने के सहारे आप हो! परिवार के अविनाशी प्यार के धागे के बीच से निकल नहीं सकते हो। विजयी रत्न प्यार के धागे के बीच से निकल नहीं सकते। इसलिए कभी भी किसी भी बात में, किसी स्थान में, किसी सेवा से, किसी साथी से किनारा करके अपनी अवस्था को अच्छा बनाके दिखाऊं - यह संकल्प नहीं करना। कहते हैं ना - हम इसके साथ नहीं चल सकते, उसके साथ चलेंगे, इस स्थान पर उन्नति नहीं होगी, दूसरे स्थान पर होगी, इस सेवा में

विघ्न है, दूसरी सेवा में अच्छा होगा। यह सब किनारा करने की बातें हैं। अगर एक बार यह आदत आपने में डाली तो यह आदत आपको कहाँ भी टिकने नहीं देगी, बुद्धि को एकाग्र रहने नहीं देगी। क्योंकि बुद्धि को बदलने की आदत पड़ गई। यह भी कमजोरी गिनी जायेगी, उन्नति नहीं गिनी जायेगी। सदैव अपने में शुभ उम्मीदें रखो, नाउम्मीद नहीं बनो। जैसे बाप ने हर बच्चे में शुभ उम्मीदें रखी। कैसे भी हैं, बाप लास्ट नंबर से भी कभी दिलशिकस्त नहीं बने। सदा ही उम्मीद रखी। तो आप भी न अपने से, न दूसरे से, न सेवा में नाउम्मीद, दिलशिकस्त नहीं बनो। दिलशाह बनो। शाह माना फ्राकदिल, सदा बड़ी दिल। कोई भी कमजोर संस्कार नहीं धारण कर लो। माया भिन्न-भिन्न रुप से कमजोर बनाने का प्रयास करती है। लेकिन आप माया के भी नॉलेजफुल हो ना कि अधूरी नॉलेज है? यह भी याद रखो कि माया नये-नये रुप में आती है, पुराने रुप में नहीं। क्योंकि वह भी जानती है कि यह पहचान लेंगे। बात वही होती है लेकिन रुप नया धारण कर लेती है। समझा!

(07.03.1990)

अचल-अडोल आत्माएं हैं - ऐसा अनुभव करते हो? एक तरफ है हलचल और दूसरी तरफ आप ब्राह्मण आत्माएं सदा अचल हैं। जितनी वहाँ हलचल है उतनी आपके अन्दर अचल-अडोल स्थिति का अनुभव बढ़ता जा रहा है। कुछ भी हो जाये, सबसे सहज युक्ति है - 'नथिंग न्यू'। कोई नई बात नहीं है। कभी आश्चर्य लगता है कि यह क्या हो रहा है, क्या होगा? आश्चर्य तब हो जब नई बात हो। कोई भी बात सोची नहीं हो, सुनी नहीं हो, समझी नहीं हो और अचानक होती है तो आश्चर्य लगता है। तो आश्चर्य नहीं लेकिन फुलस्टॉप हो। दुनिया मूँझने वाली और आप मौज में रहने वाले हो। दुनिया वाले छोटी-छोटी बात में मूँझेंगे - क्या करें, कैसे करें...। और आप सदा मौज में हो, मूँझना खत्म हो गया। ब्राह्मण अर्थात् मौज, क्षत्रिय अर्थात् मूँझना। कभी मौज, कभी मूँझ। आप सभी अपना नाम ही कहते हो - ब्रह्माकुमार और कुमारियां। क्षत्रिय कुमार और क्षत्रिय कुमारी तो

नहीं हो ना? सदा अपने भाग्य की खुशी में रहने वाले हो। दिल में सदा, स्वत: एक गीत बजता रहता - 'वाह बाबा! और वाह मेरा भाग्य!' यह गीत बजता रहता है, इसको बजाने की आवश्यकता नहीं है। यह अनादि बजता ही रहता है। हाय-हाय खत्म हो गई, अभी है 'वाह!-वाह!' हाय-हाय करने वाले तो बहुत मैजारिटी हैं और वाह वाह करने वाले बहुत थोड़े हो। तो नये वर्ष में क्या याद रखेंगे? 'वाह-वाह'। जो सामने देखा, जो सुना, जो बोला - सब वाह-वाह, हाय-हाय नहीं। हाय ये क्या हो गया! नहीं, वाह, ये बहुत अच्छा हुआ। कोई बुरा भी करे लेकिन आप अपनी शक्ति से बुरे को अच्छे में बदल दो। यही तो परिवर्तन है ना। अपने ब्राह्मण जीवन में बुरा होता ही नहीं। चाहे कोई गाली भी देता है तो बलिहारी गाली देने वाले की, जो सहन शक्ति का पाठ पढ़ाया। बलिहारी तो हुई ना, जो मास्टर बन गया आपका! मालूम तो पड़ा आपको कि सहन शक्ति कितनी है, तो बुरा हुआ या अच्छा हुआ? ब्राह्मणों की दृष्टि में बुरा होता ही नहीं। ब्राह्मणों के कानों में बुरा सुनाई देता ही नहीं। इसलिए तो ब्राह्मण जीवन मौजों की जीवन है। अभी-अभी बुरा, अभी-अभी अच्छा तो मौज नहीं हो सकेगी। सदा मौज ही मौज है। सारे कल्प में ब्रह्माकुमार और कुमारी श्रेष्ठ हैं। देव आत्माएं भी ब्राह्मणों के आगे कुछ नहीं हैं। सदा इस नशे में रहो, सदा खुश रहो और दूसरों को भी सदा खुश रखो। रहो भी और रखो भी। मैं तो खुश रहता हूँ, ये नहीं। मैं सबको खुश रखता हूँ - यह भी हो। मैं तो खुश रहता हूँ - यह भी स्वार्थ है। ब्राह्मणों की सेवा क्या है? ज्ञान देते ही हो खुशी के लिए।

(31.12.1990)

सभी बच्चों को नथिंग न्यु का पाठ हर परिस्थिति में सदा स्मृति में रहे। ब्राह्मण जीवन अर्थात् क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की रेखा हो नहीं सकती। कितने बार यह समाचार भी सुना होगा। नया समाचार है क्या? नहीं। ब्राह्मण जीवन अर्थात् हर समाचार सुनते कल्प पहले की स्मृति में समर्थ रहे - जो होना है वह हो

रहा है, इसलिए क्या होगा - यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। त्रिकालदर्शी हो, ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हो तो क्या वर्तमान को नहीं जानते हैं? घबराते तो नहीं हो ना! ब्राह्मण जीवन में हर कदम में कल्याण है। घबराने की बात नहीं है। आप सबका कर्त्तव्य है अपने शान्ति की शक्ति से अशान्त आत्माओं को शान्ति की किरणें देना। अपने ही आपके भाई-बहिन हैं, तो अपने ईश्वरीय परिवार के सम्बन्ध से सहयोगी बनो। जितना ही युद्ध में तीव्र गति है, आप योगी आत्माओं का योग उन्होंको शान्ति का सहयोग देगा। इसलिए और विशेष समय निकाल शान्ति का सहयोग दो - यह है आप ब्राह्मण आत्माओं का कर्त्तव्य। अच्छा।

दादियों से :- आदि ब्राह्मणों की माला ब्रह्मा बाप के साथ आदि ब्राह्मण निमित्त बने ना। आदि ब्राह्मणों का बहुत बड़ा महत्व है। स्थापना पालना और परिवर्तन। विनाश शब्द थोड़ा ऑफिशल लगता है तो स्थापना, पालना और विश्व परिवर्तन करने में आदि ब्राह्मणों का विशेष पार्ट है। शक्तियों की पूजा बहुत धूमधाम से होती है। निराकार बाप व ब्रह्मा बाप की पूजा इतनी धूमधाम से नहीं होती। ब्रह्मा के मन्दिर भी बहुत गुप्त ही हैं। लेकिन शक्ति सेना भक्ति में भी नामीग्रामी है। इसलिए अन्त तक स्टेज पर विशेष बच्चों का पार्ट है। ब्रह्मा का भी गुप्त पार्ट है - अव्यक्त रूप अर्थात् गुप्त। ब्राह्मणों को तैयार किया और ब्रह्मा का पार्ट गुप्त हो गया। सरस्वती को भी गुप्त दिखाते हैं क्योंकि उनका भी ड्रामा में गुप्त पार्ट चल रहा है।

सर्व बच्चों प्रति बापदादा का सन्देश

सर्व तपस्वी बच्चों प्रति यादप्यार। देखो बच्चे, समय के समाचार सुनते ऊंचे ते ऊंचे साक्षीपन के आसन और बेफिकर बादशाह के सिंहासन पर बैठ सब खेल देख रहे हो ना? इस ब्राह्मण जीवन में घबराने का तो स्वप्न में भी संकल्प उठ नहीं सकता। यह तो तपस्या वर्ष के निरन्तर लगन की अग्नि में बेहद की वैराग-वृत्ति प्रज्जवलित करने का पंखा लग रहा है। आपने बाप समान सम्पन्न बनने का संकल्प किया अर्थात् विजय का झण्डा लहराने का प्लान बनाया, तो दूसरे तरफ

समाप्ति की हलचल भी तो साथ-साथ नूँधी है ना? रिहर्सल ही ड्रामा के रील को समाप्त करने का साधन है, इसलिए नथिंग न्यु।

(18.01.1991)

सभी बच्चों को नथिंग न्यु का पाठ हर परिस्थिति में सदा स्मृति में रहे। ब्राह्मण जीवन अर्थात् क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की रेखा हो नहीं सकती। कितने बार यह समाचार भी सुना होगा। नया समाचार है क्या? नहीं। ब्राह्मण जीवन अर्थात् हर समाचार सुनते कल्प पहले की स्मृति में समर्थ रहे - जो होना है वह हो रहा है, इसलिए क्या होगा - यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। त्रिकालदर्शी हो, ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हो तो क्या वर्तमान को नहीं जानते हैं? घबराते तो नहीं हो ना! ब्राह्मण जीवन में हर कदम में कल्याण है। घबराने की बात नहीं है। आप सबका कर्तव्य है अपने शान्ति की शक्ति से अशान्त आत्माओं को शान्ति की किरणें देना। अपने ही आपके भाई-बहिन हैं, तो अपने ईश्वरीय परिवार के सम्बन्ध से सहयोगी बनो। जितना ही युद्ध में तीव्र गति है, आप योगी आत्माओं का योग उन्होंको शान्ति का सहयोग देगा। इसलिए और विशेष समय निकाल शान्ति का सहयोग दो – यह है आप ब्राह्मण आत्माओं का कर्तव्य।

(18.01.1991)

तपस्या वर्ष अर्थात् फास्ट पुरुषार्थ कर फर्स्ट जन्म में फर्स्ट नम्बर आत्माओं के साथ राज्य में आना। घर में साथ चलना है ना? फिर राज्य में भी ब्रह्मा बाप के साथ आना है। तो समझा तपस्या वर्ष क्यों रखा है? एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ। अभी भी न चाहते भी व्यर्थ चल जाता है। व्यर्थ का तरफ कोई-कोई समय शुद्ध-श्रेष्ठ संकल्प से भारी हो जाता है। तपस्या अर्थात् व्यर्थ संकल्प की समाप्ति। क्योंकि यह समाप्ति ही सम्पूर्णता को लायेगी। समाप्ति के बिना सम्पूर्णता नहीं आयेगी। तो आज के दिन से तपस्या वर्ष आरम्भ कर रहे हो। उमंग-उत्साह के

लिए बापदादा मुबारक देते हैं। चारों ही सब्जेक्ट में फुल पास होने की मार्क्स लेनी है। ऐसे नहीं समझना कि मेरी तीन सब्जेक्ट तो ठीक है, सिर्फ एक में कमी है। फुल पास हो जायेंगे? नहीं, फिर भी पास की लिस्ट में आयेंगे। फुल पास अर्थात् चारों सब्जेक्ट में फुल मार्क्स हो। सदा हर आत्मा के प्रति कल्याण की भावना, चाहे वह आपकी स्थिति को हिलाने की भी कोशिश करे लेकिन अकल्याण करने वाले के ऊपर भी कल्याण की भावना, कल्याण की दृष्टि, कल्याण की वृत्ति, कल्याणमय कृति। इसको कहा जाता है - कल्याणकारी आत्मा। शिव का अर्थ भी कल्याणकारी है ना? तो शिव जयन्ती अर्थात् कल्याणकारी भावना। कल्याण करने वाले के ऊपर कल्याण करना यह तो अज्ञानी भी करते हैं। अच्छे के साथ अच्छा चलना यह तो सभी जानते हैं। लेकिन अकल्याण के वृत्ति वाले को अपने कल्याण की वृत्ति से परिवर्तन करो या क्षमा करो। परिवर्तन न भी कर सकते, क्षमा तो कर सकते हो ना! मास्टर क्षमा के सागर तो हो ना! तो आपकी क्षमा उस आत्मा के लिए शिक्षा हो जायेगी। आजकल शिक्षा देने से कोई समझता, कोई नहीं समझता। यह करो तो यह शिक्षा हो जायेगी। क्षमा अर्थात् शुभ भावना की दुवाएं देना, सहयोग देना। शिक्षा देने का समय अभी चला गया। अभी स्नेह दो, सम्मान दो, क्षमा करो। शुभ भावना रखो, शुभ कामना रखो - यही शिक्षा की विधि है। वह विधि अब पुरानी हो गई। तो नई विधि आती है ना? तपस्या वर्ष में इस नई विधि से सर्व को और समीप लाओ। सुनाया था ना कि दाने कुछ तैयार हो भी गये हैं लेकिन माला अभी तैयार नहीं है। धागा भी है, दाने भी है लेकिन दाना दाने के समीप नहीं है इसलिए माला तैयार नहीं है। अपनी रीति से दाना तैयार है लेकिन संगठन में, समीपता में तैयार नहीं है। तो तपस्या वर्ष में बाप समान तो बनना ही है लेकिन दाना दाने के समीप भी आना है। समझा। बाकी योगी थे, योगी है, सदा योगी जीवन में ही रहना है। ड्रामा के हर सीन को प्यारा देखते हुए चलो। हर सीन प्यारी है। दुनिया के लिए जो अप्यारी सीन है, वह आपके लिए प्यारी है। जो भी होता है उसमें कोई

राज़ भरा हुआ होता है। राज़ को जानने से कभी किसी बात में,किसी दृश्य में नाराज नहीं होंगे। राज़ को जानने वाले नाराज नहीं होते। राज़ को न जानने वाले नाराज होते हैं।

(13.02.1991)

सभी बच्चे मीठी-मीठी रुहरिहान करते हैं। कहते हैं - बाबा है तो आपके ही, और कहाँ तो जायेंगे ही नहीं। और ज्ञानी-योगी जीवन भी बहुत अच्छी लगती है लेकिन थोड़ा-थोड़ा किसी न किसी बात में सहन करना पड़ता है। उस समय मन और बुद्धि हलचल में आ जाती है यह कब तक होगा, कैसे होगा..? बीच-बीच में जो हलचल होती है - चाहे अपने से, चाहे सेवा से, चाहे साथियों से - यह हलचल निरन्तर में अन्तर ले आती है। तो सहन शक्ति की परसेन्टेज थोड़ी कम हो जाती है। हैं पक्के, लेकिन पक्के को भी कभी कभी ये बातें हिला देती हैं। तो तपस्या वर्ष अर्थात् सर्व गुणों में, सर्व शक्तियों में, सर्व सम्बन्धों में, सर्व स्वभाव-संस्कार में 100 परसेन्ट पास होना। अभी पास हो लेकिन फुल पास नहीं। एक है पास, दूसरा है फुल पास और तीसरा है पास विद् ऑनर। तो तपस्या वर्ष में अगर पास विद् ऑनर थोड़े बने तो फुल पास तो सब बन सकते हैं। और फुल पास होने के लिए सबसे सहज साधन है जो भी कोई पेपर आते हैं और इस तपस्या वर्ष में भी पेपर आयेंगे। ऐसे नहीं कि नहीं, आयेंगे लेकिन पेपर समझकर पास करो। बात को बात नहीं समझो, पेपर समझो। पेपर के क्वेश्चन के विस्तार में नहीं जाते - यह क्यों आया, कैसे आया, किसने किया? पास होने का सोच कर पेपर को पार करते हैं। तो पेपर समझकर पास करो। यह क्या हो गया, ऐसा होता है क्या, या अपनी कमजोरी में भी यह नहीं सोचो कि यह तो होता ही है। अपने लिए सोचते हो - यह तो होता ही है, इतना तो होगा ही और दूसरों के लिए सोचते हो यह क्यों किया, क्या किया। इन सब बातों को पेपर समझकर फुल पास होने का लक्ष्य रख करके

पास करो। पास होना है, पास करना है और बाप के पास रहना है तो फुल पास हो जायेंगे।

(13.02.1991)

तपस्या का अर्थ ही है सन्तुष्टता की पर्सनालिटी नयनों में, चैन में, चेहरे में, चलन में दिखाई दे। ऐसे सन्तुष्ट मणियों की माला बना रहे थे। कितनी माला बनी होगी? सन्तुष्ट मणि अर्थात् बेदाग मणि। सन्तुष्टता की निशानी है - सन्तुष्ट आत्मा सदा प्रसन्नचित्त स्वयं को भी अनुभव करेगी और दूसरे भी प्रसन्न होंगे। प्रसन्नचित्त स्थिति में प्रश्न चित्त नहीं होता। एक होता है प्रसन्नचित्त, दूसरा है प्रश्नचित्त। प्रश्न अर्थात् क्वेश्चन। प्रसन्नचित्त ड्रामा के नॉलेजफुल होने के कारण प्रसन्न रहता, प्रश्न नहीं करता। जो भी प्रश्न अपने प्रति या किसके प्रति भी उठता उसका उत्तर स्वयं को पहले आता। पहले भी सुनाया था व्हाट और व्हाई नहीं, लेकिन डॉट। क्या, क्यों नहीं, फुलस्टॉप बिन्दु। एक सेकेण्ड में विस्तार, एक सेकेण्ड में सार। ऐसा प्रसन्नचित्त सदा निश्चिन्त रहता है। तो चेक करो - ऐसी निशानियां मुझ सन्तुष्ट मणि में हैं? बापदादा ने तो सबको टाइटिल दिये हैं - सन्तुष्ट मणि का। तो बापदादा पूछ रहे हैं कि हे सन्तुष्ट मणियो, सन्तुष्ट हो? फिर प्रश्न है - स्वयं से अर्थात् स्वयं के पुरुषार्थ से, स्वयं के संस्कार परिवर्तन के पुरुषार्थ से, स्वयं के पुरुषार्थ की परसेन्टेज में, स्टेज में सदा सन्तुष्ट हो? अच्छा दूसरा प्रश्न - स्वयं के मन्सा, वाचा और कर्म, अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सेवा में सदा सन्तुष्ट हो? तीनों ही सेवा, सिर्फ एक सेवा नहीं। तीनों ही सेवा में और सदा सन्तुष्ट हो? सोच रहे हैं, अपने को देख रहे हैं कि कहाँ तक सन्तुष्ट हैं? अच्छा, तीसरा प्रश्न - सर्व आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में स्वयं द्वारा वा सर्व द्वारा सदा सन्तुष्ट हो? क्योंकि तपस्या वर्ष में तपस्या का, सफलता का फल यही प्राप्त करना है। स्वयं में, सेवा में और सर्व में सन्तुष्टता। चार घण्टा तो योग किया - बहुत अच्छा, और चार से आठ घण्टा तक भी पहुँच जायेंगे। यह भी बहुत अच्छा। योग का सिद्धि स्वरूप हो। योग विधि है।

लेकिन इस विधि से सिद्धि क्या मिली? योग लगाना यह विधि है, योग की प्राप्ति यह सिद्धि है। तो जैसे 8 घण्टे का लक्ष्य रखा है तो कम से कम यह तीन प्रकार की सन्तुष्टता की सिद्धि का स्पष्ट श्रेष्ठ लक्ष्य रखो। कई बच्चे स्वयं को मियां मिट्ठू माफिक भी सन्तुष्ट समझते हैं। ऐसे सन्तुष्ट नहीं बनना। एक है दिल माने, दूसरा है दिमाग माने। दिमाग से अपने को समझते सन्तुष्ट हैं ही, क्या परवाह है। हम तो बेपरवाह हैं। तो दिमाग से स्वयं को सन्तुष्ट समझना - ऐसी सन्तुष्टता नहीं, यथार्थ समझना है। सन्तुष्टता की निशानियां स्वयं में अनुभव हो। चित्त सदा प्रसन्न हो, पर्सनालिटी हो। स्वयं को पर्सनालिटी समझें और दूसरे नहीं समझें इसको कहा जाता है - मियांमिट्ठू। ऐसे सन्तुष्ट नहीं। लेकिन यथार्थ अनुभव द्वारा सन्तुष्ट आत्मा बनो। सन्तुष्टता अर्थात् दिल-दिमाग सदा आराम में होंगे। सुख-चैन की स्थिति में होंगे। बेचैन नहीं होंगे। सुख चैन होगा। ऐसी सन्तुष्ट मणियां सदा बाप के मस्तक में मस्तक मणियों समान चमकती हैं। तो स्वयं को चेक करो। सन्तुष्टता बाप की और सर्व की दुवाएं दिलाती है। सन्तुष्ट आत्मा समय प्रति समय सदा अपने को बाप और सर्व की दुवाओं के विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेगा। यह दुवाएं उनका विमान है। सदा अपने को विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेगा। दुवा मांगेगा नहीं, लेकिन दुवाएं स्वयं उसके आगे स्वत: ही आयेगी। ऐसे सन्तुष्ट मणि अर्थात् सिद्धि स्वरूप तपस्वी। अल्प काल की सिद्धियां नहीं, यह अविनाशी और रुहानी सिद्धियां हैं। ऐसी सन्तुष्ट मणियों को देख रहे थे। हरेक अपने आपसे पूछे - मैं कौन?

(17.03.1991)

सभी खुशराजी हो, सन्तुष्ट हो? बाहर रहने में भी सन्तुष्ट हो? यह भी ड्रामा में पार्ट है। जब कहते हो सारा आबू हमारा होगा, तो वह कैसे होगा? पहले आप चरण तो रखो। फिर अभी जो धर्मशाला नाम है वह अपना हो जायेगा। देखो, विदेश में अभी ऐसे होने लगा है। चर्च इतने नहीं चलते हैं तो बी.के. को दे दी है। जो ऐसे बड़े-बड़े स्थान है, चल नहीं पाते हैं तो ऑफर करते हैं ना। तो ब्राह्मणों के

चरण पड़ रहे हैं जगह-जगह पर, इसमें भी राज़ है। ब्राह्मणों को रहने का ड्रामा में पार्ट मिला है। तो सारा ही अपना जब हो जायेगा फिर क्या करेंगे? आप ही ऑफर करेंगे आप सम्भालो। हमें भी सम्भालो, आश्रम भी सम्भालो। जिस समय जो पार्ट मिलता है, उसमें राजी रह करके पार्ट बजाओ।

दादियों से :- सदैव कोई नई सीन होनी चाहिए ना। यह भी ड्रामा में नई सीन थी जो रिपीट हुई। यह सोचा था कि यह हाल भी छोटा हो जायेगा? सदा एक सीन तो अच्छी लगती नहीं। कभी-कभी की सीन अच्छी लगती है। यह भी एक रूहानी रौनक है ना! इन सभी आत्माओं का संकल्प पूरा होना था, इसलिए यह सीन हो गई। यहाँ से छुट्टी दे दी - भले आओ। तो क्या करेंगे? अभी तो नये और बढ़ने हैं। और पुराने तो पुराने हो गये। जैसे उमंग से आये हैं वैसे अपने को सेट किया है, यह अच्छा किया है। विशाल तो होना ही है। कम तो होना है ही नहीं। जब विश्व कल्याणकारी का टाइटल है तो विश्व के आगे यह तो कुछ भी नहीं हैं। वृद्धि भी होनी है और विधि भी नये से नई होनी है। कुछ न कुछ तो विधि होती रहनी है। अभी वृत्ति पावरफुल होगी। तपस्या द्वारा वृत्ति पावरफुल हो जायेगी तो स्वत: ही वृत्ति द्वारा आत्माओं की भी वृत्ति चेंज होगी। अच्छा- आज सब सेवा करते थकते तो नहीं हो ना। मौज में आ रहे हो। मौज ही मौज है।

(03.04.1991)

तपस्या अर्थात् खुशी में नाचना और बाप के और अपने आदि अनादि स्वरूप के गुण गाना। तो यह गीत कितना बड़ा और कितना सहज है। इसमें गला ठीक है वा नहीं ठीक है इसकी भी जरूरत नहीं है। निरन्तर यह गीत गा सकते हो। निरन्तर खुशी में नाचते रहो। तो तपस्या का अर्थ क्या हुआ ? नाचना और गाना कितना सहज है। माथा भारी उसका होता है जो छोटी सी गलती करते हैं। ब्राह्मण जीवन में कभी किसका माथा भारी हो नहीं सकता। हॉस्पिटल बनाने वालों का माथा भारी हुआ? ट्रस्टी सामने बैठे हैं ना! माथा भारी है, जब करनकरावनहार

बाप है तो आपको क्या बोझ है? यह तो निमित्त बनाकर भाग्य बनाने का साधन बना रहे हो। आपकी जिम्मेवारी क्या है? बाप के बजाए अपनी जिम्मेवारी समझ लेते हैं तो माथा भारी होता है। बाप सर्व शक्तिवान मेरा साथी है तो क्या भारीपन होगा। छोटी सी गलती कर देते हो, मेरी जिम्मेवारी समझते हो तो माथा भारी होता है। तो ब्राह्मण जीवन ही नाचो गाओ और मौज करो। सेवा चाहे वाचा है चाहे कर्मणा। यह सेवा भी एक खेल है। सेवा कोई और चीज नहीं है। कोई दिमाग के खेल होते हैं, कोई हल्के खेल होते हैं। लेकिन हैं तो खेल ना। दिमाग के खेल में दिमाग भारी होता है क्या। तो यह सब खेल करते हो। तो चाहे कितना भी बड़ा सोचने का काम हो, अटेन्शन देने का काम हो लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा के लिए सब खेल है।

(26.10.1991)

इस तपस्या वर्ष में जो कुछ हो रहा है इसका कारण क्या? बड़े बड़े प्रोजेक्ट कर रहे हो इसका कारण क्या? कोई समझते हैं कि यही तपस्या का फल है। कोई समझते हैं तपस्या वर्ष में यह क्यों? दोनों वायब्रेशन्स आते हैं। लेकिन यह समय की तीव्रगति और तपस्या के वायब्रेशन्स से आवश्यकता का पूर्ण होना यह तपस्या के बल का फल है। फल तो खाना पड़ेगा ना। यह ड्रामा दिखाता है कि तपस्या सर्व आवश्यकताओं को समय पर सहज पूर्ण कर सकती है। समझा। क्वेश्चन नहीं उठ सकता कि यह क्यों हो रहे हैं। तपस्या अर्थात् सफलता सहज अनुभूति हो। आगे चलकर असम्भव कैसे सहज सम्भव होता है यह अनुभव ज्यादा से ज्यादा करते रहेंगे। विघ्नों का आना यह भी ड्रामा में आदि से अन्त तक नूंध है। यह विघ्न भी असम्भव से सम्भव की अनुभूति कराते हैं। और आप सभी तो अनुभवी हो ही गये हैं। इसलिए विघ्न भी खेल लगता है। जैसे फुटबाल का खेल करते हो । तो क्या करते हो? बाल आता है तभी तो ठोकर लगाते हो। अगर बाल

ही न आये तो ठोकर कैसे लगायेंगे? खेल कैसे होगा? यह भी फुटबाल का खेल है। खेल खेलने में मजा आता है ना या मूंझते हो? कोशिश करते हो ना कि बाल मेरे पांव में आये मैं लगाऊं। यह खेल तो होता रहेगा। नथिंगन्यु। ड्रामा खेल भी दिखाता है और सम्पन्न सफलता भी दिखाता है। यही ब्राह्मण कुल की रीति रसम है।

(26.10.1991)

ऐसे नहीं आज थोड़ी खुशी कम हो गई, थोड़ा सा उदास हो गये। उदास कौन होता है? जो माया का दास बनता है। क्या करें, कैसे करें, ये क्वेश्चन आना माना उदास होना। जब भी क्यों का क्वेश्चन आता है - क्यों हुआ, क्यों किया तो इससे सिद्ध है कि चक्र का ज्ञान पूरा नहीं है। अगर ड्रामा के राज़ को जान जाये तो क्यों क्या का क्वेश्चन उठ नहीं सकता। जब स्वयं भी कल्याणकारी और समय भी कल्याणकारी है तो यह क्या.. का क्वेश्चन उठ सकता है? तो ड्रामा का ज्ञान और ड्रामा में भी समय का ज्ञान इसकी कमी है तो क्यों और क्या का क्वेश्चन उठता है। तो कभी उठता है कि क्या यह मेरा ही हिसाब है.. मेरा ही कड़ा हिसाब है दूसरे का नहीं... कितना भी कड़ा हो लेकिन योग की अग्नि के आगे कितना भी कड़ा हिसाब क्या है! कितना भी लोहा कड़ा हो लेकिन तेज आग के आगे मोम बन जाता है। कितनी भी कड़ी परीक्षा हो, हिसाब किताब हो, कड़ा बन्धन हो लेकिन योग अग्नि के आगे कोई बात कड़ी नहीं, सब सहज है। कई आत्मायें कहती हैं - मेरे ही शरीर का हिसाब है और किसका नहीं.. मेरे को ही ऐसा परिवार मिला है.. मेरे को ही ऐसा काम मिला है.. ऐसे साथी मिले हैं.. लेकिन जो हो रहा है वह बहुत अच्छा। यह कड़ा हिसाब शक्तिशाली बना देता है। सहन शक्ति को बढ़ा देता है। तेज आग के आगे कोई भी चीज परिवर्तन न हो - यह हो ही नहीं सकता। तो यह कभी नहीं कहना - कड़ा हिसाब है। कमजोरी ही सहज को मुश्किल बना देती है। ईश्वरीय शक्ति का बहुत बड़ा महत्व है। तो सदा स्व को देखो, स्वदर्शन चक्रधारी

बनो। और बातों में जाना, औरों को देखना माना गिरना और बाप को देखना, बाप का सुनना अर्थात् उड़ना।

(18.12.1991)

बेहद की खुशी है? ऐसे नहीं आज थोड़ी खुशी कम हो गई, थोड़ा सा उदास हो गये। उदास कौन होता है? जो माया का दास बनता है। क्या करें, कैसे करें, ये क्वेश्चन आना माना उदास होना। जब भी क्यों का क्वेश्चन आता है - क्यों हुआ, क्यों किया तो इससे सिद्ध है कि चक्र का ज्ञान पूरा नहीं है। अगर ड्रामा के राज़ को जान जाये तो क्यों क्या का क्वेश्चन उठ नहीं सकता। जब स्वयं भी कल्याणकारी और समय भी कल्याणकारी है तो यह क्या.. का क्वेश्चन उठ सकता है? तो ड्रामा का ज्ञान और ड्रामा में भी समय का ज्ञान इसकी कमी है तो क्यों और क्या का क्वेश्चन उठता है। तो कभी उठता है कि क्या यह मेरा ही हिसाब है.. मेरा ही कड़ा हिसाब है दूसरे का नहीं... कितना भी कड़ा हो लेकिन योग की अग्नि के आगे कितना भी कड़ा हिसाब क्या है! कितना भी लोहा कड़ा हो लेकिन तेज आग के आगे मोम बन जाता है। कितनी भी कड़ी परीक्षा हो, हिसाब किताब हो, कड़ा बन्धन हो लेकिन योग अग्नि के आगे कोई बात कड़ी नहीं, सब सहज है। कई आत्मायें कहती हैं - मेरे ही शरीर का हिसाब है और किसका नहीं.. मेरे को ही ऐसा परिवार मिला है.. मेरे को ही ऐसा काम मिला है.. ऐसे साथी मिले हैं.. लेकिन जो हो रहा है वह बहुत अच्छा। यह कड़ा हिसाब शक्तिशाली बना देता है। सहन शक्ति को बढ़ा देता है। तेज आग के आगे कोई भी चीज परिवर्तन न हो - यह हो ही नहीं सकता। तो यह कभी नहीं कहना - कड़ा हिसाब है। कमजोरी ही सहज को मुश्किल बना देती है। ईश्वरीय शक्ति का बहुत बड़ा महत्व है। तो सदा स्व को देखो, स्वदर्शन चक्रधारी बनो। और बातों में जाना, औरों को देखना माना गिरना और बाप को देखना, बाप का सुनना अर्थात् उड़ना।

(18.12.1991)

कुछ भी आवे, कुछ भी हो जाये, परिस्थिति रूपी बड़े ते बड़ा पहाड़ भी आ जाये, संस्कार टक्कर खाने के बादल भी आ जायें, प्रकृति भी पेपर ले, लेकिन अंगद समान मन-बुद्धि रूपी पांव को हिलाना नहीं, अचल रहना। बीती में अगर कोई हलचल भी हुई हो उसको संकल्प में भी स्मृति में नहीं लाना। फुल स्टॉप लगाना। वर्तमान को बाप समान श्रेष्ठ, सहज बनाना और भविष्य को सदा सफलता के अधिकार से देखना। इस विधि से सिद्धि को प्राप्त करना। कल से नहीं, अभी से करना। स्मृति मास के थोड़े समय को बहुत काल का संस्कार बनाओ। यह विशेष वरदान विधि-पूर्वक प्राप्त करना। वरदान का अर्थ यह नहीं कि अलबेले बनो। अलबेला नहीं बनना, लेकिन सहज पुरुषार्थी बनना।

दिन-प्रतिदन समस्यायें, सरकमस्टांश और टाइट होने हैं, ऐसे समय पर कर्म और योग का बैलेन्स नहीं होगा तो बुद्धि जजमेन्ट ठीक नहीं कर सकती। इसलिए योग और कर्म के बैलेन्स द्वारा अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। समझा। फिर ऐसे नहीं कहना कि यह तो मालूम ही नहीं था - ऐसे भी होता है। यह पहले पता होता तो मैं योग ज्यादा कर लेता। लेकिन अभी से यह अभ्यास करो। जिस आत्मा को बापदादा की बैलेन्स के कारण ब्लैसिंग प्राप्त होती है उसकी निशानी क्या होगी? जो सदा ही बाप की ब्लैसिंग का अनुभव करते रहते हैं उसके संकल्प में भी कभी - यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह आश्चर्य की निशानी नहीं होगी। क्या होगा - यह क्वेश्चन भी नहीं उठेगा। सदैव इस निश्चय में पक्का होगा कि जो हो रहा है उसमें कल्याण छिपा हुआ है। क्योंकि कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी बाप है और आप सबका काम भी विश्व कल्याण का है, कल्याण ही समाया हुआ है। बाहर से कितना भी कोई कर्म हलचल का दिखाई दे लेकिन उस हलचल में भी कोई गुप्त कल्याण समाया हुआ होता है और बाप के श्रीमत तरफ, बाप के सम्बन्ध तरफ अटेन्शन खिंचवाने का कल्याण होता है। ब्राह्मण लाइफ में क्या नहीं हो

सकता? अकल्याण नहीं हो सकता। इतना निश्चय है या थोड़ा बहुत आयेगा तो हिल जायेंगे?

(31.12.1991)

आपके सतयुगी राज्य में प्रकृति का स्वरुप कितना श्रेष्ठ सतोप्रधान सुन्दर होगा! वहाँ के बगीचे और यहाँ आपके बगीचे में कितना अन्तर है! वह रीयल खुशबू अनुभव की है ना? फिर भी प्रकृति अन्त तक भी अपना अच्छा पार्ट बजा रही है। लेकिन प्रकृति-पति आप श्रेष्ठ आत्मायें हो। प्रकृति-पति हो, इस प्रकृति के खेल को देख हर्षित होते हो। चाहे प्रकृति हलचल करे, चाहे प्रकृति सुन्दर खेल दिखाए - दोनों में प्रकृति-पति आत्माएं साक्षी हो खेल देखती हो। खेल में मज़ा लेते हैं, घबराते नहीं है। इसलिए बापदादा तपस्या द्वारा साक्षीपन की स्थिति के आसन पर अचल अडोल स्थित रहने का विशेष अभ्यास करा रहे हैं। तो यह स्थिति का आसन सबको अच्छा लगता है या हलचल का आसन अच्छा लगता है? अचल आसन अच्छा लगता है ना। कोई भी बात हो जाए चाहे प्रकृति की, चाहे व्यक्ति की दोनों अचल स्थिति के आसन को ज़रा भी हिला नहीं सकते हैं। इतने पक्के हो ना या अभी होना है?

भारतवासियों को क्या नशा है? भारतवासियों को फिर अपना नशा है। भारत में ही बाप आते हैं। लन्दन में तो नहीं आते हैं ना। (आ तो सकते हैं) अभी तक ड्रामा में पार्ट दिखाई नहीं दे रहा है। ड्रामा की भावी कभी भगवान भी नहीं टाल सकता। ड्रामा को अथॉरिटी मिली हुई है।

(16.03.1992)

हर बात में अच्छा अच्छा कहते अच्छा बनते जाते और हर बात में अच्छाई समाई हुई जरुर होती है। चाहे सारी बात बुरी हो लेकिन एक दो अच्छाई भी जरुर होती है। वह अच्छा ही पाठ पढ़ाती है। दूसरे का आवेश हो, दूसरा

आवेश कर रहा हो लेकिन आप क्या पाठ पढ़ रही हो? जितना वह आवेश करता उतना ही वह बात आपको धीरज सिखाती है। सहनशीलता सिखाती है। इसलिए कहते हैं जो हो रहा है वह अच्छा और जो होना है वह और अच्छा। अच्छाई उठाने की सिर्फ बुद्धि चाहिए बस। बुराई को न देख अच्छाई उठा लें। इससे ही नम्बर मिलते हैं ना।

चारों बातों का समान परसन्टेज वाला निश्चय हो। कई बच्चे और क्या कहते हैं कि बाबा आपमें तो निश्चय है लेकिन अपने आपमें इतना निश्चय नहीं है। कभी होता है, कभी अपने में निश्चय कम हो जाता है। फिर उन्हों की भाषा क्या होती है? एक ही गीत गाते हैं। पता नहीं , पता नहीं, पता नहीं..। पता नहीं ऐसे क्यों होता है, पता नहीं मेरा भाग्य है, पता नहीं बाप की मदद मिलेगी वा नहीं, पता नहीं सफलता होगी वा नहीं। जब मास्टर सर्वशक्तिवान हो तो इस निश्चय में कमी है तब पता नहीं, पता नहीं का गीता गाते हो। और तीसरे फिर क्या कहते हैं? कि बाबा हमने तो आपको देख करके सौदा किया। आप हमारे हो हम आपके हैं। इस ब्राह्मण परिवार से हमने सौदा नहीं किया। ब्राह्मण परिवार खिटखिट है, आप ठीक हो। ब्राह्मणों के संगठन में चलना मुश्किल हैं, एक आपसे चलना सहज है। तो बापदादा क्या कहेंगे? बापदादा मुस्कराते हैं, ऐसे बच्चों से बापदादा का एक प्रश्न है क्योंकि ऐसी आत्माएं प्रसन्न-चित्त नहीं रहती, प्रश्न बहुत करती है, ये ऐसा क्यों, ऐसा होता है क्या, तो वह प्रसन्न-चित्त आत्मा नहीं है, प्रश्न चित्त आत्मा है। बापदादा भी उन्हों से प्रश्न करते हैं कि आप आत्मा मुक्तिधाम में रहने वाली हो या जीवनमुक्ति में आने वाली हो? मुक्ति में रहना है फिर जीवनमुक्ति में आना है ना। तो जीवनममुक्ति में सिर्फ बाबा ब्रह्मा होगा या राजधानी होगी? सिर्फ ब्रह्मा और सरस्वती राजा रानी होंगे? जीवनमुक्ति का वर्सा पाना है ना। आप लोग चैलेन्ज करते हो कि आदि सनातन धर्म और अन्य धर्म में सबसे बड़ा अन्तर है। वो सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं। और आप धर्म और राज्य दोनों की स्थापना कर रहे हो। यह पक्का है ना। धर्म की स्थापना और राज्य की भी स्थापना कर रहे हो ना, तो राज्य में क्या होगा? सिर्फ

एक राजा, एक रानी होंगे? एक राजा रानी और आप एक बच्चा या बच्ची, बस। ऐसा राज्य होता है? तो हमें राजधानी में आना है। यह याद रखो। राजधानी में आना अर्थात ब्राह्मण परिवार में सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना, श्रेष्ठ सम्बन्ध में आना।

(15.04.1992)

देखो, अच्छे हो तब तो बापदादा ने पसन्द करके अपना बनाया है। अच्छे हैं और सदा अच्छे रहेंगे। अच्छा-अच्छा समझने से अच्छे हो ही जाते हैं। बापदादा हरेक बच्चे में विशेषता ही देखते हैं। विशेषता देखते, वर्णन करते-करते विशेष बन ही जायेंगे। कल थे, आज हैं और कल फिर बनेंगे। 'आज' और 'कल' में सारा ड्रामा आ गया। जितना-जितना सम्पूर्ण बनते जायेंगे तो यह स्मृति स्पष्ट होती जायेगी। जितनी स्मृति स्पष्ट होती है उतना नेचुरल नशा रहता है।

(24.09.1992)

इस पढ़ाई में सब्जेक्ट भी ज्यादा नहीं हैं। चार सब्जेक्ट को धारण करना-इसमें मुश्किल क्या है! और चारों ही सब्जेक्ट का एक-दो के साथ सम्बन्ध है। अगर एक सब्जेक्ट 'ज्ञान' सम्पूर्ण विधिपूर्वक धारण कर लो अर्थात् ज्ञान के एक-एक शब्द को स्वरूप में लाओ, तो ज्ञान है ही मुख्य दो शब्दों का जिसको रचयिता और रचना वा अल्फ और बे कहते हो। रचयिता बाप की समझ आ गई अर्थात् परमात्म-परिचय, सम्बन्ध स्पष्ट हो गया और रचना अर्थात् पहली रचना 'मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ' और दूसरा 'मुझ आत्मा का इस बेहद की रचना अर्थात् बेहद के ड्रामा में सारे कल्प में क्या-क्या पार्ट है' - यह सारा ज्ञान तो सभी को है ना। लेकिन श्रेष्ठ आत्मा स्वरूप बन हर समय श्रेष्ठ पार्ट बजाना-इसमें कभी याद रहता है, कभी भूल जाते हैं। अगर इन दो शब्दों का ज्ञान है, योग भी इन दो शब्दों के आधार पर है ना। ज्ञान से योग का स्वत: ही सम्बन्ध है। जो 'ज्ञानी तू आत्मा' है वह 'योगी तू आत्मा' अवश्य ही है। तो ज्ञान और योग का सम्बन्ध हुआ ना। और जो ज्ञानी और योगी

होगा उसकी धारणा श्रेष्ठ होगी या कमजोर होगी? श्रेष्ठ, स्वतः होगी ना, सहज होगी ना। कि धारणा में मुश्किल होगी? जो 'ज्ञानी तू आत्मा', 'योगी तू आत्मा' है वह धारणा में कमजोर हो सकता है? नहीं। होते तो हैं। तो ज्ञान-योग नहीं है? ज्ञानी है लेकिन 'ज्ञानी तू आत्मा'- वह स्थिति नहीं है। योग लगाने वाले हैं लेकिन योगी जीवन वाले नहीं हैं। जीवन सदा होती है और जीवन नेचुरल होती है। योगी जीवन अर्थात् ओरीजिनल नेचर योगी की है।

बाप में निश्चय है कि वही कल्प पहले वाला बाप फिर से आकर मिला है। ऐसे ही अपने में भी इतना निश्चय है कि हम भी वही कल्प पहले वाले बाप के साथ पार्ट बजाने वाली विशेष आत्माएं हैं? या बाप में निश्चय ज्यादा है, अपने में कम है? अच्छा, ड्रामा में जो भी होता है उसमें भी पक्का निश्चय है? जो ड्रामा में होता है वह कल्याणकारी युग के कारण सब कल्याणकारी है। या कुछ अकल्याण भी हो जाता है? कोई मरता है तो उसमें कल्याण है? वो मर रहा है और आप कल्याण कहेंगे, कल्याण है? बिजनेस में नुकसान हो गया-यह कल्याण हुआ? तो नुकसान भी कल्याणकारी है! ज्ञान के पहले जो बातें कभी आपके पास नहीं आई, ज्ञान के बाद आई-तो उसमें कल्याण है? माया नीचे-ऊपर कर रही है, कल्याण है? इसमें क्या कल्याण है? माया आपको अनुभवी बनाती है। अच्छा, तो ड्रामा में भी इतना ही अटल निश्चय हो। चाहे देखने में अच्छी बात न भी हो लेकिन उसमें भी गुप्त अच्छाई क्या भरी हुई है, वो परखना चाहिए। जैसे कई चीजें होती हैं, उनका बाहर से कवर (ढक्कन) अच्छा नहीं होता है लेकिन अन्दर बहुत अच्छी चीज होती है। बाहर से देखेंगे तो लगेगा-पता नहीं क्या है? लेकिन पहचान कर उसे खोलकर अन्दर देखेंगे तो बढ़िया चीज निकल आयेगी। तो ड्रामा की हर बात को परखने की बुद्धि चाहिए। निश्चय की पहचान ऐसे समय पर आती है। परिस्थिति सामने आवे और परिस्थिति के समय निश्चय की स्थिति, तब कहेंगे निश्चय बुद्धि विजयी। तो तीनों में पक्का निश्चय चाहिए-बाप में, अपने आप में और ड्रामा में। दर्द में तड़प रहे हो और कहेंगे-वाह ड्रामा वाह! उस समय चिल्लायेंगे या 'वाह-वाह' करेंगे?

'हाय बाबा बचाओ'-यह नहीं कहेंगे? जब निश्चय है, तो निश्चय का अर्थ ही है-संशय का नाम-निशान न हो। कुछ भी हो जाए लेकिन अटल-अचल निश्चयबुद्धि, कोई भी परिस्थिति हलचल में नहीं ला सकती। क्योंकि हलचल में आना अर्थात् कमजोर होना।

(13.10.1992)

बेफिक्र बादशाह की विशेषता-वह सदा प्रश्नचित्त के बजाए प्रसन्नचित्त रहते हैं। हर कर्म में - स्व के सम्बन्ध में वा सर्व के सम्बन्ध में वा प्रकृति के भी सम्बन्ध में किसी भी समय, किसी भी बात में संकल्प-मात्र भी क्वेश्चन मार्क नहीं होगा कि 'यह ऐसा क्यों' वा 'यह क्या हो रहा है', 'ऐसा भी होता है क्या?' प्रसन्नचित्त आत्मा के संकल्प में हर कर्म को करते, देखते, सुनते, सोचते यही रहता है कि जो हो रहा है वह मेरे लिए अच्छा है और सदा अच्छा ही होना है। प्रश्नचित्त आत्मा 'क्या', 'क्यों', 'ऐसा', 'वैसा' - इस उलझन में स्वयं को बेफिक्र से फिक्र में ले आती है। और बेफिक्र आत्मा बुराई को भी अच्छाई में परिवर्तन कर लेती, इसलिए वह सदा प्रसन्न रहती।

आजकल के साइन्स के साधन से भी जो वेस्ट-खराब माल होता है, उसको परिवर्तन कर अच्छी चीज बना देते हैं। तो प्रसन्नचित्त आत्मा साइलेन्स की शक्ति से-चाहे बात बुरी हो, सम्बन्ध बुरे अनुभव होते हों, लेकिन वह बुराई को अच्छाई में परिवर्तन कर स्वयं में भी धारण करेगी और दूसरे को भी अपनी शुभ भावना के श्रेष्ठ संकल्प से बुराई को बदल अच्छाई धारण करने की शक्ति देगी। कई बच्चे सोचते हैं, कहते हैं कि - 'जब है ही बुरी वा ग़लत बात, तो ग़लत को ग़लत तो कहना ही पड़ेगा ना! वा ग़लत को ग़लत तो समझना ही पड़ेगा ना!' लेकिन ग़लत को ग़लत समझना-यह समझने के हिसाब से समझा। वह राइट और रांग-समझना, जानना अलग बात है लेकिन नॉलेजफुल रूप से जानने वाले समझने के बाद स्वयं में किसी भी आत्मा की बुराई को बुराई के रूप में अपनी बुद्धि में

धारण नहीं करेंगे। तो समझना अलग चीज है, समझने तक राइट है। लेकिन स्वयं में वा अपनी चित पर, अपनी बुद्धि में, अपनी वृत्ति में, अपनी वाणी में दूसरे की बुराई को बुराई के रूप में धारण नहीं करना है, समाना नहीं है। तो समझना और धारण करना-इसमें अन्तर है।

(21.11.1992)

दादियों से मुलाकात :- बापदादा सेकेण्ड में कितनी बातें कर सकता है? समय कम और बातें बहुत। क्योंकि फरिश्ते इशारों से ही समझते हैं। तो यह दृष्टि की भाषा फरिश्तेपन की निशानी है। यह भी बापदादा सिखाते रहते हैं। आजकल के समय प्रमाण अगर वाणी द्वारा किसको सुनाओ तो समय भी चाहिए, साहस भी चाहिए। अगर मीठी दृष्टि द्वारा समझाने का प्रयत्न करते हैं तो कितना सहज हो जाता है! समय अनुसार यह दृष्टि द्वारा परिवर्तन होना और परिवर्तन कराना-यही काम में आयेगा। सुनाते हैं तो सब कहते हैं-हमको पहले से ही पता है। लेकिन मीठी दृष्टि और शुभ वृत्ति-यह एक मिनट में एक घण्टा समझाने का कार्य कर सकते है। आजकल यही विधि श्रेष्ठ है और अन्त में भी यही काम में आयेगी। फालो फादर करते जायेंगे। विघ्न को भी मनोरंजन समझकर चलते रहते हैं। वाह ड्रामा वाह! चाहे किसी भी प्रकार का दृश्य हो लेकिन 'वाह-वाह' ही हो। अच्छा है, बापदादा बच्चों की हिम्मत, उमंग-उल्लास देख खुश हैं और बढ़ाते रहते हैं। यही निमित्त बनने की लिफ्ट की विशेष गिफ्ट है।

(30.11.1992)

अपने को सदा विघ्न-विनाशक आत्मा अनुभव करते हो? या विघ्न आये तो घबराने वाले हो? विघ्न-विनाशक आत्मा सदा ही सर्व शक्तियों से सम्पन्न होती है। विघ्नों के वश होने वाले नहीं, विघ्न-विनाशक। कभी विघ्नों का थोड़ा प्रभाव पड़ता है? कभी भी किसी भी प्रकार का विघ्न आता है तो स्मृति रखो कि-विघ्न

का काम है आना और हमारा काम है विघ्न-विनाशक बनना। जब नाम है विघ्न-विनाशक, तो जब विघ्न आयेगा तब तो विनाश करेंगे ना। तो ऐसे कभी नहीं सोचना कि हमारे पास यह विघ्न क्यों आता है? विघ्न आना ही है और हमें विजयी बनना है। तो विघ्न-विनाशक आत्मा कभी विघ्न से न घबराती है, न हार खाती है। ऐसी हिम्मत है? क्योंकि जितनी हिम्मत रखते हैं, एक गुणा बच्चों की हिम्मत और हजार गुणा बाप की मदद। तो जब इतनी बाप की मदद है तो विघ्न क्या मुश्किल होगा? इसलिए कितना भी बड़ा विघ्न हो लेकिन अनुभव क्या होता है? विघ्न नहीं है लेकिन खेल है। तो खेल में कभी घबराया जाता है क्या? खेल करने में खुशी होती है ना! ऐसे खेल समझने से घबरायेंगे नहीं लेकिन खुशी-खुशी से विजयी बनेंगे। सदा ड्रामा के ज्ञान की स्मृति से हर विघ्न को 'नथिंग न्यु' समझेगा। नई बात नहीं, बहुत पुरानी है।

कितने बार विजयी बने हो? (अनेक बार) याद है या ऐसे ही कहते हो? सुना है कि ड्रामा रिपीट होता है, इसीलिए कहते हो या समझते हो अनेक बार किया है? अगर ड्रामा की प्वाइन्ट बुद्धि में क्लीयर है कि हू-ब-हू रिपीट होता है, तो उस निश्चय के प्रमाण हू-ब-हू जब रिपीट होता है, तो अनेक बार रिपीट हुआ है और अब रिपीट कर रहे हैं। लेकिन निश्चय की बात है। अगले कल्प में और कोई विजयी बने और इस कल्प में आप विजयी बनो-यह हो नहीं सकता। क्योंकि जब बना-बनाया ड्रामा कहते हैं, तो बना हुआ है और बना रहे हैं अर्थात् रिपीट कर रहे हैं। ऐसा निश्चयबुद्धि अचल-अडोल रहता है।

अचलघर किसका यादगार है? ज्ञान के राज़ों में जो अचल रहता है उसका यादगार अचलघर है। तो यह नशा रहता है ना कि हम प्रैक्टिकल में अपना यादगार देख रहे हैं। जो सदा विघ्न-विनाशक स्थिति में स्थित रहता है वह सदा ही डबल लाइट रहता है। कोई बोझ है? सब-कुछ तेरा कर लिया है? कि आधा तेरा, आधा मेरा? 75 परसेन्ट बाप का, 25 परसेन्ट मेरा? कभी तेरा कह दो, और जब

मतलब हो तो मेरा कह दो? मेरा-मेरा कहते तो अनुभव कर लिया, क्या मिला? तेरा कहने से भरपूर हो जायेंगे। मेरा-मेरा कहेंगे तो खाली हो जायेंगे। सदा डबल लाइट अर्थात् सब-कुछ तेरा। जरा भी अगर मोह है तो मेरा है। तेरा अर्थात् निर्मोही।

दादियों से मुलाकात :- वर्तमान समय कौनसा बैलेन्स चल रहा है? एक तरफ धमाल, दूसरे तरफ कमाल। कुछ भी हो लेकिन कमाल ही हो रही है ना। हर क्षेत्र में आप लोग तो आगे ही बढ़ रहे हो ना। तो दुनिया में है धमाल और आपके पास समाचारों में कमाल है। जितनी धमाल होगी उतनी आपकी कमाल होगी और प्रत्यक्ष होते जायेंगे। दुनिया वाले डरते हैं और आप और ही निर्भय होते हैं। निर्भय हो या धमाल से डरते हो? जितनी धमाल देखते हो उतना यही सोचते हैं कि आज धमाल है और कल हमारी कमाल हुई ही पड़ी है! बैलेन्स चल रहा है ना। देखो, डिग्री भी मिल रही है, (दादी जी को उदयपुर युनिवर्सिटी से डॉक्टरेट की डिग्री मिलने वाली है) मकान भी मिल रहे हैं। जो असम्भव बातें हैं वो सम्भव हो रही हैं। तो यह कमाल है ना। निमन्त्रण भी मिल रहे हैं। कुछ समय पहले यह नहीं था, अभी बढ़ रहा है। तो कमाल बढ़ रही है ना। ये बाप ब्रह्मा द्वारा फास्ट गति की सेवा का सबूत दिखा रहे हैं। जो मुश्किल बातें होती हैं वे समय अनुसार ऐसी सहज होती जायेंगी जैसे हुई ही पड़ी हों! इसलिए आपको भय नहीं है। सोचते हो कि ये कब धमाल तो होनी ही है और हमारी कमाल भी होनी ही है। कोई डरते हैं-कर्फ्यू लगा, ये सिविल-वार हो रही है, क्या होगा! डरते हो? ड्रामा अनुसार यह सभी और पुरुषार्थ को मजबूत करते हैं। अच्छा! और सब ठीक है? (दादी जी को थोड़ी खांसी है) तबियत का हिसाब चुक्तू कर रही हो। एक तो आयु के हिसाब से भी हिसाब चुक्तू होता है और दूसरा रहस्य यह है कि महारथियों को सब हिसाब यहीं चुक्तू करना है, जरा भी रहना नहीं है। बापदादा को तो खेल लगता है। जब ब्रह्मा बाप ने क्रॉस (पार) किया तो आप सबको भी क्रॉस तो करना ही है। या तो है

योगबल से सहज क्रॉस करना, या तो है धर्मराज के क्रॉस (शूली) पर चढ़ना। तो ये क्रॉस कर रहे हैं, इसलिए क्रॉस पर नहीं चढ़ेंगे।

(20.12.1992)

सेवा की सफलता वा प्रत्यक्षता तो ड्रामा अनुसार बढ़ती जायेगी। बढ़ रही है ना अभी। पहले आप निमन्त्रण देते थे, अभी वे आपको निमन्त्रण देते हैं। तो सेवा के सफलता की प्रत्यक्षता हो रही है ना। आप लोगों को कोई स्टेज मिलने की वा डिग्री मिलने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन यह सेवा की प्रत्यक्षता है। भगवान् की डिग्री के आगे यह डिग्री क्या है। (उदयपुर विश्वविद्यालय ने दादी जी को मानद् डॉक्टरेट की डिग्री दी है) लेकिन यह भी प्रत्यक्षता का साधन है। साधन द्वारा सेवा की प्रत्यक्षता हो रही है। बनी बनाई स्टेज मिलनी ही है। वह भी दिन आना ही है जो यह धर्मनेतायें भी आपको आमन्त्रित करके चीफ गेस्ट आपको ही बनायेंगे। अभी थोड़ा बाहर की रूपरेखा में उनको रखना पड़ता है, लेकिन अन्दर में महसूस करते हैं कि इन पवित्र आत्माओं को सीट मिलनी चाहिए। राजनेता तो कह भी देते हैं कि-हमको चीफ गेस्ट बनाते हो, यह तो आप ही बनते तो बेहतर होता। लेकिन ड्रामा में नाम उन्हों का, काम आपका हो जाता है।

दादियों से मुलाकात :- ड्रामा का दृश्य देख हर्षित हो रही हो ना। 'वाह ड्रामा वाह! वाह बाबा वाह' - यही गीत अनादि, अविनाशी चलते रहते हैं। बच्चे बाप को प्रत्यक्ष करते हैं और बाप शक्ति-सेना को प्रत्यक्ष करते हैं।

(31.12.1992)

अपने को त्रिकालदर्शी अनुभव करते हो? संगमयुग पर बाप सभी आत्माओं को त्रिकालदर्शी बनाते हैं। क्योंकि संगमयुग है श्रेष्ठ, ऊंचा। तो जो ऊंचा स्थान होता है वहाँ खड़ा होने से सब कुछ दिखाई देता है। तो संगमयुग पर खड़े होने से तीनों ही काल दिखाई देते हैं। एक तरफ दु:खधाम का ज्ञान है, दूसरे तरफ

सुखधाम का ज्ञान है और वर्तमान काल संगमयुग का भी ज्ञान है। तो त्रिकालदर्शी बन गये ना! तीनों ही काल का ज्ञान इमर्ज है? तीनों ही काल स्मृति में रखो - कल दु:खधाम में थे, आज संगमयुग में हैं और कल सुखधाम में जायेंगे। जो भी कर्म करो वह त्रिकालदर्शी बनकर के करो तो हर कर्म श्रेष्ठ होगा। व्यर्थ नहीं होगा, समर्थ होगा! समर्थ कर्म का फल समर्थ मिलता है। त्रिकालदर्शी बनने से - यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ, 'ऐसा नहीं वैसा होना चाहिए'..... - यह सब क्वेश्चन-मार्क खत्म हो जाते हैं। नहीं तो बहुत क्वेश्चन उठते हैं। 'क्यों' का क्वेश्चन उठने से व्यर्थ संकल्पों की क्यू लग जाती है और त्रिकालदर्शी बनने से फुलस्टॉप लग जाता है। नथिंग न्यु - तो फुल स्टॉप लग गया ना! फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दी लगाने से बिन्दु रूप सहज याद आ जाता है।

बापदादा सदा कहते हैं कि अमृतवेले सदा तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और जो हो गया, जो हो रहा है, नथिंगन्यु, तो फुलस्टॉप भी बिन्दी। यह तीन बिन्दी का तिलक अर्थात् स्मृति का तिलक। मस्तक स्मृति का स्थान है, इसलिए तिलक मस्तक पर ही लगाते हैं। तीन बिन्दियों का तिलक लगाना अर्थात् स्मृति में रखना। फिर सारा दिन अचल-अडोल रहेंगे। यह 'क्यूं' और 'क्या' ही हलचल है। तो अचल रहने का साधन है - अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। यह भूलो नहीं। जिस समय कोई बात होती है उस समय फुलस्टॉप लगाओ। ऐसे नहीं कि याद था लेकिन उस समय भूल गया। गाड़ी में यदि समय पर ब्रेक न लगे तो फायदा होगा या नुकसान? तो समय पर फुलस्टॉप लगाओ। नथिंग न्यु - होना था, हो रहा है। और साक्षी होकर के देखकर आगे बढ़ते चलो। तो त्रिकालदर्शी अर्थात् आदि, मध्य, अन्त - तीनों को जान जैसा समय, वैसा अपने को सदा सेफ रख सको। ऐसे नहीं कहो कि - 'यह समस्या बहुत बड़ी थी ना, छोटी होती तो मैं पास हो जाती लेकिन समस्या बहुत बड़ी थी!' कितनी भी बड़ी समस्या हो लेकिन आप तो मास्टर सर्वशक्तिवान हो ना! तो बड़े हुए ना! बड़े के आगे समस्या नहीं है लेकिन खेल है! इसको कहा जाता

है त्रिकालदर्शी। त्रिकालदर्शी आत्मा सदा ही निश्चिंत रहती है क्योंकि उसे निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है।

(09.01.1993)

(जानकी दादी से) अपनी हिम्मत और सर्व के सहयोग की दुआयें शरीर को चला रही हैं। समय पर शरीर भी सहयोग दे देता है। इसको कहते हैं एकस्ट्रा दुआओं की मदद। तो विशेष आत्माओं को यह एकस्ट्रा मदद मिलती ही है। थोड़ा शरीर को रेस्ट भी देना पड़ता है। अगर नहीं देते हैं तो वो खिटखिट करता है। जैसे औरों को जो चाहता है वो दे देते हो ना! किसको शान्ति चाहिए, किसको सुख चाहिए, किसको हिम्मत चाहिए-तो देते हो ना! तो शरीर को जो चाहिए वो भी दे दिया करो। इसको भी तो कुछ चाहिए ना! क्योंकि यह शरीर भी अमानत है ना! इसको भी सम्भालना तो पड़ता है ना! अच्छी हिम्मत से चला रही हो और चलना ही है। समय पर आवश्यकतानुसार जैसे शरीर आपको सहयोग दे देता है, तो आप भी थोड़ा-थोड़ा सहयोग दे दो। नॉलेजफुल तो हो ही। अच्छा है। क्योंकि इस शरीर द्वारा ही अनेक आत्माओं का कल्याण होना है। आप लोगों के सिर्फ साथ के अनुभव से ही सब बहुत बड़ी मदद का अनुभव करते हैं। हाजिर होना भी सेवा की हाजिरी हो जाती है। चाहे स्थूल सेवा न भी करें लेकिन हाजिर होने से हाजिरी पड़ जाती है। सेकेण्ड भी सेवा के बिना न रह सकते हो, न रहते हो। इसलिए सेवा का जमा का खाता जमा हो ही रहा है। बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो, बजाती रहेंगी। अच्छा पार्ट मिला है ना! इतना बढ़िया पार्ट ड्रामा अनुसार दुआओं के कारण मिला है! ये ब्राह्मण जन्म के आदि के संस्कार 'रहमदिल' और 'सहयोग की भावना' का फल है। चाहे तन से, चाहे मन से-रहमदिल और सहयोग की भावना का पार्ट आदि से मिला हुआ है। इसलिए उसका फल सहज प्राप्त हो रहा है। शारीरिक सहयोग की भी सेवा दिल से की है। इसलिए शरीर की आयु इन दुआओं से बढ़ रही है।

(चन्द्रमणि दादी से) बेहद की चक्रवर्ती बन गई-आज यहाँ, कल वहाँ! तो

इसको ही कहा जाता है विश्व की आत्माओं से स्वत: और सहज सम्बन्ध बढ़ना। विश्व का राज्य करना है, विश्व-कल्याणकारी हैं - तो कोने-कोने में पांव तो रखने चाहिएं ना। इसलिए देश-विदेश में चांस मिल जाता है। प्रोग्राम न भी बनाओ लेकिन यह ड्रामानुसार संगम की सेवा भविष्य को प्रत्यक्ष कर रही है। इसलिए बेहद की सेवा और बेहद के सम्बन्ध-सम्पर्क बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। स्टेट का राजा तो नहीं बनना है, विश्व का बनना है! पंजाब का राजा तो नहीं बनना है! वो तो निमित्त डयुटी है, डयुटी समझकर निभाते हो। बाकी ऑर्डर करें कि मधुबन निवासी बनना है, तो सोचेंगे क्या कि पंजाब का क्या होगा? नहीं। जब तक जहाँ की जो डयुटी है, बहुत अच्छी तरह से निभाना ही है।

(09.01.1993)

संगम का हर सेकेण्ड अच्छे ते अच्छा है - इस निश्चय से सहजयोगी बनो

सभी प्वाइंट्स का सार क्या है? प्वाइंट बनना। सब प्वाइंट्स का इसेन्स हुआ - प्वाइंट बनना। तो प्वाइट बनना सहज है या मुश्किल है? जो सहज बात होती है वो सदा होती है और मुश्किल होती है तो समटाइम (कभी-कभी) होती है। सबसे इजी (सहज) क्या है? प्वाइंट। प्वाइंट को लिखना सहज है ना! जब भी प्वाइंट रूप में स्थित नहीं होते तो क्वेश्चन-मार्क की क्यू होती है ना! क्वेश्चन-मार्क मुश्किल होता है! तो जब भी क्वेश्चन-मार्क आये तो उसके बदले इजी 'प्वाइंट' लगा दो। किसी भी बात को समाप्त करना होता है तो कहते हैं - इसको बिन्दी लगा दो। फुलस्टॉप लगाना आता है ना! फुलस्टॉप लगाने का सहज सलोगन याद रखो - जो हुआ, जो हो रहा है, जो होगा वह अच्छा होगा! क्योंकि क्वेश्चन तब उठता है जब अच्छा नहीं लगता है। इसलिए संगमयुग है ही अच्छे ते अच्छा, हर सेकेण्ड अच्छे ते अच्छा। इससे सदा सहज-योगी जीवन का अनुभव करेंगे! 'अच्छा' कहने से अच्छा हो ही जाता है। स्वयं भी अच्छे और जो एक्ट करेंगे वह भी अच्छी! अच्छे को देखकर के दूसरे आकर्षित अवश्य होंगे। सभी अच्छा ही पसन्द

करते हैं। अच्छा! सेवा अच्छी चल रही है ना! संख्या भी बढ़ाओ और क्वालिटी भी बढ़ाते चलो। ऐसे माइक तैयार करो जो एक के नाम से अनेकों का कल्याण हो जाए। स्वयं सदा सन्तुष्ट हो? अपने लिए तो कोई क्वेश्चन नहीं है ना! 'निश्चय' है फाउन्डेशन, निश्चय का फाउन्डेशन होगा तो कर्म आटोमेटिकली श्रेष्ठ होंगे। पहले स्मृति निश्चय की होती है। संकल्प में निश्चय अर्थात् दृढ़ता होगी तो कर्म आटोमेटिकली फल देंगे। अच्छा! सभी खुश और सन्तुष्ट हैं! सदा खुशी में नाचने वाले हैं! हलचल का समय समाप्त हो गया। पास्ट को पास्ट किया और फयुचर तो है ही बहुत सुन्दर! गोल्डन फयुचर है!

अच्छा, यह कौनसी भाषा वाले हैं? (स्पेनिश, पोर्चगीज) देखो, साइन्स के साधन आपके काम में तो आ रहे हैं ना! ड्रामा अनुसार साइन्स वालों को भी टच तभी हुआ है जब बाप को आवश्यकता है। साधन यूज़ करना अलग चीज़ है और साधनों के वश होना अलग चीज़ है।

(18.02.1993)

ज्ञान में तीन का महत्व है। त्रिकालदर्शी भी बनते हैं। तीनों काल को जानते हो। या सिर्फ वर्तमान को जानते हो? कोई भी कर्म करते हो तो त्रिकालदर्शी बनकर कर्म करते हो या सिर्फ एकदर्शी बनकर कर्म करते हो? क्या हो - एककाल दर्शी या त्रिकालदर्शी? तो कल क्या होने वाला है - वह जानते हो? कहो—हम यह जानते हैं कि कल जो होगा वह बहुत अच्छा होगा। ये तो जानते हो ना! तो त्रिकालदर्शी हुए ना। जो हो गया वो भी अच्छा, जो हो रहा है वह और अच्छा और जो होने वाला है वह और बहुत अच्छा! यह निश्चय है ना कि अच्छे से अच्छा होना है, बुरा नहीं हो सकता। क्यों? अच्छे से अच्छा बाप मिला, अच्छे से अच्छे आप बने, अच्छे से अच्छे कर्म कर रहे हो। तो सब अच्छा है ना। कि थोड़ा बुरा, थोड़ा अच्छा है? जब मालूम पड़ गया कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, तो श्रेष्ठ आत्मा का संकल्प, बोल, कर्म अच्छा होगा ना! तो यह सदा स्मृति रखो कि - कल्याणकारी

बाप मिला तो सदा कल्याण ही कल्याण है। बाप को कहते ही हैं विश्व-कल्याणकारी और आप मास्टर विश्व-कल्याणकारी हो! तो जो विश्व का कल्याण करने वाला है उसका अकल्याण हो ही नहीं सकता। इसलिए यह निश्चय रखो कि हर समय, हर कार्य, हर संकल्प कल्याणकारी है। संगमयुग को भी नाम देते हैं - कल्याणकारी युग। तो अकल्याण नहीं हो सकता। तो क्या याद रखेंगे? जो हो रहा है वह अच्छा और जो होने वाला वह बहुत-बहुत अच्छा। तो यह स्मृति सदा आगे बढ़ाती रहेगी। अच्छा, सभी कोने-कोने में बाप का झण्डा लहरा रहे हो। सभी बहुत हिम्मत और तीव्र पुरुषार्थ से आगे बढ़ रहे हो और सदा बढ़ते रहेंगे। फ्युचर दिखाई देता है ना। कोई भी पूछे - आपका भविष्य क्या है? तो बोलो - हमको पता है, बहुत अच्छा है।

(26.03.1993)

दादी जानकी से मुलाकात :- अच्छा पार्ट बजाया ना। जहाँ भी हैं, विशेष पार्टधारी विशेष पार्ट बजाने के सिवाए रह नहीं सकते। यह ड्रामा की नूँध है। अच्छा। चक्कर लगाना बहुत अच्छा है। चक्कर लगाया फिर स्वीट होम में आ गये। सेवा का चक्कर अनेक आत्माओं के प्रति विशेष उमंग-उत्साह का चक्कर है। सब ठीक है ना? अच्छा ही अच्छा है। ड्रामा की भावी खींचती ज़रूर है। आप रहना चाहो लेकिन ड्रामा में नहीं है तो क्या करेंगे। सोचते भी जाना पड़ेगा। क्योंकि सेवा की भावी है तो सेवा की भावी अपना कार्य कराती है। आना और जाना यही तो विधि है। अच्छा। संगठन अच्छा है।

(02.12.1993)

अपनी श्रेष्ठ स्थिति बनाने के लिए अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ

सदा अमृतवेले स्वयं को तीन बिन्दियों का तिलक देते हो? तिलक का अर्थ क्या है? स्मृति का तिलक। तो तिलक का बहुत महत्व होता है। तिलक

राज्य की भी निशानी है। जब राज्य देते हैं तो राज तिलक कहा जाता है और भक्ति में भी तिलक की निशानी ज़रूर रखेंगे और सुहाग और भाग्य की निशानी भी तिलक है। तो तिलक का महत्व है। क्योंकि तिलक स्मृति की निशानी है। तो ज्ञान मार्ग में भी स्मृति का ही महत्व है ना। जैसी स्मृति वैसी स्थिति होती है। अगर स्मृति श्रेष्ठ है तो स्थिति भी श्रेष्ठ होगी। अगर स्मृति व्यर्थ है तो स्थिति भी समर्थ की बजाय व्यर्थ हो जाती है। तो बाप ने तीन बिन्दियों का तिलक अर्थात् तीन स्मृतियों का तिलक दिया है। क्योंकि तीनों ही स्मृति आवश्यक हैं और तीनों ही बिन्दी सहज हैं। छोटे बच्चे को भी कहो कि बिन्दी लगाओ तो लगा देगा ना। तो मैं आत्मा हूँ, यह स्व की स्मृति फिर बाप की स्मृति और फिर श्रेष्ठ कर्म के लिये ड्रामा की स्मृति। ड्रामा चलता रहता है, बीत जाता है। जो अभी प्रेज़न्ट है वो सेकण्ड में पास्ट हो जाता है। तो बीत जाता है इसीलिये बीती सो बीती, फुलस्टॉप (.)। तो बिन्दी हो गई ना। तो यह तीनों स्मृति सदा हैं तो स्थिति भी श्रेष्ठ है। सिर्फ़ आत्मा की स्मृति नहीं। आत्मा के साथ बाप की स्मृति है ही है और बाप के साथ ड्रामा की स्मृति भी अति आवश्यक है। अगर ड्रामा का ज्ञान नहीं है तो भी कर्म में नीचे-ऊपर होंगे। जो भी भिन्न-भिन्न परिस्थितियां आती हैं, उसमें ड्रामा का ज्ञान अति आवश्यक है। अनुभवी हो ना। क्या स्मृति रहती है? होना ही है, नथिंग न्यु। पहले से ही जानते हैं कि यह होना है तो विचलित नहीं होंगे। जब नॉलेज है कि होना ही है तो खेल समझकर देखेंगे। तूफ़ान नहीं लेकिन खेल है। नाटक में भी तूफ़ान, बाढ़ सब देखते हैं ना, लेकिन विचलित होते हैं क्या? क्योंकि समझते हैं कि यह ड्रामा है। तो अचल हो या थोड़ा-थोड़ा हिलते हो? क्यों, क्या होता है? क्या होगा, कैसे होगा .. यह आता है? जब ड्रामा का ज्ञान है तो अचल-अडोल हैं। ड्रामा का ज्ञान नहीं तो हलचल है।

चिंताओं से फ्री सदा निश्चिंत वा बेफ़िक्र बादशाह रहने के लिए निश्चयबुद्धि बनो

सदा अपने को कल्प-कल्प की अधिकारी आत्मा अनुभव करते हो?

अनेक बार यह अधिकार प्राप्त किया है और आगे के लिये भी निश्चित है कि कल्प-कल्प करते ही रहेंगे। यह पक्का निश्चय है ना। क्योंकि निश्चय है इस ब्राह्मण जीवन का फ़ाउन्डेशन। अगर निश्चय का फ़ाउन्डेशन पक्का है तो कभी भी हिलेंगे नहीं। चाहे कितने भी तूफ़ान आ जाये, चाहे कितने भी भूकम्प हो जायें लेकिन हिलेंगे नहीं। क्योंकि फ़ाउन्डेशन पक्का है। अभी भी देखो, प्रकृति का भूकम्प आता है तो कौन सी बिल्डिंग गिरती है? जो कच्ची होती है। पक्के फ़ाउन्डेशन वाली नहीं गिरेगी। तो आपका फ़ाउन्डेशन कितना पक्का है? हिलने वाला है क्या? हिलेगी नहीं लेकिन थोड़ी दरार आ जायेगी? थोड़ी भी नहीं। क्योंकि कोई तो गिर जाते हैं कोई गिरते नहीं लेकिन थोड़ी दरार आ जाती है। तो आप उनसे भी पक्के हो। तो निश्चय की निशानी है-हर कार्य में मंसा में भी, वाणी में भी, कर्म में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी हर बात में सहज विजय हो। मेहनत करके विजयी बने, वह विजय नहीं है। सहज विजयी। तो निशानी दिखाई देती है या विजय प्राप्त करने में मेहनत लगती है? कभी सहज, कभी मेहनत? लेकिन निश्चय की निशानी है सहज विजय। अगर मेहनत लगती है तो समझो कुछ मिक्स है। संशय नहीं भी हो लेकिन कुछ व्यर्थ मिक्स है इसलिये सहज विजय नहीं होती। नहीं तो विजय निश्चयबुद्धि आत्माओं के लिये तो सदा एवररेडी है। उसका स्थान ही वह है। जहाँ निश्चय है, वहाँ विजय होगी। निश्चय वालों के पास ही जायेगी ना। तो निश्चय सब बातों में चाहिये। सिर्फ़ बाप में निश्चय नहीं। लेकिन अपने आपमें भी निश्चय, ब्राह्मण परिवार में भी निश्चय, ड्रामा के हर दृश्य में भी निश्चय। तभी कहेंगे कि सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि। अगर बाप में निश्चय है लेकिन अपने में नहीं है, चलते-चलते अपने से दिलशिकस्त होते हैं तो निश्चय नहीं है तब तो होते हैं। तो वह भी अधूरा निश्चय हुआ। बाप में भी है, अपने आपमें भी है लेकिन परिवार में नहीं है। परिवार के कारण डगमग होते हैं। तो भी अधूरा निश्चय कहेंगे। ड्रामा में भी फुल निश्चय हो। जो हुआ सो अच्छा हुआ। इसको कहते हैं ड्रामा में निश्चय। ऐसे सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि हैं? कभी तो फुल है, कभी आधा है। जब अनेक बार का नशा है तो अनेक बार

विजयी बने हो, अब रिपीट कर रहे हो। कोई नई बात नहीं कर रहे हो, रिपीट कर रहे हो। तो रिपीट करना तो सहज होता है ना। तो निश्चयबुद्धि विजयी-सदा यह स्मृति में रहे। निश्चय भी है और विजय भी है। ये नशा हो कि हमारी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी। विजय है और सदा होगी। तो अटल निश्चय हो। टलने वाला नहीं हो, थोड़ी सी बात हुई और निश्चय अटल नहीं रहे, ऐसा निश्चय नहीं हो। अटल निश्चय तो अटल विजय होगी। विजय की भावी टल नहीं सकती। अटल है। तो ऐसे निश्चयबुद्धि सदा हर्षित रहेंगे, निश्चिंत रहेंगे। क्योंकि चिन्ता खुशी को खत्म करती है। और निश्चिन्त हैं तो खुशी सदा रहेगी। तो निश्चयबुद्धि की दूसरी निशानी है निश्चिन्त। नहीं तो थोड़ी बात भी होगी तो चिन्ता होगी कि ये क्या हुआ, ये ऐसा हुआ। इस क्यों क्या से भी निश्चिन्त। क्या, क्यों, कैसे-ये चिन्ता की लहर है। अभी बड़ी चिन्ता नहीं होगी, इस रूप में होगी। होना नहीं चहिये था, हो गया, ऐसा, वैसा, क्यों, क्या, कैसा, ये शब्द बदल जाते हैं। तो ऐसा है कि कभी-कभी क्वेश्चन मार्क होता है? कई कहते हैं ना कि मेरे पास ही ये क्यों होता है? मेरे से ही क्यों होता है? मेरे पीछे ये बंधन क्यों है, मेरे पीछे माया क्यों आती है, मेरा ही हिसाब किताब कड़ा है क्यों? तो 'क्यों' आना माना चिन्ता की लहर है। तो इस चिन्ताओं से भी परे-इसको कहा जाता है निश्चिन्त। तो कौन हो? निश्चिन्त हो या थोड़ी-थोड़ी क्यों, क्या है? निश्चिन्त आत्मा का सदा सलोगन है अच्छा हुआ, अच्छा है और अच्छा ही होना है। बुराई में भी अच्छाई अनुभव करेंगे। बुराई से भी अपना पाठ पढ़ लेंगे। बुराई को बुराई के रूप में नहीं देखेंगे। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, निश्चिन्त। 'चिन्ता' शब्द से भी अविद्या हो। जैसे गायन है ना इच्छा मात्रम अविद्या। ऐसे चिन्ता की भी अविद्या हो। चिन्ता क्या होती है-यह अनुभव नहीं हो। तो ऐसी अवस्था इसको कहा जाता है निश्चिन्त। कोई भी बात आये तो 'क्या होगा' नहीं आयेगा, फ़ौरन ही यह आयेगा 'अच्छा होगा', बीत गया अच्छा हुआ। जहाँ अच्छा है वहाँ सदा बेफ़िक्र बादशाह हैं। तो निश्चयबुद्धि का अर्थ है बेफ़िक्र बादशाह। तो ऐसे है या थोड़ा-थोड़ा फ़िक्र कभी आ जाता है? तो बेफ़िक्र बादशाह ही बाप

समान है। बाप को फ़िक्र है क्या? इतना बड़ा परिवार होते भी फ़िक्र है क्या? सब कुछ जानते हुए, देखते हुए बेफ़िक्र। ऐसे बेफ़िक्र हो?

(09.12.1993)

सब कुछ बाप हवाले करना अर्थात् डबल लाइट बनना

सदा अपने को कमल पुष्प समान न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करते हो? क्योंकि जितना न्यारापन होगा उतना ही बाप का प्यारा होगा। चाहे कैसी भी परिस्थितियां हो, समस्यायें हों लेकिन समस्याओं के अधीन नहीं, अधिकारी बन समस्याओं को ऐसे पार करें, जैसे खेल-खेल में पार कर रहे हैं। खेल में सदा खुशी रहती है। चाहे कैसा भी खेल हो, लेकिन खेल है तो कैसा भी पार्ट बजाते हुए अन्दर खुशी में रहते हो? चाहे बाहर से रोने का भी पार्ट हो लेकिन अन्दर हो कि यह सब खेल है। तो ऐसे ही जो भी बातें सामने आती हैं-ये बेहद का खेल है, जिसको कहते हो ड्रामा और ड्रामा के आप सभी हीरो एक्टर हो, साधारण एक्टर तो नहीं हो ना। तो हीरो एक्टर अर्थात् एक्यूरेट पार्ट बजाने वाले। तब तो उसको हीरो कहा जाता है। तो सदा ये बेहद का खेल है-ऐसे अनुभव करते हो? कि कभी-कभी खेल भूल जाता है और समस्या, समस्या लगती है। कैसी भी कड़ी परिस्थिति हो लेकिन खेल समझने से कड़ी समस्या भी हल्की बन जाती है।

(23.12.1993)

ज्ञाता तो नम्बरवन हो गये हैं, सिर्फ़ एक बात में अलबेले बन जाते हो, वो है -'स्व को सेकण्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने और करने में फुलस्टॉप लगाकर परिवर्तन करना।' समझते भी हो कि यही कमज़ोरी सुख की अनुभूति में अन्तर लाती है, शक्ति स्वरूप बनने में वा बाप समान बनने में विघ्न स्वरूप बनती है फिर भी क्या होता है? स्वयं को परिवर्तन नहीं कर सकते, फुलस्टॉप नहीं दे सकते। ठीक है, समझते हैं—का कॉमा (,) लगा देते हैं, वा दूसरों को देख आश्चर्य

की निशानी (!) लगा देते हो कि ऐसा होता है क्या! ऐसे होना चाहिये! वा क्वेश्चन मार्क की क्यू (लाइन) लगा देते हो, क्यों की क्यू लगा देते हो। फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दु (.)। तो फुल स्टॉप तब लग सकता है जब बिन्दु स्वरूप बाप और बिन्दु स्वरूप आत्मा - दोनों की स्मृति हो। यह स्मृति फुल स्टॉप अर्थात बिन्दु लगाने में समर्थ बना देती है। उस समय कोई-कोई अन्दर सोचते भी हैं कि मुझे आत्मिक स्थिति में स्थित होना है लेकिन माया अपनी स्क्रीन द्वारा आत्मा के बजाय व्यक्ति वा बातें बार-बार सामने लाती है, जिससे आत्मा छिप जाती है और बार-बार व्यक्ति और बातें सामने स्पष्ट आती हैं। तो मूल कारण स्व के ऊपर कन्ट्रोल करने की कन्ट्रोलिंग पॉवर कम है। दूसरों को कन्ट्रोल करना बहुत आता है लेकिन स्व पर कन्ट्रोल अर्थात् परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाना कम आता है।

बापदादा कोई-कोई बच्चों के शब्द पर मुस्कराते रहते हैं। जब स्व के परिवर्तन का समय आता है वा सहन करने का समय आता है वा समाने का समय आता है तो क्या कहते हो? बहुत करके क्या कहते कि 'मुझे ही मरना है', 'मुझे ही बदलना है', 'मुझे ही सहन करना है' लेकिन जैसे लोग कहते हैं ना कि 'मरा और स्वर्ग गया' उस मरने में तो स्वर्ग में कोई जाते नहीं हैं लेकिन इस मरने में तो स्वर्ग में श्रेष्ठ सीट मिल जाती है। तो यह मरना नहीं है लेकिन स्वर्ग में स्वराज्य लेना है। तो मरना अच्छा है ना? क्या मुश्किल है? उस समय मुश्किल लगता है। मैं ग़लत हूँ ही नहीं, वो ग़लत है, लेकिन ग़लत को मैं राइट कैसे करूँ, यह नहीं आता। रांग वाले को बदलना चाहिये या राइट वाले को बदलना चाहिये? किसको बदलना है? दोनों को बदलना पड़े। 'बदलने' शब्द को आध्यात्मिक भाषा में आगे बढ़ना मानो, 'बदलना' नहीं मानो, 'बढ़ना'। उल्टे रूप का बदलना नहीं, सुल्टे रूप का बदलना। अपने को बदलने की शक्ति है? कि कभी तो बदलेंगे ही।

पवित्रता का अर्थ ही है—सदा संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क में तीन बिन्दु का महत्व हर समय धारण करना। कोई भी ऐसी परिस्थिति आये तो सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने में स्वयं को सदा पहले ऑफर करो - 'मुझे करना है'।

ऐसी ऑफर करने वाले को तीन प्रकार की दुआएं मिलती हैं–(1) स्वयं को स्वयं की भी दुआएं मिलती हैं, खुशी मिलती है, (2) बाप द्वारा, (3) जो भी श्रेष्ठ आत्मायें ब्राह्मण परिवार की हैं उन्हों के द्वारा भी दुआएं मिलती हैं। तो मरना हुआ या पाना हुआ, क्या कहेंगे? पाया ना। तो फुल स्टॉप लगाने के पुरुषार्थ को वा कन्ट्रोलिंग पॉवर द्वारा परिवर्तन शक्ति को तीव्र गति से बढ़ाओ। अलबेलापन नहीं लाओ - ये तो होता ही है, ये तो चलना ही है. . . ये अलबेलेपन के संकल्प हैं। अलबेलापन परिवर्तन कर अलर्ट बन जाओ।

कई सोचते हैं बाप तो बाप है, कैसे समान बन सकते हैं? लेकिन जो निमित्त आत्मायें हैं वो तो आपके हमजिन्स हैं ना? तो जब वो बन सकती हैं तो आप नहीं बन सकते? तो लक्ष्य सभी का सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने का है। अगर हाथ उठवायेंगे कि 16 कला बनना है या 14 कला तो किसमें उठायेंगे? 16 कला। तो 16 कला का अर्थ क्या है? सम्पूर्ण ना। जब लक्ष्य ही ऐसा है तो बनना ही है। मुश्किल है नहीं, बनना ही है। छोटी-छोटी बातों में घबराओ नहीं। मूर्ति बन रहे हो तो कुछ तो हेमर लगेंगे ना, नहीं तो ऐसे कैसे मूर्ति बनेंगे! जो जितना आगे होता है उसको तूफ़ान भी सबसे ज्यादा क्रॉस करने होते हैं लेकिन वो तूफ़ान उन्हों को तूफ़ान नहीं लगता, तोहफ़ा लगता है। ये तूफ़ान भी गिफ्ट बन जाती है अनुभवी बनने की, तो तोहफ़ा बन गया ना। तो गिफ्ट लेना अच्छा लगता है या मुश्किल लगता है? तो ये भी लेना है, देना नहीं है। देना मुश्किल होता है, लेना तो सहज होता है।

ये नहीं सोचो–मेरा ही पार्ट है क्या, सब विघ्नों के अनुभव मेरे पास ही आने है क्या! वेलकम करो–आओ। ये गिफ्ट है। ज्यादा में ज्यादा गिफ्ट मिलती है, इसमें क्या? ज्यादा एक्यूरेट मूर्ति बनना अर्थात् हेमर लगना। हेमर से ही तो उसे ठोक-ठोक करके ठीक करते हैं। आप लोग तो अनुभवी हो गये हो, नथिंग न्यु। खेल लगता है। देखते रहते हो और मुस्कराते रहते हो, दुआयें देते रहते हो। टीचर्स बहादुर हो या कभी-कभी घबराती हो? ये तो सोचा ही नहीं था, ऐसे होगा, पहले

पता होता तो सोच लेते....। डबल फ़ॉरेनर्स समझते हो इतना तो सोचा ही नहीं था कि ब्राह्मण बनने में भी ऐसा होता है? सोच-समझकर आये हो ना या अभी सोचना पड़ रहा है? अच्छा!

कितना भी कोई कैसा भी हो लेकिन बापदादा अच्छाई को ही देखते हैं। इसलिये बापदादा सभी को अच्छा ही कहेंगे, बुरा नहीं कहेंगे। चाहे 9 बुराई हों और एक अच्छाई हो तो भी बाप क्या कहेगा? अच्छे हैं या कहेंगे कि ये तो बहुत खराब है, ये तो बड़ा कमज़ोर है? अच्छा। ये बड़ा ग्रुप हो गया है। (21 देशों के लोग आये हैं) अच्छा है, हाउसफुल हो तब तो दूसरा बनें। अगर फुल नहीं होगा तो बनने की मार्जिन नहीं होगी। आवश्यकता ही साधन को सामने लाती है।

(23.12.1993)

सदा विजयी आत्माओं का यादगार क्या है? विजय माला विजयी रत्नों की यादगार है। अनेक बार विजयी बने हैं तब तो यादगार बना है ना। अनेक बार के विजयी हैं - इस स्मृति से सदा समर्थ रहेंगे। जब अनेक बार किया हुआ कार्य है तो क्वेश्चन नहीं उठेगा कि कैसे करें, क्या करें। कोई नई बात तो है ही नहीं। कोई नई बात सुनी जाती है या करनी होती है तो क्वेश्चन उठता है - ऐसे करें, कैसे करें..। तो आपकी आत्मा में अनगिनत बार करने के संस्कार भरे हुए हैं। क्या होगा - ये संकल्प नहीं, लेकिन अच्छा ही हुआ पड़ा है। बाबा कहा और बाप के साथ का अनुभव उसी सेकेण्ड, उसी संकल्प में होता ही है। सेकण्ड की बात है।

ब्राह्मणों की जन्म पत्री में तीनों ही काल अच्छे से अच्छा है। जो हुआ वह भी अच्छा और जो हो रहा है वो और अच्छा और जो होने वाला है वह बहुत-बहुत-बहुत अच्छा। सिर्फ़ कहने मात्र नहीं लेकिन ब्राह्मण जीवन की जन्म पत्री सदा ही अच्छे से अच्छी है। सभी के मस्तक पर श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींची हुई है। अपने तकदीर की लकीर देखी है? अच्छी है ना? कितने जन्मों की गैरेन्टी है?

(31.12.1993)

दादियों से मुलाकात :- शक्ति सेना तीव्र गति से चल रही है ना। सेना को बापदादा के साथ-साथ आप निमित्त आत्मायें भी चलाने के निमित्त हो। बाप तो सदा साथ है और सदा ही रहेंगे। फिर भी बापदादा की श्रेष्ठ भुजायें तो हैं ना। बाप शक्ति देते हैं, बाप माइट रूप में है लेकिन निमित्त समझाने के लिये माइक तो आप निमित्त हो। कितनी मज़े की बातें सुनते हो। खेल लगता है ना। खेल है ना। खेल-खेल में विजयी बन सभी को मायाजीत विजयी बनाना ही है, ये तो गैरन्टी है ही। लेकिन बीच-बीच में ये खेल देखने पड़ते हैं। तो थकते तो नहीं हो ना? हंसते, खेलते, पार करते और कराते चलते। कोई भी ऐसी बात सुनते तो दिल से क्या निकलता? वाह ड्रामा वाह। हाय ड्रामा हाय नहीं निकलता। वाह ड्रामा! वाह-वाह करते हुए सभी को वाह-वाह बनना ही है। ये सब पार करना ही है।

(10.01.1994)

सदा क्या से क्या बन गये-ये स्मृति रहती है? कल कौड़ी तुल्य थे और आज हीरे तुल्य बन गये। तो कहाँ कौड़ी और कहाँ हीरा-कितना अन्तर है? जब अन्तर का मालूम होता है तो कितनी खुशी होती है! बाप ने क्या से क्या बना दिया! कल अन्धकार में थे और आज रोशनी में आ गये। तो अन्धकार में क्या मिला? ठोकरें मिली ना। अन्धकार में ठोकर खाते हैं और रोशनी में इनज्वाय करते हैं। तो कल क्या और आज क्या? ये सदा सामने स्पष्ट हो। और बापदादा सदा कहते हैं कि डबल हीरो बन गये। एक हीरे समान जीवन और दूसरा इस ड्रामा के हीरो एक्टर बन गये। तो डबल हीरो हो गये ना। अगर सारे ड्रामा के अन्दर देखो तो हीरो पार्टधारी कौन है? कहेंगे ना हम हैं। तो डबल हीरो हैं। तो डबल खुशी है ना।

(01.02.1994)

(दादी जी ने ब्रह्मा बाबा की स्टेम्प का एलबम बापदादा को दिखाया)

सबके बुद्धियों को टच किया है। सबके पुरुषार्थ और सबके श्रेष्ठ संकल्प

ने विजय प्राप्त करा ली। सफलता अधिकार है। पुरुषार्थ करना भी ड्रामा में नूँध है और सफलता प्राप्त होना भी निश्चित है। सिर्फ निश्चय को देखने के लिये बीच-बीच में हलचल होती है।

(09.03.1994)

आज बापदादा किस सभा में आये हैं? ये सारी सभा किन आत्माओं की है? बापदादा देख रहे हैं कि हर एक हाइएस्ट, रिचेस्ट हैं। दुनिया वाले तो कहते हैं रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड लेकिन आप सभी हैं रिचेस्ट इन कल्पा। इस समय का जमा किया हुआ ख़ज़ाना सारा कल्प साथ में चलता है। सारे कल्प में ऐसा कोई भी नहीं मिलेगा जो ये सोचे कि इस जन्म में तो रिचेस्ट हूँ लेकिन भविष्य में भी अनेक जन्म साहूकार से साहूकार रहेंगे। और आप सभी निश्चय और नशे से कहते हो कि हमारा ये ख़ज़ाना अनेक जन्म साथ रहेगा। गैरेन्टी है ना? तो ऐसा रिचेस्ट सारे कल्प में देखा? तो आज बापदादा अपने शाहन के भी शाह, राजाओं के भी राजा बच्चों को देख रहे हैं। एक-एक दिन में कितनी कमाई जमा करते हो? हिसाब निकालो, जमा का खाता कितना तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है? और बढ़ाने का साधन कितना सहज है! इसमें मेहनत है क्या? आपकी कमाई वा जमा खाता बढ़ने का सबसे सहज साधन है - बिन्दी लगाते जाओ और बढ़ाते जाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में भी बीती को बिन्दी लगाना। तो कमाई का आधार है बिन्दी लगाना। और कोई मात्रा है ही नहीं। क्या, क्यों, कैसे-ये क्वेश्चन मार्क की मात्रा, आश्चर्य की मात्रा, किसी की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि मास्टर नॉलेजफुल बन गये। तो 'कैसे' शब्द 'ऐसे' में बदल गया। बदल गया या अभी भी 'कैसे-कैसे' कहते हो? 'पता नहीं' ये शब्द संकल्प में भी बदल गया? त्रिकालदर्शी ये स्वप्न में भी नहीं सोच सकते तो मुख से तो बोलने का सवाल ही नहीं है। संगम पर सारा खेल ही तीन बिन्दियों का है। सबसे सहज बिन्दी होती या क्वेश्चन मार्क सहज है? बिन्दी सहज है ना? बिन्दी लगाने में कितना टाइम लगता? सेकण्ड से भी

कम। बिन्दी लगाना आता है कि कलम खिसक जाती है? कई बार बिन्दी के बजाय कलम भी लम्बी लकीर खींच लेती है। बिन्दी लगाने से एक सेकण्ड में आपके कितने ख़ज़ाने बच जाते हैं। ख़ज़ानों की लिस्ट तो जानते हो ना? अगर बिन्दी के बजाय और कोई मात्रा लगाते हो वा लग जाती है, तो सोचो ज्ञान का ख़ज़ाना गया, शक्तियों का ख़ज़ाना गया, गुणों का ख़ज़ाना गया, संकल्प का ख़ज़ाना गया, इनर्जी गई, श्वास सफल के बजाय असफलता में गया, समय गया! कितना गया? लम्बी लिस्ट हो गई ना? तो ये कभी भी नहीं सोचो कि एक-दो सेकण्ड ही तो गया। लेकिन एक सेकण्ड में गँवाया कितना? एक सेकण्ड भी कितना भारी हो गया? हर समय अपने जमा का खाता बढ़ाते चलो। कमाया क्या और गँवाया क्या? इन सभी ख़ज़ानों में से कितने ख़ज़ाने गँवाये? बापदादा भी बच्चों के जमा के खाते चेक करते रहते हैं। जब खाता देखते हैं तो मुस्कराते रहते हैं। क्या देखते होंगे जो मुस्कराते हैं? अमृतवेले मिलन भी मनाते, रूहरिहान भी करते, वायदे भी बहुत अच्छे करते कि ये करेंगे, ये करेंगे, बहुत अच्छी-अच्छी बातें करते हैं लेकिन चलते-चलते सारे दिन में कोई न कोई ख़ज़ाना गँवा भी देते हैं। फिर आधार क्या बनाते हैं? बापदादा को भी अपनी अच्छी-अच्छी बातें सुनाने लगते हैं। अगर व्यर्थ संकल्प चला तो क्या ये जमा हुआ या गँवाया?

(14.12.1994)

दादी जानकी से - अच्छा है उड़ने में होशियार हो गई है। जीवन दान मिला है। और जितनी सेवा करते जाते तो जीवन की तन्दुरुस्ती और बढ़ती जाती है। क्योंकि सबकी दुआएं तन्दुरुस्त बना देती हैं। बाप की तो मदद है ही लेकिन दुआयें जवान बना रही हैं। जब किसको दुआयें मिलती हैं ना, या कोई भी खुशी, शान्ति की प्राप्ति होती है तो मुख से, दिल से यही दुआयें होती हैं कि हमारी आयु आपको लग जाये। कार्ड में भी क्या भेजते हैं कि हमारी आयु आपको मिल जाये। तो आप एक चक्र में हज़ारों की सेवा करते हो तो यही हज़ार गुणा दुआयें मिल जाती हैं।

अच्छा है, सभी अपनी-अपनी सेवा अच्छी करते रहते हो।

सभी का दादियों में शुभ मोह है ना? साधारण मोह तो नहीं है ना। दु:ख देने वाला मोह नहीं, सुख देने वाला। लेकिन जितना मोह, उतने ही निर्मोही। न्यारे भी और प्यारे भी। ऐसे है ना? कि सिर्फ प्यारे हैं, न्यारे नहीं? न्यारे और प्यारे दोनों का बैलेन्स रखने वाले। ये भी ड्रामा में आदि से विशेष आत्माओं का निमित्त बनने का पार्ट है। पालना ली भी बहुत है, जितनी आप लोगों ने पालना ली है डायरेक्ट बाप की, उतनी इन्होंने तो नहीं ली है। तो जितनी पालना ली है उतनी पालना करने का पार्ट भी मिला है। तो सब खुश हैं? हज़ार साल सभी की आयु बन जाये! हज़ार साल! घर नहीं जाना है? पुरानी दुनिया में ही रहना है?

अच्छा है, यह म्युजियम भी कमाल करेगा। ये है दृढ़ता का प्रत्यक्ष स्वरूप। तो दृढ़ता सफलता के लिये असम्भव से भी सम्भव करा देती है। हिम्मत वाले हैं। तो सभी जो विशेष निमित्त बने हैं उन्हों को विशेष याद प्यार। यह भी सेवा का अच्छा साधन है, कोई न कोई निमित्त बन अपना भाग्य बनाते हैं। देने वाले पहले ही ड्रामा में नूँधे हुए हैं।

(23.12.1994)

बापदादा देख रहे थे कि जो भी बच्चे अपने को ब्राह्मण कहलाते हैं वो सभी ये फ़लक से कहते हैं कि हम निश्चयबुद्धि हैं। तो बापदादा सभी निश्चयबुद्धि बच्चों से पूछते हैं, जब आप सभी कहते हो कि हम निश्चयबुद्धि विजयी हैं तो कभी विजय, कभी हार क्यों होती है? जब कभी-कभी थोड़ी हलचल होती है तो विजयी सदा हो कि बीच-बीच में घुटका और झुटका होता है? निश्चय का फाउण्डेशन चारों ओर से मजबूत है या चारों ओर के बजाय कभी एक और कभी दो ओर ढीले हो जाते हैं? कोई भी चीज को मजबूत किया जाता है तो चारों ओर से टाइट किया जाता है ना। अगर एक साइड भी थोड़ा-सा हलचल वाला हो तो हिलेगा ना! तो चारों प्रकार का निश्चय अर्थात् बाप में, आप में, ड्रामा में और ब्राह्मण परिवार

में निश्चय। ये चार ही तरफ के निश्चय को जानना नहीं लेकिन मानकर चलना।

ऐसे नहीं समझना - कोई बात नहीं, परिवार से नहीं बनती है, बाप से तो बनती है! ड्रामा अगर भूल जाता है तो बाप तो याद रहता ही है! लेकिन कोई भी कमजोरी एक ही समय पर होती है, स्व स्थिति अर्थात् स्व-निश्चय भी अगर कमजोर होता है तो विजय निश्चित के बजाय हलचल में आ जाती है। तो बापदादा निश्चय के फाउण्डेशन को चेक कर रहे थे। क्या देखा?

सदा चार ही प्रकार का निश्चय एक समय पर साथ नहीं रहता, कभी रहता कभी हिलता इसलिये सदा विजयी का अनुभव नहीं कर पाते हैं। फिर सोचते हैं - होना तो ये चाहिये लेकिन पता नहीं क्यों नहीं हुआ? किया तो बहुत मेहनत, सोचा तो बहुत अच्छा.... लेकिन सोचना और होना इसमें अन्तर पड़ जाता है। इसका अर्थ ही है कि निश्चय के चारों तरफ मजबूत नहीं हैं। और हंसी की बात तो ये है कि ड्रामा भी कह रहे हैं, तो ड्रामा, है तो ड्रामा.... लेकिन अच्छी तरह से हिल भी रहे हैं। कभी संकल्प में हिलते, कभी बोल तक भी हिल जाते, कभी कर्म तक भी आ जाते। उस समय क्या लगता होगा, दृश्य सामने लाओ, ड्रामा-ड्रामा भी कह रहे हैं और हिलडुल भी रहे हैं! लेकिन निश्चयबुद्धि की निशानी है निश्चित विजयी। अगर विधि ठीक है तो सिद्धि प्राप्त न हो, ये हो नहीं सकता। तो जब भी कोई भी कार्य में विजय प्राप्त नहीं होती है तो समझ लो कि निश्चय की कमी है। चारों ओर चेक करो, एक ओर नहीं।

और बात, निश्चयबुद्धि की निशानी जैसे निश्चित विजय है वैसे निश्चिन्त होंगे। कोई भी व्यर्थ चिन्तन आ ही नहीं सकता। सिवाए शुभ चिन्तन के व्यर्थ का नाम-निशान नहीं होगा। ऐसे नहीं, व्यर्थ आया, भगाया। निश्चयबुद्धि के आगे व्यर्थ आ नहीं सकता। क्योंकि क्यों, क्या, और कैसे - ये व्यर्थ होता है। जब ड्रामा के राज़ को जानते हैं, आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हैं तो जो ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हैं वो छोटी-सी बात के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जान सकते! न जानने के कारण क्यों, क्या, कैसे, ऐसे-ये व्यर्थ संकल्प चलते हैं। अगर

ड्रामा में अटल निश्चय है, नॉलेजफुल भी हैं, पॉवरफुल भी हैं तो व्यर्थ संकल्प हिलाने की हिम्मत भी नहीं रख सकते। परन्तु जब हिलते हैं तो सोचते हैं पता नहीं क्या हो गया! तो बापदादा हंसते हैं कि ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जान लिया, अपने 84 जन्म को जान लिया और एक बात को नहीं जानते! बड़े होशियार हो! होशियारी दिखाते हो ना समय प्रति समय! कल्प वृक्ष के सभी पत्तों को जानते हो कि नहीं? सभी वृक्ष के फाउण्डेशन में बैठे हो या 7-8 बैठे हैं? तो जड़ में बैठे हुए वृक्ष को जानते हो? पत्ते-पत्ते को जानते हो और ये पता नहीं कैसे? तो निश्चय की निशानियाँ निश्चिन्त स्थिति, इसका अनुभव करो। होगा, नहीं होगा, क्या होगा, कर तो रहे हैं, देखें क्या होता है - इसको निश्चिन्त नहीं कहेंगे। और फिर बाप के आगे ही फरियाद करते हैं - आप मददगार हो ना, आप रक्षक हो ना, आप ये हो ना, आप ये हो ना....। फरियाद करना अर्थात् अधिकार गँवाना। अधिकारी फरियाद नहीं करेंगे - ये कर लो ना, ये हो जाये ना। तो निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चिन्त। तो ये प्रैक्टिकल निशानियाँ अपने आपमें चेक करो। ऐसे अलबेले नहीं रह जाना - हम तो हैं ही निश्चयबुद्धि। कौन-सा निश्चय कमजोर है वो चेक करो और चेंज करो। सिर्फ चेक नहीं करना। बापदादा ने कहा था ना चेकर के साथ मेकर भी हो। सिर्फ चेकर नहीं। चेक करने का अर्थ ही है सेकण्ड में चेंज होना। लेकिन चेक करो और चेंज नहीं करो तो बहुत काल से स्वयं में दिलशिकस्त के संस्कार पक्के होते जायेंगे और जो बहुतकाल के संस्कार हैं वही अन्त में अवश्य सामना करते रहेंगे। कोई सोचे अन्त में तो मैं सिवाए बाप के और कुछ नहीं सोचूँगा। लेकिन हो नहीं सकता। बहुतकाल का अभ्यास चाहिये। नहीं तो एक सेकण्ड सोचेंगे - शिवबाबा शिवबाबा शिवबाबा.... और दूसरे सेकण्ड माया कहेगी - नहीं, तुम्हारे में शक्ति नहीं है, तुम हो ही कमजोर, तो युद्ध चलती रहेगी। यदि निश्चिन्त नहीं होंगे तो ब्राह्मण जीवन के अन्तकाल का जो लक्ष्य वर्णन करते हो वो सहज कैसे होगा और अगर अन्त तक ये व्यर्थ संकल्प होंगे तो वही भूतों के, यमदूतों के रूप में आयेंगे। और कोई यमदूत नहीं आते हैं, ये व्यर्थ संकल्प अपनी

कमजोरियाँ, यही यमदूत के रूप में आते हैं। यमदूत क्या करते हैं? डराते हैं। और दूसरों के लिये कहेंगे विमान में जायेंगे अर्थात् उड़ती कला से पार हो जायेंगे। कोई विमान आदि नहीं हैं लेकिन उड़ती कला का अनुभव है। इसलिये पहले से ही चेक करके चेंज करो। कब तक करेंगे? बापदादा को खुश तो कर देते हैं - करेंगे, प्रतिज्ञा भी लिख देते हैं लेकिन वो कागज़ तक रहती हैं या जीवन तक?

(09.01.1995)

बापदादा ने पहले भी सुनाया था कि ड्रामा में जो भी बातें आती हैं उन बातों में बहुत अच्छा अक्ल है लेकिन कभी-कभी ब्राह्मण बच्चों में अक्ल थोड़ा कम हो जाता है। बात आती है और चली जाती है, लेकिन ब्राह्मण बच्चे बात को पकड़कर बैठते हैं। बात रूकती नहीं, चली जाती है लेकिन स्वयं बात को नहीं छोड़ते। तो बातों में अक्ल ज्यादा हुआ या ब्राह्मणों में? बातें अक्ल वाली हुई ना! कई बच्चे कहते हैं दो दिन से ये बात चल रही है, दो घण्टे ये बात चली और दो घण्टे में गँवाया कितना? दो दिन में गँवाया कितना? तो अक्ल वाले बनो।

(19.01.1995)

संगठन का मज़ा भी प्यारा है। वैसे आना तो प्रोग्राम प्रमाण ही, ज्यादा नहीं आना लेकिन आदत ऐसी होनी चाहिये जो सबमें एडजस्ट कर सके। एडजस्ट करने की पॉवर सदा विजयी बना देती है। ब्रह्मा बाप को देखा तो बच्चों से बच्चा बनकर एडजस्ट हो जाता, बड़ों से बड़ा बनकर एडजस्ट हो जाता। चाहे बेगरी लाइफ, चाहे साधनों की लाइफ, दोनों में एडजस्ट होना और खुशी-खुशी से होना, सोचकर नहीं। यहाँ दु:खी तो नहीं होते हो लेकिन खुशी के बजाय थोड़ा सोच में पड़ जाते हो - ये क्या हुआ, कैसे हुआ....। तो सोचने वाले को एडजस्ट होने के मजे में कुछ समय लग जाता है। अपने को चेक करो कि कैसी भी परिस्थिति हो, चाहे अच्छी हो, चाहे हिलाने वाली हो लेकिन हर समय, हर सरकमस्टांस के

अन्दर अपने को एडजस्ट कर सकते हैं? डबल फॉरेनर्स को अकेलापन भी अच्छा लगता है और कम्पैनियन भी बहुत अच्छे लगते हैं। लेकिन कम्पनी में हो या अकेले हो, दोनों में एडजस्ट होना - ये है ब्राह्मण जीवन। ऐसे नहीं, संगठन हो और माथा भारी हो जाये - नहीं, मुझे एकान्त चाहिये, ये घमसान में नहीं, मुझे अकेला चाहिये....। मन अकेला अर्थात् बाहरमुखता से अन्तर्मुख में चले जाओ तो अकेलापन है। कोई-कोई कहते हैं ना - अकेला कमरा चाहिये, दो भी नहीं चाहिये। अकेला मिले तो भी मौज़ से सोओ और दस के बीच में भी सोना हो तो मौज़ से सोओ। फॉरेनर्स दस के बीच में सो सकते हैं कि मुश्किल है? सो सकते हैं? (हाँ जी) अच्छा, अभी अगले वर्ष 20-20 को सुलायेंगे। देखो समय बदलता रहता है और बदलता रहेगा। दुनिया की हालतें नाज़ुक हो रही हैं और भी होंगी। होनी ही है। अभी सिर्फ एक स्थान पर अलग-अलग होती हैं, आखिर में सब तरफ इकट्ठी होगी। तो नाज़ुक समय तो आना ही है। समय नाज़ुक हो लेकिन आपकी नेचर नाज़ुक नहीं हो। कइयों की नेचर बहुत नाज़ुक होती है ना, थोड़ा-सा आवाज़ हुआ, थोड़ा-सा कुछ हुआ तो डिस्टर्ब हो गये। इसको कहते हैं नाज़ुक स्थिति, नाज़ुक नेचर। तो नाज़ुक नेचर नहीं हो। जैसा समय वैसा अपने को एडजस्ट कर सको। ये अभ्यास आगे चलकर आपको बहुत काम में आयेगा। क्योंकि हालतें सदा एक जैसी नहीं रहनी है। और फाइनल पेपर आपका नाज़ुक समय पर होना है। आराम के समय पर नहीं होना है। नाज़ुक समय पर होना है। तो जितना अभी से अपने को एडजस्ट करने की शक्ति होगी तो नाज़ुक समय पर पास विद् ऑनर हो सकेंगे। पेपर बहुत टाइम का नहीं है, पेपर तो बहुत थोड़े समय का है लेकिन चारों ओर की नाज़ुक परिस्थितियाँ, उनके बीच में पेपर देना है। इसलिये अपने को नेचर में भी शक्तिशाली बनाओ। क्या करें, मेरी नेचर ये है, मेरी आदत ही ऐसी है, ये नहीं। इसको नाज़ुक नेचर कहा जाता है। देखो, बापदादा ने स्थापना के आदि में सब अनुभव करा लिया। जब आदि हुई तो राजकुमार और राजकुमारियों से भी ज्यादा पालना, साधन, सब अनुभव कराया और आगे चलकर बेगरी लाइफ का

भी पूरा अनुभव कराया। तो जिन्होंने दोनों अनुभव किया उनकी आदत बन गई। तो आप लोगों के आगे तो ऐसा समय आया नहीं है लेकिन आना है। जहाँ भी रहते हो, सभी हिलने हैं, सब आधार टूटने हैं। तो ऐसे टाइम पर क्या चाहिये? एक ही बाप का आधार। आप लोग तो बहुत-बहुत-बहुत लक्की हो, जो आने का समय आपका सहज साधनों का है। सहज साधनों के साथ-साथ आपका ब्राह्मण जन्म है। लेकिन साधन और साधना - साधनों को देखते साधना को नहीं भूल जाना। क्योंकि आखिर में साधना ही काम में आनी है। समझा?

उत्साह में रहने वाले अर्थात् सदा उत्सव मनाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। कभी भी उत्साह कम नहीं होना चाहिये। पहले भी सुनाया था - ब्राह्मण जीवन का सांस है उमंग-उत्साह। अगर सांस चला जाये तो जीवन सेकेण्ड में खत्म हो जायेगी ना! तो ब्राह्मण जीवन में यदि उमंग-उत्साह का सांस नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। जो सदा उमंग-उत्साह में होगा, वो फ़लक से कहेगा कि ब्राह्मण हैं ही उत्साह-उमंग के लिये। और जिसका उमंग-उत्साह कम हो जाता है उसके बोल ही बदल जाते हैं। वो कहेगा - हैं तो सही...., होना तो चाहिये...., हो जायेगा.... तो ये भाषा और उस भाषा में कितना अन्तर है! उसके हर बोल में 'तो' जरूर होगा - होना तो चाहिये.... तो ये जो 'तो-तो' होता है ना, ये उमंग-उत्साह का प्रेशर कम होने से ही ऐसे बोल, कमजोरी के बोल निकलते हैं। तो उमंग-उत्साह कभी कम नहीं होना चाहिये। उमंग-उत्साह कम क्यों होता है? बापदादा कहते हैं सदा वाह-वाह कहो और कहते हैं व्हाई-व्हाई। अगर कोई भी परिस्थिति में व्हाई शब्द आ जाता है तो उमंग-उत्साह का प्रेशर कम हो जाता है। बापदादा ने अगले साल भी विशेष डबल फारेनर्स को कहा था कि व्हाई शब्द को ब्राह्मण डिक्शनरी में चेंज करो, जब व्हाई शब्द आये तो फ्लाय शब्द याद रखो तो व्हाई खत्म हो जायेगा। कोई भी परिस्थिति छोटी भी जब बड़ी लगती है तो व्हाई शब्द आता है - ये क्यों, ये क्या.... और फ्लाय कर लो तो परिस्थिति क्या होगी? छोटा-सा खिलौना। तो जब भी व्हाई शब्द मन में आवे तो कहो ब्राह्मण डिक्शनरी में व्हाई शब्द नहीं है, फ्लाय है।

क्योंकि व्हाई-व्हाई, हाय-हाय करा देता है। बापदादा को हंसी भी आती है, एक तरफ कहेंगे - नहीं, हमारे जैसा श्रेष्ठ भाग्य किसका नहीं है। अभी-अभी यह कहेंगे और अभी-अभी उत्साह कम हुआ तो कहेंगे - पता नहीं मेरा भाग्य ही ऐसा है! मेरे भाग्य में इतना ही है! तो हाय-हाय हो गया ना! तो जब भी हाय-हाय का नज़ारा आवे तो वाह-वाह कर लो तो नज़ारा भी बदल जायेगा और आप भी बदल जायेंगे।

(26.02.1995)

बापदादा बहुत सहज शब्दों में युक्ति बता रहे हैं कि जब भी कोई परिस्थिति या प्रकृति हलचल के रूप में आये तो दो शब्द याद रखो, विधि है - या नॉट करो या डॉट लगाओ। नॉट या डॉट। अगर कोई बात रांग है तो यही सोचो नॉट माना नहीं करना है। न सोचना है, न करना है, न बोलना है। और डॉट लगा दो तो नॉट हो ही जायेगा। सोचो नॉट, लगाओ डॉट। फिनिश। डॉट (बिन्दी) लगाने में कितना टाइम लगता है? सेकण्ड से भी कम। लेकिन होता क्या है? समझते हो कि यह नहीं करना है, ठीक नहीं है लेकिन डॉट लगाना नहीं आता है। नॉलेजफुल तो बन गये लेकिन सिर्फ नॉलेजफुल नहीं चाहिये, नॉलेज के साथ पॉवरफुल भी चहिये। तो पॉवरफुल स्थिति की कमजोरी है इसीलिये डॉट नहीं लगा सकते हो। और जिसे डॉट लगाना आयेगा वो बाप को भी नहीं भूलेगा, बाप भी डॉट (बिन्दी) है। आप भी तो डॉट हो। तो सभी याद आ जायेगा। फुल स्टॉप। क्वेश्चन मार्क (?), आश्चर्य की मात्रा (!) या कॉमा (,) ये नहीं दो, फुल स्टॉप (.)। फुल स्टॉप की मात्रा इज़ी है ना। और सब तो मुश्किल है। और सबसे मुश्किल है क्वेश्चन मार्क। वो लगाने बहुत जल्दी आता है। सुनाया है ना कि व्हाई शब्द आये तो क्या करो? फ्लाय। ऊपर उड़ जाओ। व्हाई नहीं फ्लाय। फ्लाय करना आता है?

एक सेकण्ड में डॉट लगा सकते हो? अभी-अभी कर्म में और अभी-अभी कर्म से न्यारे, कर्म के सम्बन्ध से न्यारे हो सकते हो? यह एक्सरसाइज़ आती

है? किसी भी कर्म में बहुत बिज़ी हो, मन-बुद्धि कर्म के सम्बन्ध में लगी हुई है, बन्धन में नहीं, सम्बन्ध में, लेकिन डायरेक्शन मिले - फुल स्टॉप। तो फुल स्टॉप लगा सकते हो कि कर्म के संकल्प चलते रहेंगे? यह करना है, यह नहीं करना है, यह ऐसे है, यह वैसे है....। तो यह प्रैक्टिस एक सेकण्ड के लिये भी करो लेकिन अभ्यास करते जाओ, क्योंकि अन्तिम सर्टीफिकेट एक सेकण्ड के फुल स्टॉप लगाने पर ही मिलना है। सेकण्ड में विस्तार को समा ले, सार स्वरूप बन जाये। तो यह प्रैक्टिस जब भी चांस मिले, कर सकते हो तो करते रहो। ऐसे नहीं, योग में बैठेंगे तो फुल स्टॉप लगेगा। हलचल में फुल स्टॉप। इतनी पॉवरफुल ब्रेक है? कि ब्रेक लगायेंगे यहाँ और ठहरेगी वहाँ! और समय पर फुल स्टॉप लगे, समय बीत जाने के बाद फुल स्टॉप लगाया तो उससे फायदा नहीं है। सोचा और हुआ। सोचते ही नहीं रहो कि मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, आत्मा हूँ, मेरे को फुल स्टॉप लगाना है और कुछ नहीं सोचना है, यह सोचते भी टाइम लग जायेगा। ये सेकण्ड का फुल स्टॉप नहीं हुआ। ये अभ्यास स्वयं ही करो। कोई को कराने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि नये चाहे पुराने, सभी यह विधि तो जानते हैं ना! तो अभ्यास बहुत काल का चाहिये। उस समय समझो - नहीं, मैं फुल स्टॉप लगा दूँगी! नहीं लगेगा, यह पहले से ही समझना। उस समय, समय अनुसार कर लेंगे! नहीं, होगा ही नहीं। बहुत काल का अभ्यास काम में आयेगा। क्योंकि कनेक्शन है। यहाँ बहुतकाल का अभ्यास बहुतकाल का राज्य-भाग्य प्राप्त करायेगा। अगर अल्पकाल का अभ्यास है तो प्राप्ति भी अल्पकाल की होगी। तो ये अभ्यास सारे दिन में जब भी चांस मिले करते रहो। एक सेकण्ड में कुछ बिगड़ता नहीं है। फिर काम करना शुरु कर दो। लेकिन हलचल में फुल स्टॉप लगता है या नहीं - ये चेक करो। कर्म के सम्बन्ध में आना और कर्म के बन्धन में आना इसमें भी फर्क है। अगर कर्म के बन्धन में आते हैं तो कर्म आपको खींचेगा, फुल स्टॉप नहीं लगाने देगा। और न्यारे-प्यारे होकर किसी भी कर्म के सम्बन्ध में हो तो सेकण्ड में फुल स्टॉप लगेगा। क्योंकि बन्धन नहीं है। बन्धन भी खींचता है और सम्बन्ध भी खींचता है लेकिन

न्यारे होकर सम्बन्ध में आना - यह अण्डरलाइन करना। इसी अभ्यास वाले ही पास विद् ऑनर होंगे। ये लास्ट कर्मातीत अवस्था है। बिल्कुल न्यारे होकर, अधिकारी होकर कर्म में आयें, बन्धन के वश नहीं।

(07.03.1995)

डबल विदेशियों को भी मेला अच्छा लगा? आप लोग ऐसे सोयेंगे, टेन्ट में सोयेंगे? कि नींद नहीं आयेगी? सोने के लिये तैयार हैं? ये तो तैयार हैं आप नहीं सुलाते हो। बहुत बहादुर हैं, एवररेडी हैं। अगर डनलप मिलेगा तो भी ठीक, जमीन मिलेगी तो भी ठीक। अच्छा, डबल विदेशी भी इस सीज़न में अच्छे उमंग-उत्साह वाले देखे। वृद्धि भी देखी, संख्या में भी वृद्धि है तो स्थिति में भी वृद्धि है। अभी बचपन का खेल समाप्त हो गया, अभी बड़े हो गये। अच्छा, सब ठीक है? मेला पसन्द आया? ऐसे तो नहीं सोचते-ये झमेला क्या है? नहीं, बहुत अच्छा। जो ड्रामा में होता है वो अच्छा है और अच्छे ते अच्छा रहेगा।

(31.03.1995)

(प्रसिद्ध गायक ओमव्यास जी ने नये गीतों की कैसेट का विमोचन बाबा से कराया) - अच्छा है, ड्रामा ने निमित्त बनाया है और निमित्त बनना ही भाग्य की निशानी है। तो भाग्य बना रहे हो और बनाते ही रहेंगे।

(07.11.1995)

ये भी ड्रामानुसार विशेष वरदाता का वरदान मिलता है। कोई भी आर्ट है तो आर्ट वरदान समझकर कार्य में लगाओ। ये बाप का वरदान ड्रामानुसार विशेष निमित्त बना है तो उससे कार्य सहज और सफल हुआ ही पड़ा है। ऐसे है ना? तो विशेष वरदानी आत्मायें हैं, उसको उसी विशेषता से कार्य में लगाते रहो। बाप का वरदान है - यह सदा स्मृति में रहे। तो आपके सिर्फ हाथ काम नहीं करेंगे लेकिन

बाप की शक्ति आपके हाथों के साथ काम करेगी। बहुत अच्छा है।

(16.11.1995)

दादियों से - जब आप और ये (दादी और दादी जानकी) मिलते हो तो आपको क्या लगता है? (दादियों ने कहा-बाबा आपको क्या लगता है?) बाप को तो अच्छा लगता है। आपको क्या लगता है? (बाबा ने अच्छी जोड़ी तैयार की है, देश-विदेश अलग होते भी साथ हैं) ये भी ड्रामा में पार्ट है। फिर भी ब्राह्मण परिवार के फाउण्डेशन हो ना। तो आप लोगों को भी अच्छा लगता है ना। बापदादा अपने निमित्त फाउण्डेशन वाली आत्माओं को अपने से भी आगे रखता है। क्योंकि अभी देखो बाप तो है ही निराकार, ब्रह्मा बाप भी आकारी हो गया, अभी साकार में सुनना पड़े, सुनाना पड़े, देखना पड़े, देना पड़े - इसके लिए निमित्त तो ये लोग हैं ना। और सहज चल रहे हैं ये देख आप सभी भी खुश होते हो ना? देखो आप द्वारा (दादी जानकी) ये विदेश सेवा नूँधी हुई थी तो ड्रामा को कोई बदल नहीं सकता। आपको जाना पड़ा और निमित्त बनना पड़ा। विदेश के लिए जरूरी है ना? (बाबा की सकाश है) बापदादा तो अलग हो ही नहीं सकता, ऐसा चिपका हुआ है। क्योंकि आप लोगों को सारा दिन यही कहना पड़ता कि बाबा यह करते, बाबा यह कहते.... बाबा-बाबा ही निकलता रहता है ना। याद कराने के लिए भी कहना पड़ता कि शिवबाबा याद है? कोई रो करके आये और आप बाबा-बाबा कहकर उसको हँसा देते हो। ठीक है?

(22.12.1995)

भारतवासियों से:- भारतवासी ठीक हैं? भारतवासियों को तो नशा है कि अगर भारत में बाप नहीं आते तो विदेशी कहाँ से आते? क्योंकि बापदादा को ड्रामा में गरीब निवाज़ कहा जाता है तो विदेश गरीब नहीं है, भारत गरीब है और बाप को गरीब पसन्द हैं। इसीलिये गरीब से गरीब भारत में आया, लण्डन में नहीं

आया। अमेरिका में भी नहीं आया। भारत अविनाशी है। अविनाशी खण्ड फिर भी भारत ही होगा। ये अमेरिका तो अभी निकली है, अभी खत्म हो जायेगी। बाप अविनाशी है तो अविनाशी खण्ड में ही आता है। भारत को नशा भी बहुत है। भारत को सबसे बड़ा नशा है कि हमने भगवान को भी अपने प्यार के रस्सी में बांध लिया है। देखो अभी भी भारत में आते हैं ना। आप सबको भी भारत में मिलने आना है। तो भारत भी कम नहीं और विदेश भी कम नहीं। दोनों लाडले हैं।

(31.12.1995)

जो बच्चे साकार के बाद में आये हैं वो सोचते हैं कि ब्रह्मा बाबा ने अपना साकार पार्ट इतना जल्दी क्यों पूरा किया? हम तो देखते ना! हम तो मिलते ना! सोचते हो ना? लेकिन कल्प पहले का भी गायन है कि कौरव सेना के निमित्त बने हुए महावीर का कल्याण किस द्वारा हुआ? शक्ति द्वारा हुआ ना! तो शक्तियों का पार्ट ड्रामा में साकार रूप में नूँधा हुआ है। और सब मानते भी हैं कि मातृ शक्ति के बिना इस विश्व का कल्याण होना असम्भव है। तो ब्रह्मा बाप फरिश्ता क्यों बना? साकार पार्ट परिवर्तन क्यों हुआ? अगर ब्रह्मा बाप फरिश्ता रूप नहीं धारण करता तो आप इतनी आत्मायें यहाँ पहुँच नहीं पाती। क्योंकि वायुमण्डल की भ्रान्तियाँ इस विश्व क्रान्ति के कार्य को हल्का कर रही थी। तो ब्रह्मा बाप का फरिश्ता बनना आप ज्यादा से ज्यादा बच्चों के भाग्य खुलने का कारण रहा। अभी फरिश्ते रूप में जो सेवा की फास्ट गति है वो देख रहे हो ना! फास्ट गति हुई या कम हुई है? फास्ट हुई है ना! तो फास्ट गति हुई तभी आप यहाँ पहुँचे हो। नहीं तो सोये हुए थे अच्छी तरह से। तो आज का दिवस ऐसा नहीं है जैसे लोग मनाते हैं - चला गया, चला गया। लेकिन उमंग-उत्साह आता है कि फालो फादर, हम भी ऐसे स्मृति स्वरूप नष्टोमोहा बनें। ये प्रैक्टिकल पाठ पढ़ने का दिवस है।

ट्रस्टी हैं अर्थात् पहले से ही सब कुछ छूट गया। ट्रस्टी माना सब बाप के हवाले कर दिया। मेरा क्या होगा! - बस गा गा आता है ना तो गड़बड़ होती है।

सब अच्छा है और अच्छा होना ही है, निश्चिन्त है - इसको कहा जाता है समर्थ स्वरूप। तो आज का दिन कौन सा है? समर्थ बनने का, नष्टोमोहा होने का। सिर्फ बाबा बहुत याद आये, गीत गाने का नहीं है। तो ब्रह्मा बाप का फरिश्ता रूप होना ड्रामा में परमात्म कार्य को प्रत्यक्ष करने का निमित्त कारण बना। ब्रह्मा बाबा है या है नहीं? (है) दिखाई तो देता नहीं!

देखो आप जो पीछे आये हो वो बहुत लक्की हो। क्यों? अभी सेवा के बने बनाये साधनों के समय पर आये। मक्खन निकाला 60 वर्ष वालों ने और मक्खन खाने वाले आप आ गये। आज हिस्ट्री सुनी होगी ना, इतनी मेहनत आप करते तो भाग जाते। और वर्तमान समय सेवा का वायुमण्डल बना हुआ है। अभी चाहे प्रेजीडेन्ट है, चाहे प्राइम मिनिस्टर है, चाहे कोई भी नेता है, मैजॉरिटी ये तो मानते हैं ना कि कार्य अच्छा है, हम कर सकते हैं या नहीं, वो बात अलग है। हरेक का पार्ट अपना है। लेकिन अच्छा कार्य है और ये कार्य और आगे बढ़ना चाहिये ये तो कहते हैं ना! पहले क्या कहते थे कि ब्रह्माकुमारियों की शक्ल भी नहीं देखना। अगर शुरु में निमन्त्रण देने जाते भी थे ना तो दरवाजा बन्द कर देते थे। तो आप तो अच्छे टाइम पर आये हो ना! सेवा का चांस बहुत है। जितनी सेवा करने चाहो उतनी कर सकते हो। अभी सभी समझते हैं कि साकार ब्रह्मा के बाद भी ब्रह्माकुमारियों ने सिल्वर जुबली भी मना ली, गोल्डन भी मना ली, अभी डायमण्ड तक पहुँच गये हैं। क्योंकि कोई भी बड़ा गुरु चला जाता है तो गड़बड़ हो जाती है। यहाँ गड़बड़ है क्या? यहाँ तो और ही वृद्धि है, बढ़ता जाता है। तो इससे सिद्ध है कि ये कार्य कराने वाला बाप परम आत्मा है, निमित्त माध्यम ब्रह्मा बाप है। अभी भी माध्यम ब्रह्मा बाप है। ये पार्ट अलग चीज़ है लेकिन माध्यम ड्रामा में पहले साकार ब्रह्मा रहा और अभी फरिश्ता रूप में ब्रह्मा है। ब्रह्मा को पिता कहेंगे, रचता तो ब्रह्मा है ना। ये तो पार्ट बीच-बीच में बच्चों की पालना करने के लिए निमित्त है। बाकी रचता ब्रह्मा है और रचना के कार्य में अभी भी अन्त तक ब्रह्मा का ही पार्ट है।

(18.01.1996)

(मधुबन के प्रफुल भाई ने एक्सीडेंट में शरीर छोड़ा है) बच्चा अच्छा था और सेवा के उमंग-उत्साह में भी रहा लेकिन हिसाब-किताब का टाइम बनता है तो कोई न कोई कारण से बन ही जाता है। बाकी बच्चा स्वयं ठीक था।

(बाबा जब बच्चों को मदद करता है तो उस टाइम क्यों नहीं की?) उनका हिसाब उसी ड्राइवर से उसी स्थान से होता है। भावी को नहीं टाल सकते। (डाक्टरों ने बचाने के बहुत प्रयास किये) सभी का प्यार भी था। मृत्यु की डेट टल नहीं सकती। भगवान भी बदल नहीं सकता।

(27.02.1996)

बाप को आप सभी को कर्मातीत बनाना ही है। बनना ही है ना कि बाप जबरदस्ती बनाये? बाप को बनाना है और आप सबको बनना ही है। यह है स्वीट ड्रामा। ड्रामा अच्छा लगता है ना? कि कभी कभी तंग हो जाते हो, ये क्या बना? यह बदलना चाहिए - सोचते हो? बाप कभी कहते हैं - बना बनाया ड्रामा है, यह बदल नहीं सकता। रिपीट होना है लेकिन बदल नहीं सकता। ड्रामा में इस आपके अन्तिम जन्म को पावर्स हैं। है ड्रामा, लेकिन ड्रामा में इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म में बहुत ही पावर्स मिली हुई हैं। बाप ने विल किया है इसीलिए विल पावर है।

(10.03.1996)

आप लोगों को अपना बनाना सहज है या मुश्किल है? अच्छा अपना बना लिया है या बना रहे हैं? बना लिया - पक्का? या कभी-कभी ऐसे (कांध पीछे) कर लेते हो? नाज़-नखरे तो नहीं करते हो? कभी-कभी बहुत खेल दिखाते हैं। तो बाप को तो अपना बनाया। बाप को अपना बनाना अर्थात् सदा साथ और हाथ का अनुभव करना। तो आदि रत्नों को बाप के साथ का अनुभव करना बहुत सहज है। क्योंकि साकार में साथ का अनुभव किया है। आपको फिर भी इमर्ज करना पड़ता है लेकिन इन्होंने प्रैक्टिकल तुम्हीं साथ रहना, खाना, चलना, फिरना... यह प्रैक्टिकल

साकार में अनुभव किया है। तो साकार में अनुभव की हुई चीज़ सहज याद रहती है। ये इन्हों का लक है कि बाप के साथ का अनुभव ये जब चाहें तब कर सकते हैं। ऐसे है? लेकिन ड्रामा में आप लोगों के लिए खास एक लिफ्ट है, जो अव्यक्त रूप में आये हैं, साकार रूप में ड्रामानुसार पीछे आये हैं, उन्हों को एक्स्ट्रा लिफ्ट है, कौन सी लिफ्ट है? जब चाहो तब बापदादा की एक्स्ट्रा मदद मिलती है। संकल्प का एक कदम आपका और सहयोग के बहुत कदम बाप के। इसीलिए आपको एक्स्ट्रा लिफ्ट है। समझा? आप भी कम नहीं हो।

(03.04.1996)

देखो आज दो विशेषतायें हैं। एक इस शान्तिवन को जो सभी ने उमंग-उत्साह से बनाया है उसका बापदादा के साथ-साथ आप बच्चे भी उद्घाटन कर रहे हैं और आज ड्रामानुसार नया वर्ष भी शुरू होने वाला ही है इसलिए बापदादा सभी बच्चों को अपनी दोनों बाहों में समाते हुए दोनों बातों की मुबारक दे रहे हैं। और जैसे अभी इस समय साकार रूप में बाप के साथ उमंग-उत्साह और खुशी में झूम रहे हो ऐसे ही नये वर्ष में सदा अव्यक्त रूप में साथी समझना, अनुभव करना - यह साथ का अनुभव बहुत प्यारा है। बापदादा को भी बच्चों के बिना अच्छा नहीं लगता है। (माइक बंद हो गया) पहला-पहला अनुभव है ना इसलिए यह भी ड्रामा में खेल समझना, कोई भी बात नीचे ऊपर नहीं समझना। अच्छा है और अच्छा ही रहेगा। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा करते आप भी अच्छे बन जायेंगे और ड्रामा की हर सीन भी अच्छी बन जायेगी क्योंकि आपके अच्छे बनने के वायब्रेशन कैसी भी सीन हो नगेटिव को पाजिटिव में बदल देगी, इतनी शक्ति आप बच्चों में है सिर्फ यूज़ करो। शक्तियां बहुत हैं, समय पर यूज़ करके देखो तो बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव करेंगे।

(31.12.1996)

(विनाश के पहले एक-एक कान्टीनेंट में एक-एक बार बाबा आये) देखो, ड्रामा। बाप लण्डन में भी आये, लेकिन मधुबन की महिमा तो मधुबन की है। आगे चलकर क्या होता है, वह बताने से मजा खत्म हो जायेगा। इसीलिए देखो आगे क्या होता है! अच्छा, सौगात को पार्शल कर दिया! वापस नहीं लेना। अच्छा-डबल विदेशी खुश हैं? डबल विदेशी सब आराम से रहे हुए हैं? (सभी भवन फुल हैं) कोई पटरानी नहीं बने हैं? अभी पटरानी बनायेंगे। आपकी जो अटैची है ना, उसको बिस्तरा बनाना, कम से कम तकिया तो बन सकता है। यह भी दृश्य अच्छा होगा ना, अटैची का तकिया होगा, सब आराम से विष्णु के माफिक लेटे हुए होंगे। कितना अच्छा होगा। डबल विदेशियों को पटरानी जरूर बनायेंगे। देखो शुरू-शुरू में स्थापना में पहले यह सभी विशेष आत्मायें तीन फुट की जगह पर सोई हैं। चार फुट भी नहीं, तीन फुट, पट में। विशेष महारथी पट में सोते थे तो जो आदि में हुआ वह आप अन्त में करेंगे ना! कारण तो नहीं बतायेंगे कि कमर में दर्द हो गया? जब कोई भी दर्द होता है ना तो डाक्टर्स भी कहते हैं - सीधा-सीधा पट जैसा सोओ। बेड पर नहीं सोओ, संदल पर सीधा सोओ तो हेल्थ भी ठीक हो जायेगी। यह तो सब एवररेडी हैं। डबल विदेशी अर्थात् डबल एवररेडी। अच्छा। खूब मनाओ।

(06.03.1997)

यह वर्ष विदाई और बधाई का है और इस वर्ष में विशेष जो बच्चों ने संकल्प किया है, वह प्रैक्टिकल में करने वालों को बापदादा की एक्स्ट्रा मदद भी मिलेगी। सिर्फ दृढ़ रहना। बीच-बीच में ड्रामा पेपर लेगा लेकिन संकल्प में दृढ़ रहना, संकल्प रूपी पांव हिले नहीं, अचल रहे तो बापदादा द्वारा एक्स्ट्रा मदद की अनुभूति होगी। सिर्फ लेने की शक्ति चाहिए। एक बल, एक भरोसा.. कुछ भी हो जाए, बनना ही है। यह संकल्प रूपी पांव मजबूत रखना। तो बातें आयेंगी भी लेकिन ऐसे ही अनुभव करेंगे जैसे प्लेन में बादल नीचे रह जाते हैं और स्वयं बादलों

के ऊपर रहते हैं। बादल एक मनोरंजन का दृश्य बन जाता है। ऐसे कितने भी काले बादलों जैसी बातें हों, जिसमें कुछ समस्या का हल या समाधान उस समय दिखाई न भी दे लेकिन यह दृढ़ निश्चय हो कि यह बादल आये हैं जाने के लिए। यह बादल बिखरने वाले ही हैं, रहने वाले नहीं हैं। ऐसे उड़ती कला की स्टेज पर स्थित हो जाओ तो कितने भी गहरे काले बादल बिखर जायेंगे और आप दृढ़ता के बल से सफल हुए ही पड़े हैं। घबराओ नहीं, यह कैसे होगा! अच्छा होगा, क्योंकि बापदादा जानते हैं जितना समय समीप आ रहा है उतना नई-नई बातें, संस्कार, हिसाब-किताब के काले बादल आयेंगे। यहाँ ही सब चुक्तू होना है। कई बच्चे कहते हैं कि दिन-प्रतिदिन और ही ऐसी बातें बढ़ती क्यों हैं? जिन बच्चों को धर्मराजपुरी में क्रास नहीं करना है, उन्हों के संगम के इस अन्तिम समय में स्वभाव-संस्कार के सब हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। धर्मराजपुरी में नहीं जाना है। आपके सामने यमदूत नहीं आयेंगे। यह बातें ही यमदूत हैं, जो यहाँ ही खत्म होनी हैं इसीलिए बीमारी बाहर निकलकर खत्म होने की निशानी है। ऐसे नहीं सोचो कि यह तो दिखाई नहीं देता है कि समय समीप है और ही व्यर्थ संकल्प बढ़ रहे हैं! लेकिन यह चुक्तू होने के लिए बाहर निकल रहे हैं। उन्हों का काम है आना और आपका काम है उड़ती कला द्वारा, सकाश द्वारा परिवर्तन करना। घबराओ नहीं। कई बच्चों की विशेषता है कि बाहर से घबराना दिखाई नहीं देता है लेकिन अन्दर मन घबराता है। बाहर से कहेंगे नहीं-नहीं, कुछ नहीं। यह तो होता ही है लेकिन अन्दर उसका सेक होगा। तो बापदादा पहले से ही सुना देता है कि घबराने वाली बातें आयेंगी लेकिन आप घबराना नहीं। अपने शस्त्र छोड़ नहीं दो। जो घबराता है ना तो जो भी हाथ में चीज़ होती है वह गिर जाती है। तो जब यह मन में भी घबराते हैं ना तो शस्त्र व शक्तियां जो हैं वह गिर जाती हैं, मर्ज हो जाती हैं। इसीलिए घबराओ नहीं, पहले से ही पता है। त्रिकालदर्शी बनो, माया से निर्भय बनो। संबंध में तो स्नेह और निर्माण। कोई कैसा भी हो आप दिल से स्नेह दो, शुभ भावना दो, रहम करो। निर्माण बन उसको आगे रख आगे बढ़ाओ। जिसको कहा जाता है

कारण रूपी निगेटिव को समाधान रूपी पॉजिटिव बनाओ। यह कारण, यह कारण, यह कारण... कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनाओ।

(14.12.1997)

दादियों से :- सदा एक जैसा खेल अच्छा भी नहीं लगता है। चेंज होना चाहिए। तो ड्रामा के खेल में भिन्न-भिन्न खेल दिखाई देते रहते हैं। अच्छा है। सभी संकल्प पूरे होते जाते हैं ना। जितना न्यारे और प्यारे बन संकल्प करते हैं तो वह सभी संकल्प पूरे हो जाते हैं। ब्राह्मणों का हर एक संकल्प सफलता के बीज से सम्पन्न होता है। जब बीज ही सफलता का है तो फल सफलता का ही निकलता है।

(24.02.1998)

एक दिन में कितना भी बड़े ते बड़ा मल्टी-मल्टी मिल्युनर हो लेकिन आप जैसा रिचेस्ट हो नहीं सकता। इतना रिचेस्ट बनने का साधन क्या है? बहुत छोटा सा साधन है। लोग रिचेस्ट बनने के लिए कितनी मेहनत करते हैं और आप कितना सहज मालामाल बनते जाते हो। जानते हो ना साधन! सिर्फ छोटी सी बिन्दी लगानी है बस। बिन्दी लगाई, कमाई हुई। आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा फुलस्टाप लगाना, वह भी बिन्दी है। तो बिन्दी आत्मा को याद किया, कमाई बढ़ गई। वैसे लौकिक में भी देखो, बिन्दी से ही संख्या बढ़ती है। एक के आगे बिन्दी लगाओ तो क्या हो जाता? 10, दो बिन्दी लगाओ, तीन बिन्दी लगाओ, चार बिन्दी लगाओ, बढ़ता जाता है। तो आपका साधन कितना सहज है! 'मैं आत्मा हूँ' - यह स्मृति की बिन्दी लगाना अर्थात् खजाना जमा होना। फिर 'बाप' बिन्दी लगाओ और खजाना जमा। कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में ड्रामा का फुलस्टाप लगाओ, बीती को फुलस्टाप लगाया और खजाना बढ़ जाता। तो बताओ सारे दिन में कितने बार बिन्दी लगाते हो? और बिन्दी लगाना कितना सहज है! मुश्किल है क्या? बिन्दी खिसक जाती है क्या?

सबसे सहज बिन्दी लगाना है। कोई इस आंखों से ब्लाइन्ड भी हो, वह भी अगर कागज पर पेन्सिल रखेगा तो बिन्दी लग जाती है और आप तो त्रिनेत्री हो, इसलिए इन तीन बिन्दियों को सदा यूज़ करो। क्वेश्चन मार्क कितना टेढ़ा है, लिखकर देखो, टेढ़ा है ना? और बिन्दी कितनी सहज है। इसलिए बापदादा भिन्न-भिन्न रूप से बच्चों को समान बनाने की विधि सुनाते रहते हैं। विधि है ही बिन्दी। और कोई विधि नहीं है। अगर विदेही बनते हो तो भी विधि है - बिन्दी बनना। अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है। इसलिए बापदादा ने पहले भी कहा है - अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, रूहरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दियों का तिलक मस्तक पर लगाओ, वह लाल बिन्दियों का तिलक लगाने नहीं शुरू करना लेकिन स्मृति का तिलक लगाओ। और चेक करो - किसी भी कारण से यह स्मृति का तिलक मिटे नहीं।

दादी जी से:- जो भी कुछ ड्रामा होता है - सभी का स्नेह बढ़ता है। निमित्त आत्माओं में सभी के जैसे प्राण हैं। इसलिए आपरेशन तो निमित्त है लेकिन सबके स्नेह और दुआओं का खजाना बहुत जमा हो गया। देखो, ड्रामा में मुरलियां भी कितनी समय प्रमाण रिपीट हुई, बापदादा ने सभी को सकाश देने और लेने का पाठ पढ़ा लिया। समय अनुसार मुरलियां भी वही चली। बापदादा का तो प्यार है ही लेकिन हर एक बच्चों का भी दिल से प्यार है। परमात्म प्यार और ब्राह्मण आत्माओं का प्यार यह उड़ा देता है क्योंकि आपके साकार में थोड़ा समय भी मिलने का सभी को महत्व है। इतना समय मिलने के बजाए फरिश्ते मुआफ़िक यह मिलन - यह भी ड्रामा में पार्ट अच्छा रहा। अभी अपने को ब्रह्मा बाप के समान फरिश्ता रूप से मिलना, चलना और उड़ना - यही पार्ट चल रहा है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा एकदम न्यारा, कर्मातीत अनुभव रहा। ऐसे आप सभी महारथियों को अभी ऐसे ब्रह्मा समान कर्मातीत अवस्था के समीप आना ही है। फालो फादर। एक सेकण्ड की आपकी दृष्टि कई घण्टों की प्राप्ति का अनुभव करायेगी। अभी बोलने की, बैठने की भी मेहनत कम होती जायेगी। एकदम ब्रह्मा बाप ही दिखाई देगा। यह

दादियां नहीं हैं, ब्रह्मा बाप है। अव्यक्त ब्रह्मा, अव्यक्त रूप से पालना दे रहे हैं और आप द्वारा साकार ब्रह्मा बाप की अनुभूति बढ़ती जायेगी। आपको दादी नहीं देखेंगे, ब्रह्मा देखेंगे। होता है ना ऐसे? अच्छा। कीमती रत्न हो। कीमती रत्नों की सम्भाल की जाती है।

(30.03.1999)

हर एक को चेक करना है कि हम सारे दिन में कितना जमा करते हैं या गँवाते हैं? चेक करते हो? चेक जरूर करना है क्योंकि एक जन्म के लिए नहीं है लेकिन हर जन्म के लिए है। अनेक जन्म के लिए जमा चाहिए। जमा करने की विधि जानते हो? बहुत सहज है। सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ। बिन्दी याद है तो जमा होता है। जैसे स्थूल खजाने में भी एक के साथ बिन्दी लगाते जाओ तो बढ़ता जाता है ना! ऐसे ही आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो बीत चुका वह भी फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दी। अगर हर खजाने को बिन्दी रूप से याद करो तो जमा होता जाता। अनुभव है ना! बिन्दी लगाई और व्यर्थ से जमा होता जाता है। बिन्दी लगाने आती है? कई बार ऐसे होता है जो कोशिश करते हो बिन्दी लगाने की लेकिन बिन्दी के बजाए लम्बी लाइन हो जाती है, बिन्दी के बजाए क्वेश्चनमार्क हो जाता है, आश्चर्य की लाइन लग जाती है। तो जमा का खाता बढ़ाने की विधि है 'बिन्दी' और गँवाने का रास्ता है लम्बी लाइन लगाना, क्वेश्चनमार्क लगाना, आश्चर्य की मात्रा लगाना। सहज क्या है? बिन्दी है ना! तो विधि बहुत सहज है - स्वमान और बाप की याद तथा फालतू को फुलस्टॉप लगाना।

बापदादा ने पहले भी कहा है - रोज़ अमृतवेले अपने आपको तीन बिन्दियों की स्मृति का तिलक लगाओ तो एक खजाना भी व्यर्थ नहीं जायेगा। हर समय, हर खजाना जमा होता जायेगा। बापदादा ने सभी बच्चों के हर खजाने के जमा का चार्ट देखा। उसमें क्या देखा? अभी तक भी जमा का खाता जितना होना चाहिए उतना नहीं है। समय, संकल्प, बोल व्यर्थ भी जाता है। चलते-चलते कभी समय

का महत्व इमर्ज रूप में कम होता है। अगर समय का महत्व सदा याद रहे, इमर्ज रहे तो समय को और ज्यादा सफल बना सकते हो। सारे दिन में साधारण रूप से समय चला जाता है। गलत नहीं लेकिन साधारण। ऐसे ही संकल्प भी बुरे नहीं चलते लेकिन व्यर्थ चले जाते हैं।

तकदीर की तस्वीर देखो और सदा अपने तकदीर की तस्वीर देख वाह-वाह का गीत गाओ। वाह मेरी तकदीर! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा परिवार! परिवार भी वाह-वाह है! ऐसे नहीं यह तो बहुत वाह-वाह है, यह थोड़ा ऐसा है! नहीं। वाह मेरा परिवार! वाह मेरा भाग्य! और वाह मेरा बाबा! ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह! हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह! यह भी बोझ उतरता है। अगर 10 मण से आपका 3-4 मण बोझ उतर जाए तो अच्छा है या हाय-हाय? क्या है? वाह बोझ उतरा! हाय मेरा पार्ट ही ऐसा है! हाय मेरे को व्याधि छोड़ती ही नहीं है! आप छोड़ो या व्याधि छोड़ेगी? वाह-वाह करते जाओ तो वाह-वाह करने से व्याधि भी खुश हो जायेगी। देखो, यहाँ भी ऐसे होता है ना, किसकी महिमा करते हो तो वाह-वाह करते हैं। तो व्याधि को भी वाह-वाह कहो। हाय यह मेरे पास ही क्यों आई, मेरा ही हिसाब है! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है। प्राप्तियां सामने रखो और हिसाब-किताब सामने रखो, तो वह क्या लगेगा? बहुत छोटी सी चीज़ लगेगी। मतलब तो **ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो जाए, पॉजिटिव रूप में देखो।**

जो भी आप बिजनेसमैन आये हैं उन्हों को चिंता है? क्या होगा, कैसे होगा, चिंता है? चिंता नहीं है तो हाथ उठाओ। कल कुछ हो जाये तो? बेफिकर बादशाह हैं? बिजनेसमैन बेफिक्र बादशाह हैं? थोड़ों ने हाथ उठाया? जिसको थोड़ा-थोड़ा फिकर है वह हाथ उठा सकते हो या शर्म आयेगा? बापदादा ने टाइटल ही दिया है - बेफिक्र बादशाह, बेगमपुर के बादशाह। तो जब भी कोई ऐसी बात आये, आयेगी तो जरूर लेकिन आप बेगमपुर में चले जाना। बेगमपुर में

बैठ जाना तो बादशाह भी हो जायेंगे और बेगमपुर में भी हो जायेंगे। आपने ही आह्वान किया है कि पुरानी दुनिया जाये और नई दुनिया आये, तो जायेगी कैसे? नीचे ऊपर होगी तब तो जायेगी। कुछ भी हो जाए आपको बेफिक्र बनना ही है। आपने ही आह्वान किया है, पुरानी दुनिया खत्म हो। तो पुरानी दुनिया में पुराने मकान में क्या होता है? कभी क्या टूटता है, कभी क्या गिरता है, तो यह तो होगा ही। नथिंगन्यु। ब्रह्मा बाप का यही हर बात में शब्द था - 'नथिंगन्यु'। होना ही है, हो रहा है और हम बेफिक्र बादशाह। ऐसे बेफिक्र हो? बेफिक्र होंगे तो देवाला भी बच जायेगा और फिक्र में होंगे, निर्णय ठीक नहीं होगा तो एक दिन में क्या से क्या बन जाते हैं। यह तो जानते ही हो। बेफिक्र होंगे, निर्णय अच्छा होगा तो बच जायेंगे। टचिंग होगी - अभी समय अनुसार यह करें या नहीं करें!

(30.11.1999)

बापदादा ने अपने हस्तों से झण्डा लहराया, 64 वीं शिवजयन्ती निमित्त 64 मोमबत्ती जलाई तथा सभी बच्चों को शिव जयन्ती की बधाईयां दी:-

सभी ने अपनी बर्थ डे भी मनाई, झण्डा भी लहराया। अभी हर एक आत्मा के दिल में यह झण्डा लहराना। आप सबके दिलों में तो बाप का झण्डा लहराता रहता है, अभी विश्व कहे 'मेरा बाबा', यह आवाज, जैसे नगाड़ा बजता है तो बुलन्द आवाज से बजता है। ऐसे ही - 'मेरा बाबा' यह नगाड़ा ज़ोर शोर से बजे। यही सभी बच्चों के दिल की आश है। होना ही है। अनेक बार हुआ है, अब फिर से रिपीट होना ही है। उस दिन सभी मिलकर कौन सा गीत गायेंगे?-वाह बाबा वाह! और वाह ड्रामा वाह! सबके दिल में बाबा, बाबा और बाबा ही होगा। दिखाई दे रहा है ना - वह दिन! दिखाई देता है? वह दिन आया कि आया। सभी को मुबारक तो मिल गई है। आप सबको मुबारक है ही और सर्व को इस दिवस की मुबारक दिलानी है। अवतरण-दिवस, जन्म-दिवस, परिवर्तन-दिवस, प्रत्यक्षता-

दिवस आना ही है। अच्छा। सबको आज के दिवस की गोल्डन नाईट, डायमण्ड नाईट।

(03.03.2000)

लास्ट में होमवर्क तो देंगे ना! कुछ तो होम वर्क मिलेगा ना! तो बापदादा आने वाली सीज़न में आयेगा लेकिन.... कन्डीशन डालेगा। देखो साकार का पार्ट भी चला, अव्यक्त पार्ट भी चला, इतना समय अव्यक्त पार्ट चलने का स्वप्न में भी नहीं था। तो दोनों पार्ट ड्रामानुसार चले। अब कोई तो कन्डीशन डालनी पड़ेगी या नहीं! क्या राय है? क्या ऐसे ही चलता रहेगा? क्यों? आज वतन में प्रोग्राम भी पूछा। तो बापदादा की रूहरिहान में यह भी चला कि यह ड्रामा का पार्ट कब तक? क्या कोई डेट है? (देहरादून की प्रेम बहन से) जन्म-पत्री सुनाओ, कब तक? अभी यह क्वेश्चन उठा है, कब तक? तो लेकिन.... के लिए 6 मास तो हैं ही ना! 6 मास के बाद ही दूसरी सीजन शुरू होती है। तो बापदादा रिजल्ट देखने चाहते हैं। दिल साफ, कोई भी दिल में पुराने संस्कार का, अभिमान-अपमान की महसूसता का दाग नहीं हो।

(19.03.2000)

आज विशेष ब्रह्मा बाप को याद ज्यादा किया ना! ब्रह्मा बाप ने भी सभी बच्चों को स्मृति और समर्थी स्वरूप से याद किया। कई बच्चों ने ब्रह्मा बाप से रुहरुहान करते मीठा-मीठा उलहना भी दिया कि आप इतना जल्दी क्यों चले गये? और दूसरा उलहना दिया कि हम सब बच्चों से छूट्टी लेकर क्यों नहीं गये? तो ब्रह्मा बाप ने तो बोला कि मैंने भी शिव बाप से पूछा कि हमें अचानक क्यों बुला लिया? तो बाप ने बोला - अगर आपको कहते की छूट्टी लेके आओ तो क्या आप बच्चों को छोड़ सकते थे, या बच्चे आपको छोड़ सकते थे? आप अर्जुन का तो यही यादगार है कि अन्त में नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप ही रहे हैं। तो ब्रह्मा बाप मुस्कुराये

और बोले कि यह तो कमाल थी जो बच्चों ने भी नहीं समझा कि जा रहे हैं और ब्रह्मा ने भी नहीं समझा जा रहा हूँ। सामने होते भी दोनों तरफ चुप रहे क्योंकि समय प्रमाण सन शोज फादर का पार्ट ड्रामा की नूँध थी, इसको कहते हैं वाह! ड्रामा वाह! सेवा का परिवर्तन नूँधा हुआ था। ब्रह्मा बाप को बच्चों का बैकबोन बनना था। तो अव्यक्त रूप में फास्ट सेवा का पार्ट बजाना ही था।

डबल फारेनर्स ने ब्रह्मा बाप को बोला सिर्फ दो तीन साल आप रुक जाते तो हम देख तो लेते। तो ब्रह्मा बाप ने हँसी में बोला, हँसी की - तो ड्रामा से बात करो, ड्रामा ने ऐसा क्यों किया?

(18.01.2001)

बापदादा ने पहले भी सुनाया कि बापदादा के पास प्रकृति भी आती है कहने के लिए कि मैं एवररेडी हूँ, समय भी ब्राह्मणों को बार-बार देखता रहता है कि ब्राह्मण तैयार हैं? बार-बार ब्राह्मणों का चक्कर लगाता है! तो बापदादा पूछते हैं, हाथ तो बहुत अच्छे उठाते हो, बापदादा भी खुश हो जाते हैं। अब ऐसे एवररेडी बनो जो हर संकल्प, हर सेकण्ड, हर श्वांस जो बीते वह वाह, वाह हो। व्हाई नहीं हो, वाह, वाह हो। अभी कोई समय वाह-वाह होता है, कोई समय वाह के बजाए 'व्हाई' हो जाता है। कोई समय बिन्दी लगाते हैं, कोई समय क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की मात्रा लग जाती है। आप सबका मन भी कहे वाह! और जिसके भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो, चाहे ब्राह्मणों के, चाहे सेवा करने वालों के, वाह! वाह! शब्द निकले।

(31.02.2001)

संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, कर्मणा द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दुआ देना और दुआ लेना। अगर किसी आत्मा के प्रति कोई भी व्यर्थ संकल्प वा नेगेटिव संकल्प आवे भी तो यह याद रखो मेरा कर्तव्य क्या है! जैसे कहाँ आग लग रही हो

और आग बुझाने वाले होते हैं तो वह आग को देख जल डालने का अपना कार्य भूलते नहीं, उन्हों को याद रहता है कि हम जल डालने वाले हैं, आग बुझाने वाले हैं, ऐसे अगर कोई किसी भी विकार की आग वश कोई भी ऐसा कार्य करता है जो आपको अच्छा नहीं लगता है तो आप अपना कर्तव्य याद रखो कि मेरा कर्तव्य क्या है - किसी भी प्रकार की आग बुझाने का, दुआ देने का, शुभ भावना की भावना का सहयोग देने का।

जब कोई कारण सामने बनता है तो कारण का सेकण्ड में निवारण सोचो, यह सोचो कि जब मैं विश्व का निवारण करने वाली हूँ तो क्या स्वयं की छोटी-छोटी समस्याओं का स्वयं निवारण नहीं कर सकती! नहीं कर सकता! अभी तो आत्माओं की क्यू आपके सामने आयेगी - 'हे मुक्तिदाता मुक्ति दो' क्योंकि मुक्ति दाता के डायरेक्ट बच्चे हो, अधिकारी बच्चे हो। मास्टर मुक्तिदाता तो हो ना। लेकिन क्यू के आगे आप मास्टर मुक्ति दाताओं के तरफ से एक रुकावट का दरवाजा बन्द है। क्यू तैयार है लेकिन कौन-सा दरवाजा बन्द है? पुरुषार्थ में कमजोर पुरुषार्थ का, एक शब्द का दरवाजा है, वह है 'क्यों'। क्वेश्चन मार्क, क्यों? यह 'क्यों' शब्द अभी क्यू को सामने नहीं लाता। तो बापदादा अभी देश-विदेश के सभी बच्चों को यह स्मृति दिला रहे हैं कि समस्याओं का दरवाजा 'क्यों', इसको समाप्त करो।

अगर दिल से द्रढ़ संकल्प करेंगे कि कारण को समाप्त कर निवारण स्वरूप बनना ही है, कुछ भी हो, सहन करना पड़े, माया का सामना करना पड़े, एक दो के सम्बन्ध-सम्पर्क में सहन भी करना पड़े, मुझे समस्या नहीं बनना है।

ऐसे ही जब भी कोई समस्या आवे तो सामने बापदादा को देखना, दिल से कहना बाबा, और बाबा हाजिर हो जायेगा, समस्या खत्म हो जायेगी। समस्या सामने से हट जायेगी और बापदादा सामने हाजिर हो जायेगा।

(21.11.2001)

रोज़ी बहन सेः- कितना अच्छा पार्ट आपका ड्रामा में हैं। यह भी हिसाब पुरा हुआ जो हिसाब रहा हुआ था, वह पुरा किया। खुशी-खुशी से पुरा किया। यह हिसाब तो होता ही है सेवा के लिए। जो सेवाधारी हैं ना वह कहाँ भी जायेंगे सेवा के बिना तो रह नहीं सकते और वह सेवा का फल दुआयें मिलती हैं।

(03.02.2002)

अभी अपने अन्दर चेक करो - मेरी वृत्ति में किसी आत्मा के प्रति भी कोई नेगेटिव वायब्रेशन है? अगर विश्व का वायुमण्डल परिवर्तन करना है, लेकिन अपने मन में किसी एक आत्मा के प्रति भी अगर व्यर्थ वायब्रेशन वा सच्चा वायब्रेशन भी नेगेटिव है तो वह विश्व परिवर्तन कर नहीं सकेगा। बाधा पडती रहेगी, समय लग जायेगा। वायुमण्डल में पॉवर नहीं आयेगी। कई बच्चे कहते हैं वह है ही ऐसा ना! है ही ना! तो वायब्रेशन तो होगा ना! बाप को भी ज्ञान देते हैं, बाबा आपको पता नहीं है, वह आत्मा है ही ऐसी। लेकिन बाप पूछते हैं कि वह खराब है, राँग है, होना नहीं चाहिए लेकिन खराब को अपने वृत्ति में रखो, क्या यह बाप ने छूट्टी दी हैं? जो समझते हैं यह बाप की छूट्टी नहीं है, वह एक हाथ उठाना। टी.वी. में दिखाओ। (दादी को) आप देख रही हो ना। अच्छा। याद रखना हाथ उठाया था। डबल फारेनर्स ने हाथ उठाया! बापदादा की टी.वी. में तो आ रहा है। जब तक हर ब्राह्मण आत्मा के स्वयं की वृत्ति में कैसी भी आत्मा के प्रति वायब्रेशन नेगेटिव है तो विश्व कल्याण प्रति वृत्ति से वायुमण्डल फैला नहीं सकेंगे। यह पक्का समझ लो। कितनी भी सेवा कर लो, रोज आठ-आठ भाषण कर लो, योग शिविर करा लो, कई प्रकार के कोर्स करा लो लेकिन किसी के प्रति भी अपनी वृत्ति में कोई पुराना नेगेटिव वायब्रेशन नहीं रखो। अच्छा वह खराब है, बहुत गलतियाँ करता है, बहुतों को दुःख देता है, तो क्या आप उसके दुःख देने में जिम्मेवार बनने के बजाए, उसको परिवर्तन करने में आप मददगार नहीं बन सकते! दुःख में मदद नहीं करना है, उसको परिवर्तन करने में आप मददगार बनो। अगर कोई ऐसी भी आत्मा है जो

आप समझते हैं, बदलना नहीं है। चलो, आपकी जजमेन्ट में वह बदलने वाली नहीं है, लेकिन नम्बरवार तो हैं ना! तो आप क्यों सोचते हो यह तो बदलनेवाली है ही नहीं। आप क्यों जजमेन्ट देते हो, वह तो बाप जज है ना। आप सब एक दो के जज बन गये हो। बाप भी तो देख रहा है, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं। ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष में देखा कैसी भी बार-बार गलती करनेवाली आत्मा रही लेकिन बापदादा (विशेष साकार रूप में ब्रह्मा बाप) ने सर्व बच्चों प्रति याद-प्यार देते, सर्व बच्चों को मीठे-मीठे कहा। दो-चार कड़ुवे और बाकी मीठे... क्या ऐसे कहा? फिर भी ऐसी आत्माओं के प्रति भी सदा रहमदिल बने। क्षमा के सागर बने। लेकिन अच्छा आपने अपनी वृत्ति में किसी के प्रति भी अगर नेगेटिव भाव रखा, तो इससे आपको क्या फायदा है? अगर आपको इसमें फायदा है, फिर तो भले रखो छूट्टी है। अगर फायदा नहीं है, परेशानी होती है..., वह बात सामने आयेगी। बापदादा देखते हैं, उस समय उसको आइना दिखाना चाहिए। तो जिस बात में अपना कोई फायदा नहीं है, नॉलेजफुल बनना अलग चीज़ है, नॉलेज है - यह राँग है, यह राइट है। नॉलेजफुल बनना राँग नहीं है, लेकिन वृत्ति में धारण करना यह राँग है क्योंकि अपने में ही मूड ऑफ, व्यर्थ संकल्प, याद की पावर कम, नुकशान होता है। जब प्रकृति को भी आप पावन बनाने वाले हो तो यह तो आत्मायें हैं। वृत्ति, वायब्रेशन और वायुमण्डल तीनों का सम्बन्ध है। वृत्ति से वायब्रेशन होते हैं, वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है। लेकिन मूल है वृत्ति। अगर आप समझते हो कि जल्दी-जल्दी बाप की प्रत्यक्षता हो तो तीव्र गति का प्रयत्न है सब अपनी वृत्ति को अपने लिए, दूसरों के लिए पॉजेटिव धारण करो। नॉलेजफुल भले बनो लेकिन अपने मन में नेगेटिव धारण नहीं करो। नेगेटिव का अर्थ है किचड़ा। अभी-अभी वृत्ति पॉवरफुल बनाओ क्योंकि सभी ने अनुभव कर लिया है, वाणी से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है, होता है लेकिन बहुत धीमी गति से। अगर आप फास्ट गति चाहते हो तो नॉलेजफुल बन, क्षमा स्वरूप बन, रहमदिल बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो। देखो, प्रत्यक्ष देखा

है आप सबने, मधुबन में जो भी आते हैं, सबसे ज्यादा प्रभाव किस बात का पड़ता है? वायुमण्डल का। यहाँ भी चाहे सभी नम्बरवार हैं लेकिन ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि है, बापदादा की वरदान भूमि है, वह वायुमण्डल परिवर्तन कर देता है।

(24.02.2002)

ऐसे ही ड्रामा में भी पूरा निश्चय चाहिए। सफलता और समस्या दोनों प्रकार की बातें ड्रामा में आती हैं लेकिन समस्या के समय निश्चयबुद्धि की निशानी है - समाधान स्वरूप। समस्या को सेकण्ड में समाधान स्वरूप द्वारा परिवर्तन कर देना। समस्या का काम है आना, निश्चयबुद्धि आत्मा का काम है समाधान स्वरूप से समस्या को परिवर्तन करना। क्यों? आप हर ब्राह्मण आत्मा ने ब्राह्मण जन्म लेते माया को चेलेन्ज किया है। किया है ना या भूल गये हो? चेलेन्ज है कि हम मायाजीत बनने वाले हैं। तो समस्या का स्वरूप, माया का स्वरूप है। जब चेलेन्ज किया है तो माया सामना तो करेगी ना। वह भिन्न-भिन्न समस्याओं के रूप में आपकी चेलेन्ज को पूरा करने के लिए आती है। आपको निश्चय-बुद्धि विजयी स्वरूप से पार करना है, क्यों? नथिंग न्यू। कितने बार विजयी बने हो? अभी एक बार संगम पर विजयी बन रहे हो वा अनेक बार बने हुए को रिपीट कर रहे हो? इसलिए समस्या आपके लिए नई बात नहीं है, नथिंग न्यू। अनेक बार विजयी बने हैं, बन रहे हैं और आगे भी बनते रहेंगे। यह है ड्रामा में निश्चयबुद्धि विजयी।

(14.11.2002)

बाप आपके लिए सौगात लाये हैं तो सौगात क्या लाये हैं? सुनहरी दुनिया, सतोप्रधान दुनिया की सौगात लाये हैं। तो निश्चय है? निश्चय की निशानी है रूहानी नशा। जितना आपके राज्य के समीप आ रहे हो, घर के भी समीप आ रहे हो और अपने राज्य के भी समीप आ रहे हो, तो बार-बार अपने स्वीट होम और अपने स्वीट राज्य की स्मृति स्पष्ट आनी ही चाहिए। यह समीप आने की निशानी है।

अपना घर, अपना राज्य ऐसा ही स्पष्ट स्मृति में आये, तीसरे नेत्र द्वारा स्पष्ट दिखाई दे। अनुभव हो आज यह, कल यह। कितने बार पार्ट पूरा कर अपने घर और अपने राज्य में गये हो, याद आता है ना! और अब फिर से जाना है। डबल फारेनर्स स्पष्ट याद आता है कि खींचना पड़ता है, पता नहीं क्या बनेगा, कैसे होगा! खींचना पड़ता है या स्पष्ट है? याद है? स्पष्ट है?

डबल फारेनर्स को एक सेकण्ड में कोई भी व्यर्थ बात, कोई भी नेगेटिव बात, कोई भी बीती बात, उसको मन से बिन्दी लगाना आता है? डबल फारेनर्स जो समझते हैं कि कैसी भी बीती हुई बात, अच्छी बात तो भूलनी है ही नहीं, भूलनी तो व्यर्थ बातें ही होती हैं। तो कोई भी बात जिसको भूलना चाहते हैं, उसको सेकण्ड में बिन्दी लगा सकते हो? जो फारेनर्स लगा सकते हैं, वह सीधा, लम्बा हाथ उठाओ। मुबारक हो। अच्छा, जो समझते हैं कि एक सेकण्ड में नहीं एक घण्टा तो लगेगा ही? सेकण्ड तो बहुत थोड़ा है ना! एक घण्टे के बाद बिन्दी लग सकती है, वह हाथ उठाओ। जो घण्टे में बिन्दी लगा सकते हैं, वह हाथ उठाओ। देखा, फारेनर्स तो बहुत अच्छे हैं। भारतवासी भी जो समझते हैं कि एक घण्टे में नहीं आधे दिन में बिन्दी लग सकती है, वह हाथ उठाओ। (कोई ने हाथ नहीं उठाया) है तो सही, बापदादा को पता है। बापदादा तो देखता रहता है, हाथ नहीं उठाते, लेकिन लगता है। लेकिन समझो आधा दिन लगे, एक घण्टा लगे और आपको एडवांस पार्टी का निमंत्रण आ जाए तो? तो रिजल्ट क्या होगी? अन्त मते सो गति क्या होगी? समझदार तो हो ना?

(28.02.2003)

कर्म में जब आते हो तो इस सृष्टि मंच पर कर्म करने के लिए आये हो, यह सृष्टि मंच ड्रामा है। तो ड्रामा में जो भी कर्म किया, बीत गया, उसको फुलस्टॉप भी किया है? बिन्दु। इसलिए तीन बिन्दु सदा याद रखो। सारी कमाल देखो, आजकल की दुनिया में सबसे ज्यादा महत्व किसका है? पैसे का। पैसे का महत्व है

ना! माँ बाप भी कुछ नहीं है, पैसा ही सब कुछ है। उसमें भी देखो अगर एक के आगे, एक बिन्दी लगा दो तो क्या बन जायेगा! दस बन जायेगा। दूसरी बिन्दी लगाओ, 100 हो जायेगा। तीसरी लगाओ - 1000 हो जायेगा। तो बिन्दी की कमाल है ना! पैसे में भी बिन्दी की कमाल है और श्रेष्ठ आत्मा बनने में भी बिन्दी की कमाल है। और करनकरावनहार भी बिन्दु है। तो सर्व तरफ किसका महत्व हुआ? **बिन्दु का ना! बिन्दु याद रखो, और विस्तार में नहीं जाओ, बिन्दु तो याद कर सकते हो। बिन्दु बनो, बिन्दु को याद करो और बिन्दु लगाओ, बस। यह है पुरुषार्थ।**

(17.02.2004)

बापदादा स्व-परिवर्तन की रफ्तार अभी तीव्र देखने चाहते हैं। सभी पूछते हो ना! बापदादा क्या चाहते हैं? आपस में रूहरिहान करते हो ना तो एक दो से पूछते हो बापदादा क्या चाहते हैं? तो बापदादा यह चाहते हैं। सेकण्ड़ में बिन्दी लगे। जैसे कागज में बिन्दी लगती है ना, उससे भी फास्ट, परिवर्तन में जो अयथार्थ है उसमें बिन्दी लगे। बिन्दी लगाने आती है? आती है ना! लेकिन कभी-कभी क्वेश्चन मार्क हो जाता है। लगाते बिन्दी हैं और बन जाता है क्वेश्चन मार्क। यह क्यों, यह क्या? यह क्यों और क्या... यह बिन्दी को क्वेश्चन मार्क में बदल देता है। बापदादा ने पहले भी कहा था - व्हाई-व्हाई नहीं करो, क्या करो? फ्लाई या वाह! वाह! करो या फ्लाई करो। व्हाई- व्हाई नहीं करो। व्हाई-व्हाई करना जल्दी आता है ना! आ जाता है? जब व्हाई आवे ना तो उसको वाह! वाह! कर लो। कोई भी कुछ करता है, कहता है, वाह! ड्रामा वाह!। यह क्यों करता है, यह क्यों कहता, नहीं। यह करे तो मैं करूं, नहीं।

(15.10.2004)

अभी सभी मुक्ति चाहते हैं, छुड़ाओ, छुड़ाओ चिल्ला रहे हैं। तो यह चार

बातें अच्छी परसेन्ट में प्रैक्टिकल जीवन में होना अर्थात् तीव्र पुरुषार्थी। तब बापदादा कहेंगे वाह! वाह बच्चे वाह! आप भी कहेंगे वाह! बाबा वाह! वाह! ड्रामा वाह! वाह! पुरुषार्थ वाह! लेकिन पता है अभी क्या करते हो? पता है? कभी वाह! कहते हो कभी व्हाई कहते हो। वाह! के बजाए व्हाई, और व्हाई हो जाता है हाय। तो व्हाई नहीं, वाह! आपको भी क्या अच्छा लगता है, वाह! अच्छा लगता है या व्हाई? क्या अच्छा लगता है? वाह!। कभी व्हाई नहीं करते हो? गलती से आ जाता है।

(31.12.2004)

एक सेकण्ड में मन के मालिक बन मन को ऑर्डर कर सकते हो? कर सकते हो? मन को एकाग्र कर सकते हो? फुल स्टॉप लगा सकते हो कि लगायेंगे फुल स्टॉप और लग जायेगा क्वेश्चन मार्क? क्यों, क्या, कैसे यह क्या, वह क्या, आश्चर्य की मात्र भी नहीं। फुल स्टॉप। सेकण्ड में प्वाइन्ट बन जाओ। और कोई मेहनत नहीं है, एक शब्द सिर्फ अभ्यास में लाओ 'प्वाइन्ट'। प्वाइन्ट स्वरूप बनना है, वेस्ट को प्वाइन्ट लगानी है और कोई भी तकलीफ नहीं है। प्वाइन्ट याद रखो, प्वाइन्ट लगाओ, प्वाइन्ट बन जाओ। यह अभ्यास सारे दिन में बीच-बीच में कितने भी बिजी हो लेकिन यह ट्रायल करो एक सेकण्ड में प्वाइन्ट बन सकते हो? एक सेकण्ड में प्वाइन्ट लगा सकते हो? जब यह अभ्यास होगा, बार-बार का अभ्यास तब ही आने वाले अन्तिम समय में फुल प्वाइन्ट्स ले सकेंगे। पास विद् ऑनर बन जायेंगे। यही परमात्म पढ़ाई है, यही परमात्म पालना है।

(20.02.2005)

कोई नई बात नहीं है, कितने कल्प, कितने बार सम्पूर्ण बने हो, याद है? कोई नई बात नहीं है। कल्प-कल्प बने हो, बनी हुई, बने है, सिर्फ रिपीट करना है। बनी को बनाना है, इसलिए कहा जाता है बना बनाया ड्रामा। बना हुआ है सिर्फ

अभी रिपीट करना अर्थात् बनाना है।

(07.03.2005)

सदैव संकल्प करते हुए यह संकल्प इमर्ज करो, मर्ज नहीं, इमर्ज। इमर्ज करो मुझे करना ही है। बनना ही है। होना ही है। हुआ ही पड़ा है। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, विजयन्ती। ड्रामा विजय का बना ही पड़ा है। सिर्फ रिपीट करना है। बना बनाया ड्रामा है। बना हुआ है, रिपीट कर बनाना है। मुश्किल है? कभी-कभी मुश्किल हो जाता है! मुश्किल क्यों होता है? अपने आप ही सहज को मुश्किल कर देते हो। छोटी सी गलती कर लेते हो - पता है कौन सी गलती करते हो? बापदादा को उस समय बच्चों पर बहुत रहम क्या कहें, प्यार आता है। क्या प्यार आता है? एक तरफ तो कहते कि बाप हमारे कम्बाइन्ड़ है, है कम्बाइन्ड़? कम्बाइन्ड़ है? साथ नहीं कम्बाइन्ड़। कम्बाइन्ड़ है? ड़बल फारेनर्स कम्बाइन्ड़ है? पीछें वाले कम्बाइन्ड़ है? गैलरी वाले कम्बाइन्ड़ है?

सभी खुश हैं? प्रबन्ध से ज्यादा आ गये हैं। (23 हजार से भी अधिक पहुंच गये हैं) कोई बात नहीं, जब ज्यादा आयेंगे तो दादी का संकल्प चलेगा ना, बढ़ाने का। भले आये। अच्छा है - हाल को कभी तो छोटा होना ही चाहिए। होना चाहिए ना! पहली लाइन वाले होना चाहिए ना। तब तो बनायेंगे ना! ड्रामा में वृद्धि होनी ही है। सेवाधारी थक तो नहीं जाते? किसका टर्न है अभी? गुजरात का है।

(25.03.2005)

खजानों को जमा करने की सहज विधि भी बापदादा ने सुनाई - जो भी अविनाशी खजाने हैं उन सभी खजानों की प्राप्ति करने की विधि है - बिन्दी। जैसे विनाशी खजानों में भी बिन्दी लगाते जाओ तो बढ़ता जाता है ना। तो अविनाशी खजानों की जमा करने की विधि है बिन्दी लगाना। तीन बिन्दियाँ है - एक मैं आत्मा बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो भी बीत जाता वह फुलस्टॉप अर्थात

बिन्दी। तो बिन्दी लगाने आती है? सबसे ज्यादा सहज मात्रा कौन-सी है? बिन्दी लगाना ना! तो आत्मा बिन्दी हूँ, बाप भी बिन्दी हैं, इस स्मृति से स्वतः ही खजाने जमा हो जाते हैं। तो बिन्दी को सेकण्ड में याद करने से कितनी खुशी होती है! यह सर्व खजाने आपके ब्राह्मण जीवन का आधिकार हैं क्योंकि बच्चे बनना अर्थात अधिकारी बनना।

दादियों से :- अच्छा है - सभी आदि रत्न हैं। आदि रत्नों में विशेषता है, सभी रत्नों को देख खुश हो जाते हैं। दादी को भी सभी याद कर रहे हैं। (दादी जी को विशेष ट्रीटमेंट और चेकिंग निमित्त बम्बई हॉस्पिटल में 31 जनवरी को लेकर गये हैं। मोहिनी बहन, मुन्नी बहन, निर्वेर भाई, योगिनी बहन आदि सब ने याद भेजी है) बड़ों के आगे कुछ तो अनुभव आयेंगे ना। न्यारे और बाप के प्यारे, न्यारे रहते छोटी-छोटी बातों में पेपर होने का एक्जैम्पुल बनते हैं। बिल्कुल 100 परसेन्ट सम्पन्न बनना है क्योंकि पहले नम्बर वाले जरा भी अंश का अंश भी रह नहीं जाए, सब यहाँ खत्म होना है क्योंकि इन्हों के आधार से नई दुनिया का राज्य स्थापन होना है और राज्य घराना बनना है। तो अंश मात्र को भी भस्म कर रहे हैं। इसीलिए कुछ भी होता है लेकिन फिर भी न्यारापन रहता है। सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम यह प्रैक्टिकल सम्पन्न बनने के लिए थोड़ा बहुत यह खेल तो करना ही पड़ता है। (दादी जानकी जी ने कहा बाबा के लिए खेल है) आपके लिए भी खेल है, यह भी पार्ट है। जैसे और पार्ट बजाते हैं, यह भी पार्ट नूंधा हुआ है। यह जरा सा भी भस्म हो रहा है। बिल्कुल प्युअर, अंश मात्र भी नहीं रहे। तो सभी को प्यार तो है, और प्यार की दुआयें दादी को भी मिल रही है। अच्छा है, आप सब मिल करके, निमित्त बनके चला रहे हैं, यह भी बहुत अच्छा है। (परदादी ने भी याद दी है) यह भी एक खेल में खेल हैं कि सभी इकट्ठे इकट्ठे प्युअर बन रहे हैं। इसने (शान्तामणि दादी) तो हिम्मत दिखाई और करके दिखाया। डाक्टरों को भी अपनी हिम्मत तो दिखा दी ना। हर एक की अपनी अपनी विशेषता है। तो अच्छा है मिलके, साथी बनके, यज्ञ का कार्य तो रूकना है ही नहीं, अमर है, चलना है और

बढ़ना है। सभी साक्षी होके खेल देख रहे हो या क्वेश्चन मार्क उठता है? क्यों, क्या तो नहीं उठता ना! जो होता है, उसमें कई राज समाये हुए होते हैं। वह बाप जाने और ड्रामा जाने। अच्छा। सब ठीक है ना! अच्छा है।

बापदादा ने बाम्बे हॉस्पिटल में दादी जी की सेवा में गये हुए भाई बहिनों को विशेष याद दी :- बापदादा बॉम्बे में सबकी प्यारी, सबके दिल की दुलारी दादी की जो सेवा के निमित्त हैं उन सबको याद-प्यार दे रहे हैं। दादी का जो भी ड्रामा में देखते हो, देखते हुए साक्षी होके, दुआओं की, दिल के स्नेह की और स्नेह की सकाश देने की सेवा करते रहते हैं, करते रहो। खेल में खेल देखते रहो। साक्षी होके देखो और उड़ते रहो। बापदादा दिल से सबको दुआयें दे रहे हैं और सब प्यार से सेवा कर रहे हैं। सेवा की भी मुबारक है। (दादी जानकी जी ने कहा डॉक्टर्स भी बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं) जो भी होता है उसमें सेवा और कल्याण तो भरा हुआ ही है। अच्छा।

(02.02.2007)

दादा विश्वरतनने 26 फरवरी को अचानक अपना पुराना शरीर छोड़ दियाः- क्योंकि ड्रामा में कोई-कोई आत्मा को अचानक और एवररेडी का पाठ पक्का कराना है। देखो, जब चन्द्रमणी ने शरीर छोड़ा तो कुछ समय वह लगहर अच्छी रही। सभी अचानक के पाठ में पक्के रहे, फिर धीरे-धीरे हल्का हो गया। फिर यह जो ड्रामा में पार्ट हुआ यह वायुमण्डल में अचानक और ऐवररेडी का पाठ फिर से पक्का कराने के निमित्त बनें। विश्वरतन का निराकारी स्थिति का ध्यान अच्छा रहा, गुप्त में यह पाठ पक्का था। इसीलिए जल्दी सेकण्ड में पार्ट पूरा हो गया। यह भी समय सभी को अटेन्शन खिंचाने के लिए निमित्त बना है। सभी थोड़ा थोड़ा अभी समझते हैं, अभी तो टाइम पड़ा है, यह लहर अभी होनी नहीं चाहिए। एवररेडी रहना चाहिए क्योंकि बहुतकाल का अटेन्शन रहना चाहिए। अच्छा।

(दादियों से) आपका ग्रुप तो अटेन्शन वाला है ही ना। अटेन्शन रहता है

ना। आपका अटेन्शन तो रहता है ना, एवररेडी हैं?

दादा के सेवाधारी मनोज सेः- ड्रामा को देखके खुश हो ना, ड्रामा में जो भी होता है अच्छा होता है। (दादा की बहुत याद आती है) याद भले आवे, उनके गुण और उनके कर्तव्य याद आवे और फिर फॉलो करो। याद तो अयेगा ही। बस आज्ञा यही है कि फॉलो करो, खुश रहो और खुशी बांटो।

(03.03.2007)

बापदादा देखते हैं आजकल तो हर वर्ग की भी मीटिंग्स बहुत होती है। डबल फारेनर्स की भी मीटिंग बापदादा ने सुनी। बहुत अच्छी लगी। सब मीटिंग्स बापदादा के पास तो पहुँच ही जाती हैं। तो बापदादा पूछते हैं कि इसकी डेट कब फिक्स की है? क्या यह डेट ड्रामा फिक्स करेगा या आप फिक्स करेंगे? कौन करेगा? लक्ष्य तो आपको रखना ही पड़ेगा। और लक्ष्य बहुत अच्छे ते अच्छा बढ़िया ते बढ़िया रखा है, अभी सिर्फ जैसा लक्ष्य रखा है उसी प्रमाण लक्षण, श्रेष्ठ लक्ष्य के समान बनना है। अभी लक्ष्य और लक्षण में अन्तर है। जब लक्ष्य और लक्षण समान हो जायेंगे तो लक्ष्य प्रैक्टिकल में आ जायेगा। सभी बच्चे जब अमृतवेले मिलन मनाते हैं और संकल्प करते हैं, वह बहुत अच्छे करते हैं। पुरुषार्थ भी बहुत अच्छा करते हैं लेकिन पुरुषार्थ में एक बात की तीव्रता चाहिए। पुरुषार्थ है लेकिन तीव्र पुरुषार्थ चाहिए। तीव्रता की दृढ़ता उसकी एडीशन चाहिए।

आज आपकी दादी याद आ रही है, दादी की विशेषता क्या देखी? कैसे कन्ट्रोल किया? कभी भी कैसी भी वृत्ति वाले की कमी दादी ने मन में नहीं रखी। सभी को उमंग दिलाया। आपकी जगदम्बा माँ ने वायुमण्डल बनाया। जानते हुए भी अपनी वृत्ति सदा शुभ रखी, जिसके वायुमण्डल का अनुभव आप सभी कर रहे हो। चाहे फॉलो फादर है लेकिन बापदादा हमेशा कहते हो कि हर एक की विशेषता को जान उस विशेषता को अपना बनाओ। और हर एक बच्चे में यह नोट करना, बापदादा का जो बच्चा बना है उस एक एक बच्चे में, चाहे तीसरा नम्बर है

लेकिन यह ड्रामा की विशेषता है, बापदादा का वरदान है, सभी बच्चों में चाहे 99 गलतियाँ भी हों लेकिन एक विशेषता जरूर है। जिस विशेषता से मेरा बाबा कहने का हकदार है। परवश है लेकिन बाप से प्यार अटूट होता है। इसीलिए बापदादा अभी समय की समीपता अनुसार हर एक जो भी बाप के स्थान है, चाहे गांव में हैं, चाहे बड़े ज़ोन में हैं, सेन्टर्स पर हैं लेकिन हर एक स्थान और साथियों में श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल आवश्यक हैं।

(17.03.2007)

दादी आपके क्लास में आती रहती है, ऐसे नहीं, नहीं आती है। आपने जो समाधि बनाई है, उसमें भी चक्कर लगाती रहती है। लेकिन आपसे बहुत-बहुत रूहरिहान करने चाहती है इसलिए थोड़ा समय चाहिए। बाकी दादी के 12 दिन समाप्त हो रहे हैं, दादी को साकार वतन में विशेष न्यारा और प्यारा इसेन्शियल कार्य के लिए निमित्तमात्र पार्ट बजाना पड़ रहा है। लेकिन दादी का जन्म, कार्य अति न्यारा है, वह फिर आकर विस्तार सुनायेंगे। बापदादा को भी ड्रामा का नूंधा हुआ पार्ट बजाना पड़ता है, बजवाना पड़ता है। अलौकिकता क्या है, वह सुनायेंगे फिर। ठीक है। सभी पहली लाइन ठीक है, दादियां ठीक है? पाण्डव भी ठीक हैं? सब पाण्डव ठीक हैं ना। डबल फालो। तीन शब्द दादी के सदा याद करना - निमित्त, निर्मान और निर्मल वाणी। यह तीन शब्द हर घड़ी, हर कार्य आरम्भ करने के पहले, कार्य भले बदले लेकिन यह तीन शब्दों की स्मृति नहीं बदले, कैसा भी कठिन कार्य हो लेकिन यह तीन शब्द ऐसे समझना जैसे अभी बापदादा, दीदी, दादी तीन हैं ना, तो यह तीन शब्द भूलना नहीं, हर कार्य शुरू करने के पहले यह याद करना फिर कार्य शुरू करना। तो बहुत जल्दी दादी के समान, सहज समान बन जायेंगे। अच्छा - अभी क्या करना है?

(06.09.2007)

इतना सहज विधि सुनाई है, सिर्फ है ही संगमयुग में बिन्दी की कमाल, बस बिन्दी यूज़ करो और कोई मात्रा की आवश्यकता नहीं। तीन बिन्दी को यूज़ करो। आत्मा बिन्दी, बाप बिन्दी और ड्रामा बिन्दी है। तीन बिन्दी यूज़ करते रहो तो बाप समान बनना कोई मुश्किल नहीं। लगाने चाहते हो बिन्दी लेकिन लगाने के समय हाथ हिल जाता, तो क्वेश्चन मार्क हो जाता या आश्चर्य की रेखा बन जाती है। वहाँ हाथ हिलता, यहाँ बुद्धि हिलती है। नहीं तो तीन बिन्दी को स्मृति में रखना क्या मुश्किल है?

(15.10.2007)

दादियों सेः- बच्चे हाजिर हैं, तो बाप तो हाजिर है ही। न बाप बच्चों से दूर हो सकता, न बच्चे बाप से दूर हो सकते। वायदा है साथ हैं, साथ चलेंगे, आधा कल्प ब्रह्मा बाप के साथ रहेंगे। (दादी जानकी जी ने कहा, वह भी तो समाया हुआ साथ में हैं) आपकी यह अनुभूति ठीक है। अभी तो गैरन्टी है लेकिन जब राज्य करेंगे तो नहीं आयेंगे। कोई देखने वाला भी चाहिए ना। (ऊपर मन कैसे लगेगा) ड्रामा में पार्ट है। ब्रह्मा बाप तो साथ है ना। देखो, ड्रामा क्या करता है? अच्छा है सब एक दो को सम्मान देते, स्वमान में रहते, चल रहे हो, चलते रहो।

(15.12.2007)

जो होगा ड्रामा अच्छे ते अच्छा होगा। जो नये नये शहरों में जो बच्चे रहे हुए हैं वहाँ अभी सेवा के उमंग उत्साह में है और सबसे हिम्मत वाली आपकी एक बच्ची है, वह हिम्मत वाली है। बापदादा उनको रोज़ अमृतवेले वरदान देता है और बच्ची भी एक्यूरेट है। क्या नाम है? (वजीहा) ऐसा काम करके दिखाओ, हिम्मत वाली है, डरती नहीं है। और देखो अपने घर वालों को भी युक्ति से ठीक किया, होशियार है और नैरोबी वालों ने भी बहुत अच्छा पुरुषार्थ किया। उन्हों की विशेषता, नैरोबी के साइड की विशेषता यह है कि बहनें कम हो जाती हैं तो जो

स्टूडेन्ट निकले हैं वह सेन्टर सम्भालते हैं यह भी विशेषता है। तो सबकी विशेषता इकट्ठी करके हर एक अपने अपने स्थान को विशेष बनाओ। बाकी अच्छा है डबल पुरुषार्थी अच्छा पुरुषार्थ करके बढ़ रहे हैं लेकिन बाबा चार्ट देखेगा। जो कहा है ना समाचार, वह चार्ट देखेगा सम्पूर्ण पवित्रता का। अच्छा है। लक्ष्य सबका बहुत अच्छा है लेकिन बीच में अलबेलेपन की माया बहुत आती है। अभी उसकी विदाई करना। अलबेलेपन की विदाई और फुलस्टाप का आह्वान। ठीक है ना, करेंगे ना। अलबेलापन नहीं दिखाना। बापदादा ने अलबेलेपन के बहुत खेल देख लिये हैं। अभी सेकण्ड में फुलस्टाप का खेल दिखाना। सबसे जो हिसाब में भी देखो, सबसे सहज फुलस्टाप है। पेन्सिल रखो फुलस्टाप आ गया। अच्छा। डबल विदेशी सदा टर्न लेते रहते हैं यह बहुत अच्छा है, लेते रहना। अच्छा।

(30.11.2008)

एक दो का अनुभव सुनने से उल्हास में आ जाते। एक दो का अनुभव कम नहीं होता है, हर एक को ड्रामानुसार कोई न कोई विशेषता बाप द्वारा मिली हुई है। तो वह अनुभव सुनने से उमंग में आता है, यह कर सकता है तो मैं क्यों नहीं कर सकता! कभी भी दिल छोटा नहीं करना। बड़ी दिल, बड़ा बाबा। छोटा बाबा है क्या, बड़े ते बड़ा बाबा है, तो बच्चों की दिल सदा बड़ी। बापदादा का स्लोगन है बड़ी दिल, सच्ची दिल, साफ दिल तो हर मुराद हाँसिल।

(05.02.2009)

मेहमानों सेः- आप मेहमान हैं या महान बन गये? मेहमान तो नहीं समझते ना। महान बनने वाले हैं। महान बनना ही है। यहाँ आना सम्बन्ध में आना अर्थात् आगे बढ़ते ही जायेंगे। आशीर्वाद है ही। देखो आप यहाँ तक पहुंच गये हो तो किसने भेजा यहाँ, ड्रामा ने आपको यहाँ तक पहुंचाया।

(24.03.2009)

जो पहली बारी आये हैं, पहले बारी बापदादा से मिलने आये हैं वह उठो। देखा आधा क्लास पहले बारी वाला है। पीछे वाले हाथ उठाओ। खड़े होकर देखो। जो भी पहले बारी आये हैं उन्हों को बापदादा नये बर्थ का, बर्थ डे की मुबारक दे रहे हैं। लोग कहते हैं लाख-लाख बधाई हो बाप कहते हैं पदम पदमगुणा बधाई हो। और बापदादा अभी आने वालों को सदा एक चांस देते हैं वह चांस है कि अभी आने वाले भी अगर तीव्र पुरुषार्थ करें तो बापदादा वा ड्रामा उन्हों को लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट, यह भी आगे नम्बर दे सकता है। चांस है। चांसलर बनो। सिर्फ अटेन्शन देना पड़े।

(07.04.2009)

शिव भगवानुवाच :

मीठे-मीठे बच्चे अपनी अवस्था को एकरस बनाने के लिए कभी भी सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करो। तुम एक बाप से ही सुनो। फालतू बातों से किनारा कर लो। तुम्हें कभी किसी की निंदा नहीं करनी है क्योंकि इस अनादि ड्रामा में हर आत्मा अपना एक्यूरेट पार्ट बजा रही है। इस ड्रामा की हर सीन तुम बच्चों को बहुत ही पसन्द आनी चाहिए क्योंकि यह ड्रामा स्वयं रचयिता बाप को बहुत पसन्द है। यह दुःख-सुख, हार-जीत का बहुत सुन्दर नाटक बना हुआ है। इसमें हर एक्टर अपना विशेष पार्ट बजा रहे हैं। इसलिए ड्रामा की हर सीन देख कर सदा हर्षित रहो। तुम इस कल्याणकारी ड्रामा में किसी को भी दोषी नहीं बना सकते। क्योंकि जो कुछ पास्ट हो चुका है वही होना है। बनी बनाई बन रही. . . . इसलिए किसी को भी दोष नहीं दे सकते। यह ड्रामा की बहुत सुन्दर भावी बनी हुई है। जो बच्चे साक्षी-दृष्टा बनकर ड्रामा में हर एक का पार्ट देखते हैं, उनकी स्थिति मधु समान मीठी बन जाती है। वे सदा एकरस, अचल-अडोल रहते हैं।

(साकार मुरली : 18.01.1995)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः +919414007497, +919414150607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com